2024

प्रश्न: एबीसी इनकॉपोरेटेड नाम की एक तकनीकी कंपनी है जो तीसरी दुनिया में स्थित, संसार की दूसरी सबसेबड़ी कंपनी है। आप इस कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और बहुसंख्यक शेयरधारक हैं। तेज़ी से हो रहे तकनीकी सुधारों ने इस परिदृश्य की धारणीयता पर पर्यावरण कार्यकर्त्ताओं, नियामक प्राधिकरणों और आमजन के बीच चिंता बढ़ा दी है। आप व्यवसाय के पर्यावरणीय पदचिह्न के बारे में महत्त्वपूर्ण मुद्दों का सामना करते हैं। 2023 में, आपके संगठन में 2019 में दर्ज स्तरों की तुलना में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 48% की उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ऊर्जा खपत में उल्लेखनीय वृद्धि मुख्य रूप से आपके डाटा केंद्रों की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकता के कारण है जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के तेज विस्तार से प्रेरित है। AI-संचालित सेवाओं को उनके उल्लेखनीय लाभ के बावजूद पारंपरिक ऑनलाइन गतिविधियों की तुलना में बहुत अधिक संगणनात्मक संसाधनों और विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता होती है। प्रौद्योगिकी के प्रसार से पर्यावरणीय प्रभावों पर चिंता बढ़ गई है, इसके फलस्वरूप चेतावनियाँ भी बढ़ गई हैं। AI मॉडल, विशेष रूप से व्यापक मशीन लर्निंग और डाटा प्रोसेसिंग के उपयोग किये जाने वाले, पारंपरिक कंप्यूटर कार्यों की तुलना में बहुत अधिक ऊर्जा खपत करते हैं, जिसमें अत्यधिक तेज़ी से वृद्धि होती है।

यद्यपि, वर्ष 2030 तक नेट ज़ीरो उत्सर्जन हासिल करने की प्रतिबद्धता और लक्ष्य पहले से ही है, उत्सर्जन कम करने की चुनौती भारी लगती है क्योंकि AI का एकीकरण जारी है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये, नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग में पर्याप्त निवेश आवश्यक होगा। प्रौद्योगिकी क्षेत्र के प्रतिस्पर्द्धी माहौल से कठिनाई और बढ़ गई है, जहाँ बाज़ार की स्थिति और शेयरधारक के मूल्य को बनाए रखने के लिये तेज़ी से नवाचार आवश्यक है। नवाचार, लाभप्रदता और धारणीयता के बीच संतुलन हासिल करने के लिये, एक रणनीतिक कदम आवश्यक है जो व्यावसायिक उद्देश्यों तथा नैतिक दायित्वों, दोनों के अनुरूप हो।

(a) उपर्युक्त मामले में उत्पन्न चुनौतियों पर आपकी तत्काल प्रतिक्रिया क्या है?

(b) उपर्युक्त मामले में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिये।

(c) आपकी कंपनी को तकनीकी दिग्गजों द्वारा दंडित किये जाने के लिये चिह्नित किया गया है। इसकी आवश्यकता को समझाने के लिये आप क्या तार्किक और नैतिक तर्क देंगे?

(d) एक विवेकशील व्यक्ति होने के नाते, आप AI नवाचार और पर्यावरणीय पदचिह्न के बीच संतुलन बनाए रखने के लिये क्या उपाय अपनाएंगे? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिये)

There is a technological company named ABC Incorporated which is the second largest worldwide, situated in the Third World. You are the Chief Executive Officer and the majority shareholder of this company. The fast technological improvements have raised worries among environmental activists, regulatory authorities, and the general public over the sustainability of this scenario. You confront substantial issues about the business's environmental footprint. In 2023, your organization had a significant increase of 48% in greenhouse gas emissions compared to the levels recorded in 2019. The significant rise in energy consumption is mainly due to the surging energy requirements of your data centers, fuelled by the exponential expansion of Artificial Intelligence (AI). AI-powered services need much more computational resources and electrical energy compared to conventional online activities, notwithstanding their notable gains. The technology's proliferation has led to a growing concern over the environmental repercussions, resulting in an increase in warnings. AI models, especially those used in extensive machine learning and data processing, exhibit much greater energy consumption than conventional computer tasks, with an exponential increase.

Although there is already a commitment and goal to achieve net zero emissions by 2030, the challenge of lowering emissions seems overwhelming as the integration of AI continues to increase. To achieve this goal, substantial investments in renewable energy use would be necessary. The difficulty is exacerbated by the competitive environment of the technology sector, where rapid innovation is essential for preserving market standing and shareholders' worth. To achieve a balance between innovation, profitability and sustainability, a strategic move is necessary that is in line with both, business objectives and ethical obligations.

(a) What is your immediate response to the challenges posed in the above case?

(b) Discuss the ethical issues involved in the above case.

(c) Your company has been identified to be penalized by technological giants. What logical and ethical arguments will you put forth to convince about its necessity?

(d) Being a conscience being, what measures would you adopt to maintain balance between AI innovation and environmental footprint?

उत्तर: एबीसी इनकॉरपोरेटेड के सीईओ के रूप में मेरी तात्कालिक कार्रवाई, उत्सर्जन का आकलन करने, नेट ज़ीरो उत्सर्जन लक्ष्यों के लिये प्रतिबद्धता, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के साथ साझेदारी करने और पर्यावरण

संबंधी चिंताओं को प्रभावी ढंग से संबोधित करने हेतु ऊर्जा-कुशल AI प्रौद्योगिकियों के लिये अनुसंधान एवं विकास पहल स्थापित करने पर केंद्रित होगी।

(a) एबीसी इनकॉरपोरेटेड के सीईओ के रूप में, मेरी तत्काल कार्रवाई में निम्नलिखित शामिल होंगे:

- **उत्सर्जन का आकलन:** परिचालन से संबंधित प्रमुख योगदानकर्त्ताओं की पहचान करने के लिये ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 48% वृद्धि के स्रोतों का विश्लेषण करना।
- **धारणीयता से संबंधित प्रतिबद्धता:** 2030 तक नेट ज़ीरो उत्सर्जन लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करना एवं प्रगति में तेज़ी लाने के उपायों को लागू करना।
- **नवीकरणीय ऊर्जा साझेदारी:** डाटा केंद्रों की आवश्यकताओं को धारणीय स्रोतों में प्राप्त करने के लिये नवीकरणीय ऊर्जा प्रदाताओं के साथ भागीदारी करना।
- **अनुसंधान एवं विकास पहल:** कंप्यूटेशनल संसाधन उपयोग को न्यूनतम करने के लिये ऊर्जा-कुशल AI प्रौद्योगिकियों के निर्माण पर केंद्रित एक समर्पित टीम की स्थापना करना।

(b) शामिल नैतिक मुद्दे:

- **पर्यावरणीय उत्तरदायित्व:** पारिस्थितिक प्रभाव को न्यूनतम करना।
- **निगमित उत्तरदायित्व:** सामाजिक, विनियामक और पर्यावरणीय ज़िम्मेदारियों के साथ लाभ को संतुलित करना।
- **धारणीयता की अनदेखी:** AI नवाचार पर्यावरण को क्षति पहुँचा सकता है।
- **सामाजिक उत्तरदायित्व:** एक तकनीकी नेतृत्वकर्त्ता के रूप में सकारात्मक लोक धारणा को आकार देना।

(c) संभावित दंड को कम करने के लिये, मैं तर्क दूँगा कि:

- नेट ज़ीरो उत्सर्जन और धारणीयता प्रयासों के प्रति प्रतिबद्धता, जवाबदेही को प्रदर्शित करती है।
- हम ऊर्जा-कुशल AI मॉडल विकसित करने में उद्योग का नेतृत्व कर सकते हैं और एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित कर सकते हैं।
- पर्यावरणीय लक्ष्यों के अनुरूप, धारणीय प्रथाएँ अल्पकालिक जुर्माने की तुलना में अधिक लाभ प्रदान करती हैं।
- सहयोग को बढ़ावा देने से दंडात्मक के बिना प्रभावी धारणीयता मानकों की स्थापना की जा सकती है।
- विकासशील देशों में कंपनियों के सामने आने वाली विशिष्ट चुनौतियों को स्वीकार करने से निष्पक्ष मूल्यांकन संभव हो पाता है।

(d) पर्यावरणीय विचारों के साथ AI नवाचार को सुसंगत बनाने के लिये, मैं:

- कंप्टेशनल ऊर्जा की आवश्यकताओं को कम करने के लिये ऊर्जा-कुशल AI मॉडल में निवेश करने का प्रस्ताव रखूँगा।
- नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर संक्रमण तथा ऊर्जा-कुशल प्रणालियों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करूँगा।
- प्रत्यक्ष उत्सर्जन को कम करते हुए कार्बन ऑफसेट कार्यक्रमों में शामिल होने का प्रस्ताव रखूँगा।
- ऊर्जा-कुशल प्रौद्योगिकियों के नवप्रवर्तन के लिये अनुसंधान संस्थानों के साथ साझेदारी करने का प्रस्ताव रखूँगा।
- ई-अपशिष्ट को न्यूनतम करने के लिये पुराने बुनियादी ढाँचे के पुनर्चक्रण को बढ़ावा देने का प्रयास करूँगा।

निष्कर्ष: AI नवाचार को पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ संतुलित करना एबीसी इनकॉर्पोरेटेड के लिये महत्त्वपूर्ण है। धारणीयता को प्राथमिकता देकर और हितधारकों को शामिल करके, कंपनी नैतिक दायित्वों को पूरा करते हुए अपनी प्रतिस्पर्द्धात्मक बढ़त को सुदृढ़ कर सकती है, जिससे हरित भविष्य में योगदान दिया सकता है।

प्रश्न: रमण एक वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी हैं और हाल ही में उन्हें एक राज्य के डीजी के रूप में नियुक्त किया गया है। जिन विभिन्न मुद्दों और समस्याओं/चुनौतियों पर उन्हें तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी, उनमें एक अज्ञात आतंकवादी समूह द्वारा बेरोजगार युवकों की भर्ती से संबंधित मुद्दा गंभीर चिंता का विषय था।

यह पाया गया कि राज्य में बेरोजगारी अपेक्षाकृत अधिक थी। स्नातक और उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों के बीच बेरोजगारी की समस्या और भी गंभीर थी। इसलिये वे कमजोर और आसान लक्ष्य थे।

डीआईजी रेंज और उसके ऊपर के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उनकी समीक्षा बैठक में यह बात सामने आई कि वैश्विक स्तर पर एक नया आतंकवादी समूह उभरा है। इसने युवा बेरोजगार लोगों की भर्ती के लिये बड़े पैमाने पर अभियान चलाया है। किसी विशिष्ट समुदाय से युवाओं को चुनने के लिये विशेष ध्यान दिया जा रहा था। उक्त संगठन का स्पष्ट उद्देश्य आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के लिये उनका उपयोग करना था। यह भी पता चला कि उक्त (नया) समूह उनके राज्य में अपना जाल फैलाने की पूरी कोशिश कर रहा है।

राज्य सीआईडी और साइबर सेल को एक निश्चित/विश्वसनीय खुफिया सूचना मिली थी कि बड़ी संख्या में ऐसे बेरोजगार युवाओं से सोशल मीडिया और स्थानीय सांप्रदायिक संगठनों तथा अन्य संपर्कों के माध्यम से आतंकवादी संगठन/समूह ने संपर्क किया है। समय की माँग है कि तेजी से कार्यवाही की जाए और इन तत्त्वों/योजनाओं को गंभीर रूप लेने से पहले ही रोक दिया जाए।

साइबर सेल के माध्यम से पुलिस द्वारा की गई जाँच से पता चला कि बड़ी संख्या में बेरोजगार युवा फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर पर बहुत सक्रिय हैं। उनमें से कई औसतन हर दिन 6-8 घंटे इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस/इंटरनेट, आदि का उपयोग करते हुए बिता रहे थे। ये भी पता चला कि ऐसे बेरोजगार युवा उस वैश्विक आतंकवादी समूह के खास व्यक्तियों (उनके संपर्क वाले) से प्राप्त संदेशों का समर्थन और सहानुभूति दिखा रहे थे। उनके सोशल मीडिया अकाउंट से पता चला कि ऐसे समूहों के साथ उनका गहरा जुड़ाव है, यहाँ तक कि उनमें से कई ने अपने वॉट्सएप और फेसबुक, आदि पर राष्ट्र-विरोधी ट्वीट फॉर्वर्ड करना शुरू

कर दिया है। ऐसा लग रहा था कि वे उनकी चाल में फँस गए और अलगाववादी विचारधारा का प्रचार करने लगे हैं।, उनके पोस्ट सरकार की पहलों, नीतियों की अति आलोचना करने वाली थे और अतिवादी मान्यताओं को मानने वाले और उग्रवाद को बढ़ावा देने वाली थे।

(a) उपर्युक्त स्थिति से निपटने के लिये रमण के पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) आप मौजूदा व्यवस्था को मजबूत करने के लिये क्या उपाय सुझाएँगे ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ऐसे समूह राज्य में घुसपैठ करने और माहौल खराब करने में सफल न हो सकें?

(c) उपर्युक्त परिदृश्य में, पुलिस बल की खुफिया जानकारी एकत्र करने की प्रणाली को बढ़ाने के लिये आप क्या कार्य योजना सुझाएँगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Raman is a senior IPS officer and has recently been posted as D.G. of a state. Among the various issues and problems/challenges which needed his immediate attention, the issue relating to recruitment of unemployed youth by an unknown terrorist group, was a matter of grave concern.

It was noted that unemployment was relatively high in the state. The problem of unemployment amongst graduates and those with higher education was much more grave. Thus they were vulnerable and soft targets.

In the review meeting taken by him with senior officers of DIG Range and above, it came to light that a new terrorist group has emerged at the global level. It has launched a massive drive to recruit young unemployed people. Special focus was to pick young people from a particular community. The said organisation seemed to have the clear objective e of utilising/using them for carrying out militant activities. It was also gathered that the said (new) group is desperately trying to spread its tentacles in his state.

A definite/reliable intelligence tip was received by the State CID and Cyber Cell that a large number of such unemployed youth have already been contacted by the terrorist outfit/group through social media and local communal organisations and other contacts. The need of the hour was to act swiftly and to check these elements/designs before they assume serious proportions.

Discrete inquiries made by the police, through the Cyber Cell, revealed that good numbers of unemployed youth are very active on Facebook, Instagram and Twitter. On an average, many of them were spending 6-8 hours each day, using electronic devices/internet, etc. It also came to light that such unemployed youth were showing sympathy and endorsing the messages received from certain persons, allegedly the contact persons of that global terrorist group. Their social media accounts revealed their strong affinity to such groups inasmuch as many of them started forwarding anti-national tweets on their WhatsApp and Facebook, etc. It seemed that they,succumbed to their ploy and started propagating secessionist ideology. Their posts were hyper-critical of the government's initiatives, policies and subscribing to extreme beliefs and promoting extremism. Power tactics

(a) What are the options available to Raman to tackle the above situation?

(b) What measures would you suggest for strengthening the existing set-up to ensure that such groups do not succeed in penetrating 'and vitiating the atmosphere in the state?

(c) In the above scenario, what action plan would you advise for enhancing the intelligence gathering mechanism of the police force?

उत्तर : नवनियुक्त महानिदेशक के रूप में रमन के समक्ष एक वैश्विक चरमपंथी समूह द्वारा बेरोज़गार युवाओं की आतंकवाद के रूप में भर्ती को रोकना एक गंभीर चुनौती है। इस परिस्थिति में समूह को अपना प्रभाव फैलाने और राज्य के सामाजिक ढाँचे को अस्थिर करने से रोकने के लिये तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है।

(a) रमन के लिये उपलब्ध विकल्प

- **साइबर निगरानी:** शीघ्र हस्तक्षेप के लिये चरमपंथी खातों पर नज़र रखने हेतु सोशल मीडिया पर निगरानी रखना।
- **खुफिया सहयोग:** वास्तविक समय की आतंकवादी खुफिया जानकारी के लिये रॉ और आईबी जैसी एजेंसियों के साथ काम करना।
- **जन जागरूकता:** युवाओं को उग्रवाद के खतरों के बारे में शिक्षित करने के लिये अभियान चलाना।
- **कट्टरपंथ से मुक्ति:** चरमपंथी आख्यानों का सामना करने के लिये धार्मिक और सामुदायिक नेताओं के साथ साझेदारी करना।
- **विधिक प्रवर्तन:** आतंकवाद विरोधी दस्तों को तैनात करना और यूएपीए के तहत त्वरित कार्रवाई करना।

(b) मौजूदा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के उपाय

- **साइबर इंटेलिजेंस को बढ़ावा:** ऑनलाइन आतंकवादी ट्रैकिंग के लिये उन्नत तकनीक के साथ साइबर सेल को उन्नत करना तथा डिजिटल साक्ष्य हैंडलिंग और सोशल मीडिया विश्लेषण के लिये कर्मियों को प्रशिक्षित करना।
- **सामुदायिक सहभागिता:** युवाओं की कट्टरता का सामना करने और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिये नेताओं तथा गैर-सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करना।
- **युवा रोज़गार:** युवाओं में उग्रवाद के प्रति संवेदनशीलता को कम करने के लिये कौशल विकास और उद्यमिता कार्यक्रम शुरू करना।
- **फर्जी खबरों को रोकना:** गलत सूचना और दुष्प्रचार के प्रसार से निपटने के लिये तथ्य-जाँच इकाइयों को मज़बूत करना।

- **एजेंसियों के साथ समन्वय:** निर्बाध सूचना-साझाकरण और एकीकृत राष्ट्रीय सुरक्षा प्रयासों के लिये खुफिया एजेंसियों (NATGRID) के बीच समन्वय बढ़ाना।

(c) खुफिया जानकारी एकत्रित करने हेतु कार्य योजना

- **HUMINT नेटवर्क का विस्तार:** गतिविधियों और संभावित भर्तियों के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी एकत्र करने के लिये सुभेद्य समुदायों के भीतर खुफिया अभिकर्त्ताओं की संख्या बढ़ाना।
- **प्रौद्योगिकी और डाटा एनालेसिस:** सोशल मीडिया की निगरानी, भर्ती पैटर्न और संभावित खतरों की पहचान के लिये AI तथा डाटा एनालेसिस का उपयोग करना।
- **सामुदायिक पुलिसिंग:** नागरिकों को संदिग्ध गतिविधियों की सूचना देने के लिये प्रोत्साहित करना, ज़मीनी स्तर पर भागीदारी के माध्यम से शीघ्र पता लगाना।
- **प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण:** खुफिया जानकारी एकत्रित करने, साइबर जाँच और डिजिटल साक्ष्य प्रबंधन में विशेष प्रशिक्षण प्रदान करना, संसाधन-साझाकरण के लिये अंतर-एजेंसी सहयोग को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष: रमण को नैतिक ज़िम्मेदारी के साथ विधिक प्रवर्तन को संतुलित करना होगा, कमज़ोर युवाओं की सुरक्षा करते हुए उनके अधिकारों का सम्मान करना होगा। समुदायों को शामिल करके और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, वह आतंकवाद का सामना कर सकते हैं तथा समावेशी सामाजिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।

प्रश्न: पिछले कुछ वर्षों में, विशेष रूप से, केन्द्र और राज्य सरकारों की बहुआयामी रणनीति के चलते देश के प्रभावित राज्यों में नक्सली समस्या का काफी हद तक निराकरण हुआ है। हालाँकि, कुछ राज्यों में कई इलाके ऐसे हैं जहाँ नक्सली समस्या अभी भी मुख्य रूप से विदेशी देशों की दखलअंदाजी के कारण बनी हुई है। रोहित पिछले एक साल से किसी जिले में एसपी (स्पेशल ऑपरेशन) के पद पर तैनात हैं, जो अभी भी नक्सली समस्या से प्रभावित है। जिला प्रशासन ने लोगों का दिल और दिमाग जीतने के लिये हाल के दिनों में नक्सल प्रभावित इलाकों में कई विकासमूलक कार्य अपनाए हैं। पिछले कुछ समय से, रोहित ने नक्सली कैडर की गतिविधियों के बारे में वास्तविक समय की जानकारी प्राप्त करने के लिये एक उत्कृष्ट खुफिया नेटवर्क स्थापित किया है। जनता में विश्वास जगाने और नक्सलियों पर नैतिक प्रभुत्व जताने के लिये पुलिस द्वारा कई जगह घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। रोहित स्वयं एक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। उन्हें अपने खुफिया सूत्र के माध्यम से संदेश मिला कि लगभग दस कट्टर नक्सली अत्याधुनिक हथियारों के साथ विशेष गाँव में छिपे हुए थे। बिना कोई समय गँवाए, रोहित ने अपनी टीम के साथ उस खास गाँव में पहुँच कर पूर्ण सुरक्षा का घेरा बनाया तथा व्यवस्थित तलाशी लेना शुरू कर दिया। तलाशी के दौरान, उनकी टीम सभी नक्सलियों पर स्वचालित हथियारों के साथ काबू पाने में कामयाब रही। हालाँकि, इस बीच पाँच सौ से अधिक आदिवासी महिलाओं ने गाँव को घेर लिया और लक्ष्य घर की ओर मार्च करना शुरू कर दिया। वे चिल्ला रही थीं और उपद्रवियों की तत्काल रिहाई की माँग कर रही थीं क्योंकि वे उनके संरक्षक और उद्धारक हैं।,जमीनी हालात बहुत गंभीर होते जा रहे थे क्योंकि आदिवासी महिलाएँ अत्यंत उत्तेजित और आक्रामक थीं। रोहित ने अपने उच्च अधिकारी, राज्य के आईजी (स्पेशल ऑपरेशन्स) से रेडियो सेट और मोबाइल फोन से संपर्क स्थापित करना चाहा, लेकिन कमजोर कनेक्टिविटी के कारण वैसा कर पाने में वे असफल रहे। रोहित की बड़ी दुविधा थी कि पकड़े गए नक्सलियों में दो न केवल चोटी के कट्टर उग्रपंथी थे, जिनके सिर पर दस लाख रुपयों का इनाम था, बल्कि वे हाल ही में सुरक्षा बलों पर घात लगाकर किए गए हमले में भी शामिल थे। हालाँकि, अगर नक्सलियों को नहीं छोड़ा गया तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो सकती थी। यह इसलिये कि आदिवासी महिलाएँ आक्रामक रूप से उनकी ओर बढ़ रही थीं। उस स्थिति में, हालात को नियंत्रित करने के लिये रोहित को गोलीबारी का सहारा लेना पड़ सकता है, जिससे नागरिकों की बेशकीमती जान जा सकती है एवं स्थिति और भी गंभीर हो जाएगी।

(a) इस स्थिति से निपटने के लिये रोहित के पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) रोहित को किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है?

(c) आपके अनुसार रोहित के लिये कौन-सा विकल्प अपनाना अधिक उपयुक्त होगा और क्यों?

(d) मौजूदा स्थिति में, महिला प्रदर्शनकारियों के साथ पुलिस द्वारा क्या अतिरिक्त एहतियाती कदम उठाए जाने चाहिये?

(250 शब्द, 20 अंक)

With multipronged strategy of the Central and State Governments specially in the last few years, the naxalite problem has been resolved to a large extent in the affected states of the country. However, there are a few pockets in certain states where naxalite problem still persists, mainly due to involvement of foreign countries. Rohit is posted as SP (Special Operations) for the last one year, in one of the districts which is still affected by the naxalite problem. The district administration has taken a lot of developmental works in the recent past in the naxalite affected areas to win the hearts and minds of the people. Over a period of time, Rohit has established an excellent intelligence network to get the real time information regarding the movement of naxalite cadre. To instill confidence in the public and

have moral ascendancy over the naxalites, a number of cordons and search operations are being conducted by the police. Rohit, who himself was leading one of the contingents got a message though his intelligence source that about ten hard core naxalites were hiding in a particular village with sophisticated weapons. Without wasting any time, Rohit reached the target village with his team and laid out a foolproof cordon and started carrying out a systematic search. During the search, his team managed to overpower all the naxalites along with their automatic weapons. ,However, in the meantime, more than five hundred tribal women surrounded the village and started marching towards the target house. They were shouting and demanding the immediate release of insurgents since they are their protectors and saviours. The situation on the ground was becoming very critical as the tribal women were extremely agitated and aggressive. Rohit tried to contact his superior officer, IG (Special Operations) of the state on the radio set and on mobile phone, but failed to do so due to poor connectivity Rohit was in great dilemma since out of the naxalites apprehended, two were not only hard core top insurgents with prize money of ten lakhs on their heads, but were also involved in a recent ambush on the security forces. However, if he did not release the naxalites, the situation could get out of control since the tribal women were aggressively charging towards them. In that case, to control the situation Rohit might have to resort to firing which may lead to valuable loss of lives of civilians and would further complicate the situation.

(a) What are the options available with Rohit to cope with the situation?

(b) What are the ethical dilemmas being faced by Rohit?

(c) Which of the options, do you think, would be more appropriate for Rohit to adopt and why?

(d) In the present situation, what are the extra precautionary measures to be taken by the police in dealing with women protesters?

उत्तर : कट्टर नक्सलियों की गिरफ्तारी से नाराज आदिवासी महिलाओं का एक समूह हिंसक होने की धमकी देता है, जो नक्सलवाद से पीड़ित ज़िले के एसपी रोहित के लिये एक गंभीर खतरा है। सार्वजनिक सुरक्षा, सामुदायिक संबंधों और कानूनी प्रवर्तन हेतु, उसे अपनी प्रतिक्रिया में रणनीतिक रूप से कार्य करना चाहिये।

(a) रोहित के पास उपलब्ध विकल्प:

- रोहित अपने खुफिया नेटवर्क का उपयोग नक्सलियों के अपराधों और समुदाय के लिये उनके खतरे को समझाने के लिये कर सकते हैं, जिसका उद्देश्य प्रदर्शनकारियों को शांत करना है।
- रोहित निचले स्तर के उग्रवादियों को रिहा कर सकते हैं, जबकि शीर्ष स्तर के उग्रवादियों को अस्थायी समझौते के लिये हिरासत में रख सकते हैं।
- यदि वार्ता विफल हो जाती है, तब वह तनाव को बढ़ने से रोकने के लिये सावधानीपूर्वक गैर-घातक तरीकों का उपयोग कर सकता है।
- वह स्थिति को शांत करने के लिये ऑपरेशन रोक सकते थे और अपने वरिष्ठ अधिकारियों से वैकल्पिक संवाद स्थापित कर सकते थे।

(b) रोहित के सामने नैतिक दुविधाएँ:

- सार्वजनिक विश्वास बनाम कानून प्रवर्तन: हिंसक टकराव सरकार के विकास प्रयासों में जनता के विश्वास को कमज़ोर कर सकता है।
- अल्पकालिक शांति बनाम दीर्घकालिक न्याय: नक्सलियों को रिहा करने से अस्थायी राहत मिल सकती है, लेकिन दीर्घकालिक न्याय खतरे में पड़ सकता है।
- महिलाओं का विरोध बनाम सार्वजनिक सुरक्षा: महिलाओं की उपस्थिति नैतिक दुविधा को जटिल बनाती है, क्योंकि बल का प्रयोग कमज़ोर समूह के विरुद्ध सत्ता के दुरुपयोग के रूप में माना जा सकता है।

(c) रोहित के लिये सबसे उपयुक्त विकल्प:

- रोहित को बातचीत को प्राथमिकता देनी चाहिये, अपने खुफिया नेटवर्क का प्रयोग करके आदिवासी महिलाओं से संपर्क करना चाहिये, साथ ही गैर-घातक भीड़ नियंत्रण उपायों को अपनाना चाहिये। इससे तनाव कम होगा, विश्वास बढ़ेगा और हिंसा से बचा जा सकेगा, शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा मिलेगा तथा साथ ही यह सुनिश्चित होगा कि विद्रोही हिरासत में रहें, जिससे समुदाय के प्रति सम्मान प्रदर्शित होगा।

(d) महिला प्रदर्शनकारियों से निपटने में अतिरिक्त एहतियाती उपाय:

- महिला प्रदर्शनकारियों से सहानुभूतिपूर्वक निपटने के लिये अधिकारियों को लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। पुलिस को ऐसी कार्रवाइयों से बचना चाहिये जो स्थिति को भड़का सकती हैं या बढ़ा सकती हैं।
- भीड़ में महिलाओं के साथ बातचीत करने के लिये महिला अधिकारियों को तैनात करने, जिससे तनाव कम करने और विश्वास बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
- स्थिति को शांत करने के लिये अपनी शक्ति का प्रयोग करते हुए, स्थानीय नेताओं को मध्यस्थता के माध्यम से भीड़ को शांत करने में शामिल होना चाहिये।

निष्कर्ष: रोहित को कानून प्रवर्तन और जनता के विश्वास के बीच संतुलन बनाना होगा। बातचीत और सामुदायिक सहभागिता को प्राथमिकता देकर, वह हिंसा को रोक सकता है तथा स्थिरता को बढ़ावा दे सकता है, जिससे प्रभावी पुलिसिंग एवं स्थायी शांति सुनिश्चित हो सके।

प्रश्न: स्नेहा एक वरिष्ठ प्रबंधक हैं जो एक मध्यम आकार वाले शहर में एक बड़ी प्रतिष्ठित अस्पताल श्रृंखला के लिये काम करती हैं। उन्हें एक नए सुपर स्पेशियलिटी सेंटर का प्रभारी बनाया गया है जिसे अस्पताल अत्याधुनिक उपकरणों और विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधाओं के साथ बना रहा है। भवन का पुनर्निर्माण किया गया है और वह विभिन्न उपकरणों और मशीनों की खरीद की प्रक्रिया शुरू कर रही हैं। खरीद के लिये ज़िम्मेदार समिति के प्रमुख के रूप में उन्होंने चिकित्सा

उपकरणों का कारोबार करने वाले सभी प्रतिष्ठित इच्छुक विक्रेताओं से बोलियाँ आमंत्रित की हैं। उन्होंने देखा कि उनका भाई, जो इस क्षेत्र में एक प्रसिद्ध आपूर्तिकर्ता है, ने भी अपनी रुचि व्यक्त की है। चूँकि अस्पताल निजी स्वामित्व में है, इसलिये उनके लिये केवल कम बोली लगाने वाले को चुनना अनिवार्य नहीं है। इसके अलावा उन्हें ज्ञात है कि उनके भाई की कंपनी कुछ वित्तीय कठिनाइयों का सामना कर रही है और बड़ी आपूर्ति का एक आदेश उसे उबारने में सहायता करेगा। साथ ही उनके भाई को अनुबंध आबंटित करना, उनके खिलाफ पक्षपात का आरोप हो सकता है और उनकी छवि खराब कर सकता है। अस्पताल प्रबंधन उन पर पूरा भरोसा करता है और उनके किसी भी फैसले का समर्थन करेगा।

(a) स्नेहा को क्या करना चाहिये?

(b) वह जो करना चाहती हैं उसे कैसे उचित सिद्ध करेंगी?

(c) इस मामले में, चिकित्सा नैतिकता कैसे निहित व्यक्तिगत हित से युक्त है? (250 शब्द, 20 अंक)

Sneha is a Senior Manager working for a big reputed hospital chain in a mid-sized city. She has been made in-charge of the new super speciality center that the hospital is building with state-of-the art equipment and world class medical facilities- The building has been reconstructed and she is starting the process of procurement for various equipment and machines. As the head of the committee responsible for procurement, she has invited bids from all the interested reputed vendors dealing in medical equipment. She notices that her brother, who is a well-known supplier in this domain, has also sent his expression of interest. Since the hospital is privately owned, it is not mandatory for her to select only the lower bidder. Also, she is aware that her brother's company has been facing some financial difficulties and a big supply order will help him recover. At the same time, allocating the contract to her brother might bring charges of favouritism against her and tarnish her image The hospital management trusts her fully and would support any decision of hers.

(a) What should be Sneha's course of action?

(b) How would she justify what she chooses to do?

(c) In this case, how is medical ethics compromised with vested personal interest?

उत्तर : विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा उद्योग में, जहाँ निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा रोगी देखभाल मानकों एवं विश्वास को बनाए रखने के लिये महत्त्वपूर्ण हैं, व्यक्तिगत संबंधों एवं व्यावसायिक दायित्वों के बीच संभावित संघर्ष खरीद निर्णयों के संदर्भ में नैतिक मानकों को गंभीर रूप से कमज़ोर कर सकता है।

(a) व्यावसायिक ईमानदारी और नैतिक व्यवहार स्नेहा की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिये। उसे निम्नलिखित विकल्पों का चयन करना चहिये:

- अपने भाई की उम्मीदवारी से उत्पन्न हितों के टकराव का हवाला देते हुए, उन्होंने खरीद समिति से त्याग-पत्र दे देना चहिये।
- अस्पताल प्रशासन को परिस्थितियों से अवगत कराने के साथ खरीद प्रक्रिया की निगरानी के लिये एक निष्पक्ष समिति गठित करने का अनुरोध करें।
- सुनिश्चित करें कि बोली प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी हो और प्रत्येक विक्रेता को समान महत्त्व दिया जाए।

(b) स्नेहा इस बात पर ज़ोर देकर अपने कार्यों को उचित ठहरा सकती है:

- **नैतिक उत्तरदायित्व:** खरीद समिति की अध्यक्ष के रूप में उनकी पहली ज़िम्मेदारी अस्पताल और उसके मरीजों के प्रति है।
- **पारदर्शिता:** वह हितों के टकराव की घोषणा करके अस्पताल के कर्मियों और प्रबंधन का विश्वास बनाए रखती है।
- **निष्पक्षता:** स्वयं को इससे अलग करने से सभी के लिये निष्पक्ष चयन प्रक्रिया सुनिश्चित होती है।
- **व्यावसायिकता:** उनके कार्य अस्पताल की प्रतिष्ठा और सत्यनिष्ठा को बनाए रखने के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं।

(c) इस मामले में अंतर्निहित चिकित्सा नैतिकता को निम्नलिखित द्वारा चुनौती दी गई है:

- **संभावित पूर्वाग्रह:** यहाँ तक कि यह सूक्ष्म रूप से, स्नेहा का व्यक्तिगत संबंध निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है।
- **रोगी देखभाल में समझौता:** गुणवत्ता की अपेक्षा प्रतिष्ठा के आधार पर उपकरणों का चयन करने से चिकित्सीय सेवाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली देखभाल का स्तर प्रभावित हो सकता है।
- **पद का दुरुपयोग:** अपने परिवार के किसी सदस्य को लाभ पहुँचाने के लिये अपने अधिकार का प्रयोग करने से सत्ता का दुरुपयोग होगा।
- **विश्वास में कमी:** यदि यह स्थिति सामने आ जाए तो इससे अस्पताल की कार्यप्रणाली में जनता का विश्वास खत्म हो सकता है।

निष्कर्ष: एक विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवा वातावरण, नैतिक सिद्धांतों का पालन करने वाली खरीद प्रक्रिया पर निर्भर करता है। पारदर्शिता एवं समानता को बढ़ावा देने के माध्यम से स्नेहा द्वारा अस्पताल में गुणवत्तापूर्ण रोगी देखभाल के साथ-साथ जनता के विश्वास में वृद्धि कर सकता है।

प्रश्न: इस वर्ष असाधारण रूप से भीषण गर्मी होने के कारण, ज़िले को पानी की घोर कमी का सामना करना पड़ रहा है। ज़िला कलेक्टर ज़िले को गंभीर पेयजल संकट से उबारने हेतु शेष जल भंडार को संरक्षित करने के लिये अपने अधीनस्थ अधिकारियों को सक्रिय कर रहे हैं। जल संरक्षण के लिये जागरूकता अभियान के साथ-साथ भूजल के अत्यधिक दोहन को रोकने के लिये सख्त कदम उठाए गए हैं। गाँवों का दौरा करने हेतु सतर्कता दल तैनात किये गए हैं। सिंचाई के लिये गहरे बोरवेल अथवा नदी जलाशय से पानी खींचने वाले किसानों की शिनाख्त की जा रही है। ऐसी कार्रवाई से किसान आक्रोश में आ जाते हैं। किसानों का एक प्रतिनिधिमंडल अपने मुद्दों को लेकर ज़िला कलेक्टर से मिलता है और

शिकायत करता है कि जहाँ उन्हें अपनी फसल की सिंचाई की अनुमति नहीं दी जा रही है, वहीं नदी के पास स्थित बड़े उद्योग अपनी औद्योगिक प्रक्रियाओं के लिये गहरे बोरवेल के माध्यम से भारी मात्रा में पानी खींच रहे हैं। किसानों का आरोप है कि उनका प्रशासन किसान विरोधी और भ्रष्ट है, जिसे उद्योग द्वारा रिश्वत दी जा रही है। ज़िलों को, किसानों को शांत करने की ज़रूरत है क्योंकि वे लंबे समय तक विरोध प्रदर्शन करने की धमकी दे रहे हैं। वहीं ज़िला कलेक्टर को जल संकट से निपटना भी होगा। उद्योग को बंद नहीं किया जा सकता क्योंकि इससे बड़ी संख्या में श्रमिक बेरोज़गार हो जाएंगे।

(a) एक ज़िला मजिस्ट्रेट के रूप में ज़िला कलेक्टर के लिये उपलब्ध सभी विकल्पों पर चर्चा कीजिये।

(b) हितधारकों के परस्पर अनुकूल हितों को ध्यान में रखते हुए कौन-सी उचित कार्रवाइयाँ की जा सकती हैं?

(c) ज़िला कलेक्टर के लिये संभावित प्रशासनिक और नैतिक दुविधाएँ क्या हैं? (250 शब्द, 20 अंक)

With the summer heat being exceptionally severe this year, the district has been facing severe water shortage. The District Collector has been mobilizing his subordinate officials to conserve the remaining water reserves for preventing the district from plunging into acute drinking water crisis. Along with an awareness campaign, for conserving water, (strict measures have been taken for stopping the over-exploitation of ground-water. Vigilance teams have been deployed to tour the villages and find the farmers who are drawing water from deep borewells or from the river reservoir for irrigation. The farmers are agitated by such action. A delegation of farmers meets the District Collector with their issues and complains that while they are not being allowed to irrigate their crops. big industries located near the river are drawing huge amounts of water through deep borewells for their industrial processes. The farmers allege that their administration is anti-farmer and corrupt, being bribed by the industry. The district needs to placate the farmers as they are threatening to go on a prolonged protest. At the same time, the District Collector has to deal with the water crisis. The industry cannot be closed as this would result in a large number of workers being unemployed.

(a) Discuss all options available to the District Collector as a District Magistrate.

(b) What suitable actions can be taken in view of mutually compatible interests of the stakeholders?

(c) What are the potential administrative and ethical dilemmas for the District Collector?

उत्तर : भूजल उपयोग पर प्रतिबंधों को लेकर किसानों के विरोध प्रदर्शन के बीच ज़िला कलेक्टर (DC) पानी की गंभीर कमी से जूझ रहा है। किसान प्रशासन पर उद्योगों के प्रति पक्षपात करने का आरोप लगाते हैं, जबकि रोज़गार की चिंताओं के कारण औद्योगिक संचालन को रोका नहीं जा सकता।

(a) ज़िला मजिस्ट्रेट के रूप में ज़िला कलेक्टर (DC) के लिये उपलब्ध सभी विकल्प।

- **जल प्रतिबंध लागू करना:** किसानों और उद्योगों दोनों के लिये जल संरक्षण उपायों को सख्ती से लागू करना।
- **उद्योगों पर अस्थायी प्रतिबंध:** जल उपयोग पर अस्थायी सीमाएँ लागू करना और उद्योगों को कुशल जल-उपयोग प्रौद्योगिकियाँ अपनाने में सहायता करना।
- **न्यायसंगत जल वितरण:** संभवत: राशनिंग या जल-बचत प्रौद्योगिकियों के माध्यम से, उचित जल वितरण के लिये किसानों और उद्योगों के बीच बातचीत को सुविधाजनक बनाना।
- **वैकल्पिक जल स्रोत:** आस-पास के ज़िलों से जल परिवहन, वर्षा जल संचयन, उद्योगों में पुनर्चक्रण, या बाह्य स्रोत का उपयोग जैसे विकल्पों का पता लगाना।

(b) हितधारकों के पारस्परिक रूप से सुसंगत हितों को ध्यान में रखते हुए क्या उपयुक्त कार्रवाई की जा सकती है?

- **समतामूलक जल वितरण:** कृषि और उद्योगों के लिये जल राशनिंग को लागू करना, जल-कुशल प्रौद्योगिकियों तथा सीमित सिंचाई को प्रोत्साहित करना।
- **जल संरक्षण को बढ़ावा देना:** किसानों को ड्रिप सिंचाई अपनाने के लिये प्रोत्साहन प्रदान करना तथा उद्योगों को अपशिष्ट जल का पुनर्चक्रण करने के लिये प्रोत्साहित करना।
- **जन जागरूकता:** सामूहिक ज़िम्मेदारी को उजागर करने और किसानों की निराशा को कम करने के लिये जल संरक्षण अभियानों का विस्तार करना।
- **शिकायत निवारण:** संचार को बढ़ावा देने और विवादों के निपटान के लिये किसानों तथा उद्योगों के लिये एक बहु-हितधारक मंच की स्थापना करना।

(c) ज़िला कलेक्टर के लिये संभावित प्रशासनिक और नैतिक दुविधाएँ क्या हैं?

- **समता बनाम दक्षता:** कलेक्टर को आर्थिक उत्पादकता से समझौता किये बिना किसानों और उद्योगों के बीच उचित जल वितरण को संतुलित करना चाहिये। किसी एक का पक्ष लेने से अकुशलता या पक्षपात की आशंका हो सकती है।
- **किसानों के हित बनाम औद्योगिक हित:** किसानों और उद्योगों दोनों की जल आवश्यकताओं को पूरा करने में चुनौती है, क्योंकि किसी एक का पक्ष लेने से दूसरे समूह में अशांति पैदा हो सकती है।
- **पारदर्शिता बनाम भ्रष्टाचार:** किसानों की पक्षपात और भ्रष्टाचार संबंधी चिंताओं का समाधान करते हुए पारदर्शिता सुनिश्चित करना कलेक्टर के लिये एक प्रमुख नैतिक दुविधा है।

- **सार्वजनिक विश्वास बनाम दीर्घकालिक स्थिरता:** कलेक्टर को भविष्य में संकटों को रोकने के लिये स्थायी जल प्रबंधन के साथ तत्काल सार्वजनिक मांगों को संतुलित करना चाहिये। अल्पकालिक लाभ से दीर्घकालिक स्थिरता प्रभावित नहीं होनी चाहिये।

निष्कर्ष: इस मुद्दे का समाधान करने तथा जनता के विश्वास और आर्थिक स्थिरता को बनाए रखने के लिये, ज़िला कलेक्टर को जल संसाधनों के न्यायसंगत वितरण की गारंटी देनी चाहिये, हितधारकों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करना चाहिये तथा जल-बचत प्रौद्योगिकियों को लागू करना चाहिये।

प्रश्न: डॉ. श्रीनिवासन एक प्रतिष्ठित जैव प्रौद्योगिकी कंपनी में कार्यरत एक वरिष्ठ वैज्ञानिक हैं। यह कंपनी फार्मास्युटिकल में अपने अत्याधुनिक शोध के लिये जानी जाती है। डॉ. श्रीनिवासन किसी नई दवा पर काम करने वाली एक शोध टीम का नेतृत्व कर रहे हैं, जिसका उद्देश्य एक नए वाइरस (विषाणु) से तेजी से फैलने वाले संक्रमित रोग का इलाज करना है। यह बीमारी दुनिया भर में तेजी से फैल रही है और देश में इसके मामलों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। डॉ. श्रीनिवासन की टीम पर इस दवा के,ट्रायल में तेजी लाने का बहुत दबाव है क्योंकि इसके लिये बाज़ार में काफी माँग है और कंपनी बाज़ार में पहला कदम रखने का फायदा उठाना चाहती है। टीम मीटिंग के दौरान, टीम के कुछ वरिष्ठ सदस्यों ने दवा के क्लिनिकल (नैदानिक) परीक्षणों में तेजी लाने और अपेक्षित अनुमोदन प्राप्त करने के लिये कुछ शॉर्टकट सुझाए। इनमें कुछ नकारात्मक परिणामों को बाहर करने के लिये डेटा में हेरफेर करना और चुनिंदा रूप में सकारात्मक परिणामों की रिपोर्ट करना, सूचित सहमति की प्रक्रिया को छोड़ देना और स्वयं का घटक विकसित करने के बजाए, प्रतिद्वंद्वी कंपनी द्वारा पहले से पेटेंट किए गए यौगिकों का उपयोग करना शामिल हैं। डॉ. श्रीनिवासन ऐसे शॉर्टकट लेने में सहज नहीं हैं, साथ ही उन्हें यह भी पता चला है कि इन तरीकों का उपयोग किए बिना लक्ष्यों को पूरा करना असंभव है।

(a) ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

(b) इसमें शामिल नैतिक प्रश्नों के प्रकाश में अपने विकल्पों और परिणामों का परीक्षण कीजिए।

(c) ऐसे परिदृश्य में, डेटा नैतिकता और औषधि नैतिकता किस प्रकार बड़े पैमाने पर मानवता को बचा सकती हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

Dr. Srinivasan is a senior scientist working for a reputed biotechnology company known for its cutting-edge research in pharmaceuticals. Dr. Srinivasan is heading a research team working on a new drug aimed at treating a rapidly spreading variant of a new viral infectious disease. The disease has been rapidly spreading across the world and the cases reported in the country are increasing. There is huge pressure on Dr. Srinivasan's team to expedite the trials for the drug as there is significant market for it, and the company wants to get the first-mover advantage in the market. During a team meeting, some senior team members suggest some shortcut for expediting the clinical trials for the drug and for getting the requisite approvals. These include manipulating data to exclude some negative outcomes and selectively reporting positive results, foregoing the process of informed consent and using compounds already patented by a rival company, rather than developing one's own component. Dr. Srinivasan is not comfortable taking such shortcuts, at the same time he realises meeting the targets is impossible without using these means.

(a) What would you do in such a situation?

(b) Examine your options and consequences in the light of the ethical questions involved.

(c) How can data ethics and drug ethics save humanity at large in such a scenario?

उत्तर : डॉ. श्रीनिवासन को नैतिक दुविधा का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि उनकी शोध टीम तेज़ी से फैल रही वायरल रोग के लिये दवा परीक्षणों में तेज़ी लाने के लिये अनैतिक प्रथाओं का सुझाव दे रही है। चुनौती यह है कि त्वरित सफलता के लिये पेशेवर सत्यनिष्ठा और बाज़ार के दबाव के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए।

हितधारक

- **डॉ. श्रीनिवासन (प्रमुख शोधकर्त्ता):** वैज्ञानिक अखंडता पर ध्यान केंद्रित; अनुसंधान में शॉर्टकट के विकल्प।
- **अनुसंधान दल:** समय-सीमा को पूरा करने के दबाव के कारण अनैतिक व्यवहार के सुझाव दिये गए।
- **जैव-प्रौद्योगिकी कंपनी:** वित्तीय लाभ और बाज़ार लाभ का लक्ष्य।
- **मरीज और आम जनता:** सुरक्षित और प्रभावी उपचार की तलाश में।

(a) डॉ. श्रीनिवासन के रूप में मैं नैदानिक परीक्षणों में नैतिक मानकों और पारदर्शिता को प्राथमिकता दूँगा। हालाँकि दबाव में वैज्ञानिक अखंडता से समझौता करने से सार्वजनिक स्वास्थ्य पर हानिकारक परिणाम हो सकते हैं। इसके बजाय मैं समय-सीमा को पूरा करने के लिये कानूनी विकल्पों की खोज पर ध्यान केंद्रित करूँगा, जैसे कि संसाधनों में वृद्धि या बाहरी संस्थानों के साथ सहयोग करना आदि।

(b) **विकल्प 1:** डाटा में हेरफेर करना और सूचित सहमति की अनदेखी करना

- **नैतिक मुद्दा:** वैज्ञानिक वैधता से समझौता, रोगी के विश्वास और सार्वजनिक सुरक्षा का उल्लंघन।
- **परिणाम:** हानिकारक औषधि के जारी होने से मुकदमे और सार्वजनिक अविश्वास उत्पन्न हो सकता है, लेकिन इससे प्रक्रिया में तेज़ी आ सकती है और वित्तीय लाभ में वृद्धि हो सकती है।

विकल्प 2: प्रतिद्वंद्वी के पेटेंट यौगिकों का उपयोग करना

- **नैतिक मुद्दा:** बौद्धिक संपदा का उल्लंघन, नैतिक और कानूनी मानकों का उल्लंघन।
- **परिणाम:** इससे कानूनी कार्रवाई का जोखिम रहता है और कंपनी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचता है, जिससे औषधि की प्रगति रुक सकती है; हालाँकि इससे उपचार तक त्वरित पहुँच भी संभव हो सकती है और प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ में सुधार हो सकता है।

विकल्प 3: नैतिक दिशा-निर्देशों का पालन करना

- **नैतिक मुद्दा:** डाटा अखंडता और रोगी सुरक्षा को बनाए रखना।
- **परिणाम:** नैतिक दिशा-निर्देशों के अनुपालन से औषधि के विकास में विलंब हो सकता है और कठोर परीक्षण के कारण लागत बढ़ सकती है, जिससे बाज़ार से प्राप्त होने वाले अवसरों से वंचित हो सकते हैं।
- हालाँकि नीति आयोग के नैतिक दिशा-निर्देशों के अनुसार, प्रतिभागियों की सुरक्षा और सार्वजनिक विश्वास के लिये नैतिक अनुसंधान महत्त्वपूर्ण है, जिससे यह रोगी की सुरक्षा तथा औषधियों के विकास में दीर्घकालिक विश्वसनीयता के लिये आवश्यक हो जाता है।

(c) डाटा नैतिकता सुनिश्चित करती है कि शोध पारदर्शी, पुनरुत्पादनीय और भरोसेमंद हो। औषधि की नैतिकता कठोर परीक्षण और सूचित सहमति के माध्यम से रोगी के अधिकारों तथा सुरक्षा को सुनिश्चित करती है।

निष्कर्ष: नैतिक मानकों को दबावपूर्वक भी बनाए रखना महत्त्वपूर्ण है। यह दीर्घकालिक सार्वजनिक स्वास्थ्य को सुरक्षित रखता है, वैज्ञानिक विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है और औषधि उद्योग की सामाजिक ज़िम्मेदारी को बनाए रखता है।

2023

प्रश्न: कई सालों से आप एक राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यपालक के रूप में कार्य कर रहे हैं। एक दिन आपकी एक नज़दीकी सहकर्मी ने आपको बताया कि उसके पिताजी दिल की बीमारी से पीड़ित हैं और उन्हें बचाने के लिये तुरंत ऑपरेशन की ज़रूरत है। उसने आपको यह भी बताया कि उसके पास कोई बीमा नहीं है और ऑपरेशन की लागत 10 लाख रुपए होगी। आप यह भी जानते हैं कि उसके पति नहीं रहे और वह निम्न-मध्यम-वर्ग परिवार से है। आप उसके हालात से समानुभूति रखते हैं। हालाँकि सहानुभूति के अलावा आपके पास रकम देने के लिये संसाधन नहीं हैं।

कुछ सप्ताह बाद आप उसके पिताजी की कुशलता के बारे में पूछते हैं और वह आपको उनके ऑपरेशन की सफलता के बारे में सूचित करती है कि उन्हें स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है। फिर उसने आपको गुप्त रूप से बताया कि बैंक मैनेजर इतने दयालु थे कि उन्होंने ₹10 लाख किसी के निष्क्रिय खाते से ऑपरेशन के लिये जारी कर दिये, इस वायदे के साथ कि यह गोपनीय होना चाहिये और जल्द-से-जल्द चुकाया जाए। उसने पहले ही रकम चुकाना शुरू कर दिया है और जब तक पूरी रकम चुकता नहीं हो जाती तब तक वह रकम भरती रहेगी।

(a) इसमें कौन से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?

(b) नैतिकता के नजरिये से बैंक मैनेजर के व्यवहार का मूल्यांकन कीजिये।

(c) इस हालात में आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are working as an executive in a nationalized bank for several years. One day one of your close colleagues tells you that her father is suffering from heart disease and needs surgery to service. She also tells you that she has no insurance and the operation will cost about Rs 10 lakh. You are also aware of the fact that her husband and that she is from a lower middle class family. You are empathetic about her situation. However, apart from expressing your sympathy, you do not have the resources to fund her.

A few weeks later, you ask her about the well-being of her father and she informs you about his successful surgery and that he is recovering. She then confides in you that the bank manager was kind enough to facilitate the release of 10 lakhs from a dormant account of someone to pay for the operation with a promise that it should be confidential and be repaid at the earliest. She has already started paying it back and will continue to do so until it is all returned.

(a) What are the ethical issues involved?

(b) Evaluate the behavior of the bank manager from an ethical point of view.

(c) How would you react to the situation?

उत्तर :

इस मामले में शामिल नैतिक मुद्दे

- गोपनीयता की गारंटी के साथ एक सहकर्मी के पिता के ऑपरेशन के लिये निष्क्रिय खाते से रुपए देने से बैंक प्रबंधक की निष्पक्षता, समता और खुलेपन के संबंध में चिंताएँ उत्पन्न होती हैं।
- सराहनीय कदम होने के बावजूद इससे संभावित रूप से स्थापित बैंकिंग प्रक्रियाओं की अवहेलना होती है, जो संभवत: अधिकार का दुरुपयोग है।
- पारदर्शिता की इस कमी से बैंक के ग्राहकों के संबंध में समान व्यवहार पर प्रश्न उठता है। उधार ली गई धनराशि का समय पर और उचित पुनर्भुगतान सुनिश्चित करना एक नैतिक ज़िम्मेदारी है। सहकर्मी द्वारा धन के स्रोत को प्रदर्शित न करने से गोपनीयता संबंधी चुनौती भी उत्पन्न होती है।

बैंक प्रबंधक के व्यवहार का मूल्यांकन

- एक सहकर्मी के पिता के ऑपरेशन में सहायता के लिये निष्क्रिय खाते से धनराशि जारी करने की सुविधा प्रदान करने में बैंक प्रबंधक के व्यवहार से करुणा एवं समानुभूति जैसे मूल्य प्रदर्शित होते हैं।
- गोपनीयता बनाए रखना आधारभूत बैंकिंग सिद्धांतों के अनुरूप है, जो विश्वास को बढ़ावा देता है।
- यह स्थिति स्थापित बैंकिंग प्रक्रियाओं का पालन करने और सभी ग्राहकों के साथ समान व्यवहार करने के संबंध में चिंताओं को प्रदर्शित करती है। यह वित्तीय संस्थानों में स्पष्ट नैतिक दिशा-निर्देशों के साथ मज़बूत उत्तरदायित्व की आवश्यकता पर भी बल देती है।

इस स्थिति पर मेरी प्रतिक्रिया

- इस स्थिति में मेरी प्रतिक्रिया मेरे सहकर्मी के प्रति समानुभूतिपूर्ण और सहायक की होगी, जिसमें सहकर्मी के पिता के स्वास्थ्य एवं उसकी वित्तीय स्थिति से संबंधित चुनौतियों को ध्यान में रखना शामिल होगा।
- मैं उनके कल्याण के साथ ही उनके पिता के स्वास्थ्य लाभ को ध्यान में रखने के साथ वित्तीय लेन-देन में नैतिक और विधिक मानकों का पालन करने के महत्त्व पर भी ज़ोर दूँगा।
- मैं उसे यह सुनिश्चित करने के लिये प्रोत्साहित करूँगा कि निष्क्रिय खाता संबंधी निधि के उपयोग सहित सभी कार्य, बैंकिंग नियमों के अनुपालन में होने के साथ पारदर्शी तरीके से संचालित हों।
- मैं वित्तीय सहायता के क्रम में उचित माध्यम खोजने का मार्गदर्शन करूँगा, ताकि वह प्रक्रिया में निष्पक्षता और जवाबदेहिता सुनिश्चित करते हुए निष्क्रिय खाते के रुपए समय पर अदा कर सके।

प्रश्न: उत्तरकाशी से लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर सुदूर पहाड़ी बस्ती में 20 जुलाई, 2023 की मध्यरात्रि में एक भूस्खलन हुआ। भूस्खलन मूसलाधार बारिश के कारण हुआ और नतीजतन जान-माल की हानि बड़े पैमाने पर हुई। आप उस क्षेत्र के ज़िला मजिस्ट्रेट होने के नाते डॉक्टरों के दल, एन.जी.ओ., मीडिया और पुलिस के साथ बहुत से सहायक स्टाफ को लेकर घटनास्थल पर बचाव अभियान के लिये तुरंत पहुँचे।

एक आदमी अपनी गर्भवती पत्नी की अत्यावश्यक चिकित्सा सहायता के लिये आपके पास भागता हुआ आया, जो प्रसव में है और उन्हें रक्तस्राव हो रहा है। आपने अपने चिकित्सक दल को उसकी पत्नी की जाँच करने का निर्देश दिया। उन्होंने वापस आकर आपको बताया कि उस महिला को तुरंत खून चढ़ाने की आवश्यकता है। पूछताछ करने पर आपको पता चला कि कुछ रक्त संग्रह बैग और रक्त समूह परीक्षण किट एम्बुलेंस में आपकी टीम के पास मौजूद हैं। आपकी टीम के कुछ सदस्य स्वेच्छा से अपना रक्तदान करने के लिये पहले से ही तैयार हैं।

एम्स से स्नातक चिकित्सक होने के नाते आप जानते हैं कि खून चढ़ाने के लिये मान्यता-प्राप्त ब्लड बैंक से ही रक्त के इंतज़ाम की आवश्यकता है। आपकी टीम के सदस्य इस मुद्दे पर बँटे हुए हैं, कुछ खून चढ़ाने के हक में हैं, जबकि कुछ इसके विरोध में हैं। यदि उन्हें खून चढ़ाने के लिये दंडित नहीं किया जाएगा तो टीम में शामिल डॉक्टर प्रसव कराने के लिये तैयार हैं। अब आप दुविधा में हैं। आपका पेशेवर प्रशिक्षण मानवता और लोगों का जीवन बचाने को प्राथमिकता देने पर ज़ोर देता है।

(a) इस मामले में कौन से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?

(b) क्षेत्र के ज़िला मजिस्ट्रेट होने के नाते आपके लिये उपलब्ध विकल्पों का मूल्यांकन करें। (250 शब्द, 20 अंक)

A landslide occurred in the middle of the night on 20th July. 2023 in a remote mountain hamlet, approximately 60 kilometers from Uttarkashi. The landslide was caused by torrential rains and has resulted in large-scale destruction of property and life. You, as District Magistrate of that area, have rushed to the spot with a team of doctors, NGOs, media and police along with numerous support staff to oversee the rescue operations.

A man came running to you with a request for urgent medical help for his pregnant wife who is in labour and in loosing blood. You directed your medal team to examine his wife. They return and convey to you that this woman needs blood transfusion immediately. Upon enquiry, you come to know that a few blood collection bags and blood group test kits are available in the ambulance accompanying your team. Few people of your team have already volunteered to donate blood.

Being a physician who has graduated from AIIMS, you know that blood for transfusion needs to be procured only through a recognized blood bank. Your team members are divided on this issue; some favour transfusing, while some others oppose it. The doctors in the team are ready to facilitate the delivery provided they are not penalised for transfusion. Now you are a dilemma. Your professional training emphasizes on prioritising service to humanity and saving lives of individuals.

(a) What are the ethical issues involved in this case?

(b) Evaluate the options available to you, being District Magistrate of the area.

उत्तर:

नैतिक मुद्दे

- **रोगी का कल्याण:** इस संदर्भ में सर्वोपरि नैतिक चिंता गर्भवती महिला और उसके अजन्मे बच्चे की जीवन-घातक स्थिति है, जिसमें गंभीर रक्तस्राव के कारण तत्काल चिकित्सीय हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

- **रक्त सुरक्षा:** रक्त आधान (Transfusion) के लिये ऐसे रक्त का उपयोग जो किसी मान्यता प्राप्त ब्लड बैंक से नहीं लिया गया है, सुरक्षा संबंधी गंभीर चिंताओं को उत्पन्न करता है।
- **सूचित सहमति:** यह विचार करना आवश्यक है कि क्या रोगी या उसके परिवार को रक्त आधान के जोखिमों और लाभों के बारे में सूचित किया गया है (यदि यह किसी मान्यता प्राप्त स्रोत से नहीं लिया गया है)।
- **नैतिक चिकित्सा:** दल के चिकित्सा कर्मी जीवन बचाने की इच्छा एवं पेशेवर मानदंडों तथा नैतिकता बनाए रखने के अपने दायित्व के बीच संघर्ष की स्थिति का सामना करते हैं।
- **विधिक और नियामकीय अनुपालन:** यह स्थिति रक्त आधान के संबंध में विधिक और नियामकीय अनुपालन पर प्रश्न उठाती है।

उपलब्ध विकल्प

- **किसी मान्यता प्राप्त ब्लड बैंक से रक्त प्राप्त करना:** ज़िलाधिकारी को रोगी की सुरक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिये, साथ ही किसी मान्यता प्राप्त ब्लड बैंक से रक्त की व्यवस्था कर चिकित्सकीय नैतिकता का पालन करना चाहिये।
- **जाँच के साथ स्थानीय रक्त संग्रह:** यदि संभव हो, तो दल के संभावित दाताओं का त्वरित रक्त परीक्षण करना चाहिये।
- **विशेषज्ञ परामर्श:** परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सर्वोत्तम कार्रवाई के बारे में मार्गदर्शन और सलाह के लिये चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ संपर्क करना चाहिये।

इस स्थिति में लिये जाने वाले निर्णय में रोगी की सुरक्षा को प्राथमिकता देने के साथ नैतिक, चिकित्सीय एवं विधिक मानकों का पालन भी किया जाना चाहिये। यद्यपि स्थिति गंभीर है लेकिन रक्त सुरक्षा से समझौता करने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में चिकित्सा दल से स्पष्ट संचार के साथ यदि आवश्यक हो तो विशेषज्ञ की सलाह लेना तथा नैतिक, चिकित्सा और नियामक विचारों को सर्वोत्तम रूप से संतुलित करने वाला एक सूचित निर्णय लेना आवश्यक है।

प्रश्न: शनिवार की शाम 9 बजे संयुक्त सचिव रशिका अपने कार्यालय में अब भी अपने काम में व्यस्त थी। उसके पति विक्रम किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यपालक हैं और अपने काम के सिलसिले में अकसर वे शहर से बाहर रहते हैं। उनके दो बच्चे क्रमश: 5 और 3 साल के हैं जिनकी देखभाल घरेलू सहायिका द्वारा होती है। रशिका के उच्च अधिकारी श्रीमान सुरेश ने उसे शाम 9:30 बजे बुलाया और उन्होंने मंत्रालय की बैठक में चर्चा होने वाले किसी ज़रूरी मुद्दे पर एक विस्तृत टिप्पणी तैयार करने के लिये कहा। उसे लगा कि उसके उच्च अधिकारी द्वारा दिये गए इस अतिरिक्त काम को पूरा करने के लिये उसे रविवार को काम करना होगा।

वह स्मरण करती है कि कैसे वह इस पोस्टिंग के प्रति उत्सुक थी और इसे हासिल करने के लिये उसने कई महीने देर-देर तक काम किया था। उसने अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन में लोगों के कल्याण को सर्वोपरि रखा था। उसे महसूस होता है कि उसने अपने परिवार के साथ पर्याप्त न्याय नहीं किया है और आवश्यक सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में कर्त्तव्यों को पूरा नहीं किया है। यहाँ तक कि अभी पिछले महीने उसे अपने बीमार बच्चे को आया की देखभाल में छोड़ना पड़ा था क्योंकि उसे दफ्तर में काम करना था। अब उसे लगता है कि उसे एक रेखा खींचनी चाहिये, जिसमें अपनी पेशेवर ज़िम्मेदारियों की तुलना में प्रथमत: निजी ज़िंदगी को महत्त्व मिलना चाहिये। वह सोचती है कि समय की पाबंदी, कड़ी मेहनत,कर्त्तव्यों के प्रति समर्पण और नि:स्वार्थ सेवा जैसे कार्य नैतिकता की समुचित सीमाएँ होनी चाहिये।

(a) इस मामले में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिये।

(b) महिलाओं के लिये एक स्वस्थ, सुरक्षित और न्यायसंगत कार्य परिवेश मुहैया कराने के संदर्भ में सरकार द्वारा बनाए गए कम-से-कम चार कानूनों का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

(c) कल्पना कीजिये कि आप भी ऐसी ही स्थिति में हों। आप उक्त कामकाजी परिस्थितियों को सामान्य करने के लिये क्या सुझाव देंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

At 9 pm on Saturday evening, Rashika, a Joint Secretary, was still engrossed in her work in her office. Her husband, Vikram, is an executive in an MNC and frequently out of town in connection with his work. Their two children aged 5 and 3 are looked after by their domestic helper. At 9:30 pm her superior, Mr. Suresh calls her and asks her to prepare a detailed note on an important matter to be discussed in a meeting in the Ministry. She realises that she will have to work on Sunday to finish the additional task given by her superior.

She reflects on how she had asked forward to the posting and had worked long hours for months to achieve it, he had kept the welfare of people uppermost in discharging her duties. She feels that she has not done enough Justice to her family and she has not fulfilled her duties in discharging ential social obligations. Even as recently as last month she had to leave her sick child in the nanny's care as she had to work in the office. No, she feels that she must draw a line, beyond which her personal life should take precedence over her professional responsibilities. She thinks that there should be reasonable limits to the work ethics such as punctuality, hard work, dedication to duty and selfless service.

(a) Discuss the ethical issue involved in this case.

(b) Briefly describe at least four laws that have been enacted by the Government with respect to providing a healthy, safe and equitable working environment for women.

(c) Imagine you are in a similar situation. What suggestions would you make to mitigate such working conditions?

उत्तर:

नैतिक मुद्दे

- **कार्य एवं व्यक्तिगत जीवन में संतुलन:** मुख्य नैतिक मुद्दा रशिका द्वारा एक माँ तथा जीवनसाथी के रूप में अपनी भूमिका के साथ अपनी व्यवसाय संबंधी ज़िम्मेदारियों को संतुलित करने का संघर्ष है।
- **सामाजिक दायित्व से समझौता:** रशिका अपने पारिवारिक कर्त्तव्यों तथा सामाजिक दायित्वों को पूरा करने में अपनी असमर्थता को दर्शाती है, जो एक नैतिक संघर्ष का संकेत देता है।
- **बच्चे का भावनात्मक विकास क्षीण होना:** लंबे समय तक कार्य करने के दौरान छोटे बच्चों को घरेलू सहायकों की देखभाल में छोड़ना उनके कल्याण और पालन-पोषण से संबंधित नैतिक चिंताओं को उजागर करता है।
- **समग्र स्वास्थ्य:** रशिका की सप्ताहांत पर कार्य करने और अपनी नौकरी के लिये निजी जीवन से समझौता करने की तत्परता उसके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएँ उत्पन्न कर सकती है।

महिलाओं के कार्य परिवेश से संबंधित कानून

- **मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961:** यह कानून महिला कर्मचारियों के लिये मातृत्व अवकाश एवं लाभों को अनिवार्य करता है, जो गर्भावस्था के दौरान और बाद में उनके कल्याण के लिये प्रतिबद्ध है।
- **कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध व निवारण) अधिनियम, 2013:** इसका उद्देश्य कार्यस्थल पर उत्पीड़न की रोकथाम-तथा उनको संबोधित करके महिलाओं के लिये एक सुरक्षित एवं उत्पीड़न मुक्त कार्य वातावरण बनाना है।
- **समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976:** यह अधिनियम सुनिश्चित करता है कि महिलाओं को समान कार्य के लिये समान वेतन प्राप्त हो, जिससे कार्यस्थल पर लैंगिक समानता को प्रोत्साहित किया जा सके।
- **कारखाना अधिनियम, 1948:** इस अधिनियम के तहत महिला श्रमिकों की सुरक्षा, स्वास्थ्य तथा कल्याण से संबंधित प्रावधान शामिल हैं, जिनमें उनके कार्यों के घंटों को विनियमित करना, उचित वायु-संचार की सुविधा सुनिश्चित करना तथा बच्चों की देखभाल की सुविधाएँ प्रदान करना शामिल है।

कामकाजी परिस्थितियों को सुलभ बनाने हेतु सुझाव

- **सीमाएँ स्थापित करना:** कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच की सीमाओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करना।
- **कार्य का वितरण एवं प्राथमिकता:** जब संभव हो कार्य का वितरण करना तथा कार्यभार को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने हेतु प्रमुख ज़िम्मेदारियों को प्राथमिकता देना।
- **सहायता प्रणालियाँ:** देखभाल की ज़िम्मेदारियाँ साझा करने के लिये परिवार, दोस्तों तथा सहकर्मियों की सहायता लेना।
- **स्वयं की देखभाल:** स्वयं की देखभाल को प्राथमिकता देना, जिसमें शारीरिक व्यायाम, विश्राम तथा तनाव अथवा कार्य से संबंधित दबाव से निपटने के दौरान पेशेवर मदद लेना शामिल है।
- **कार्य एवं व्यक्तिगत जीवन में संतुलन पर केंद्रित नीतियों को प्रोत्साहन देना:** कार्य एवं व्यक्तिगत जीवन में संतुलन को बढ़ावा देने तथा कर्मचारियों के स्वास्थ्य पर केंद्रित नीतियों का समर्थन करना।

प्रश्न: विनोद एक ईमानदार और निष्ठावान आईएएस अधिकारी है। हाल ही में उन्होंने राज्य सड़क परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक का पदभार ग्रहण किया है, पिछले तीन साल में यह उनका छठा तबादला है। उनके साथी उनके विशाल ज्ञान, मिलनसारिता और ईमानदारी को स्वीकार करते हैं।

राज्य सड़क परिवहन निगम के अध्यक्ष एक शक्तिशाली राजनीतिज्ञ हैं, जो मुख्यमंत्री के बहुत करीबी हैं। विनोद को निगम की अनेक कथित अनियमितताओं और वित्तीय मामलों में अध्यक्ष की मनमानी के बारे में पता चला।

निगम के विरोधी दल के एक बोर्ड सदस्य विनोद से मुलाकात करते हैं और कुछ दस्तावेज़ों के साथ एक वीडियो रिकॉर्डिंग सौंपते हैं, जिसमें अध्यक्ष क्यूएमआर टायरों की आपूर्ति के लिये एक बड़ा ऑर्डर देने के लिये रिश्वत की मांग करते हुए दिखाई दे रहे हैं। विनोद को याद है कि अध्यक्ष ने क्यूआर टायरों के लंबित बिलों को तेज़ी से निपटाने का काम किया था।

विनोद, बोर्ड सदस्य से पूछते हैं कि वे अपने पास मौजूद तथाकथित ठोस सबूतों के साथ अध्यक्ष को बेनकाब करने से क्यों कतरा रहे हैं। सदस्य उन्हें सूचित करते हैं कि अध्यक्ष ने उनकी धमकियों के सामने झुकने से इनकार कर दिया है। उन्होंने आगे कहा कि अगर विनोद खुद अध्यक्ष को बेनकाब करेंगे तो उन्हें पहचान और जनता का समर्थन मिल सकता है। इसके अलावा वे विनोद से कहते हैं कि एक बार उनकी पार्टी में आने से विनोद की पेशेवर वृद्धि सुनिश्चित हो जाएगी।

विनोद को पता है कि अगर उन्होंने अध्यक्ष का भंडाफोड़ किया तो उसे दंडित किया जा सकता है और आगे चलकर उन्हें किसी दूर स्थान पर स्थानांतरित भी किया जा सकता है। विनोद जानते हैं कि आगामी चुनाव में विपक्षी दल के सत्ता में आने की बेहतर संभावना है। हालाँकि उन्हें यह भी पता है कि बोर्ड सदस्य अपने राजनीतिक लाभों के लिये उनका इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहे हैं।

(a) एक कर्त्तव्यनिष्ठ सिविल सेवक के रूप में विनोद के लिये उपलब्ध विकल्पों का मूल्यांकन कीजिये।

(b) उपर्युक्त मामले के संदर्भ में नौकरशाही के राजनीतिकरण के कारण उत्पन्न होने वाले नैतिक मुद्दों पर टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

Vinod is an honest and sincere IAS officer. Recently, he has taken over as Managing Director of the State Road Transport Corporation, his sixth transfer in the past three years. His peers acknowledge his vast knowledge affability and uprightness.

The Chairman of the State Road Transport Corporation is a powerful politician and is very close to the Chief Minister. Vinod comes to know about many alleged irregularities of the Corporation and the high-handedness of the Chairman in financial matters.

A Board Member of the Corporation belonging to the Opposition Party meets Vinod and hands over a few documents along with a video recording in which the Chairman appears to be demanding bribe for placing a huge order for the supply of QMR tyres. Vinod recollects the Chairman expediting the clearing of pending bills of QMR tyres.

Vinod confronts the Board Member as to why he is shying away from exposing the Chairman with the so-called solid proof he has with him. The members inform him that the Chairman refuses to yield to his threats. He adds that Vinod may earn recognition and public support if he himself exposes the Chairman. Further, he tells Vined that once his party comes to power, Vinod's professional growth would be assured.

Vinod is aware that he may be penalised if he exposes the Chairman and may further be transferred to a distant place. He knows that Opposition Party stands a better chance of coming to power in the forthcoming elections. However, he also realises that the Board Member is trying to use him for his own political gains.

(a) As a conscientious civil servant, evaluate the options available to Vinod.

(b) In the light of the above case, comment upon the ethical issues that may arise due to the politicization of bureaucracy.

उत्तर: (a) विनोद, एक कर्त्तव्यनिष्ठ सिविल सेवक है। वह चेयरमैन से संबंधित कथित भ्रष्टाचार को उजागर करना चाहता है परंतु वह अपने उत्तरदायित्व एवं सत्यनिष्ठा के आदर्शों का पालन करने अथवा व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक दोनों स्तरों पर संभावित नतीजों से बचने के लिये चुप रहने की नैतिक दुविधा का सामना कर रहा है। उसके समक्ष ये विकल्प उपलब्ध हो सकते हैं

चेयरमैन एवं उसके कथित भ्रष्टाचार का खुलासा करना

- **फायदे:** भ्रष्टाचार का सामना करने से सत्यनिष्ठा एवं नैतिक मूल्यों को कायम रखा जा सकता है।
- **नुकसान:** प्रतिशोध तथा उसके कॅरियर को संभावित नुकसान का खतरा, जिसमें दूरवर्ती क्षेत्रों में स्थानांतरण भी शामिल है।

भ्रष्टाचार की अनदेखी करना और कर्त्तव्य निभाते रहना

- **फायदे:** संभावित व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक जोखिमों से बचाव।
- **नुकसान:** भ्रष्टाचार को संबोधित करने और नैतिक मानकों को बनाए रखने के अपने कर्त्तव्य में उसकी विफलता।

कानूनी एवं आंतरिक उपाय की सहायता

- **फायदे:** उचित प्रक्रिया तथा कानून के शासन का पालन करके नैतिकता कायम रहेगी।
- **नुकसान:** चेयरमैन के प्रभाव के कारण निष्पक्ष आंतरिक जाँच कराने में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

व्हिसलब्लोअर सुरक्षा उपायों की सहायता

- **फायदे:** आत्म-सुरक्षा के साथ भ्रष्टाचार का खुलासा करने में मदद मिलेगी।
- **नुकसान:** अभी भी कुछ हद तक व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत परिणामों का सामना करना पड़ सकता है।

उत्तर: (b)

- **सत्यनिष्ठा से समझौता:** राजनीतिक दबाव के कारण नौकरशाहों को सत्यनिष्ठा का पालन करने में समस्या का सामना करना पड़ सकता है।
- **सत्ता का दुरुपयोग:** नौकरशाह राजनीतिक अथवा व्यक्तिगत लाभ के लिये सत्ता का दुरुपयोग कर सकते हैं।
- **पक्षपातपूर्ण निर्णय लेना:** राजनीतिकरण एक पक्षपातपूर्ण निर्णय लेने की ओर अग्रसर करता है।
- **कम जवाबदेही:** राजनीतिक माहौल में उत्तरदायित्व चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **सिविल सेवकों का शोषण:** राजनेता राजनीतिक उद्देश्यों के लिये सिविल सेवकों का शोषण कर सकते हैं।
- **जन विश्वास में कमी:** राजनीतिकरण के कारण सरकारी संस्थानों में जनता की विश्वसनीयता घट जाती है।
- **अनैतिक आचरण का सामान्यीकरण:** इस परिस्थिति में अनैतिक आचरण के विस्तारित होने की संभावना है।

प्रश्न: हाल ही में आप केंद्रीय लोक निर्माण विभाग के अतिरिक्त महानिदेशक नियुक्त हुए हैं। आपके प्रभाग के मुख्य आर्किटेक्ट, जो छह महीने में सेवानिवृत्त होने वाले हैं, एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट पर उत्साहपूर्वक कार्य कर रहे हैं, जिसका सफल समापन उनके बचे हुए जीवन में एक स्थायी प्रतिष्ठा हासिल करेगा।

मैनचेस्टर आर्किटेक्चर स्कूल, UK से प्रशिक्षित, एक नई महिला आर्किटेक्ट, सीमा ने आपके प्रभाग में बतौर वरिष्ठ आर्किटेक्ट कार्यभार सँभाला है। इस प्रोजेक्ट के बारे में विवरण देने के दौरान सीमा ने कुछ सुझाव दिये, जो न केवल प्रोजेक्ट में मूल्य वृद्धि करेंगे, बल्कि प्रोजेक्ट की समापन अवधि भी घटा देंगे। इससे मुख्य आर्किटेक्ट असुरक्षित हो गए और सारा श्रेय सीमा को प्राप्त होने की उन्हें लगातार चिंता होने लगी। नतीजतन, उन्होंने

सीमा के प्रति एक निष्क्रिय एवं आक्रामक व्यवहार अपना लिया, जो सीमा के लिये अपमानजनक हो गया। सीमा उलझन में पड़ गई, क्योंकि मुख्य आर्किटेक्ट उसे नीचा दिखाने का कोई भी मौका नहीं छोड़ते हैं। वह अक्सर दूसरे सहयोगियों के सामने सीमा को गलत ठहराते तथा उससे ऊँची आवाज़ में बात करते। इस लगातार उत्पीड़न से सीमा आत्मविश्वास और आत्मसम्मान खोने लगी। वह लगातार तनाव, चिंता एवं दबाव महसूस करती। ऐसा प्रतीत हुआ कि सीमा मुख्य आर्किटेक्ट से डर भरे विस्मय में थी क्योंकि वह एक लंबे समय से कार्यालय में थे तथा उनके पास इस कार्य क्षेत्र में व्यापक अनुभव था।

सीमा की उत्कृष्ट शैक्षणिक योग्यता और पूर्व संस्थाओं में कॅरियर रिकॉर्ड से आप अवगत हैं। हालाँकि आपको डर है कि इस उत्पीड़न से सीमा को इस महत्त्वपूर्ण प्रोजेक्ट में अत्यंत आवश्यक योगदान पर समझौता करना पड़ सकता है तथा यह उसकी भावात्मक कुशलता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है। आपको अपने समकक्ष लोगों से भी पता चला है कि वह त्यागपत्र देने के बारे में सोच रही है।

(a) उपर्युक्त मामले में कौन-से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?

(b) प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिये तथा सीमा को संस्था में बनाए रखने हेतु आपके पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(c) सीमा की दुर्दशा के लिये आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? संस्था में ऐसी घटनाएँ रोकने के लिये आप क्या कदम उठाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

You have just been appointed as Additional Director General of Central Public Works Department. The Chief Architect of your division, who is to retire in six months, in passionately working on a very important project, the successful completion of which would earn him a lasting reputation for the rest of his life.

A new lady architect. Seema, trained at Manchester School of Architecture, UK joined as Senior Architect in your division. During the briefing about the project, Seema made some suggestions which would not only add value to the project, but would also reduce completion time. This has made the Chief Architect insecure and he is constantly worried that all the credit will go to her. Subsequently, he adopted a passive and aggressive behaviour towards her and has become disrespectful to her. Seems felt it embarrassing as the Chief Architect left no chance of humiliating her. He would very often correct her in front of other colleagues and raise his voice while speaking to her. This continuous harassment has resulted in her losing confidence and self-esteem. She felt perpetually tensed, anxious and stressed. She appeared to be in awe of him since he has had a long tenure in the office and has vast experience in the area of her work.

You are aware of her outstanding academic credentials and careeer in her previous organizations. However, you fear that this harassment may result in compromising her much needed contribution in this important project and may adversely impact her emotional well-being. You have also come to know from her peers that she is contemplating tendering her resignation.

(a) What are the ethical issues involved in the above case?

(b) What are the option available to you in order to complete the project a wall as to retain Seema in the organization?

(c) What would be your response to Seema's predicament? What measures would you institute to prevent each occurrence from happening in your organization?

उत्तर: (a) उपर्युक्त मामले में कौन-से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?

- **कार्यस्थल पर उत्पीड़न (गरिमा और सम्मान):** मुख्य आर्किटेक्ट का सीमा के प्रति अपमान और गैर-सम्मानजनक व्यवहार उसकी गरिमा का उल्लंघन है तथा इससे एक प्रतिकूल कार्यस्थल वातावरण का निर्माण होता है।
- **पेशेवर ईर्ष्या (सहयोग और टीम वर्क):** मुख्य आर्किटेक्ट की असुरक्षा की भावना एवं सीमा के साथ सहयोग करने की अनिच्छा, प्रोजेक्ट की सफलता में बाधक बन सकता है और यह टीम वर्क की भावना के भी प्रतिकूल है।
- **कर्मचारी के भावनात्मक स्वास्थ्य पर प्रभाव:** मुख्य आर्किटेक्ट द्वारा सीमा को लगातार अपमानित किया जाना और इससे उत्पन्न तनाव उसके भावनात्मक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है, जिससे उसकी कार्य उत्पादकता में बाधा आती है।
- **नैतिक नेतृत्व की विफलता (नैतिक आचरण):** एक सक्षम सहयोगी को अपमानित करने के रूप में मुख्य आर्किटेक्ट का अनैतिक आचरण, किसी संगठन में नैतिक नेतृत्व की विफलता को दर्शाता है।

उत्तर: (b) मध्यस्थता: मुख्य आर्किटेक्ट और सीमा के मध्य विवादों को सुलझाने के लिये उनके बीच निजी तौर पर बातचीत की सुविधा प्रदान करना।

- **सहयोगात्मक कार्यों का वितरण:** सीमा और मुख्य आर्किटेक्ट को उनकी क्षमता एवं विशेषज्ञता के आधार पर विशिष्ट प्रोजेक्ट कार्य सौंपना, सहयोग को बढ़ावा देंना तथा प्रोजेक्ट को पूरा करने में तेज़ी लाना।

उत्तर: (c) सीमा की दुर्दशा के लिये प्रतिक्रिया

- **मार्गदर्शन और समर्थन:** सीमा को इस बात से अवगत कराना कि उसके योगदान का काफी महत्त्व है तथा उसके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिये उसे भावनात्मक समर्थन प्रदान करना।

- **आइडिया इनक्यूबेटर:** "आइडिया इनक्यूबेटर" नाम से एक प्लेटफॉर्म का निर्माण करना जहाँ सीमा सहित अन्य कर्मचारी परियोजना संबंधी नवीन विचारों का प्रस्ताव रख सकें। इसके साथ ही रचनात्मकता की संस्कृति को बढ़ावा देते हुए योगदानकर्ताओं की पहचान कर उन्हें पुरस्कृत करने पर बल देना।

संस्था में ऐसी घटनाएँ रोकने के लिये कदम

- **निष्पक्ष मूल्यांकन:** निष्पक्ष प्रदर्शन मूल्यांकन के माध्यम से योग्यता आधारित मान्यीकरण सुनिश्चित करना।
- **शून्य-सहिष्णुता नीति:** सुरक्षित कार्य वातावरण को बढ़ावा देने के लिये एक सख्त उत्पीड़न-विरोधी नीति लागू करना और इसके विषय में सभी को जागरूक करना।
- **पहचान रहित रिपोर्टिंग:** पहचान रहित रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना करना, ताकि कर्मचारी प्रतिशोध के भय से मुक्त होकर उत्पीड़न अथवा संघर्ष की सुरक्षित रूप से रिपोर्टिंग कर सकें।

प्रश्न: सरकार के एक मंत्रालय में आप ज़िम्मेदार पद पर हैं। एक दिन सुबह आपके 11 साल के बेटे के स्कूल से फोन आया कि आपको प्रिंसिपल से मिलने आना है। आप जब स्कूल गए तो आपने अपने बेटे को प्रिंसिपल के कार्यालय में देखा। प्रिंसिपल ने आपको सूचित किया कि जिस समय कक्षाएँ चल रही थीं, उस समय आपका बेटा मैदान में बेमतलब घूमता हुआ पाया गया था। कक्षा शिक्षक आपको बताते हैं कि आपका बेटा इधर अकेला पड़ गया है और कक्षा में सवालों का जवाब नहीं देता है, वह हाल ही में आयोजित फुटबॉल ट्रायल में भी अच्छा प्रदर्शन करने में असमर्थ रहा है। आप अपने बेटे को स्कूल से ले आते हैं और शाम को अपनी पत्नी के साथ बेटे के बदलते व्यवहार के कारणों के बारे में जानने की कोशिश करते हैं। बार-बार मनाने के बाद, आपके बेटे ने साझा किया कि कुछ बच्चे कक्षा में और छात्रों के व्हाट्सअप ग्रुप में उसे बौना, मूर्ख तथा मेंढक कहकर उसका मज़ाक उड़ा रहे थे। वह आपको कुछ बच्चों के नाम बताता है जो मुख्य दोषी हैं लेकिन आपसे मामले को शांत रहने देने की विनती करता है।

कुछ दिनों बाद एक खेल आयोजन के दौरान, जहाँ आप और आपकी पत्नी अपने बेटे को खेलते हुए देखने गए थे, आपके एक सहकर्मी का बेटा आपको एक वीडियो दिखाता है जिसमें छात्रों ने आपके बेटे का व्यंग्यचित्र बनाया है। इसके अलावा वह उन दोषी बच्चों की ओर इशारा करता है जो स्टैंड में बैठे थे। आप जान-बूझकर अपने बेटे के साथ उनके पास से गुजरते हैं और घर लौटते हैं। अगले दिन, सोशल मीडिया पर आपको, आपके बेटे को तथा यहाँ तक कि आपकी पत्नी को भी बदनाम करने वाला एक वीडियो मिलता है, जिसमें कहा गया है कि आप खेल के मैदान पर बच्चों को शारीरिक रूप से परेशान करने में लगे हुए हैं। वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। आपके मित्रों और सहकर्मियों ने पूरा विवरण जानने के लिये आपको फोन करना शुरू कर दिया। आपके एक जूनियर ने आपको एक जवाबी वीडियो बनाने की सलाह दी, जिसमें पृष्ठभूमि दी जाए तथा बताया जाए कि मैदान पर कुछ भी नहीं हुआ है। बदले में आपने एक वीडियो पोस्ट किया, जिसे आपने खेल आयोजन के दौरान बनाया था, जिसमें संभावित गड़बड़ी करने वालों की पहचान की गई थी, जो आपके बेटे की परेशानी के लिये ज़िम्मेदार थे। आपने यह भी बताया है कि मैदान में वास्तव में क्या हुआ था एवं सोशल मीडिया के दुरुपयोग के प्रतिकूल प्रभावों को सामने लाने का प्रयास किया है।

(a) उपर्युक्त केस स्टडी को आधार बनाकर सोशल मीडिया के उपयोग में शामिल नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिये।

(b) अपने परिवार के खिलाफ फर्ज़ी प्रचार का मुकाबला करने के लिये तथ्यों को सामने रखने हेतु आपके द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग करने के लाभ और हानियों पर चर्चा कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

You hold a responsible position in a ministry in the government. One day in the morning you received a call from the school of your 11-year-old son that you are required to come and meet the Principal. You proceed to the school and find your son in the Principal's office. The Principal informs you that your son had been found wandering aimlessly in the grounds during the time classes were in progress. The class teacher further informs you that your son has lately become a loner and did not respond to questions in the class, he had also been unable to perform well in the football trials held recently. You bring your son back from the school and in the evening, you along with your wife try to find out the reasons for your son's changed behavior. After repeated cajoling, your son shares that some children had been making fun of him in the class as well as in the WhatsApp group of the students by calling him stunted, duh and a frog. He tells you the names of a few children who are the main culprits but pleads with you to let the matter rest.

After a few days, during a sporting event, where you and your wife have gone to watch your son play, one of your colleague's son shows you a video in which students have caricatured your son. Further, he also points out to perpetrators who were sitting in the stands. You purposefully walk past them with your son and go home. Next day, you find on social media, a video denigrating you, your son and even your wife, stating that you engaged in physical bullying of children in the sports field. The video became viral on social media. Your friends and colleagues began calling you to find out the

details. One of your juniors advised you to make a counter video giving the background and explaining that nothing had happened on the field. You, in turn posted a video which you have captured during the sporting event, identifying the likely perpetrators who were responsible for your son's predicament. You have also narrated what has actually happened in the field and made attempts to bring out the adverse effects of the misuse of social media.

(a) Based on the above case study, discuss the ethical issues involved in the use of social media.

(b) Discuss the pros and cons of using social media by you to put across the facts to counter the fake propaganda against your family.

उत्तर: (a) मामले से जुड़े नैतिक मुद्दे

- **गोपनीयता और सहमति:** बिना किसी सहमति के किसी की छवि खराब करना उसकी निजता का उल्लंघन है।
- **साइबर धमकी और उत्पीड़न:** अपमानजनक सामग्री को ऑनलाइन पोस्ट करना साइबर धमकी तथा उत्पीड़न माना जाता है।
- **दुष्प्रचार और झूठे आरोप:** झूठी जानकारी प्रसारित करने से किसी की प्रतिष्ठा कम हो सकती है, इसीलिये इसे ज़िम्मेदारी से साझा करने की आवश्यकता है।
- **ऑनलाइन जवाबदेही:** पर्याप्त औचित्य के बिना किसी को सार्वजनिक रूप से अपमानित करने से निष्पक्षता पर प्रश्न उठता है।
- **प्रौद्योगिकी का दुरुपयोग:** प्रौद्योगिकियों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों का दुरुपयोग नुकसान पहुँचाने, गलत सूचना फैलाने तथा साइबर धमकी में भाग लेने के लिये किया जाता है।
- **संबंधों पर प्रभाव:** नकारात्मक ऑनलाइन सामग्री से वास्तविक जीवन के संबंधों में तनाव को बढ़ावा मिल सकता है, जिससे ऑनलाइन व्यवहार के नैतिक होने के साथ डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता के महत्त्व पर प्रकाश पड़ता है।

उत्तर: (b) अपने परिवार के खिलाफ झूठे प्रचार का मुकाबला करने के लिये सोशल मीडिया का उपयोग करने के लाभ और हानियाँ:

लाभ

- **तत्काल प्रतिक्रिया:** झूठे आरोपों या गलत सूचनाओं को फैलने से रोकने के लिये तत्काल समाधान करना।
- **व्यापक पहुँच:** इससे अपनी बातों को व्यापक स्तर पर पहुँचाया जा सकता है।
- **पारदर्शिता:** सोशल मीडिया पर साक्ष्य के साथ प्रामाणिकता सुनिश्चित करना।
- **नियुक्ति:** संदर्भ प्रदान करते हुए दर्शकों के साथ सीधे बातचीत करना।
- **समर्थन जुटाना:** मित्रों, सहकर्मियों और अनजान व्यक्तियों से समर्थन प्राप्त करना।
- **शैक्षणिक अवसर:** ऑनलाइन व्यवहार के परिणामों के बारे में जागरूकता बढ़ाना।

हानियाँ

- **जोखिम में वृद्धि:** इसमें स्थिति के गंभीर होने और ऑनलाइन उत्पीड़न का सामना करने का जोखिम है।
- **गोपनीयता संबंधी चिंताएँ:** इसमें पारिवारिक निजता से समझौता होने के साथ बाहरी लोगों की धमकियाँ मिल सकती हैं।
- **गलत व्याख्या:** स्पष्टता प्रकट करने के प्रयास से भी भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।
- **नकारात्मक प्रतिक्रिया:** अप्रत्याशित जनमत के परिणामस्वरूप नकारात्मक प्रतिक्रिया हो सकती है।
- **भावनात्मक आघात:** ऑनलाइन उत्पीड़न से निपटना भावनात्मक रूप से कठिन हो सकता है।
- **कानूनी निहितार्थ:** सोशल मीडिया पर कुछ साझा करने के कानूनी परिणाम हो सकते हैं।

झूठी जानकारी का खंडन करने के लिये सोशल मीडिया का उपयोग करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। यह स्थितियों को संभालने और जागरूकता में वृद्धि का एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है, लेकिन इसके खतरे तथा संभावित कमियाँ भी हैं। ऐसी स्थितियों से सोच-समझकर निपटना, साथ ही यदि आवश्यक हो तो कानूनी सलाह लेना और अपने परिवार के कल्याण एवं गोपनीयता पर विचार करना महत्त्वपूर्ण है।

2022

प्रश्न: प्रभात एक प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनी स्टर्लिंग इलेक्ट्रिक लिमिटेड में उपाध्यक्ष (विपणन) के रूप में कार्यरत था। लेकिन फिलहाल कंपनी मुश्किल दौर से गुजर रही थी, क्योंकि पिछली दो तिमाहियों से बिक्री में लगातार गिरावट का रुख दिखाई पड़ रहा था। उसका डिवीजन, जो अब तक कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य में एक प्रमुख राजस्व अंशदाता था, जब उनके लिये कुछ बड़े सरकारी ऑर्डर प्राप्त करने के लिये भरसक प्रयास कर रहा था। लेकिन उनके सर्वोत्तम प्रयासों को कोई सकारात्मक सफलता नहीं मिली।

उसकी कंपनी पेशेवर थी और उसके स्थानीय मालिकों पर उनके लंदन स्थित मुख्यालय की ओर से कुछ सकारात्मक परिणाम प्रदर्शित करने का दबाव था। कार्यकारी निदेशक (भारतीय प्रमुख) द्वारा की गई पिछली कार्य-समीक्षा बैठक में उसे उसके खराब प्रदर्शन के लिये फटकार लगाई गई थी। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि उसका डिवीजन ग्वालियर के पास एक गुप्त संस्थापन के लिये रक्षा मंत्रालय से एक विशेष अनुबंध पर काम कर रहा है और जल्द ही निविदा जमा की जा रही है।

वह अत्यधिक दबाव में था और बहुत परेशान था। जिस बात ने हालात को और बदतर बना दिया, वह थी, ऊपर से एक चेतावनी कि यदि कंपनी के पक्ष में सौदा नहीं हुआ तो उसका डिवीजन बंद करना पड़ सकता है और उसे अपनी लाभप्रद नौकरी छोड़नी पड़ सकती है।

एक और आयाम था, जो उसे गहरी मानसिक यातना और पीड़ा पहुँचा रहा था। यह उसके व्यक्तिगत अनिश्चित वित्तीय स्वास्थ्य से संबंधित था। वह दो स्कूल-कॉलेज जानेवाले बच्चों और अपनी बीमार बूढ़ी माँ वाले परिवार में अकेला कमाने वाला था। शिक्षा व चिकित्सा पर भारी खर्च के कारण उसके मासिक वेतन वाले पैकेट पर भारी दबाव पड़ रहा था। बैंक से लिये गए गृह ऋण के लिये नियमित ई.एम.आई. अपरिहार्य थी और चूक करने पर उसे गंभीर कानूनी कार्रवाई के लिये उत्तरदायी होना होगा। उपर्युक्त पृष्ठभूमि में वह किसी चमत्कार के घटित होने की उम्मीद कर रहा था। अचानक घटनाक्रम में बदलाव आ गया। उसके सचिव ने बताया कि एक सज्जन, सुभाष वर्मा उनसे मिलना चाहते हैं, क्योंकि उन्हें कंपनी में प्रबंधक के पद में दिलचस्पी है, जिसे कंपनी को भरना है। पुनः उसने उनके संज्ञान में लाया कि उसका आत्मवृत्त रक्षामंत्री के कार्यालय के माध्यम से प्राप्त हुआ है।

उसने उम्मीदवार, सुभाष वर्मा के साक्षात्कार के दौरान उसे तकनीकी रूप से मज़बूत, साधन-संपन्न और अनुभवी विक्रेता महसूस किया। ऐसा प्रतीत होता था कि वह निविदा प्रक्रिया से भली-भाँति परिचित है और इस संबंध में अनुवर्ती कार्रवाई व अंतर्संबंधन में निपुण है। प्रभात को लगा कि उसकी उम्मीदवारी अन्य उम्मीदवारों की तुलना में बेहतर है, जिनका साक्षात्कार हाल में, पिछले कुछ दिनों में उसने लिया था।

सुभाष वर्मा ने यह भी संकेत किया कि उसके पास बोली दस्तावेज़ों की प्रतियाँ हैं, जिन्हें यूनीक इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड अगले दिन रक्षा मंत्रालय को उसकी निविदा के लिये प्रस्तुत करेगा। उसने उन दस्तावेज़ों को सौंपने की पेशकश की बशर्ते उसे कंपनी में उपयुक्त नियमों और शर्तों पर रोज़गार दिया जाए। उसने स्पष्ट किया कि इस प्रक्रिया में स्टर्लिंग इलेक्ट्रिक लिमिटेड अपनी प्रतिद्वंद्वी कंपनी को पछाड़ सकती है और बोली प्राप्त कर सकती है तथा रक्षा मंत्रालय का भारी-भरकम ऑर्डर प्राप्त कर सकती है। उसने संकेत दिया कि यह उसकी तथा कंपनी, दोनों के लिये जीत ही जीत होगी।

प्रभात बिल्कुल स्तब्ध था। यह सदमा और रोमांच की मिली-जुली अनुभूति थी। वह असहज होकर पसीना-पसीना हो गया। यदि प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाता है तो उसकी सभी समस्याएँ तुरंत गायब हो जाएंगी और उसे बहुप्रतीक्षित निविदा हासिल करने और कंपनी की बिक्री और वित्तीय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिये पुरस्कृत किया जा सकता है। वह भविष्य की कार्रवाई को लेकर असमंजस में था। वह अपनी खुद की कंपनी के कागज़ात को चोरी-छिपे हटाने और नौकरी के लिये प्रतिद्वंद्वी कंपनी को पेशकश करने में सुभाष वर्मा की हिम्मत पर आश्चर्यचकित था। एक अनुभवी व्यक्ति होने के नाते, वह इस प्रस्ताव/स्थिति के पक्ष-विपक्ष की जाँच कर रहा था और उसने उसे अगले दिन आने के लिये कहा।

(a) इस मामले से संबंधित नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिये।

(b) उपर्युक्त मामले में प्रभात के लिये उपलब्ध विकल्पों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये।

(c) उपर्युक्त में से कौन-सा विकल्प प्रभात के लिये सर्वाधिक उपयुक्त होगा और क्यों? (250 शब्द, 20 अंक)

Prabhat was working as Vice President (Marketing) at Sterling Electric Ltd., a reputed multinational company. But presently the company was passing through the difficult times as the sales were continuously showing downward trend in the last two quarters. His division, which hitherto had been a major revenue contributor to the company's financial health, was now desperately trying to procure some big government order for them. But their best efforts did not yield any positive success or breakthrough.

His was a professional company and his local bosses were under pressure from their London-based HO to show some positive results. In the last performance review meeting taken by the Executive Director (India Head), he was reprimanded for his poor performance. He assured them that his division is working on a special contract from the Ministry of Defence for a secret installation near Gwalior and tender is being submitted shortly.

He was under extreme pressure and he was deeply perturbed. What aggravated the situation further was a warning from the top that if the deal is not clinched in favour of the company, his division might have to be closed and he may have to quit his lucrative job.

There was another dimension which was causing him deep mental torture and agony. This pertained to his personal precarious financial health. He was a single earner in the family with two school-college going children and his old ailing mother. The heavy expenditure on education and medical was causing a big strain to his monthly pay packet. Regular EMI for housing loan taken from bank was unavoidable and any default would render him liable for severe legal action.

In the above backdrop, he was hoping for some miracle to happen. There was sudden turn of events. His secretary informed that a gentleman-Subhash Verma wanted to see him as he was interested in the position of Manager which was to be filled in by him in the company. He further brought to his notice that his CV has been received through the office of the Minister of Defence.

During interview of the candidate-Subhash Verma, he found him technically sound, resourceful and experienced marketeer. He seemed to be well-conversant with tendering procedures and having knack of follow-up and liaising in this regard. Prabhat felt that he was better choice than the rest of the candidates who

were recently interviewed by him in the last few days. Subhash Verma also indicated that he was in possession of the copies of the bid documents that the Unique Electronics Ltd. would be submitting the next day to the Defence Ministry for their tender.

He offered to hand over those documents subject to his employment in the company on suitable terms and conditions. He made it clear that in the process, the Sterling Electric Ltd. could outbid their rival company and get the bid and hefty Defence Ministry order. He indicated that it will be win-win situation for both-him and the company.

Prabhat was absolutely stunned. It was a mixed feeling of shock and thrill. He was uncomfortable and perspiring. If accepted, all his problems would vanish instantly and he may be rewarded for securing the much awaited tender and thereby boosting company's sales and financial health. He was in a fix as to the future course of action. He was wonder-struck at the guts of Subhash Verma in having surreptitiously removing his own company papers and offering to the rival company for a job. Being an experienced person, he was examining the pros and cons of the proposal/situation and he asked him to come the next day.

(a) Discuss the ethical issues involved in the case.

(b) Critically examine the options available to Prabhat in the above situation.

(c) Which of the above would be the most appropriate for Prabhat and why?

उत्तर: ऊपर चर्चा किये गए केस स्टडी में विभिन्न संभावित हितधारक–

- स्टर्लिंग इलेक्ट्रिक लिमिटेड में उपाध्यक्ष (विपणन) के रूप में प्रभात।
- स्टर्लिंग इलेक्ट्रिक लिमिटेड का हित।
- सुभाष वर्मा बनाम यूनिक इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड
- प्रभात और उसकी गंभीर पारिवारिक ज़िम्मेदारी।
- रक्षा मंत्रालय और उसका अनुबंध (राष्ट्रीय सुरक्षा)।

(a) इस मामले में शामिल नैतिक मुद्दे

- **व्यावसायिक नैतिकता बनाम व्यक्तिगत नैतिकता:** व्यावसायिक नैतिकता व्यावसायिकता के नियमों पर टिके रहने की मांग करती है। सुभाष वर्मा का गुप्त दस्तावेज़ सौंपने का प्रस्ताव पेशेवर नैतिकता के साथ-साथ व्यक्तिगत अखंडता का भी उल्लंघन है। यदि प्रभात प्रस्ताव को स्वीकार करता है, तो इसे पेशेवर नैतिकता और व्यक्तिगत नैतिकता का उल्लंघन भी माना जाएगा।
- **सुभाष वर्मा के साथ ईमानदारी और विश्वास का मुद्दा:** यदि सुभाष वर्मा प्रबंधकीय पद के लाभ के लिये अपनी वर्तमान कंपनी के साथ धोखा कर सकते हैं, तो क्या गारंटी है कि वह इस कंपनी को और अधिक लाभ के लिये धोखा नहीं देंगे?
- **कॉर्पोरेट नैतिकता उल्लंघन के मुद्दे:** यदि प्रभात सुभाष के गुप्त दस्तावेज़ों को स्वीकार करते हैं और उन्हें प्रबंधक पद के रूप में पेश करते हैं। तब यह कॉर्पोरेट नैतिकता के गंभीर उल्लंघन का मामला होगा। इन बातों का सार्वजनिक रूप से खुलासा करने पर यह उल्लंघन कानूनी लड़ाई का हकदार है।
- **प्रभात के साथ अंतरात्मा के टकराव का मुद्दा:** दो स्कूल जाने वाले बच्चों और बूढ़ी बीमार माँ की ज़िम्मेदारी प्रभात की प्रमुख चिंताएँ हैं। नौकरी की असुरक्षा और गंभीर पारिवारिक ज़िम्मेदारी का दबाव उसके विवेक में संघर्ष की स्थिति पैदा करता है।
- **साध्य बनाम साधन:** यदि प्रभात सुभाष वर्मा के गुप्त दस्तावेज़ों को स्वीकार करता है तो यह गलत साधनों का उपयोग करके अंतिम लक्ष्य प्राप्त करने का स्पष्ट मामला होगा।
- **स्वार्थ बनाम नैतिकता:** सुभाष वर्मा का प्रबंधकीय पद प्राप्त करने के लिये प्रभात को गुप्त दस्तावेज़ सौंपने का प्रस्ताव सार्वजनिक नैतिकता की कीमत पर स्वार्थ का कार्य है।

(b) प्रभात के लिये उपलब्ध विकल्प

प्रभात, सुभाष वर्मा को प्रबंधक के रूप में नियुक्त कर सकता है और सुभाष के गुप्त दस्तावेज़ों की मदद से निविदा बोली जमा कर सकता है।

गुण

- प्रभात की कंपनी को बहुप्रतीक्षित टेंडर दिया जा सकता है।
- प्रभात की कंपनी की बिक्री और वित्तीय सेहत में सुधार हो सकता है।
- प्रभात की आकर्षक नौकरी सुरक्षित होगी। उसे पदोन्नति मिल सकती है।
- प्रभात की बूढ़ी बीमार माँ और उनके दो स्कूल जाने वाले बच्चों के जीवन में कोई कठोरता नहीं आएगी।
- सुभाष वर्मा को प्रबंधकीय नौकरी मिल सकती है।

दोष

- सुभाष वर्मा के साथ ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के मुद्दे हैं। सुभाष वर्मा पर प्रभात का भरोसा कंपनी के लिये भविष्य में संभावित जोखिम पैदा कर सकता है।
- अगर किसी तरह गुप्त दस्तावेज़ों के लीकेज का खुलासा हुआ तो प्रभात उसकी कंपनी और सुभाष वर्मा पर कानूनी मामला लगाया जा सकता है।
- दस्तावेज़ों के आदान-प्रदान से सार्वजनिक रूप से खुलासा होने पर प्रभात की कंपनी की प्रतिष्ठा और छवि को नुकसान हो सकता है।
- यह महत्त्वपूर्ण रक्षा परियोजना है, इसलिये निविदा में कोई भी गलत काम और दस्तावेज़ धोखाधड़ी गंभीर राष्ट्रीय सुरक्षा जोखिम का हकदार हो सकता है।

प्रभात सुभाष वर्मा के आवेदन को अस्वीकार कर सकते हैं और पूरी ईमानदारी के साथ बोली जमा कर सकते हैं तथा परिणाम की प्रतीक्षा कर सकते हैं। उन्हें योजना B के रूप में कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिये नए अवसरों की खोज हेतु एक त्वरित प्रतिक्रिया टीम नियुक्त करनी चाहिये।

गुण

- प्रभात खुद को और अपनी कंपनी को भविष्य के संभावित जोखिम से बचा सकते हैं।
- प्रभात और उसकी कंपनी संभावित कानूनी मुद्दों से सुरक्षित हो सकती है।
- प्रभात उत्कृष्ट कॉर्पोरेट नैतिकता और सर्वोच्च ईमानदारी का एक उदाहरण स्थापित करेंगे।
- सुभाष वर्मा के प्रस्ताव को ठुकराकर प्रभात राष्ट्र को संभावित राष्ट्रीय सुरक्षा जोखिम से बचा सकते हैं।

दोष

- प्रभात की कंपनी बहुप्रतीक्षित निविदा प्राप्त करने में विफल हो सकती है।
- प्रभात की आकर्षक नौकरी खो सकती है, इसलिये उसके स्कूल जाने वाले बच्चों और बूढ़ी बीमार माँ को नौकरी छूटने के कारण कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।
- उसकी कंपनी की बिक्री और वित्तीय स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

प्रभात छुट्टी के लिये आवेदन कर सकता है।

गुण

अगर छुट्टी दी जाती है, तो

- वह अंतरात्मा के संघर्ष से खुद को बचा सकता है।
- उनकी जवाबदेही और उत्तरदेहिता को स्थानांतरित किया जा सकता है।

दोष

- टेंडर फेल होने पर उसका विभाग बंद किया जा सकता है और उसकी नौकरी जा सकती है।
- उसकी कंपनी का वित्तीय स्वास्थ्य और बिक्री खराब हो सकती है।
- उसके परिवार को मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।
- प्रभात नौकरी के नए विकल्प खोज सकता है।

गुण

तुरंत नौकरी का ऑफर मिले तो

- वह पूरी ईमानदारी के साथ और बिना किसी नौकरी असुरक्षा के दबाव के काम कर सकता है।
- विश्वास के मुद्दों का हवाला देते हुए, वह सुभाष वर्मा के प्रस्ताव को धीरे से अस्वीकार कर सकता है।
- वह कॉर्पोरेट नैतिकता मानकों और व्यक्तिगत अखंडता को बनाए रखने का एक उत्कृष्ट उदाहरण स्थापित कर सकता है।
- वह अपने परिवार को भविष्य में किसी भी कठिनाई का सामना करने से बचा सकता है।

दोष

- यह ज़रूरतमंद समय में कंपनी के प्रति उनकी वफादारी पर सवाल खड़ा करेगा।
- हो सकता है कि उसे उतनी आकर्षक नौकरी न मिले, जितनी अभी है।
- कंपनी अपनी बचत और अन्य परिलब्धियों को रोक सकती है जो कंपनी के पास हैं।

(c) प्रभात के लिये सबसे उपयुक्त विकल्प

प्रभात सुभाष वर्मा के आवेदन को अस्वीकार कर सकता है और पूरी ईमानदारी से निविदा बोली जमा कर सकता है तथा परिणाम की प्रतीक्षा कर सकता है एवं उन्हें योजना B के रूप में कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिये नए अवसरों की खोज हेतु एक त्वरित प्रतिक्रिया टीम नियुक्त करनी चाहिये।

सुभाष वर्मा के साथ कुछ विश्वास और अखंडता के मुद्दे का हवाला देते हुए प्रभात को सुभाष वर्मा के प्रस्ताव और प्रबंधकीय पद के रूप में उनकी उम्मीदवारी को अस्वीकार कर देना चाहिये। उन्हें सुभाष वर्मा को कड़ी चेतावनी देनी चाहिये और बताना चाहिये कि उनके खिलाफ संभावित कानूनी कार्रवाई की जा सकती है।

प्रभात को निविदा प्राप्त करने के लिये बहुत मेहनत करनी चाहिये, क्योंकि निविदा बोली बहुत प्रारंभिक चरण में है, इसलिये उसे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचना चाहिये। उसे हर संभव शोध करना चाहिये और व्यावसायिकता के सभी सेटों के साथ अपनी निविदा जमा करने के लिये कड़ी मेहनत करनी चाहिये। फिर परिणाम की प्रतीक्षा करें। योजना B के रूप में वह अपनी कंपनी के वित्तीय स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिये कुछ नए अवसरों की तेजी से खोज करने के लिये एक त्वरित प्रतिक्रिया टीम नियुक्त कर सकता है। उसे इस योजना और रणनीति से अपने उच्चाधिकारियों को अवगत कराना चाहिये। यदि निविदा परिणाम पक्ष में नहीं आता है, तो वह योजना B पेश कर सकता है।

यह कई तरह से मदद करेगा

- वह अत्यधिक व्यावसायिकता और व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा का एक उदाहरण स्थापित कर सकता है।
- वह संभावित राष्ट्रीय सुरक्षा जोखिम से राष्ट्र को बचा सकता है।
- वह सही लक्ष्य के लिये उचित साधनों के ज्ञान पर टिका रह सकता है।
- स्वार्थ पर नैतिकता की जीत होगी।

यद्यपि, प्रभात अपने परिवार में दो स्कूल जाने वाले बच्चों और बूढ़ी बीमार माँ के साथ-साथ जीवन में गंभीर आर्थिक चिंताओं के साथ एकल कमाने वाला है, लेकिन उसे लालच, गलत साधनों और स्वार्थ पर सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, नैतिकता और राष्ट्रीय हित को चुनना चाहिये।

प्रश्नः रमेश राज्य सिविल सेवा में अधिकारी हैं, जिन्हें 20 साल की सेवा के बाद सीमावर्ती राज्य की राजधानी में तैनात होने का अवसर मिला है। रमेश की माँ को हाल ही में कैंसर का पता चला है और उन्हें शहर के प्रमुख कैंसर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उनके किशोरवय दो बच्चों को भी शहर के सबसे अच्छे पब्लिक स्कूलों में से एक में प्रवेश मिला है। राज्य के गृह विभाग में निदेशक के रूप में अपनी नियुक्ति में व्यवस्थित हो जाने के बाद, रमेश को खुफिया सूत्रों के माध्यम से गोपनीय रिपोर्ट मिली कि अवैध प्रवासी पड़ोसी देश से राज्य में घुसपैठ कर रहे हैं। उन्होंने तय किया कि वे व्यक्तिगत रूप में अपने गृह

विभाग की टीम के साथ सीमावर्ती चौकियों की आकस्मिक जाँच करेंगे। उनके लिये आश्चर्य था कि उन्होंने सीमा चौकियों पर सुरक्षा कर्मियों की मिलीभगत से घुसपैठ करने वाले दो परिवारों के 12 सदस्यों को रँगे हाथों पकड़ा। आगे की पूछताछ और जाँच में यह पाया गया कि पड़ोसी देश के प्रवासियों की घुसपैठ के बाद, उनके आधार कार्ड, राशन कार्ड और वोटर कार्ड जैसे जाली दस्तावेज़ बनाकर उन्हें राज्य के एक विशेष क्षेत्र में बसाया जाता है। रमेश ने विस्तृत और व्यापक रिपोर्ट तैयार कर राज्य के अतिरिक्त सचिव को सौंप दी। हालाँकि एक सप्ताह के बाद अतिरिक्त गृह सचिव ने उन्हें तलब किया और रिपोर्ट वापस लेने का निर्देश दिया। अतिरिक्त गृह सचिव ने रमेश को बताया कि उच्च अधिकारियों ने उनकी सौंपी गई रिपोर्ट की सराहना नहीं की है। उन्होंने पुनः उन्हें सावधान किया कि यदि वह गोपनीय रिपोर्ट वापस नहीं लेते हैं तो उन्हें न केवल राज्य की राजधानी की प्रतिष्ठित नियुक्ति से बाहर तैनात कर दिया जाएगा बल्कि उनकी निकट भविष्य में होनेवाली अगली पदोन्नति खतरे में पड़ जाएगी।

(a) सीमावर्ती राज्य के गृह विभाग के निदेशक के रूप में रमेश के पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) रमेश को कौन-सा विकल्प अपनाना चाहिये और क्यों?

(c) प्रत्येक विकल्प का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।

(d) रमेश के सामने कौन-सी नैतिक दुविधाएँ हैं?

(e) पड़ोसी देश से अवैध प्रवासियों की घुसपैठ के खतरे से निपटने के लिये आप किन नीतिगत उपायों का सुझाव देंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Ramesh is State Civil Services Officer who got the opportunity of getting posted to the capital of a border State after rendering 20 years of service. Ramesh's mother has recently been detected cancer and has been admitted in the leading cancer hospital of the city. His two adolescent children have also got admission in one of the best public schools of the town. After settling down in his appointment as Director in the Home Department of the State, Ramesh got confidential report through intelligence sources that illegal migrants are infiltrating in the State from the neighbouring country. He decided to personally carry out surprise check of the border posts along with his Home Department team. To his surprise, he caught red-handed two families of 12 members infiltrated with the connivance of the security personnel at the border posts. On further inquiry and investigation, it was found that after the migrants from neighbouring country infiltrate, their documentation like Aadhaar Card, Ration Card and Voter Card are also forged and they are made to settle down in a particular area of the State. Ramesh prepared the detailed and comprehensive report and submitted to the Additional Secretary of the State. However, he has summoned by the Additional Home Secretary after a week and was instructed to withdraw the report. The Additional Home Secretary informed Ramesh that the report submitted by him has not been appreciated by the higher authorities. He further cautioned him that if he fails to withdraw the confidential report, he will not only be posted out from the prestigious appointment from the State capital but his further promotion which is due in near future will also get in jeopardy.

(a) What are the options available to Ramesh as the Director of the Home Department of the bordering State?

(b) What option should Ramesh adopt and why?

(c) Critically evaluate each of the options.

(d) What are the ethical dilemmas being faced by Ramesh?

(e) What policy measures would you suggest to combat the menace of infiltration of illegal migrants from the neighbouring country?

उत्तर: दी गई केस स्टडी एक आवर्ती मुद्दे से संबंधित है जिसका नौकरशाही में अधिकारी सामना करते हैं। यह केस स्टडी अनिवार्य रूप से वरिष्ठों के आदेशों का पालन करने एवं संगठनात्मक पदानुक्रम का पालन करने बनाम उचित कार्रवाई करने के मुद्दे का प्रतिनिधित्व करती है।

उत्तर: (a) प्रश्न में उल्लिखित स्थिति से निपटने के लिये रमेश के पास कुछ विकल्प उपलब्ध हैं।

- रमेश अपने वरिष्ठ अधिकारी के निर्देश पर रिपोर्ट वापस ले सकते हैं।
- वह इस मुद्दे को उनके संज्ञान में लाकर अपने वरिष्ठों को शामिल करने का प्रयास कर सकते हैं और उन्हें उचित कार्रवाई करने के लिये राजी कर सकते हैं।
- वह रिपोर्ट को सीधे केंद्रीय गृह मंत्रालय को भी भेज सकते हैं और (a) अवैध अप्रवास के मुद्दे और (b) राज्य स्तर पर अपने वरिष्ठों के असहयोगी रवैये को उजागर कर सकते हैं।
- वह इस मुद्दे को हल करने के लिये उच्च अधिकारियों को मजबूर करने के हेतु मीडिया के साथ रिपोर्ट साझा कर सकते हैं।

उत्तर: (b) ऊपर वर्णित विकल्पों में से रमेश निम्नलिखित विकल्पों को उनकी व्यवहार्यता और व्यावहारिकता के आधार पर चुन सकता हैं।

- रमेश अपने वरिष्ठ के निर्देश के अनुसार, रिपोर्ट वापस ले सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि लंबे समय में उनका करियर खतरे में न पड़े।

- रमेश को अतिरिक्त गृह सचिव को उनकी रिपोर्ट स्वीकार को मनाने की कोशिश करनी चाहिये क्योंकि इससे (a) उनके करियर को खतरा नहीं होगा और (b) यह सुनिश्चित करेंगे कि इस मुद्दे को उचित स्तर पर संबोधित किया जाए।
- वह अनौपचारिक तरीके से इस मुद्दे को उनके संज्ञान में लाकर अधिक वरिष्ठ अधिकारियों को शामिल करने का प्रयास कर सकते हैं (a) अपने तत्काल वरिष्ठों के विरोध से बचने और (b) इस मुद्दे को हल करने के लिये।
- इसके अलावा वह अपनी रिपोर्ट सीधे राज्य के मुख्य सचिव या यहाँ तक कि केंद्रीय गृह मंत्रालय को भेज सकते हैं ताकि (a) उच्चतम स्तर पर मुद्दे का समाधान सुनिश्चित किया जा सके और (b) राज्य स्तर पर वरिष्ठ अधिकारियों के असहयोग के मुद्दे को उजागर किया जा सके।

उत्तर : (c) रमेश के लिये उपलब्ध विकल्पों का एक महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन भी आवश्यक है।

- रिपोर्ट वापस लेना
- सकारात्मक
- नौकरशाही पदानुक्रम के लिये सम्मान
- अपने वरिष्ठों की सद्भावना
- सुचारु करियर विकास और प्रगति
- नकारात्मक
- नैतिक साहस की कमी
- अवैध अप्रवास के मामलों में और वृद्धि हो सकती है
- रिपोर्ट को उच्च अधिकारियों, अर्थात मुख्य सचिव और/या केंद्रीय गृह मंत्रालय को अग्रेषित करना।
- सकारात्मक
- नैतिक साहस का प्रदर्शन
- निर्णय लेने की क्षमता
- समस्या का समाधान सुनिश्चित करना
- नकारात्मक
- भावनात्मक भागफल की कमी प्रदर्शित करता है
- आचार संहिता के खिलाफ
- मीडिया को शामिल करना
- सकारात्मक
- परिणामी दबाव के कारण अधिकारियों को कार्रवाई करने के लिये मजबूर करना
- नकारात्मक
- सेवा नियमों और आचार संहिता के खिलाफ
- सूचना की आलोचनात्मक प्रकृति के कारण दुरुपयोग की संभावना

उत्तर : (d) रमेश निम्नलिखित नैतिक दुविधाओं का सामना करता है:

- **आचार संहिता और सेवा नियम बनाम कर्त्तव्य के प्रति समर्पण:** आचार संहिता और सेवा नियमों का पालन करने के पक्ष में अपना कर्त्तव्य करने या न करने के बीच विकल्प।
- **व्यक्तिगत हित बनाम राष्ट्रीय हित:** व्यक्तिगत हित और कॅरियर की संभावनाएँ अधिक महत्त्वपूर्ण या राष्ट्रीय हित।
- **वरिष्ठों के प्रति जवाबदेही बनाम लोगों के प्रति जवाबदेही:** अपने वरिष्ठों या लोगों के हितों की सेवा करने के बीच विकल्प।
- **नैतिक साहस बनाम पदानुक्रम का पालन:** सही कार्रवाई के लिये एक निर्णय लेने बनाम पदानुक्रम का पालन करने और श्रेष्ठ की सद्भावना अर्जित करने के बीच विकल्प।

उत्तर : (e) अवैध अप्रवास से निपटने के लिये निम्नलिखित उपाय अपनाए जा सकते है:

- महत्त्वपूर्ण सीमा अवसंरचना (सड़कों, बाड़, रोशनी आदि) में सुधार।
- सीमा सुरक्षा और निगरानी कार्यों के लिये अतिरिक्त कर्मियों की तैनाती।
- अवैध अप्रवास के मामलों में भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस।
- कुशल सीमा प्रबंधन और निगरानी के लिये प्रौद्योगिकी (ड्रोन, उपग्रह इमेजरी, आदि) का उपयोग।
- व्यापक एकीकृत सीमा प्रबंधन प्रणाली (सीआईबीएमएस) और सीमा इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रभुत्व वाली क्यूआरटी इंटरसेप्शन तकनीक (बोल्ड-क्यूआईटी) परियोजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन।

प्रश्न: उच्चतम न्यायालय ने वन आवरण के क्षरण को रोकने और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिये अरावली पहाड़ियों में खनन पर प्रतिबंध लगा दिया है। हालाँकि, कुछ भ्रष्ट वन अधिकारियों और राजनेताओं की मिलीभगत से प्रभावित राज्य के सीमावर्ती ज़िले में पत्थर-खनन फिर भी प्रचलित था। हाल ही में प्रभावित ज़िले में तैनात युवा और सक्रिय एस.पी. ने इस खतरे को रोकने के लिये खुद से वादा किया था। अपनी टीम के साथ अचानक जाँच में, उन्होंने खनन क्षेत्र से बचने की कोशिश कर रहा पत्थर से भरा ट्रक पाया। उसने इस ट्रक को रोकने कोशिश की, लेकिन ट्रक चालक ने पुलिस अधिकारी को कुचल दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई और वह इसके बाद वहाँ से भागने में सफल रहा। पुलिस ने प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) दर्ज की, लेकिन करीब तीन महीने तक मामले में कोई सफलता हासिल नहीं हुई। अशोक, जो प्रमुख टी.वी. चैनल के साथ काम कर रहे खोजी पत्रकार थे, ने स्वत: संज्ञान से मामले की जाँच शुरू की। एक महीने में ही अशोक को स्थानीय लोगों, पत्थर-खनन माफिया और सरकारी अधिकारियों से बातचीत कर सफलता मिली। उन्होंने अपनी खोजी रिपोर्ट तैयार की और टी.वी. चैनल के सी.एम.डी. के सामने पेश की। उन्होंने अपनी जाँच रिपोर्ट में भ्रष्ट पुलिस और सिविल अधिकारियों तथा राजनेताओं के आशीर्वाद से काम करने वाले पत्थर माफिया की पूरी गठजोड़ का खुलासा किया। माफिया में शामिल राजनेता कोई और नहीं बल्कि स्थानीय विधायक थे,

जो मुख्यमंत्री के बेहद करीबी माने जाते हैं। जाँच रिपोर्ट देखने के बाद सी.एम.डी. ने अशोक को सलाह दी कि वह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से रिपोर्ट को सार्वजनिक करने का विचार छोड़ दें। उन्होंने सूचित किया कि स्थानीय विधायक न केवल टी.वी. चैनल के मालिक के रिश्तेदार थे बल्कि अनौपचारिक रूप से चैनल के साथ 20 प्रतिशत के हिस्सेदार भी हैं। सी.एम.डी. ने अशोक को आगे बताया कि अगर वह जाँच रिपोर्ट उन्हें सौंप दे, तो उनके बेटे की पुरानी बीमारी के लिये टी.वी. चैनल से उधार लिये गए 10 लाख रुपए के सॉफ्ट लोन के अलावा उनकी आगे की पदोन्नति और वेतन में बढ़ोतरी का ध्यान रखा जाएगा।

(a) इस स्थिति से निपटने के लिये अशोक के पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) अशोक द्वारा चिह्नित किये गए प्रत्येक विकल्प का समालोचनात्मक मूल्यांकन/परीक्षण कीजिये।

(c) अशोक को किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ रहा है?

(d) आपको क्या लगता है कि अशोक के लिये किस विकल्प को अपनाना सबसे उपयुक्त होगा और क्यों?

(e) उपर्युक्त परिदृश्य में, आप ऐसे ज़िलों में तैनात पुलिस अधिकारियों के लिये किस प्रकार के प्रशिक्षण का सुझाव देंगे,जहाँ पत्थर-खनन की अवैध गतिविधियाँ प्रचलित हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

The Supreme Court has banned mining in the Aravalli Hills to stop degradation of the forest cover and to maintain ecological balance. However, the stone mining was still prevalent in the border district of the affected State with connivance of certain corrupt forest officials and politicians. Young and dynamic SP who was recently posted in the affected district promised to himself to stop this menace. In one of his surprise checks with his team, he found loaded truck with stone trying to escape the mining area. He tried to stop the truck but the truck driver overrun the police officer, killing him on the spot and thereafter managed to flee. Police filed FIR but no breakthrough was achieved in the case for almost three months. Ashok who was the Investigative Journalist working with leading TV channel, suo moto started investigating the case. Within one month, Ashok got breakthrough by interacting with local people, stone mining mafia and government officials. He prepared his investigative story and presented to the CMD of the TV channel. He exposed in his investigative report the complete nexus of stone mafia working with blessing of corrupt police and civil officials and politicians. The politician who was involved in the mafia was no one else but local MLA who was considered to be very close to the Chief Minister. After going through the investigative report, the CMD advised Ashok to drop the idea of making the story public through electronic media. He informed that the local MLA was not only the relative of the owner of the TV channel but also had unofficially 20 percent share in the channel. The CMD further informed Ashok that his further promotion and hike in pay will be taken care of in addition the soft loan of `10 lakhs which he has taken from the TV channel for his son's chronic disease will be suitably adjusted if he hands over the investigative report to him.

(a) What are the options available with Ashok to cope up with the situation?

(b) Critically evaluate/examine each of the options identified by Ashok.

(c) What are the ethical dilemmas being faced by Ashok?

(d) Which of the options, do you think, would be the most appropriate for Ashok to adopt and why?

(e) In the above scenario, what type of training would you suggest for police officers posted to such districts where stone mining illegal activities are rampant?

उत्तर: यह केस स्टडी सुरेंद्र सिंह के समान प्रतीत होती है, 59 वर्षीय पुलिस उपाधीक्षक (DSP) को 19 जुलाई, 2022 को हरियाणा के पचगाँव गाँव के पास खनन गतिविधियों को रोकने की कोशिश के दौरान एक डंपर द्वारा कुचल दिया गया था।

हितधारक

- भ्रष्ट अधिकारी और राजनेता
- एस.पी.
- अशोक (पत्रकार)
- पुलिस अधिकारी
- टीवी चैनल के सी.एम.डी.
- खनन माफिया
- न्यायतंत्र
- स्थानीय विधायक
- स्थानीय लोग
- मुख्यमंत्री

गुण और दोष सहित अशोक के पास विकल्प

विकल्प	गुण	दोष
(a) सी.एम.डी. की सलाह का पालन करें	1. वेतन वृद्धि और पदोन्नति। 2. बेटे की पुरानी बीमारी के इलाज के लिये सॉफ्ट लोन दिया जाएगा।	1. अंत:करण की हानि। 2. एस.पी. के साथ अन्याय 3. मुक्त मीडिया का नुकसान।
(b) रिपोर्ट सार्वजनिक करें	1. पत्रकार के रूप में अशोक की लोकप्रियता बढ़ेगी। 2. एस.पी. और उनके परिवार को न्याय मिलेगा।	1. नौकरी का नुकसान हो सकता है। 2. माफिया से जान से मारने की धमकी मिल सकती है 3. नौकरी से निकाला जा सकता है।

(c) इस्तीफा दें और अन्य रास्ते खोजें	1. अशोक अपने अंत: करण को बचा सकें। 2. वह यूट्यूब के माध्यम से रिपोर्ट को प्रचारित कर सकते हैं।	1. बेटे के इलाज के लिये पैसे नहीं हैं। यहाँ तक कि वह मर भी सकता है। 2. वह कुछ समय के लिये बेरोज़गार हो सकता है।

अशोक के समक्ष नैतिक दुविधाएँ

- **व्यक्तिगत विकास बनाम सामाजिक न्याय:** उन्हें वेतन वृद्धि और पदोन्नति मिलेगी, लेकिन यह एस.पी. के परिवार के साथ अन्याय होगा। अपराधियों को कभी सज़ा नहीं मिलेगी।
- **उनके बेटे की भलाई बनाम स्वतंत्र मीडिया:** उन्हें अपने बेटे के इलाज के लिये आसानी से ऋण प्राप्त हो सकेगा, लेकिन लोकतंत्र का चौथा स्तंभ मर जाएगा।
- **भ्रष्टाचार बनाम एस.पी. के परिवार को न्याय:** भ्रष्ट राजनेताओं और माफियाओं के बीच साँठगाँठ और बढ़ेगी। भविष्य में पुलिस अधिकारी कठोर कार्रवाई करने में कम आत्मविश्वास महसूस करेंगे।
- **साँठगाँठ बनाम नैतिकता:** अशोक की नैतिकता और सदाचार मर जाएगा। भविष्य में और भी माफिया उभरकर सामने आएँगे।

(d) अशोक के लिये सबसे उपयुक्त विकल्प

- विकल्प C अशोक के लिये सबसे उपयुक्त है। उन्हें अपने पद से इस्तीफा दे देना चाहिये और अपना यूट्यूब चैनल शुरू करके रिपोर्ट सार्वजनिक करनी चाहिये।
- इसके अलावा उन्हें अन्य मीडिया चैनलों में भी नौकरी के लिये आवेदन करना चाहिये।
- इस तरह मीडिया चैनल, भ्रष्ट राजनेताओं, लोक सेवकों और खनन माफिया के गठजोड़ के पीछे की सच्चाई सामने आ जाएगी।

(e) ऐसे ज़िलों में तैनात पुलिस अधिकारियों के लिये प्रशिक्षण का प्रारूप

- कठिन इलाके में वाहन ड्राइविंग प्रशिक्षण मॉड्यूल।
- निगरानी के लिये ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीकों के उपयोग हेतु प्रशिक्षण।
- आधुनिक हथियार और प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिये।
- ऐसी साइटों पर छापेमारी के लिये मानक संचालन प्रक्रिया।
- 24×7 केंद्रीय नियंत्रण कक्ष से पूर्ण समर्थन और संचार चैनल होना चाहिये।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है और मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। इसलिये मीडिया की ज़िम्मेदारी है कि वह सच्ची रिपोर्ट प्रकाशित करे और भ्रष्ट लोगों को बेनकाब करे। मीडिया वह है जो सबूत पेश करती है और उसके बाद ही न्यायपालिका निर्णय दे सकती है।

प्रश्न: आपने तीन साल पहले एक प्रतिष्ठित संस्थान से एम.बी.ए. किया है लेकिन कोविड-19 से उत्पन्न मंदी के कारण कैंपस प्लेसमेंट नहीं मिल सका। मगर, बहुत अनुनय तथा लिखित और साक्षात्कार सहित बहुत सारी प्रतियोगी परीक्षाओं की शृंखला के बाद, आप एक अग्रणी जूता कंपनी में नौकरी पाने में सफल रहे। आपके वृद्ध माता-पिता हैं, जो आश्रित हैं और आपके साथ रह रहे हैं। आपने भी हाल ही में यह शालीन नौकरी पाकर शादी की है। आपको निरीक्षण अनुभाग में नियुक्त किया गया था, जो अंतिम उत्पाद को मंज़ूरी देने के लिये जवाबदेह है। पहले एक वर्ष में आपने अपना काम अच्छी तरह से सीखा और प्रबंधन द्वारा आपके प्रदर्शन की सराहना की गई। कंपनी पिछले पाँच साल से घरेलू बाजार में अच्छा कारोबार कर रही है और इस साल यूरोप और खाड़ी देशों को निर्यात करने का भी फैसला किया गया है। हालाँकि, यूरोप के लिये एक बड़ी खेप को उनके निरीक्षण दल द्वारा कुछ खराब गुणवत्ता के कारण अस्वीकार कर दिया गया और वापस भेज दिया गया था। शीर्ष प्रबंधन ने आदेश दिया कि घरेलू बाज़ार के लिये पूर्वोक्त खेप की मंज़ूरी दी जाए। निरीक्षण दल के एक अंग के रूप मे आपने स्पष्ट खराब गुणवत्ता को देखा और टीम कमांडर के संज्ञान में लाया। हालाँकि, शीर्ष प्रबंधन ने टीम के सभी सदस्यों को इन कमियों को नज़र-अंदाज करने की सलाह दी, क्योंकि इतना बड़ा नुकसान प्रबंधन नहीं सह सकता। आपके अलावा टीम के बाकी सदस्यों ने स्पष्ट दोषों को नज़र-अंदाज करते हुए तुरंत हस्ताक्षर कर दिये और घरेलू बाज़ार के लिये खेप को मंज़ूरी दे दी। आपने फिर से टीम कमांडर के संज्ञान में लाया कि इस तरह की खेप की अगर घरेलू बाजार के लिये भी मंज़ूरी दे दी जाती है तो कंपनी की छवि और प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा तथा लंबे समय में प्रतिकूल असर होगा। हालाँकि, आपके शीर्ष प्रबंधन द्वारा आगे सलाह दी गई थी कि यदि आप खेप को मंज़ूरी नहीं देते हैं तो कंपनी कुछ अहानिकर कारणों का हवाला देते हुए आपकी सेवा को समाप्त करने में संकोच नहीं करेगी।

(a) दी गई शर्तों के तहत, निरीक्षण दल के सदस्य के रूप में आपके लिये कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) आपके द्वारा सूचीबद्ध प्रत्येक विकल्प का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।

(c) आप कौन-सा विकल्प अपनाएंगे और क्यों?

(d) आप किन नैतिक दुविधाओं का सामना कर रहे हैं?

(e) निरीक्षण दल द्वारा उठाई गई टिप्पणियों की अनदेखी के क्या परिणाम हो सकते हैं? (250 शब्द, 20 अंक)

You have done MBA from a reputed institution three years back but could not get campus placement due to COVID-19 generated recession. However, after a lot of persuasion and series of competitive tests including written and interview, you managed to get a job in a leading shoe company. You have aged parents who are dependent and staying with you. You also recently got married after getting this decent job. You were allotted the Inspection Section which is responsible for clearing the final product. In first one year, you learnt your job well and was appreciated for your performance by the management. The company is doing good business for last five years in domestic market and this year it is decided even to export to Europe and Gulf countries. However, one large consignment to Europe was rejected by their Inspecting Team due to certain poor quality and was sent back. The top management ordered that ibid consignment to be cleared for the domestic market. As a part of Inspecting Team, you observed the glaring poor quality and brought to the knowledge of the Team Commander. However, the top management advised all the members of the team to overlook these defects as the management cannot bear such a huge loss. Rest of the team members except you promptly signed and cleared the consignment for domestic market, overlooking glaring defects. You again brought to the knowledge of the Team Commander that such consignment, if cleared even for domestic market, will tarnish the image and reputation of the company and will be counter-productive in the long run. However, you were further advised by the top management that if you do not clear the consignment, the company will not hesitate to terminate your services citing certain innocuous reasons.

(a) Under the given conditions, what are the options available to you as a member of the Inspecting Team?

(b) Critically evaluate each of the options listed by you.

(c) What option would you adopt and why?

(d) What are the ethical dilemmas being faced by you?

(e) What can be the consequences of overlooking the observations raised by the inspecting Team?

उत्तर: दी गई केस स्टडी एक काफी सामान्य समस्या का उल्लेख करती है, जिसका सामना कामकाजी पेशेवर सभी क्षेत्रों और उद्योगों में करते हैं। इसके अलावा इस मामले के अध्ययन में मुद्दे की लगभग सार्वभौमिक प्रासंगिकता और प्रयोज्यता है।

उत्तर: (a) नीचे दी गई शर्तों के अंतर्गत निरीक्षण दल के हिस्से के रूप में मेरे पास कुछ विकल्प उपलब्ध हैं।

- मैं दोषों को नज़र-अंदाज कर सकता हूँ और उत्पाद को मंजूर कर सकता हूँ।
- मैं कंपनी के निर्देशों का पालन करने से इनकार कर सकता हूँ और उत्पाद संबंधी मुद्दों को अनदेखा करने तथा इसे पारित करने से मना कर सकता हूँ।
- मैं प्रबंधन को उत्पाद पारित न करने के लिये मनाने की कोशिश कर सकता हूँ।
- इसके अलावा मैं कुछ उपायों का सुझाव दे सकता हूँ, जैसे उत्पाद को रीब्रांड करना, उत्पाद को संशोधित करना और उसके अनुसार विपणन करना आदि जो (a) मुझे अपनी सत्यनिष्ठा को अक्षुण्ण रखने की अनुमति देता है और (b) कंपनी को अपनी बाज़ार स्थिति और प्रतिष्ठा को बनाए रखने में सक्षम बनाते हैं।

उत्तर: (b) उपलब्ध विकल्पों का आलोचनात्मक मूल्यांकन आवश्यक है।

- उत्पाद को अनदेखा और मंजूर करना
- सकारात्मक
  - नौकरी की सुरक्षा
- नकारात्मक
  - नैतिक साहस की कमी
  - कंपनी के लिये उपभोक्ता विश्वास और बाज़ार प्रतिष्ठा की हानि
- उत्पाद को मंजूर करने से इनकार करना
- सकारात्मक
  - नैतिक साहस का प्रदर्शन
  - अखंडता को बरकरार रखना
  - कंपनी की प्रतिष्ठा की निरंतरता
- नकारात्मक
  - नौकरी का नुकसान
  - मेरी ओर से प्रतिरोध के बावजूद उत्पाद का शुभारंभ
  - भावनात्मक लब्धि की कमी का प्रदर्शन
- प्रबंधन को आश्वस्त करना और उत्पाद को संशोधित करना
- सकारात्मक
  - व्यावहारिकता का प्रदर्शन
  - भावनात्मक लब्धि का प्रदर्शन
  - नैतिक साहस का प्रदर्शन
  - कंपनी के लिये उपभोक्ता विश्वास और बाज़ार प्रतिष्ठा के नुकसान की कम संभावना
- नकारात्मक
  - कंपनी के निर्देशों को नज़र-अंदाज करने की संभावना
  - करियर की प्रगति और यहाँ तक कि नौकरी पर नकारात्मक प्रभाव की संभावना
  - दिये गए निर्देशों की अस्वीकृति की स्थिति में कंपनी की प्रतिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना

उत्तर: (c) मैं प्रबंधन को समझाने और तदनुसार उत्पाद को संशोधित करने, रीब्रांडिंग और इसे लॉन्च करने के लिये सुझाव देना चुनूँगा, क्योंकि यह मुझे अपना रोज़गार बनाए रखने और नौकरी की सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं नैतिक साहस और अखंडता प्रदर्शित करने में सक्षम करेगा। इसके अलावा यह संभवत: कंपनी को बाज़ार में अपनी प्रतिष्ठा और विश्वास बनाए रखने की अनुमति देगा।

उत्तर: (d) दी गई केस स्टडी के अनुसार मुझे निम्नलिखित नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ेगा।

- **जनता के प्रति जवाबदेही बनाम कंपनी प्रबंधन के प्रति जवाबदेही:** यह सुनिश्चित करने के बीच विकल्प होना कि ग्राहकों को सही उत्पाद दिया जाए या प्रबंधन के निर्देशों का पालन किया जाए।
- **नैतिकता बनाम यूथ मानसिकता:** एक स्टैंड लेने या यूथ मानसिकता का पालन करने एवं दूसरों के साथ जाने के बीच विकल्प।
- **लाभ बनाम सत्यनिष्ठा:** लाभ और मौद्रिक लाभ के बीच चयन या उत्पाद के साथ मुद्दों को चिह्नित करके अखंडता को बरकरार रखना।
- **नैतिक साहस और नौकरी छूटना:** सही कार्रवाई करने या नौकरी छूटने एवं नौकरी की सुरक्षा को खतरे में डालने के बीच चुनाव।

उत्तर: (e) निरीक्षण दल द्वारा उठाई गई टिप्पणियों की अनदेखी के निम्नलिखित परिणाम हो सकते हैं:

- कंपनी के लिये ग्राहक विश्वास और बाज़ार प्रतिष्ठा का नुकसान।
- यह कंपनी में आत्ममुग्धता की संस्कृति को भी जन्म दे सकता है जो बाज़ार में इसके विकास और अस्तित्व के लिये हानिकारक साबित हो सकता है।
- इसके परिणामस्वरूप कंपनी के निष्पादन और कर्मचारियों में मनोबल का नुकसान भी हो सकता है।
- यह एक पूर्व विश्वसनीय कंपनी से खराब उत्पाद प्राप्त करने के कारण ग्राहकों की ओर से असंतोष और संकट का कारण भी बन सकता है।

प्रश्न: राकेश एक शहर के परिवहन विभाग में संयुक्त आयुक्त के पद पर कार्यरत थे। उनकी नौकरी प्रोफाइल के एक हिस्से के रूप में उन्हें नगर परिवहन विभाग के नियंत्रण और कामकाज की देखरेख का काम सौंपा गया था। नगर परिवहन विभाग के चालक संघ द्वारा, बस चलाते समय ड्यूटी पर मारे गए एक

चालक को मुआवजे के मुद्दे पर हड़ताल का मामला उनके सामने निर्णय के लिये आया था। उसने देखा कि मृत चालक बस संख्या 528 चला रहा था, जो शहर की व्यस्त और भीड़-भाड़ वाली सड़कों पर गुजरती थी। हुआ यूँ कि रास्ते में एक चौराहे के पास एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति द्वारा चलाई जा रही कार और बस की टक्कर में एक हादसा हो गया। पता चला कि बस और कार चालक के बीच कहा-सुनी हुई थी। दोनों के बीच तीखी नोंकझोंक हुई और चालक ने उसे धक्का मार दिया। बहुत-से राहगीर इकट्ठे हो गए और उन्होंने हस्तक्षेप करने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। आखिरकार वे दोनों बुरी तरह घायल हो गए और बहुत खून बह रहा था तथा उन्हें पास के अस्पताल ले जाया गया। हादसे में चालक ने दम तोड़ दिया और उसे बचाया नहीं जा सका। अधेड़ उम्र के चालक की भी हालत नाज़ुक थी, लेकिन एक दिन के बाद वह सँभल गया और उसे छुट्टी दे दी गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुँच गई और प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कर ली गई। पुलिस जाँच में सामने आया कि विवाद की शुरुआत बस चालक ने की थी और उसने शारीरिक हिंसा की थी। उनके बीच मारपीट हुई थी।

नगर परिवहन विभाग प्रबंधन मृत चालक के परिवार को कोई अतिरिक्त मुआवजा नहीं देने पर विचार कर रहा है। नगर परिवहन विभाग प्रबंधन के भेदभाव और गैर-सहानुभूतिपूर्ण रवैये से परिवार बहुत व्यथित, उदास और आंदोलित है। मृत बस चालक की उम्र 52 वर्ष थी, उसके परिवार में पत्नी और स्कूल-कालेज जाने वाली दो बेटियाँ हैं। वह परिवार का इकलौता कमाने वाला था। नगर परिवहन विभाग वर्कर्स यूनियन ने इस मामले को उठाया और जब प्रबंधन से कोई अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं मिली तो उसने हड़ताल पर जाने का फैसला किया। यूनियन की माँग दोहरी थी। पहली, ड्यूटी के दौरान मरने वाले अन्य चालकों को दिया जाने वाला पूरा अतिरिक्त मुआवज़ा और दूसरा, परिवार के एक सदस्य को रोजगार दिया जाए। 10 दिनों से हड़ताल जारी है और गतिरोध बना हुआ है।

(a) उपर्युक्त स्थिति से निपटने के लिये राकेश के पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) राकेश द्वारा चिह्नित किये गए प्रत्येक विकल्प का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये।

(c) वे कौन-सी नैतिक दुविधाएँ हैं, जिनका राकेश को सामना करना पड़ रहा है?

(d) उपर्युक्त स्थिति से निपटने के लिये राकेश क्या कार्यवाही करेंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Rakesh was working as Joint Commissioner in Transport Department of a city. As a Part of his Job profile, among others, he was entrusted with the task of overseeing the control and functioning of City Transport Department. A case of strike by the drivers' union of City Transport Department over the issue of Compensation to a driver whodied on duty while driving the bus came up before him for decision in the matter. He gathered that the driver (deceased) was plying Bus No. 528 which Passed through busy and congested roads of the city. It so happened that near an intersection on the way, there was an accident involving the bus and a car driver by a middle-aged man. It was found that there was altercation between the driver and the car driver. Heated arguments between them led to fight and the driver gave him a blow, Lot of passerbys had gathered and tried to intervene but without success. Eventually, both of them were badly injured and profusely bleeding and were taken to the nearby hospital. The driver succumbed to the injuries and could not be saved. The middle-aged driver's condition was also critical but after a day he recovered and was

discharged. Police had immediately come at the spot of accident and FIR was registered. Police investigation revealed that the quarrel in question was started by the bus driver and he had resorted to physical violence. There was exchange of blows between them. The City Transport Department management is considering of not giving any extra compensation to the driver's (deceased) family. The family is very aggrieved, depressed and agitated against the discriminatory and non-sympathetic approach of the City Transport Department management. The bus driver (deceased) was 52 years of age, was survived by his wife and two school-college going daughters. He was the sole earner of the family. The City Transport Department workers' union took up this case and when found no favourable response from the management, decided to go on strike. The union's demand was two-fold. First was full extra compensation as given to other drivers who died on duty and secondly employment to one family member. The strike has continued for 10 days and the deadlock remains.

(a) What are the options available to Rakesh to meet the above situation?

(b) Critically examine each of the options identified by Rakesh.

(c) What are the ethical dilemmas being faced by Rakesh?

(d) What course of action would Rakesh adopt to diffuse the above situation

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी में विभिन्न संभावित हितधारक

- राकेश एक शहर के परिवहन विभाग में संयुक्त आयुक्त के रूप में।
- नगर परिवहन विभाग का संघ।
- मृत चालक।
- मृत ड्राइवर और उसकी दो स्कूल-कॉलेज जाने वाली बेटियाँ।
- जीवित कार चालक
- पुलिस और उसका कर्त्तव्य

उत्तर: (a) उपर्युक्त स्थिति से निपटने के लिये राकेश के पास संभावित विकल्प हैं-

- राकेश परिवहन संघ की दोनों मांगें स्वीकार कर सकते हैं।
- राकेश परिवहन संघ की दोनों मांगों को अस्वीकार कर सकते हैं।
- राकेश विभाग की एक मांग को स्वीकार और दूसरी को अस्वीकार कर सकते हैं।
- राकेश एक विभागीय जाँच दल नियुक्त कर सकते हैं जिसमें आधे सदस्य संघ से और आधे विभाग से हों।
- राकेश हड़ताल में शामिल लोगों को सख्त चेतावनी भेज सकते हैं और मामले को सुलझाने के लिये पुलिस बल का इस्तेमाल कर सकते हैं।
- राकेश आयुक्त (Commissioner) से सलाह ले सकते हैं।

उत्तर: (b) राकेश द्वारा चिह्नित किये गए प्रत्येक विकल्प का समालोचनात्मक परीक्षण:

राकेश परिवहन संघ की दोनों मांगें स्वीकार कर सकते हैं:

गुण

- गतिरोध तत्काल सुलझ सकता है और परिवहन विभाग पूरी क्षमता के साथ अपना कार्य शुरू कर सकता है।
- मृत चालक के परिवार को तत्काल न्याय मिलेगा।
- गतिरोध दूर करने के बाद राकेश अपनी ऊर्जा और समय विभागीय कार्यों में लगा सकते हैं। इससे विभाग की उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है।

दोष

- यह गतिविधि पुलिस जाँच रिपोर्ट की अवहेलना कर सकती है जिसमें बस चालक द्वारा शुरू किये गए झगड़े का हवाला दिया गया है।
- इससे अन्य बस चालकों में गलत संदेश जा सकता है।
- यह विभागीय न्याय का मामला बन सकता है।

राकेश परिवहन संघ की दोनों मांगों को अस्वीकार कर सकता है:

गुण

- विभाग के खजाने को बचाया जा सकता है।
- विभाग प्रबंधन का निर्णय प्रबल होगा।

दोष

- गतिरोध लंबे समय तक जारी रह सकता है।
- विभाग की उत्पादकता और दक्षता कम हो सकती है।
- मृत चालक के परिवार को गंभीर आर्थिक और आजीविका संबंधी चिंताओं का सामना करना पड़ सकता है।

राकेश विभाग की एक मांग को स्वीकार और दूसरी को अस्वीकार कर सकते हैं:

गुण

- गतिरोध किसी नतीजे पर पहुँच सकता है।
- मृतक चालक के परिवार को आधी राहत मिल सकती है।
- विभाग की उत्पादकता और दक्षता को बहाल किया जा सकता है।

दोष

- यह पुलिस जाँच रिपोर्ट की अवहेलना कर सकती है।
- गतिरोध जारी रह सकता है क्योंकि परिवहन संघ अपनी दोनों मांगों पर कायम है।

राकेश एक विभागीय जाँच दल नियुक्त कर सकते हैं जिसमें संघ और विभाग से बराबर संख्या में तथा कुछ पुलिस विभाग से सदस्य शामिल हों। संघ को फिर से कार्य शुरू करना चाहिये और समिति के फैसले की प्रतीक्षा करनी चाहिये। समिति का निष्कर्ष आने तक वह बफर समय में परिवार की मदद के लिये विभागीय वित्त पोषण की व्यवस्था कर सकते हैं:

गुण

- यह विभाग प्रबंधन, परिवहन संघ और पुलिस विभाग के लिये जीत की स्थिति हो सकती है।
- इसका परिणाम सभी एकत्र करने योग्य समाधान बिंदुओं में हो सकता है।
- यह सर्वदलीय एकीकृत विवाद समाधान प्रणाली का उदाहरण स्थापित कर सकता है।
- पुलिस विभाग उचित आनुपातिक कानूनी दृष्टिकोण का समाधान प्रदान कर सकता है जो विभाग प्रबंधन को मृत चालक के परिवार के प्रति अधिक सहानुभूति और दयालु होने के लिये प्रेरित कर सकता है।

दोष

- सभी पार्टियों के शामिल होने के कारण किसी नतीजे पर पहुँचने में समय लग सकता है।
- ऊर्जा, समय, संसाधनों की बर्बादी यदि यह किसी निर्णायक स्थिति नहीं पहुँची।

राकेश हड़ताल में शामिल लोगों को सख्त चेतावनी भेज सकते हैं और मामले को सुलझाने के लिये पुलिस बल का इस्तेमाल कर सकते हैं-

गुण

यह संभव है कि सख्त चेतावनी और पुलिस बल के डर से, अधिकांश संघ कार्यकर्त्ता अपना काम फिर से शुरू कर दें।

दोष

- यह कार्रवाई स्थिति को हिंसक बना सकती है।
- यह संघ कार्यकर्ताओं और विभाग प्रबंधन के बीच विश्वास की कमी और कड़वाहट के तत्त्वों को शामिल कर सकता है।
- विभाग की उत्पादकता बिगड़ हो सकती है।

राकेश आयुक्त (Commissioner) से सलाह ले सकते हैं-

गुण

- एक अधिक अनुभवी व्यक्ति के रूप में आयुक्त इस स्थिति से निपटने के लिये उचित सलाह दे सकते हैं।
- आयुक्त से परामर्श करके, वे भविष्य के निर्णयों के लिये आयुक्त को विश्वास में ले सकते हैं।

दोष

- आयुक्त के पास कूटनीतिक रूप से उनकी मदद करने से इनकार करने का विकल्प है।
- आयोग राकेश की संकट से निपटने की क्षमता पर सवाल उठा सकता है।

उत्तर : (c) राकेश के समक्ष आ रही संभावित नैतिक दुविधाएँ-

- **नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत बनाम कानून की उचित प्रक्रिया:** नैसर्गिक न्याय का सिद्धांत कहता है कि मृतक के परिवार को अतिरिक्त मुआवज़ा और उसके परिवार को नौकरी मिलनी चाहिये लेकिन कानून की उचित प्रक्रिया विभाग प्रबंधन को ऐसा करने में बाधा डालती है।
- **अधिकार बनाम कर्त्तव्य:** वह संयुक्त आयुक्त के रूप में सार्वजनिक कर्त्तव्य बनाम अतिरिक्त मुआवज़े और मृतक परिवार के नौकरी के अधिकारों की दुविधा का सामना कर रहे हैं।
- **सार्वजनिक जवाबदेही बनाम व्यक्तिगत जवाबदेही:** एक लोक सेवक के रूप में वह अपने द्वारा की गई सार्वजनिक सेवा और गतिविधियों के प्रति जवाबदेह है। दूसरी ओर, करुणामय और सहानुभूति के आधार पर वह अपने व्यक्तिगत विवेक के प्रति जवाबदेह होता है।
- **आचार संहिता बनाम नैतिक संहिता:** आचार संहिता मांग करती है कि आचरण नियम और विनियम क्या कहते हैं। नैतिक संहिता नैतिकता के क्षेत्र में 'क्या करना चाहिये' के तरीके की मांग करती है।
- **नैतिकता बनाम कानून:** नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत के तहत नैतिकता को 'क्या करना चाहिये'। जबकि कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के क्षेत्र में या कानून के उचित पाठ्यक्रम के तहत कानून वैधानिक नियमों और विनियमों का पालन करता है।
- **अंत:करण का संघर्ष:** लोक सेवक बनाम वैयक्तिक प्राणी होने के नाते वे अंत:करण के संकट की दुविधा का सामना कर रहे हैं।

उत्तर : (d) उपर्युक्त स्थिति से निपटने के लिये राकेश द्वारा कार्यवाही-

नैतिक सद्गुण के साथ कार्यवाही का संभावित तरीका जो राकेश उपरोक्त स्थिति को दूर हेतु सकता है-

राकेश के पास कार्यवाही करने के कई तरीके हैं लेकिन सबसे अच्छा यह है कि-

राकेश एक विभागीय जाँच दल नियुक्त कर सकते हैं जिसमें संघ और विभाग से बराबर संख्या में तथा कुछ पुलिस विभाग से सदस्य शामिल हों। संघ को फिर से कार्य शुरू करना चाहिये और समिति के फैसले की प्रतीक्षा करनी चाहिये। चूँकि, समिति के निर्णय प्रक्रिया में समय लगता है, इसलिये समिति का निष्कर्ष आने तक, वह बफर समय में मृतक के परिवार की मदद के लिये विभागीय वित्त पोषण की व्यवस्था कर सकते हैं।

गुण

- यह विभाग प्रबंधन, परिवहन संघ और पुलिस विभाग के लिये जीत की स्थिति हो सकती है।
- इसका परिणाम सभी एकत्र करने योग्य संकल्प बिंदुओं में हो सकता है।
- परिवहन संघ कुछ समय के लिये कामकाज फिर से शुरू कर सकता है।
- यह सर्वदलीय एकीकृत विवाद समाधान प्रणाली का उदाहरण स्थापित कर सकता है।

- पुलिस विभाग उचित आनुपातिक कानूनी समाधान प्रदान कर सकता है जो विभाग प्रबंधन को मृतक चालक के परिवार के प्रति अधिक सहानुभूतिपूर्ण और दयालु होने के लिये प्रेरित कर सकता है।

हालाँकि, विभिन्न दलों की भागीदारी के कारण यह प्रक्रिया अधिक समय लेने वाली हो सकती है, लेकिन इस समिति का अंतिम निष्कर्ष अधिक व्यापक, बहुमत से सहमत, समावेशी हो सकता है। इसलिये राकेश को उपरोक्त स्थिति को प्रचारित करने के लिये इस एकीकृत और सभी सहभागी कार्रवाई का उपयोग करना चाहिये।

यदि कोई अतिवादी मामला है और समिति का निर्णय मृतक परिवार के पक्ष में नहीं है तो राकेश को एक सहानुभूतिपूर्ण और दयालु लोक सेवक के रूप में चालक के परिवार की मदद के लिये विभागीय जन सहयोग (क्राउडफंडिंग) का आयोजन करना चाहिये साथ ही ज्वाइंट कमिश्नर के तौर पर उन्हें परिवार की बड़ी बेटी को भी तदर्थ नौकरी प्रदान करना चाहिये।

प्रश्न: आपको पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड में अनुभाग का शीर्ष अधिकारी नियुक्त किया जाता है ताकि अनुपालन सुनिश्चित हो और इसकी अनुवर्ती का पालन हो सके। उस क्षेत्र में बड़ी संख्या में लघु और मध्य उद्योग थे जिन्हें अनापत्ति दी जा चुकी थी। आपको पता चला कि ये उद्योग अनेक प्रवासी कामगारों को रोजगार मुहैया कराते हैं। अधिकांश औद्योगिक इकाइयों के पास पर्यावरणीय अनापत्ति प्रमाण-पत्र हैं। पर्यावरणीय अनापत्ति उन उद्योगों और परियोजनाओं पर अंकुश लगाने के लिये हैं, जो इस क्षेत्र में पर्यावरण और जीवित प्रजातियों को कथित रूप से बाधित करती हैं। लेकिन व्यवहार में इनमें से अधिकांश इकाइयाँ वायु, जल और मृदा प्रदूषित इकाइयाँ बनी हुई हैं। ऐसे में स्थानीय लोगों को लगातार स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

यह पुष्टि की गई कि अधिकांश उद्योग पर्यावरणीय अनुपालन का उल्लंघन कर रहे थे। आपने नया पर्यावरणीय प्रमाण-पत्र आवेदन करने और सक्षम अधिकारी से प्राप्त करने के लिये सभी औद्योगिक इकाइयों के लिये नोटिस जारी कर दी। हालाँकि, औद्योगिक इकाइयों के एक वर्ग, अन्य न्यस्तस्वार्थी लोगों और स्थानीय राजनेताओं के एक समूह से आपकी कार्यवाही को विरोध प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा। आपके प्रति कामगार भी अत्यंत शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने लगा। कार्यवही को विरोध प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ा। आपके प्रति कामगार भी अत्यंत शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने वाला क्योंकि उन्होंने सोचा कि आपकी कार्यवाही इन औद्योगिक इकाइयों को तालाबंदी की ओर ले जाएगी और इसका परिणामस्वरूप बेरोज़गारी के कारण उनकी आजीविका असुरक्षित और अनिश्चित हो जाएगी। कई उद्योग-मालिकों ने इस दलील के साथ आपके पास पहुँचकर प्रस्तावित किया कि आपको सख्त कार्यवाही शुरू नहीं करनी चाहिये क्योंकि यह उसे अपनी इकाइयाँ बंद करने के लिये मजबूर करेगी और भारी वित्तीय हानि तथा बाजार में उनके उत्पादों की कमी का कारण होगा। जाहिर है कि इससे मज़दूरों और उपभोक्ताओं की परेशानी ज्यादा होगी। श्रमिक संघ ने भी आपको इकाइयों को बंद करने के खिलाफ प्रतिनिधित्व भेजा। आपको एक साथ अज्ञात कोणों से धमकियाँ मिलने लगीं। हालाँकि, आपको अपने कुछ सहकर्मियों का समर्थन मिला, जिन्होंने आपको सलाह दी कि आप पर्यावरणीय अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिये स्वतंत्र रूप से काम करें। स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों ने भी आपका समर्थन किया और उन्होंने प्रदूषणकारी इकाइयों को तत्काल बंद करने की मांग पेश की।

(a) प्रदत्त स्थिति में आपके पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) आपके द्वारा सूचीबद्ध किये गए विकल्पों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये।

(c) पर्यावरणीय अनुपालन सुनिश्चित करने के लिये आप किस प्रकार की क्रियाविधि का सुझाव देंगे?

(d) अपने विकल्पों का उपयोग करने में आपको किन नैतिक दुविधाओं का सामना करना पड़ा?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are appointed as an officer heading the section in Environment Pollution Control Board to ensure compliance and its follow-up. In that region, there were large number of small and medium industries which had been granted clearance you learnt that these industries provide employment to many migrant workers Most of the industrial units have got environmental clearance certificate in their possession. The environmental clearance seeks to curb industries and projects that supposedly hamper environment and living species in the region. But in practice most of these units remain to be polluting units in several ways like air, water and soil pollution. As such, local people encountered persistent health problems.

It was confirmed that majority of the industries were violating environmental compliance. You issued notice to all the industrial units to apply for fresh environmental clearance certificate from the competent authority. However, your action met with hostile response from a section of the industrial units, other vested jnterest persons and a section of the local politicians. The workers also became very hostile to you as they felt that your action would lead to the closure these of industrial units, and the resultant unemployment will lead to insecurity and uncertainty in their livelihood. Many

owners of the industries approached you with the plea that you should not initiate harsh action as it would compel them their units, and cause huge Financial loss, shortage of their products in the market. These would obviously add to the sufferings of the labourers and the consumer alike. The labour union also sent you representation requesting against the closure of the units. You simultaneously started receiving threats from unknown corners. You however received supports from some of your colleagues, who advised you to act freely to ensure environmental compliance. Local NGOs also came to your support and they demanded the closure of the polluting units immediately

(a) What are the options available to you under the given situation?

(b) Critically examine the options listed by you.

(c) What type of mechanism would you suggest to ensure environmental compliance?

(d) What are the ethical dilemmas you faced in exercising your option?

उत्तर: (a) एक अधिकारी के रूप में हमेशा ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जहाँ एक अधिकारी के पास निर्णय लेने के लिये विभिन्न विकल्प होते हैं लेकिन उसे निर्णय लेना पड़ता है जो सभी के लिये सबसे अच्छा हो। दिये गए परिच्छेद के तहत मेरे पास दो विकल्प हैं:

- मैं प्रत्यक्ष कार्रवाई कर सकता हूँ और पर्यावरण में बाधा डालने वाले सभी उद्योगों को बंद कर सकता हूँ, इसके तात्कालिक परिणामों जैसे श्रमिकों के बीच बेरोज़गारी, श्रमिक संघों का विरोध, दवाओं की क्रय क्षमता में कमी के कारण स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों में वृद्धि आदि का विश्लेषण किये बिना।
- दूसरा विकल्प यह है कि मैं उद्योगों के सभी मालिकों और पर्यावरणीय गैर-सरकारी संगठनों के साथ एक बैठक बुलाऊंगा और हानिकारक तत्त्वों का उपयोग करने और जहाँ भी उपलब्ध हो या संभव हो बेहतर विकल्पों का उपयोग करने की सीमा निर्धारित करने जैसे कुछ सामान्य आधार पर आने के लिये उनसे बात करूँगा। साथ ही गैर-सरकारी संगठनों की मदद से मध्यम उद्योगों को नई पर्यावरणीय मंज़ूरी लेने के लिये मनाऊँगा।

उत्तर: (b) पहले विकल्प में मैं इसके दीर्घकालिक प्रभाव का विश्लेषण किये बिना केवल अपना निर्धारित कर्त्तव्य पूरा करूँगा। तात्कालिक प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ या प्रदूषण कम हो जाएँगे, लेकिन दीर्घावधि में इस निर्णय के कई अन्य परिणाम हैं जैसे गरीबी, गरीबी के कारण स्वास्थ्य में गिरावट, प्लेग आदि के कारण अन्य अप्रत्यक्ष पर्यावरणीय मुद्दे उत्पन्न हो सकते हैं।

दूसरे विकल्प में मैं सभी के मुद्दे पर विचार करूँगा। उद्योगों को सीधे तौर पर बंद नहीं किया जाएगा। समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ बात करना और ज़मीनी स्तर पर कार्य करना सबसे अच्छा संभव तरीका है। शायद इससे अल्पावधि में सकारात्मक परिणाम नहीं दिख सकते है लेकिन यह लंबी अवधि में विरोध या बेरोज़गारी उत्पन्न किये बिना प्रदूषण को कम करेगा।

उत्तर: (c) मेरे द्वारा सुझाए गए पर्यावरणीय अनुपालन निम्नलिखित होंगे

- उद्योगों को पर्यावरण पर उनके हानिकारक प्रभाव के आधार पर दो श्रेणियों में विभाजित करना तथा सबसे हानिकारक उद्योगों पर सख्त नियम लागू करना।
- प्रत्येक उद्योग को अपना कचरा खुद साफ करना चाहिये साथ ही प्रत्येक उद्योग में वाटर ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित होने चाहिये।
- हानिकारक रसायनों के लिये स्थायी वैकल्पिक तत्त्वों का उपयोग और पर्यावरण को सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचाने वाले तत्त्वों या रसायनों को पूरी तरह प्रतिबंधित किया जाए।
- दूसरी श्रेणी के उद्योगों (सबसे हानिकारक उद्योगों) द्वारा नई पर्यावरण मंज़ूरी ली जानी चाहिये।
- प्रतिबंधित रसायनों का उपयोग करने वाले और निर्धारित सीमा से ऊपर पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले उद्योगों को मौद्रिक दंड देना चाहिये।

उत्तर: (d) जिस नैतिक दुविधा का मैं सामना करूँगा वह कर्त्तव्य के पूरा होने और प्रवासी कामगारों के प्रति करुणा तथा सहानुभूति के बीच है। कर्त्तव्य पूरा करना तर्कसंगत नहीं होगा, लेकिन प्रवासी श्रमिकों के प्रति करुणा और सहानुभूति के साथ निर्णय लेना तर्कसंगत, सदाचार और नैतिक होगा। एक और नैतिक दुविधा जिसका मुझे सामना करना पड़ेगा, वह पर्यावरण और कार्य की रक्षा के बीच होगा।

2021

प्रश्न: सुनील एक युवा लोक सेवक है तथा सक्षमता, ईमानदारी, समर्पण तथा मुश्किल और दुर्वह कामों के लिये अथक प्रयास हेतु उसकी प्रतिष्ठा है। उसकी प्रोफाइल को देखते हुए उसके अधिकारियों ने उसे एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण और संवेदनशील कार्यभार को सँभालने के लिये चुना था। उसे अवैध बालू खनन के लिये कुख्यात आदिवासी-बहुल ज़िले में तैनात किया गया। नदी पट्टी से, अनियंत्रित रूप से बालू उत्खनन करके ट्रकों से ढोकर उसको काला बाज़ार में बेचा जा रहा था। यह अवैध बालू खनन माफिया, स्थानीय कार्यकर्त्ताओं और आदिवासी बाहुबलियों के सहयोग से काम कर रहा था, जो बदले में चुनिंदा गरीब आदिवासियों को रिश्वत देते रहते थे तथा उनको डरा और धमका कर रखते थे।

सुनील ने एक तेज़ और ऊर्जावान अधिकारी होने के नाते ज़मीनी हकीकत पहचान कर और माफिया के द्वारा कुटिल तथा संदिग्ध तंत्र के माध्यम से अपनाए गए उनके तौर-तरीकों को तुरंत पकड़ लिया। पूछताछ करने पर उसने पाया कि उसके अपने कार्यालय के कुछ कर्मचारियों की उनसे मिलीभगत है

और उन्होंने उनके साथ घनिष्ठ अवांछनीय गठजोड़ विकसित कर लिया है। सुनील ने उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई शुरू की और उनके बालू से भरे ट्रकों की आवाजाही के अवैध संचालन पर छापे मारना शुरू कर दिया। माफिया भड़क गया, क्योंकि पहले वाले बहुत अधिकारियों ने उनके विरुद्ध इतने बड़े कदम नहीं उठाए थे। कार्यालय के कुछ कर्मचारियों ने जो कथित तौर पर माफिया के करीब थे, उनको सूचित किया कि अधिकारी उस ज़िले में माफिया के अवैध बालू खनन संचालन को साफ करने के लिये दृढ़ संकल्पित है और उन्हें अपूरणीय क्षति हो सकती है।

माफिया शत्रुतापूर्ण हो गया और जवाबी हमला शुरू किया। आदिवासी बाहुबली और माफिया ने उसको गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी देना शुरू कर दिया। उसके परिवार (पत्नी और वृद्ध माता) का पीछा किया जा रहा था, वे उनकी वास्तविक निगरानी में थे जिससे कि उन सभी को मानसिक यातना, यंत्रणा और तनाव हो रहा था। उस समय मामले ने गंभीर रूप धारण कर लिया, जब एक बाहुबली उसके कार्यालय में आया और उसको छापे मारना इत्यादि बंद करने की धमकी दी और कहा कि उसका हाल उसके पूर्व अधिकारियों से अलग नहीं होगा (दस वर्ष पूर्व माफिया द्वारा एक अधिकारी की हत्या कर दी गई थी)।

(a) इस स्थिति को सँभालने में सुनील के लिये उपलब्ध विभिन्न विकल्पों की पहचान कीजिये।

(b) आपके द्वारा सूचीबद्ध विकल्पों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।

(c) आपके विचार से उपर्युक्त में से कौन-सा विकल्प सुनील के लिये सबसे उपयुक्त होगा और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

Sunil is a young civil servant and has a reputation for his competence, integrity, dedication and relentless pursuit of difficult and onerous jobs. Considering his profile, he was picked up by his bosses to handle a very challenging and sensitive assignment. He was posted in a tribal dominated district notorious for illegal sand mining. Excavating sand from river belt and transporting through trucks and selling them in black market was rampant. This illegal sand mining mafia was operating with the support of local functionaries and tribal musclemen who in turn were bribing selected poor tribals and had kept the tribals under fear and intimidation.

Sunil being a sharp and energetic officer immediately grasped the ground realities and the modus operandi followed by the mafia through their devious and dubious mechanism. On making inquiries, he gathered that some of their own office employees are in hand and glove with them and have developed close unholy nexus. Sunil initiated stringent action against them and started conducting raids on their illegal operations of movement of trucks filled with sand. The mafia got rattled as not many officers in the Past had taken such strong steps against the mafia. Some of the office employees who were allegedly close to mafia informed them that the officer is determined to clean up the mafia's illegal sand mining operations in that district and may cause them irreparable damage.

The mafia turned hostile and launched counter-offensive. The tribal musclemen and mafia started threatening him with dire consequences. His family (wife and old mother) were stalked and were under virtual surveillance and thus causing mental torture, agony and stress to all of them. The matter assumed serious proportions when a muscleman came to his office and threatened him to stop raids, etc., otherwise, his fate will not be different than some of his predecessors (ten years back one officer was killed by the mafia).

(a) Identify the different options available to Sunil in attending to this situation.

(b) Critically evaluate each of the options listed by you.

(c) Which of the above, do you think, would be the most appropriate for Sunil to adopt and why?

उत्तर: **इस प्रश्न में शामिल विभिन्न नैतिक मुद्दे-**

- अवैध बालू खनन, काला बाज़ारी।
- स्थानीय सहयोग।
- गरीब आदिवासियों को रिश्वत।
- सरकारी कर्मचारियों की मिलीभगत।
- माफियाओं का हमला।
- सुनील के परिवार का पीछा करना।
- सुनील को धमकी दिया जाना।
- पूर्व सरकारी कर्मचारी की हत्या।

इस प्रश्न में शामिल विभिन्न हित समूह-

- सुनील।
- आदिवासी।
- सरकार।
- खनन माफिया।
- सरकारी कर्मचारी।
- स्थानीय कार्यकर्त्ता।
- सुनील का परिवार।

उत्तर: (a) इस स्थिति को सँभालने में सुनील के लिये उपलब्ध विभिन्न विकल्प-

I. अवैध खनन को रुकवाना।

II. माफियाओं के खिलाफ कार्य करने से मना करना, या अपना ट्रांसफर करवा लेना।

III. वरिष्ठ अधिकारियों को संपूर्ण घटनाक्रम से सूचित कर आगे की कार्रवाई के लिये सलाह लेना।

उत्तर: (b) सूचीबद्ध विकल्पों का आलोचनात्मक मूल्यांकन-

I. **अवैध खनन को रुकवाना:** सुनील को इसी कार्य के लिये भेजा गया है। अत: उसका कर्त्तव्य है। इससे उसको प्रशंसा मिलेगी, परंतु इससे खनन माफियाओं के साथ उसकी शत्रुता बढ़ सकती है और पारिव रिक नुकसान हो सकता है।

II. **अपना ट्रांसफर करवा लेना या माफियाओं के खिलाफ कार्य करने से मना करना:** ऐसा करके वह माफियाओं के हमले से स्वयं की एवं अपने परिवार की रक्षा कर सकता है, परंतु इस विकल्प का चयन करके अपने सार्वजनिक कर्त्तव्यों के निर्वहन से पीछा छुड़ाना होगा, जो उसके हित में नहीं है।

III. **वरिष्ठ अधिकारियों को माफियाओं द्वारा दी जा रही धमकी के बारे में सूचित करना एवं उनसे सलाह लेना:** स्थिति की गंभीरता को देखते हुए यह उपयुक्त विकल्प है, क्योंकि अपने वरिष्ठ अधिकारियों को मामले की सूचना देना प्रशासनिक ज़िम्मेदारी होती है तथा बीच-बीच में उनसे सलाह लेते रहना भी एक अधिकारी के लिये बेहतर होता है। पर यहाँ वह अपने विवेक से कार्य करने से बचता हुआ प्रतीत होगा। वरिष्ठ अधिकारियों के पास ऐसा संदेश जाएगा कि वह कार्य करने से बचना चाह रहा है, अर्थात् नकारात्मक प्रभाव।

IV. **अतिरिक्त सुरक्षा बल मंगवाना:** मामले की गंभीरता को देखते हुए अतिरिक्त सुरक्षा बल मंगवाया जा सकता है और परिवार की सुरक्षा भी सुनिश्चित करना ज़रूरी है, परंतु इससे माफियाओं की सतर्कता और जवाबी हमले बढ़ने की संभावना है।

उत्तर: (c) सुनील के लिये सबसे उपयुक्त विकल्प कौन-सा और क्यों?

उपर्युक्त मामले में सुनील के लिये सबसे उपयुक्त विकल्प I और III है।

अवैध खनन को रुकवाना तथा अपने वरिष्ठ अधिकारियों को संपूर्ण घटनाओं की सूचना देकर उनसे भी सलाह लेकर कार्य करना उचित होगा, क्योंकि वह एक सार्वजनिक अधिकारी है और उसे इसी कार्य के लिये भेजा गया है। ऐसे में उसे अपने विभिन्न विकल्पों पर विचार करते हुए अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती करके अवैध गतिविधियों को बंद करवाना सुनिश्चित करना चाहिये तथा इस कार्य में लिप्त लोगों की गिरफ्तारी सुनिश्चित करवानी चाहिये।

इसके साथ-साथ उसे अपने कार्यालय के कर्मचारियों को भी कारण बताओ नोटिस जारी कर उनसे उनकी माफियाओं के साथ मिलीभगत के लिये जवाब तलब करना चाहिये तथा अपने परिवार की सुरक्षा को भी सुनिश्चित करना चाहिये।

प्रश्न: आप एक मध्यवर्गीय शहर में डिग्री कॉलेज के उप-प्रधानाचार्य हैं। प्रधानाचार्य हाल ही में सेवानिवृत्त हुए हैं और प्रबंधन उनके प्रतिस्थापन की तलाश कर रहा है। यह भी माना जाता है कि प्रबंधन आपको प्रधानाचार्य के रूप में पदोन्नत कर सकता है। इस बीच वार्षिक परीक्षा के दौरान विश्वविद्यालय से आए उड़न दस्ते ने दो छात्रों को अनुचित तरीकों का उपयोग करते हुए रंगे हाथों पकड़ लिया। कॉलेज का एक वरिष्ठ व्याख्याता व्यक्तिगत रूप से इन छात्रों को इस कार्य में मदद कर रहा था। यह वरिष्ठ व्याख्याता प्रबंधन का करीबी भी माना जाता था। उनमें से एक छात्र स्थानीय राजनेता का बेटा था, जो कॉलेज को वर्तमान प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से संबंधन कराने में मददगार रहा था। दूसरा छात्र एक स्थानीय व्यवसायी का बेटा था, जिसने कॉलेज चलाने के लिये अधिकतम धन दान दिया था। आपने इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बारे में तुरंत प्रबंधन को सूचित किया। प्रबंधन ने आपको किसी भी कीमत पर उड़न दस्ते के साथ इस मुद्दे को हल करने के लिये कहा। उन्होंने आगे कहा कि इस घटना से न केवल कॉलेज की छवि खराब होगी, बल्कि राजनेता और व्यवसायी भी कॉलेज के कामकाज के लिये बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं। आपको यह भी संकेत दिया गया था कि प्रधानाचार्य के रूप में आपकी आगे की पदोन्नति उड़न दस्ते के साथ मुद्दे को हल करने की आपकी क्षमता पर निर्भर करती है। इस दौरान आपके प्रशासन अधिकारी ने सूचित किया कि छात्र संघ के कुछ सदस्य इस घटना में शामिल वरिष्ठ व्याख्याता और छात्रों के खिलाफ कॉलेज के गेट के बाहर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

(a) इस मामले से संबंधित नैतिक मुद्दों पर चर्चा कीजिये।

(b) उप-प्रधानाचार्य के रूप में आपके पास उपलब्ध विकल्पों का आलोचनात्मक रूप से परीक्षण कीजिये। आप कौन-सा विकल्प अपनाएंगे और क्यों? (250 शब्द, 20 अंक)

You are Vice Principal of a degree college in one of the middle-class towns. Principal has recently retired and management is looking for his replacement. There are also feelers that the management may promote you as Principal. In the meantime, during annual examination the flying squad which came from the university caught two students red-handed involving in unfair means. A senior lecturer of the college was personally helping these students in this act. This senior lecturer also happens to be close to the management. One of the students was son of a local politician who was responsible in getting college affiliated to the present reputed university. The second student was son of a local businessman who has donated maximum funds for running of the college. You immediately informed the management regarding this unfortunate incident. The management told you to resolve the issue with flying squad at any cost. They further said that such incident will not only tarnish the image of the college but also the politician and businessman are very important personalities for the functioning of

the college. You were also given hint that your further promotion to Principal depends on your capability in resolving this issue with flying squad. In the meantime, you were intimated by your administrative officer that certain members of the student union are protesting outside the college gate against the senior lecturer and the students involved in this incident and demanding strict action against defaulters.

(a) Discuss the ethical issues involved in the case.

(b) Critically examine the options available with you as Vice Principal. What option will you adopt and why?

उत्तर: उपर्युक्त मामले में शामिल नैतिक मुद्दे हैं:

उत्तर: (a) इस मामले से संबंधित नैतिक मुद्दों की चर्चा-

- इस मामले में वरिष्ठ व्याख्याता ने अपनी पेशेवर ईमानदारी से समझौता किया है, यह स्थिति मेरी खुद की सत्यनिष्ठा की भी परीक्षा है, क्योंकि यह मेरे मूल्यों/कर्त्तव्यों और व्यक्तिगत हितों के बीच टकराव पैदा करती है।
- वर्तमान स्थिति मेरी नैतिक शक्ति की परीक्षा है, क्योंकि यह एक ओर कॉलेज के प्राचार्य बनने का आकर्षक अवसर है, वहीं दूसरी ओर सही काम करना मेरा कर्त्तव्य है।
- वर्तमान स्थिति में निष्पक्षता का नैतिक मुद्दा शामिल है।
- यह मेरी व्यावसायिक नैतिकता की परीक्षा है, जिसमें यह देखा जाना है कि मैं बिना किसी डर या पक्षपात के अपना कर्त्तव्य निभा सकता/सकती हूँ या नहीं।

उत्तर: (b) उप-प्रधानाचार्य के रूप में मेरे पास उपलब्ध विकल्प हैं:

- कॉलेज प्रबंधन की सलाह को मानना और छात्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई किये बिना, किसी भी कीमत पर समस्या को हल करने का प्रयास करना। यह विकल्प अल्पावधि में कॉलेज की प्रतिष्ठा को बचाएगा। कॉलेज को वित्तीय संरक्षण प्राप्त होता रहेगा और यह मेरे पदोन्नत होने की संभावना को और अधिक निश्चित कर सकता है, लेकिन यह प्रक्रियाओं की शुद्धता से समझौता करेगा। इससे कॉलेज की साख खराब होगी, तथा यह मेरी पेशेवर नैतिकता से समझौता करेगा। साथ ही इससे छात्रों का विरोध और तेज़ होगा।
- उड़न दस्ते को वरिष्ठ व्याख्याता और दो छात्रों के खिलाफ प्रक्रिया के अनुसार निष्पक्ष रूप से सख्त कार्रवाई करने देना। यह विकल्प प्रक्रियाओं की शुद्धता को लागू करेगा, इससे कॉलेज की साख बढ़ेगी, यह भविष्य के लिये एक सही मिसाल कायम करेगा, यह शिक्षकों द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ जाँच सुनिश्चित करेगा और यह अन्य छात्रों के विरोध को शांत करेगा। लेकिन इससे दोनों बच्चों का भविष्य खतरे में पड़ सकता है, इससे कॉलेज पर वित्तीय प्रभाव पड़ सकता है, कॉलेज की बदनामी हो सकती है, यह संबंधित छात्रों के परिवारों की प्रतिष्ठा को धूमिल कर सकता है तथा मेरी पदोन्नति की संभावना कम हो जाएगी।
- उड़न दस्ते को कोई कार्रवाई न करने के लिये राज़ी करना और आंतरिक जाँच के बाद छात्रों और व्याख्याता को दंडित करना। यह विकल्प अल्पावधि में कॉलेज की प्रतिष्ठा और उसके संरक्षकों को बचाएगा, इससे दो छात्रों और व्याख्याता का करियर बचेगा व यह संकट प्रबंधन के लिये मेरी क्षमता दिखाएगा। हालाँकि इससे विरोध बढ़ने की संभावना है, यह भविष्य में ऐसी और घटनाओं को प्रोत्साहित कर सकता है तथा यह निष्पक्ष प्रक्रियाओं की शुद्धता से समझौता करेगा।

मैं दूसरा विकल्प अपनाऊँगा/अपनाऊँगी, क्योंकि:

- कॉलेज छात्रों के लिये सही मूल्य को सीखने का स्थान है, यह विकल्प छात्रों को नैतिकता और नैतिकता का महत्त्व सिखाएगा।
- यह विकल्प निष्पक्ष संस्थान के रूप में कॉलेज की विश्वसनीयता को बनाए रखेगा।
- अनुचित तरीकों से पदोन्नति प्राप्त करना, साधनों साधन और साध्य दोनों की शुद्धता के सिद्धांत का उल्लंघन करेगा।
- वरिष्ठ व्याख्याता की संलिप्तता सख्त कार्रवाई की मांग करती है।
- यह विकल्प उन सभी छात्रों के लिये उचित होगा, जो ईमानदारी से परीक्षा दे रहे थे, और विरोध को शांत करेगा।
- वित्तीय संरक्षण के मुद्दे पर किसी अन्य की सहायता का मार्ग भी प्रशस्त कर सकते हैं।

प्रश्न: किसी राज्य-विशेष की राजधानी में यातायात की भीड़ को कम करने के लिये एक एलिवेटेड कॉरिडोर का निर्माण किया जा रहा है। आपकी पेशेवर क्षमता और अनुभव के आधार पर आपको इस प्रतिष्ठित परियोजना के परियोजना प्रबंधक के रूप में चुना गया है। अगले दो वर्षों में परियोजना को पूरा करने की समय-सीमा 30 जून, 2021 है, क्योंकि इसका उद्घाटन मुख्यमंत्री द्वारा जुलाई 2021 के दूसरे सप्ताह में चुनाव की घोषणा से पहले होना है। निरीक्षण दल द्वारा औचक निरीक्षण करते समय, संभवत: खराब सामग्री के इस्तेमाल के कारण एलिवेटेड कॉरिडोर के एक पाये में एक छोटी-सी दरार देखी गई थी। आपने तुरंत मुख्य अभियंता को सूचित किया और आगे का काम रोक दिया। आपके द्वारा यह आकलन किया गया था कि एलिवेटेड कॉरिडोर के कम-से-कम तीन पायों को तोड़ना और उनका पुनर्निर्माण किया जाना है, परंतु यह प्रक्रिया परियोजना में कम-से-कम चार से छ: महीने की देरी कर देगी, किंतु मुख्य अभियंता ने निरीक्षण दल के अवलोकन को इस आधार पर निरस्त कर दिया कि यह एक छोटी-सी दरार है, जो किसी भी तरह से पुल की क्षमता और टिकाऊपन को प्रभावित नहीं करेगी। उसने आपको निरीक्षण दल के अवलोकन की अनदेखी कर उसी गति तथा लय के साथ काम जारी रखने का आदेश दिया। उसने आपको सूचित किया कि मंत्री कोई देरी नहीं चाहते हैं, क्योंकि वे एलिवेटेड कॉरिडोर का उद्घाटन मुख्यमंत्री

से चुनाव की घोषणा होने से पहले करवाना चाहते हैं। यह भी सूचित किया कि ठेकेदार मंत्री का दूर का रिश्तेदार है और वे चाहते हैं कि वह इस परियोजना को पूरा करे। उसने आपको इशारा भी किया कि अतिरिक्त मुख्य अभियंता के रूप में आपकी आगे की पदोन्नति मंत्रालय के विचाराधीन है। तथापि आपने दृढ़ता से महसूस किया कि एलिवेटेड कॉरिडोर के पाये में छोटी-सी दरार पुल की क्षमता और जीवनकाल पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगी और इसलिये एलिवेटेड कॉरिडोर की मरम्मत न करना बहुत खतरनाक होगा।

(a) दी गई शर्तों के तहत परियोजना प्रबंधक के रूप में आपके पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) वे कौन-सी नैतिक दुविधाएँ हैं, जिनका परियोजना प्रबंधक सामना कर रहा है?

(c) परियोजना प्रबंधक द्वारा सामना की जाने वाली व्यावसायिक चुनौतियाँ क्या हैं और उन चुनौतियों से पार पाने के लिये उसकी प्रतिक्रिया क्या है?

(d) निरीक्षण दल द्वारा उठाए गए अवलोकन की अनदेखी के परिणाम क्या हो सकते हैं? (250 शब्द, 20 अंक)

An elevated corridor is being constructed to reduce traffic congestion in the capital of a particular state. You have been selected as project manager of this prestigious project on your professional competence and experience. The deadline is to complete the project in next two years by 30 June, 2021, since this project is to be inaugurated by the Chief Minister before the elections are announced in the second week of July 2021. While carrying out the surprise inspection by inspecting team, a minor crack was noticed in one of the piers of the elevated corridor possible

due to poor material used. You immediately informed the chief engineer and stopped further work. It was assessed by you that minimum three piers of the elevated corridor have to be demolished and reconstructed. But this process will delay the project minimum by four to six months. But the chief engineer overruled the observation of inspecting team on the ground that it was a minor crack which will not in any way impact the strength and durability of the bridge. He ordered you to overlook the observation of inspecting team and continue working with same speed and tempo. He informed you that the minister does not want any delay as he wants the Chief Minister to inaugurate the elevated corridor before the elections are declared. Also informed you that the contractor is far relative of the minister and he wants him to finish the project. He also gave you hint that your further promotion as additional chief engineer is under consideration with the ministry. However, you strongly felt that the minor crack in the pier of the elevated corridor will adversely affect the health and life of the bridge and therefore it will be very dangerous not to repair the elevated corridor.

(a) Under the given conditions, what are the options available to you as a project manager?

(b) What are the ethical dilemmas being faced by the project manager?

(c) What are the professional challenges likely to be faced by the project manager and his response to overcome such challenges?

(d) What can be the consequences of overlooking the observation raised by the inspecting team?

उत्तर : (a) उपर्युक्त परिस्थितियों के तहत, परियोजना प्रबंधक के रूप में मेरे पास निम्न विकल्प उपलब्ध हैं-

- मुख्य अभियंता के प्रस्ताव को मान लें।
- मुख्य अभियंता के प्रस्ताव से इनकार कर दें।

उत्तर : (b) परियोजना प्रबंधक के समक्ष नैतिक दुविधाएँ-

- नीतिशास्त्र के मानक सिद्धांतों और आदर्शों का अनुपालन।
- नैतिक अभिवृत्ति या पदीय लाभ।
- व्यक्तिगत कल्याण या सार्वजनिक कल्याण।
- अंतरात्मा की आवाज़ *बनाम* बाह्य दबाव।

उत्तर : (c) परियोजना प्रबंधक के द्वारा सामना की जाने वाली व्यावसायिक चुनौतियाँ-

- वरिष्ठ अधिकारी का दबाव।
- मंत्री का दबाव।
- पदोन्नति का दबाव।
- निर्णय अपनी अंतरात्मा के अनुसार लेने से अकेले पड़ जाने का भय और बाद में अनेक प्रकार की प्रशासनिक चुनौतियों के सामना करने का भय।

उपर्युक्त चुनौतियों से पार पाने हेतु प्रतिक्रिया

एक ज़िम्मेदार लोक सेवक होने के नाते, लोक प्रशासन और नैतिकता के आदर्शों को धारण करते हुए, जो सर्वोत्तम है, वही निर्णय लेना। एलिवेटेड कॉरिडोर का पुनर्निर्माण, क्योंकि ऐसा न करना तात्कालिक रूप से कुछ व्यक्तियों के हितों की दृष्टि से उचित है, परंतु दीर्घकालिक रूप से हज़ारों लोगों के जान का जोखिम है, और उसमें आने वाले समय में मुख्य अभियंता या मंत्री का परिवार भी हो सकता है। इस बात को उनके समक्ष स्पष्ट करते हुए और अपने स्तर पर सभी प्रकार के साक्ष्य इकट्ठा करते हुए, इलेक्ट्रॉनिक रूप से इस पुल के आगे के निर्माण की अनुमति न देना और उससे पूर्व मरम्मत के कार्य की अनुशंसा करना, क्योंकि अंतत: वह दीर्घकालिक रूप से नुकसानदायक है, मानवता के हित में नहीं है। नीतिशास्त्र का मूल सिद्धांत और आदर्श कहता है कि किसी भी व्यक्ति को चाहे वह नीति या सार्वजनिक जीवन हो, उसे वही करना चाहिये, जिससे मानव कल्याण हो।

उत्तर: (d) निरीक्षण दल द्वारा उठाए गए अवलोकन की अनदेखी के परिणाम-

- संसाधनों की हानि।
- जान-माल की हानि।
- इंजीनियरिंग विभाग की छवि खराब होगी।
- भविष्य में इस प्रकार की अनहोनी घटना पर जवाबदेही का सामना करना पड़ सकता है (मुख्य अभियंता, मंत्री और स्वयं मैं)।

प्रश्न: कोरोनावायरस रोग (कोविड-19) महामारी तेज़ी से विभिन्न देशों में फैली है। 8 मई, 2020 तक भारत में कोरोना के 56342 पॉजिटिव मामले सामने आए थे। भारत को, जिसकी जनसंख्या 1.35 बिलियन से अधिक है, जनसंख्या में कोरोनावायरस के संचरण को नियंत्रित करने में कठिनाई आई थी। इस प्रकोप से निबटने के लिये कई रणनीतियाँ आवश्यक हो गई थीं। भारत के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने इस प्रकोप के बारे में जागरूकता बढ़ाई और कोविड-19 के प्रसार को नियंत्रित करने के लिये सभी आवश्यक कार्रवाइयाँ कीं। भारत सरकार ने वायरस के संचरण को कम करने के लिये पूरे देश में 55 दिनों का लॉकडाउन लागू किया। स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षण-सीखना-मूल्यांकन और प्रमाणीकरण के वैकल्पिक तरीके सामने आए। इन दिनों ऑनलाइन मोड लोकप्रिय हो गया।

भारत इस तरह के संकटपूर्ण अचानक हुए हमले के लिये तैयार नहीं था, क्योंकि मानव संसाधन, धन और ऐसी स्थिति में देखभाल करने के लिये बुनियादी ढाँचे के रूप में अन्य सुविधाओं की कमी थी। इस बीमारी ने एक तरफ तो जाति, पंथ, धर्म की परवाह किये बिना किसी को नहीं बख्शा और दूसरी तरफ 'अमीर-गरीब' दोनों को भी नहीं छोड़ा। अस्पताल में बिस्तर, ऑक्सीजन सिलेंडर, एंबुलेंस, अस्पताल-कर्मचारी और श्मशान की कमी सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू थे।

आप ऐसे समय एक सार्वजनिक अस्पताल में अस्पताल प्रशासक हैं, जब कोरोनावायरस ने बड़ी संख्या में लोगों पर हमला किया और अस्पताल में मरीज़ों का दिन-रात आना-जाना लगा रहता था।

(a) पूरी तरह से जानते हुए कि यह अत्यधिक संक्रामक रोग है और संसाधन तथा बुनियादी ढाँचे सीमित हैं, अपने नैदानिक और गैर-नैदानिक कर्मचारियों को रोगियों की देखभाल करने में लगाने के लिये आपके मानदंड और औचित्य क्या हैं?

(b) यदि आपका निजी अस्पताल है, तो क्या आपका औचित्य और निर्णय वैसा ही होता जैसा कि सार्वजनिक अस्पताल में? (250 शब्द, 20 अंक)

The coronavirus disease (COVID-19) pandemic has quickly spread to various countries. As on May 8th, 2020, in India 56342 positive cases of corona had been reported. India with a population of more than 1.35 billion had difficulty in controlling the transmission of coronavirus among its population. Multiple strategies became necessary to handle this outbreak. The Ministry of Health and Family Welfare of India raised awareness about this outbreak and to take all necessary actions to control the spread of COVID-19. Indian Government implemented a 55-day lockdown throughout the country to reduce the transmission of the virus. Schools and colleges had shifted to alternative mode of teaching-learning-evaluation and certification. Online mode became popular during these days.

India was not prepared for a sudden onslaught of such a crisis due to limited infrastructure in terms of human resource, money and other facilities needed for taking care of this situation. This disease did not spare anybody irrespective of caste, creed, religion on the one hand and 'have and have not' on the other. Deficiencies in hospital beds, oxygen cylinders, ambulances, hospital staff and crematorium were the most crucial aspects.

You are a hospital administrator in a public hospital at the time when coronavirus had attacked large number of people and patients were pouring into hospital day in and day out.

(a) What are your criteria and justification for putting your clinical and non-clinical staff to attend to the patients knowing fully well that it is highly infectious disease and resources and infrastructure are limited?

(b) If yours is a private hospital, whether your justification and decision would remain same as that of a public hospital?

उत्तर: (a) एक सार्वजनिक अस्पताल का प्रशासक होने के नाते सर्वप्रथम मैं उस अस्पताल के सभी जूनियर व सीनियर डॉक्टरों, नर्सों, कर्मचारियों आदि की एक आपात बैठक बुलाऊँगा तथा COVID-19 से उत्पन्न चुनौतियों, मरीज़ों की लगातार बढ़ती संख्या और अस्पताल की क्षमता आदि के बारे में चर्चा करूँगा तथा इस परिस्थिति से निपटने की अपनी तैयारियों की समीक्षा करूँगा।

- अस्पताल के सभी कर्मचारियों से यह निवेदन करूँगा कि वे इस संकट की घड़ी में अपना 100 फीसदी योगदान दें। बीमारी की गंभीरता को समझें। इसके साथ-साथ स्वयं एवं अपने परिवार की सुरक्षा पर भी विशेष ध्यान रखें।
- संक्रामक रोगों का इलाज करने वाले अनुभवी डॉक्टरों, नर्स व अन्य अस्पताल कर्मचारियों की एक टीम बनाकर अन्य सदस्यों को उनके निर्देशन में कार्य करने का सुझाव दूँगा और इसकी निगरानी मैं स्वयं भी करता रहूँगा। इस दौरान मैं इस बीमारी से संबंधित विभिन्न सरकारी दिशा-निर्देशों एवं वैश्विक घटनाओं पर नज़र बनाए रखूँगा तथा अपने स्टाफ के सदस्यों को इसकी जानकारी देता रहूँगा।

- मैं जानता हूँ कि कुछ अस्पताल कर्मचारी व स्टाफ इस बीमारी को लेकर अवांछित व्यवहार कर सकते हैं, इसलिये बीच-बीच में उनसे व्यक्तिगत रूप से मीटिंग कर उनकी आशंकाओं को दूर करने का प्रयास करूँगा तथा उनका ख्याल रखूँगा, ताकि वे घबराएँ नहीं।
- अस्पताल में एंबुलेंस, ऑक्सीजन की आपूर्ति आदि बढ़ाने के लिये आस-पास के NGOs व अन्य पक्षकारों से सहायता लेकर कार्य करूँगा। इस दौरान नज़दीकी AIIMS से संपर्क बनाए रखूँगा।
- मैं अपने अस्पताल के सदस्यों को प्रोत्साहित करता रहूँगा कि वे COVID मरीज़ों के साथ संवेदनापूर्ण व्यवहार बनाए रखें। उनके परिवार के सदस्यों के साथ किसी भी तरह का तनाव या विवाद मोल लेने से बचें। साथ ही अस्पताल में सभी आवश्यक वस्तुओं; जैसे-दवाइयाँ, ऑक्सीजन सिलेंडर, बेड की संख्या बढ़ाने तथा अतिरिक्त स्टाफ की तैनाती पर भी विचार करता रहूँगा।

उत्तर: (b) मेरे विचार से प्रत्येक चिकित्सक को उसके सेवा मूल्यों को ध्यान में रखना चाहिये न कि इस बात को कि वह सार्वजनिक अस्पताल में है या निजी अस्पताल में और इस आधार पर न ही कोई भेदभाव करना चाहिये।

- अस्पताल चाहे निजी हो या सार्वजनिक मरीज़ों की अच्छी चिकित्सा को सर्वोपरि महत्त्व दिया जाना चाहिये, क्योंकि मरीज़ और उसके परिवार वालों के लिये अंतिम आस डॉक्टर ही होते हैं।
- ऐसी गंभीर बीमारी की स्थिति में मैं समझ सकता हूँ कि मरीज़ एवं उनके परिवार वाले बेहद तनाव की स्थिति में होंगे। अत: मैं एवं मेरा स्टाफ इस स्तर पर कार्य करेंगे कि अस्पताल उन्हें उनके घर जैसा महसूस हो। मैं ऐसी कार्य संस्कृति वहाँ पैदा करूँगा।
- मैं पूरी ईमानदारी से चिकित्सा नैतिकता का पालन करते हुए बिल्कुल वैसा ही इंतज़ाम करूँगा जैसा कि सार्वजनिक अस्पताल का प्रशासक होने के नाते कर रहा हूँ।

प्रश्न: भारत में स्थित एक प्रतिष्ठित खाद्य उत्पाद कंपनी ने अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार के लिये एक खाद्य उत्पाद विकसित किया और आवश्यक अनुमोदन प्राप्त करने के बाद उसका निर्यात शुरू कर दिया। कंपनी ने इस उपलब्धि की घोषणा की और यह संकेत भी दिया कि जल्द ही यह उत्पाद घरेलू उपभोक्ताओं के लिये लगभग समान गुणवत्ता और स्वास्थ्य लाभ के साथ उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार, कंपनी ने अपने उत्पाद को घरेलू सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमोदित कराया और उत्पाद को भारतीय बाज़ार में लॉन्च किया। कंपनी ने समय के साथ बाज़ार में अपनी हिस्सेदारी को बढ़ाया और घरेलू तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त लाभ अर्जित किया। हालाँकि, निरीक्षण दल द्वारा किये गए यादृच्छिक नमूनों (रैंडम सैंपल) के परीक्षण में पाया गया कि सक्षम प्राधिकारी से प्राप्त अनुमोदन से भिन्न उत्पादों को घरेलू स्तर पर बेचा जा रहा है। आगे की जाँच में यह भी पता चला कि खाद्य कंपनी न केवल ऐसे उत्पादों को बेच रही थी, जो देश के स्वास्थ्य मानकों को पूरा नहीं कर रहे थे, बल्कि अस्वीकृत निर्यात उत्पाद को भी घरेलू बाज़ार में बेच रही थी। इस प्रकरण ने खाद्य कंपनी की प्रतिष्ठा और लाभदायकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाला।

(a) घरेलू बाज़ार के लिये निर्धारित खाद्य मानकों का उल्लंघन करने और अस्वीकृत निर्यात उत्पादों को घरेलू बाज़ार में बेचने के लिये खाद्य कंपनी के खिलाफ सक्षम प्राधिकारी द्वारा आप क्या कार्रवाई की कल्पना करते हैं?

(b) संकट को हल करने और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को वापस लाने के लिये खाद्य कंपनी के पास क्या क्रियाविधि उपलब्ध है?

(c) मामले में निहित नैतिक दुविधा की जाँच कीजिये।
(250 शब्द, 20 अंक)

A reputed food product company based in India developed a food product for the international market and started exporting the same after getting necessary approvals. The company announced this achievement and also indicated that soon the product will be made available for the domestic consumers with almost same quality and health benefits. Accordingly, the company got its product approved by the domestic competent authority and launched the product in Indian market. The company could increase its market share over a period of time and earned substantial profit both domestically and internationally. However, the random sample test conducted by inspecting team found the product being sold domestically in variance with the approval obtained from the competent authority. On further investigation, it was also discovered that the food company was not only selling products which were not meeting the health standard of the country but also selling the rejected export products in the domestic market. This episode adversely affected the reputation and profitability of the food company.

(a) What action do you visualize should be taken by the competent authority against the food company for violating the laid down domestic food standard and selling rejected export products in domestic market?

(b) What course of action is available with the food company to resolve the crisis and bring back its lost reputation?

(c) Examine the ethical dilemma involved in the case.

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी एक खाद्य पदार्थ निर्माता कंपनी के रूप में निजी कंपनियों में व्याप्त अनैतिकता एवं इन कंपनियों द्वारा सार्वजनिक हितों की तुलना में लाभप्रदता को अधिक वरीयता देने को प्रदर्शित करती है।

उत्तर: (a) प्रस्तुत प्रकरण में जाँच प्राधिकरण द्वारा कंपनी के विरुद्ध निम्न कार्रवाई की जा सकती है-

- सार्वजनिक स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने के आरोप में कंपनी के उच्च अधिकारियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करना।
- कंपनी द्वारा निर्मित उत्पादों की पुन: जाँच करने तक घरेलू एवं विदेशी बाज़ार में कंपनी के उत्पादों की पहुँच को रोकना।

- आर्थिक रूप से कंपनी के ऊपर जुर्माना आरोपित करना।
- उन उत्पादों को पूर्णता समाप्त करना, जिन्हें जाँच में निर्धारित मानकों के अनुरूप नहीं पाया गया।
- भविष्य में ऐसी किसी संभावना को रोकने हेतु उचित कदम उठाना।

उत्तर: (b) कंपनी द्वारा उक्त समस्या को सुलझाने एवं अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः हासिल करने हेतु निम्न कदम उठाए जा सकते हैं-

- कंपनी के शीर्ष नेतृत्व एवं उत्पादों की जाँच करने वाले अधिकारियों की व्यापक समीक्षा करना।
- घरेलू एवं विदेशी बाज़ार मालिकों का पुनः अध्ययन कर भविष्य में अपने उत्पादों का निर्माण उनके अनुरूप करना।
- भविष्य में ऐसी किसी गलती को रोकने हेतु कंपनी के अंदर एक जाँच प्राधिकरण का निर्माण करना, जो भविष्य में बाज़ार में पहुँचने से पूर्व उत्पादों की जाँच करेगा।
- आवश्यकता पड़ने पर कंपनी द्वारा सार्वजनिक रूप से खेद व्यक्त करना।

उत्तर: (c) उपर्युक्त प्रकरण से संबंधित प्रमुख नैतिक द्वंद्व निम्न हैं-

- **सार्वजनिक स्वास्थ्य *बनाम* निजी लाभ:** किसी भी कंपनी के निर्माण का उद्देश्य अधिकाधिक लाभ प्राप्त करना होता है, ऐसे में सार्वजनिक स्वास्थ्य को अधिक वरीयता देना एवं अपने लाभ को सीमित करना इस नैतिक द्वंद्व को उत्पन्न करता है।
- **घरेलू बाज़ार *बनाम* विदेशी बाज़ार को वरीयता देने का द्वंद्व:** घरेलू बाज़ार एवं विदेशी बाज़ार के भिन्न-भिन्न मानकों के आधार पर अपने उत्पादों का निर्माण करना एवं निर्धारित बाज़ारों तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करना।
- **राष्ट्रीय हित *बनाम* व्यावसायिक हित:** अधिक लाभ की आकांक्षा में निर्धारित मानकों का पालन न करने एवं पकड़े जाने से न सिर्फ कंपनी की प्रतिष्ठा को हानि होगी, अपितु राष्ट्र की छवि भी धूमिल होगी।

प्रश्न: पवन पिछले दस वर्षों से राज्य सरकार में अधिकारी के पद पर कार्यरत है। नियमित स्थानांतरण के अंतर्गत उसे दूसरे विभाग में तैनात किया गया। उसने अन्य पाँच साथियों के साथ एक नए कार्यालय में कार्यभार ग्रहण किया। कार्यालय का प्रमुख एक वरिष्ठ अधिकारी था, जो अपने कार्यालय की कार्यप्रणाली में निपुण था। सामान्य पूछताछ के दौरान पवन को पता चला कि वरिष्ठ अधिकारी का खुद का पारिवारिक जीवन अशांत होने के साथ-साथ वह कठोर और असंवेदनशील छवि वाला है। शुरू में लगा कि सब ठीक चल रहा है। हालाँकि, कुछ समय बाद ही पवन ने महसूस किया कि उसका वरिष्ठ अधिकारी आमतौर पर उसको अपमानित करता था और कभी-कभी अविवेकी था। बैठकों में पवन जो भी सुझाव देता था उन्हें सिरे से खारिज कर दिया जाता था और दूसरों की उपस्थिति में वरिष्ठ अधिकारी नाराज़गी व्यक्त करता था। यह वरिष्ठ अधिकारी के कामकाज की शैली का तरीका बन गया जिसमें उसको गलत ढंग से दिखाया जाता, उसकी कमज़ोरियों को उजागर किया जाता और सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जाता था। यह स्पष्ट हो गया कि यद्यपि ये काम से संबंधित कोई गंभीर समस्याएँ/कमियाँ नहीं थीं, लेकिन वरिष्ठ अधिकारी हमेशा किसी-न-किसी बहाने से उसे डाँटता और उस पर चिल्लाता। पवन के लगातार उत्पीड़न और सार्वजनिक आलोचना के परिणामस्वरूप उसके आत्मविश्वास, आत्मसम्मान और समभाव को नुकसान पहुँचा। पवन ने महसूस किया कि वरिष्ठ अधिकारी के साथ उसके संबंध और अधिक विषाक्त होते जा रहे हैं तथा वह निरंतर तनावग्रस्त, चिंतित एवं दबाव महसूस करने लगा है। उसका मन नकारात्मकता से भरा हुआ था और उसे मानसिक यातना, पीड़ा और व्यथा को झेलना पड़ रहा था। आखिरकार, इसने उसके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया। घर पर भी वह अब उल्लसित, प्रसन्न और संतुष्ट नहीं रहता था, बल्कि बिना किसी कारण के वह अपनी पत्नी और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अपना आपा खो देता था। पारिवारिक वातावरण अब सुखद और अनुकूल नहीं रह गया था। उसकी पत्नी, जो हमेशा उसका साथ देती थी, वह भी नकारात्मकता और शत्रुतापूर्ण व्यवहार का शिकार हो गई। कार्यालय में उसके अपमान और उत्पीड़न के कारण उसके जीवन से आराम और खुशी लगभग गायब हो गई। इस प्रकार इसने उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाया।

(a) इस स्थिति से निबटने के लिये पवन के पास कौन-से विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) कार्यालय और घर में शांति, प्रशांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण लाने के लिये पवन को क्या दृष्टिकोण अपनाना चाहिये?

(c) एक बाहरी व्यक्ति के रूप में वरिष्ठ अधिकारी तथा अधीनस्थ दोनों के लिये इस स्थिति से उबरने और कार्य निष्पादन, मानसिक तथा भावात्मक स्वास्थ्य में सुधार के लिये आपके क्या सुझाव हैं?

(d) उपर्युक्त परिदृश्य में, आप सरकारी कार्यालयों में विभिन्न स्तरों के अधिकारियों के लिये किस प्रकार के प्रशिक्षण का सुझाव देंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Pawan is working as an officer in the State Government for the last ten years. As a part of routine transfer, he

was posted to another department. He joined in a new office along with five other colleagues. The head of the office was a senior officer conversant with the functioning of the office. As a part of general inquiry, Pawan gathered that his senior officer carries the reputation of being difficult and insensitive person having his own disturbed family life. Initially, all seem to go well. However, after some time Pawan felt that the senior officer was belittling him and at times unreasonable. Whatever suggestions given or views expressed by Pawan in the meetings were summarily rejected and the senior officer would express displeasure in the presence of others. It became a pattern of boss's style of functioning to show him in bad light highlighting his short comings and humiliating publically. It became apparent that though these are no serious work-related problems/shortcomings, the senior officer was always on one pretext or the other and would scold and shout at him. The continuous harassment and public criticism of Pawan resulted in loss of confidence, self-esteem and equanimity. Pawan realized that his relations with his senior officer are becoming more toxic and due to this, he felt perpetually tensed, anxious and stressed. His mind was occupied with negativity and caused him mental torture, anguish and agony. Eventually, it badly affected his personal and family life. He was no longer joyous, happy and contented even at home. Rather without any reason he would loose his temper with his wife and other family members. The family environment was no longer pleasant and congenial. His wife who was always supportive to him also became a victim of his negativity and hostile behaviour. Due to harassment and humiliation suffering by him in the office, comfort and happiness virtually vanished from his life. Thus it damaged his physical and mental health.

(a) What are the options available with Pawan to cope up with the situation?

(b) What approach Pawan should adopt for bringing peace, tranquillity and congenial environment in the office and home?

(c) As an outsider, what are your suggestions for both boss and subordinate to overcome this situation and for improving the work performance, mental and emotional hygiene?

(d) In the above scenario, what type of training would you suggest for officers at various levels in the government offices?

उत्तर: यह खराब कार्य संस्कृति, प्राधिकार के दुरुपयोग, भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी एवं व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में सामंजस्य बनाने में असमर्थता का मामला है।

प्रमुख हितधारक: राज्य सरकार का अधिकारी पवन, पवन की पत्नी और परिवार के अन्य सदस्य, वरिष्ठ अधिकारी, और पवन के पाँच साथी।

उत्तर: (a) उपर्युक्त वर्णित स्थिति से निपटने के लिये पवन के पास निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध हैं-

- **वर्तमान पद से इस्तीफा:** यह पलायनवाद और साहस की कमी को दर्शाता है। इससे पवन की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियाँ भी प्रभावित होंगी।
- **ऑफिस से कुछ समय के लिये छुट्टी लेना:** इससे पवन को थोड़ी राहत तो मिलेगी, लेकिन दोबारा ज्वॉइन करने पर उसे उन्हीं दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
- **दूसरे विभाग में स्थानांतरण के लिये आवेदन देना:** यह एक प्रशासनिक निर्णय है, जिस पर पवन का नियंत्रण नहीं है।
- **कार्यालय में अपने वरिष्ठ की उपेक्षा करें:** काम में समन्वय और गुणवत्ता प्रभावित होगी। यह उसे समग्र रूप से काम करने के प्रति उदासीन बना सकता है।

उत्तर: (b) कार्यालय और घर में शांति और अनुकूल वातावरण लाने के लिये पवन को भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास और प्रदर्शन करना चाहिये। जिसे निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

- दो प्रश्नों के उत्तर देने के लिये पवन को अपने कार्य का आत्म-निरीक्षण करना चाहिये।
- क्या उसके कार्य उसके वरिष्ठ को परेशान कर रहे थे?
- वरिष्ठ का अन्य नए स्थानांतरित सहयोगियों के प्रति क्या व्यवहार है?
- अपने वरिष्ठ के साथ एक खुली बातचीत करें।
- उसकी चिंताओं को समझने की कोशिश करें।
- **अपने वरिष्ठ की कार्रवाई का कारण समझें:** इससे पवन और उसके वरिष्ठ को मूल कारण समझने का मौका मिलेगा।
- यदि यह काम नहीं करता है, तो मामले को दोनों के वरिष्ठ अधिकारी के संज्ञान में लाएँ और लिखित शिकायत दर्ज करें।
- कार्यालय में जिस समस्या का सामना करना पड़ रहा है, उसे समझाते हुए पत्नी के साथ इस मामले पर चर्चा करें। उसकी पत्नी उसे समझेगी और उसका समर्थन करेगी।
- AQ विकसित करें और पेशेवर एवं व्यक्तिगत जीवन को अलग करना सीखें।

उत्तर: (c) एक बाहरी व्यक्ति के रूप में, वरिष्ठ और अधीनस्थों को मेरा निम्न सुझाव हैं-

वरिष्ठ अधिकारी को सुझाव

- अपने अधीनस्थों का सम्मान करें।
- भावनात्मक बुद्धि विकसित करें, एक नेता और एक आदर्श की तरह कार्य करें।
- रचनात्मक आलोचना दें, दूसरों को कमतर नहीं आँकें।

अधीनस्थों को सुझाव

- समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ काम करें, लेकिन स्वाभिमान/आत्म-मूल्य की कीमत पर नहीं।
- काम 'जीवन का सिर्फ एक हिस्सा' है, 'जीवन' नहीं।
- जीवन में छोटी-छोटी चीज़ों का आनंद लें और काम से जुड़े तनाव को अपने निजी जीवन में न आने दें।

उत्तर: (d) मैं सरकारी कार्यालयों में अधिकारियों को निम्नलिखित प्रकार के प्रशिक्षण का सुझाव दूँगा-

- **संवेदनशीलता प्रशिक्षण:** इस बात के प्रति संवेदनशील होना कि किसी के कार्य उनके आसपास के लोगों को कैसे प्रभावित कर रहे हैं।
- **भूमिका निर्वहन का प्रशिक्षण:** दूसरों की समस्याओं और बाधाओं को समझने के लिये स्थिति को दूसरों के नज़रिये से देखना।
- **विश्राम प्रशिक्षण:** शरीर और मस्तिष्क को अच्छे से स्वस्थ रखने के लिये शारीरिक व्यायाम और ध्यान; नकारात्मक विचारों और निराशाओं को कम करता है।
- **संचार प्रशिक्षण:** प्रभावी संचार के लिये मौखिक और गैर-मौखिक संकेतों का उपयोग करना।
- इस अभ्यास का उद्देश्य दृष्टिकोण में सकारात्मकता को बढ़ावा देना, समावेशिता को बढ़ावा देना और कार्य संस्कृति को बेहतर बनाना है।

2020

प्रश्न: राजेश कुमार एक वरिष्ठ लोक सेवक हैं, जिनकी ईमानदारी और स्पष्टवादिता की प्रतिष्ठा है, आजकल वित्त मंत्रालय के बजट विभाग के प्रमुख हैं। वर्तमान में उनका विभाग राज्यों को बजटीय सहायता की व्यवस्था करने में व्यस्त है, जिनमें से चार राज्यों में इसी वित्तीय वर्ष में चुनाव होने वाले हैं।

इस वर्ष के वार्षिक बजट ने राष्ट्रीय आवास योजना (एन.एच.एस.) को ₹ 8300 करोड़ आवंटित किये थे। यह समाज के कमज़ोर समूहों के लिये केंद्र प्रायोजित सामाजिक आवास योजना है। जून माह तक ₹ 775 करोड़ एन.एच.एस. हेतु लिये गए हैं।

निर्यात को बढ़ावा देने के लिये वाणिज्य मंत्रालय काफी समय से एक दक्षिणी राज्य में विशेष आर्थिक ज़ोन (एस.ई.ज़ेड) स्थापित करने की पैरवी कर रहा है। केंद्र और राज्य के मध्य दो वर्षों तक चली विस्तृत चर्चा के बाद अगस्त माह में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने इस योजना की स्वीकृति प्रदान कर दी। आवश्यक भूमि प्राप्त करने के लिये प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई।

अठारह माह पूर्व एक उत्तरी राज्य में क्षेत्रीय गैस ग्रिड के लिये एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई ने विशाल गैस प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने की आवश्यकता बताई थी। सार्वजनिक क्षेत्र की इकाई (पी.एस.यू.) के पास आवश्यक भूमि पहले से ही है। राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा व्यूहरचना में यह गैस ग्रिड एक अनिवार्य घटक है। वैश्विक बोली (ग्लोबल बिडिंग) के तीन चरणों के बाद इस योजना को एक बहुराष्ट्रीय उद्योग (एम.एन.सी.) मैसर्स एक्स वाई ज़ेड हाइड्रोकार्बन को आवंटित किया गया। दिसम्बर में इस बहुराष्ट्रीय उद्योग को भुगतान की पहली किश्त देना निर्धारित है।

इन दो विकास योजनाओं को समय से ₹ 6000 करोड़ की अतिरिक्त राशि आवंटित करने के लिये वित्त मंत्रालय को कहा गया। यह निर्णय लिया गया कि पूरी राशि एन.एच.एस. आवंटन में से पुनर्विनियोजित करने की संस्तुति की जाए। फाइल को समीक्षा और अग्रिम कार्यवाही के लिये बजट विभाग में प्रेषित कर दिया गया। फाइल का अध्ययन करने पर राजेश कुमार को यह आभास हुआ कि पुनर्विनियोजन करने से एन.एच.एस. योजना को क्रियान्वित करने में अत्यधिक विलम्ब हो सकता है, वरिष्ठ राजनेताओं के द्वारा आयोजित सभाओं में इस योजना की काफी चर्चा हुई थी। दूसरी ओर वित्त की अनुपलब्धता से एस.ई.ज़ेड में वित्तीय क्षति होगी और अंतर्राष्ट्रीय योजना में विलम्बित भुगतान से राष्ट्रीय शर्मिंदगी भी।

राजेश कुमार ने इस प्रसंग पर अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया। उन्हें बताया गया कि राजनीतिक रूप से इस संवेदनशील स्थिति पर तुरंत कार्यवाही होनी चाहिये। राजेश कुमार ने महसूस किया कि एन.एच.एस. योजना से राशि के विपथन पर सरकार के लिये संसद में कठिन प्रश्न खड़े हो सकते हैं।

इस प्रसंग के संदर्भ में निम्नलिखित का विवेचन कीजिये-

(a) कल्याणकारी योजना से विकास योजना में राशि के पुनर्विनियोजन में निहित नीतिपरक मुद्दे।

(b) सार्वजनिक राशि के उचित उपयोग की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, राजेश कुमार के समक्ष उपलब्ध विकल्पों का विवेचन कीजिये। क्या पदत्याग एक योग्य विकल्प है? (250 शब्द, 20 अंक)

Rajesh Kumar is a senior public servant, with a reputation of honesty and forthrightness, currently posted in the Finance Ministry as Head of the Budget Division. His department is presently busy in organising the budgetary support to the states, four of which are due to go to the polls within the financial year.

This year's annual budget had allotted ` 8300 crores for National Housing Scheme (NHS), a centrally sponsored social housing scheme for the weaker sections of society. ₹ 775 crores have been drawn for NHS till June.

The Ministry of Commerce had long been pursuing a case for setting up a Special Economic Zone (SEZ) in a

southern state to boost exports. After two years of detailed discussions between the centre and state, the Union Cabinet approved the project in August. Process was initiated to acquire the necessary land.

Eighteen months ago a leading Public Sector Unit (PSU) had projected the need for setting up a large natural gas processing plant in northern state for the regional gas grid. The required land is already in possession of the PSU. The gas grid is an essential component of the national energy security strategy. After three rounds of global bidding the project was allotted to an MNC, M/s XYZ Hydrocarbons. The first tranche of payment to the MNC is scheduled to be made in December.

Finance Ministry was asked for a timely allocation of an additional ` 6000 crores for these two developmental projects. It was decided to recommend re-appropriation of this entire amount from the NHS allocation. The file was forwarded to Budget Department for their comments and further processing. On studying the case file, Rajesh Kumar realized that this re-appropriation may cause inordinate delay in the execution of NHS, a project much publicized in the rallies of senior politicians. Correspondingly, non-availability of finances would cause financial loss in the SEZ and national embarrassment due to delayed payment in an international project.

Rajesh Kumar discussed the matter with his seniors. He was conveyed that this politically sensitive situation needs to be processed immediately. Rajesh Kumar realized that diversion of funds from NHS could raise difficult questions for the government in the Parliament.

Discuss the following with reference to this case :

(a) Ethical issues involved in re-appropriation of funds from a welfare project to the developmental projects.

(b) Given the need for proper utilization of public funds, discuss the options available to Rajesh Kumar. Is resigning a worthy option?

उत्तर: भारत के संविधान में निहित नीति के निदेशक तत्त्वों का उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक लोकतंत्र के साथ-साथ लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार करना है। उपर्युक्त केस स्टडी राष्ट्र के आर्थिक विकास और लोककल्याणकारी योजनाओं के चयन में संतुलन स्थापित करने की ओर इंगित करता है।

(a) नीतिपरक मुद्दे

- **गरीबों के लिये आवास बनाम राष्ट्र का आर्थिक विकास:** राष्ट्रीय आवास योजना, जो समाज के कमज़ोर समूहों के कल्याण से संबंधित है। इसके आवंटन में पुनर्विनियोजन करने से योजना को क्रियान्वित करने में अत्यधिक विलंब हो सकता है। वहीं विशेष आर्थिक ज़ोन की स्थापना से निर्यात को बढ़ावा दिया जा सकता है तथा गैस प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने से ऊर्जा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है।
- **समाजवाद बनाम पूंजीवाद:** राष्ट्रीय आवास योजना लोक कल्याण के उद्देश्यों के साथ समाजवादी विचारधारा की ओर अधिक झुका है। वहीं एस.ई.जेड. तथा गैस प्रसंस्करण संयंत्र की स्थापना पूंजीवादी विचारधारा को वरियता देती है।

(b) राजेश कुमार के समक्ष उपलब्ध विकल्प

- आवास परियोजना के लिये कंपनियों के CSR का उपयोग करना: यह कंपनी अधिनियम, 2013 के अनुसार होगा। इसके तहत कंपनी के पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ का कम-से-कम 2% खर्च करना होता है। इस राशि का प्रयोग समाज के कमज़ोर वर्गों के लिये आवास बनाने में किया जा सकता है।
- अतिरिक्त बजटीय सहायता: इन विकास योजनाओं को समय से पूरा करने के लिये अतिरिक्त बजटीय सहायता का आग्रह किया जा सकता है। यह प्रक्रिया अत्यधिक जटिल होने के साथ-साथ राजकोष पर अतिरिक्त दबाव भी डालेगी।
- आवास के निर्माण हेतु एस.ई.जेड. के लाभ का एक हिस्सा आवंटित करना: उपर्युक्त प्रकरण में एस.ई.जेड. के लिये एक अनुबंध पहले से ही किया गया और राष्ट्रीय आवास योजना के लिये भूमि अधिग्रहण अभी शुरू ही किया गया है। चूँकि भूमि अधिग्रहण में समय अधिक लगता है, इसलिये अधिकारी द्वारा एस.ई.जेड़ के लिये फंड आवंटित किया जा सकता है। तत्पश्चात् एस.ई.जेड. से प्राप्त लाभ का एक हिस्सा राष्ट्रीय आवास योजना के लिये आवंटित किया जा सकता है।

पदत्याग एक योग्य विकल्प हो सकता है?

चूँकि राजेश एक वरिष्ठ लोक सेवक होने के साथ ईमानदार और स्पष्टवादी लोक सेवक भी हैं। इसलिये इनके द्वारा पदत्याग करना कर्त्तव्यविमुखता को दर्शाता है, क्योंकि "जीतने वाले कभी मैदान छोड़ते नहीं और मैदान छोड़कर भागने वाले कभी जीतते नहीं।"

अत: इन्हें अपने पद की गरिमा बनाए रखते हुए मध्यममार्ग को अपनाना चाहिये, ताकि समाज के कमज़ोर वर्गों के लिये आवास भी बन जाए और राष्ट्र के आर्थिक विकास में भी कोई बाधा उत्पन्न न हो।

प्रश्न: भारत मिसाइल लिमिटेड (बी.एम.एल.) के अध्यक्ष टीवी पर एक कार्यक्रम देख रहे थे जिसमें प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर भारत के विकास की आवश्यकता पर राष्ट्र को सम्बोधित कर रहे थे। अवचेतन रूप में उन्होंने हामी भरी और मन-ही-मन मुस्कुराते हुए बी.एम.एल. की विगत दो दशकों की यात्रा की मानसिक पुनर्समीक्षा की। प्रथम पीढ़ी (फर्स्ट जेनरेशन) की एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल (ए.टी.जी.एम.) के उत्पादन में प्रशंसनीय रूप से आगे बढ़ कर बी.एम.एल. अब अत्याधुनिक तकनीक पर आधारित ए.टी.जी.एम. हथियार प्रणालियों के डिज़ाइन और उनका उत्पादन कर रहा था जो विश्व की किसी भी सेना के लिये ईर्ष्या का कारण होंगे। आह भरते हुए उन्होंने अपनी इस पूर्वधारणा के साथ समझौता किया कि संभवतया सरकार सैनिक हथियारों के निर्यात पर प्रतिबंध की यथास्थिति को नहीं बदलेगी।

उन्हें आश्चर्य हुआ कि अगले ही दिन महानिदेशक, रक्षा मंत्रालय से बी.एम.एल. द्वारा ए.टी.जी.एम. के उत्पादन में वृद्धि करने की रीतियों पर चर्चा करने के लिये उन्हें फोन आया क्योंकि संभावना है कि एक मित्र विदेशी देश को उनका निर्यात किया जा सकता है। महानिदेशक चाहते थे कि अध्यक्ष अगले सप्ताह दिल्ली में उनके अधिकारियों से विस्तृत चर्चा करें।

दो दिन बाद, एक संवाददाता सम्मेलन में, रक्षामंत्री ने कहा कि अगले पाँच वर्षों में वे वर्तमान हथियार निर्यात स्तरों को दो-गुना करने का ध्येय रखते हैं। यह देशज हथियारों के विकास और निर्माण के वित्तपोषण को प्रोत्साहन देगा। उन्होंने यह भी कहा कि सभी देशज हथियार निर्माता राष्ट्रों का अंतर्राष्ट्रीय हथियार व्यापार में बड़ा अच्छा रिकॉर्ड है।

बी.एम.एल. के अध्यक्ष के रूप में निम्नलिखित बिंदुओं पर आपके क्या विचार हैं–

(a) हथियार निर्यातक के रूप में भारत जैसे उत्तरदायी देश के हथियार व्यापार में नीतिपरक मुद्दे क्या हैं?

(b) विदेशी सरकारों को हथियारों के विक्रय संबंधी निर्णय को प्रभावित करने वाले पाँच नीतिपरक कारकों को सूचीबद्ध कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

The Chairman of Bharat Missiles Ltd. (BML) was watching a program on TV wherein the Prime Minister was addressing the nation on the necessity of developing a self-reliant India. He subconsciously nodded in agreement and smiled to himself as he mentally reviewed BML's journey in the past two decades. BML had admirably progressed from producing first generation anti-tank guided missiles (ATGMs) to designing and producing state of the art ATGM weapon systems that would be the envy of any army. He sighed in reconciliation with his assumptions that the government would probably not alter the status quo of a ban on export of military weaponry.

To his surprise, the very next day he got a telephone call from the Director General, Ministry of Defence, asking him to discuss the modalities of increasing BML production of ATGMs as there is a possibility of exporting the same to a friendly foreign country. The Director General wanted the Chairman to discuss the details with his staff at Delhi next week.

Two days later, at a press conference, the Defence Minister stated that he aims to double the current weapons export levels within five years. This would give an impetus to financing the development and manufacture of indigenous weapons in the country. He also stated that all indigenous arms manufacturing nations have a very good record of international arms trade.

As Chairman of BML, what are your views on the following points?

(a) As an arms exporter of a responsible nation like India, what are the ethical issues involved in arms trade?

(b) List five ethical factors that would influence the decision to sell arms to foreign governments.

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी वर्तमान में हथियारों के बढ़ते निर्यात से उत्पन्न नैतिक मुद्दों से संबंधित है। स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टिट्यूट (सिपरी) की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व में हथियारों का कारोबार तेज़ी से फल-फूल रहा है। विश्व में प्रतिवर्ष हथियारों का 100 बिलियन डॉलर से अधिक का अंतर्राष्ट्रीय कारोबार होता है तथा अमेरिका, रूस और चीन के बीच अधिकाधिक हथियारों के निर्यात की होड़ के चलते इसमें निरंतर वृद्धि हो रही है। हथियारों के बढ़ते निर्यात के इन आँकड़ों ने इस व्यवसाय से संबंधित अनेक नैतिक चिंताओं को भी जन्म दिया है।

(a) प्रकरण से संबंधित हितधारक समूह

- हथियार निर्यातक के रूप में भारत
- भारत मिसाइल लिमिटेड (बी.एम.एल.) के अध्यक्ष के रूप में स्वयं मैं
- हथियार प्राप्तकर्त्ता राष्ट्र

प्रकरण में विद्यमान नैतिक मुद्दे–

- मानवाधिकारों के हनन से संबंधित मुद्दे
- पर्यावरण से संबंधित मुद्दे
- नैतिक दायित्वों का निर्धारण
- वसुधैव कुटुम्बकम एवं निशस्त्रीकरण के आदर्शों के विपरीत
- व्यावसायिक नैतिकता के ह्रास का मुद्दा
- सतत विकास लक्ष्य एवं भारतीय संविधान के उद्देश्यों के विपरीत

उत्तर: (b) उपर्युक्त प्रकरण में बी.एम.एल. के अध्यक्ष होने के नाते मेरे विचार से जो पाँच नीतिपरक कारक विदेशों को भारत द्वारा हथियार निर्यात करने के निर्णय को प्रभावित करेंगे, वे निम्नलिखित हैं–

- पर्यावरण से संबंधित मुद्दे- गौरतलब है कि मिसाइल जैसे विध्वंसक हथियार का प्रयोग किसी भी राष्ट्र द्वारा करना अंततः समस्त पृथ्वी के पर्यावरण के लिये हानिकारक सिद्ध होगा। वर्तमान विश्व जो पहले से ही जलवायु परिवर्तन एवं ओज़ोन लेयर के क्षय जैसी पर्यावरणीय समस्याओं को झेल रहा है, ऐसे में भारत जैसे एक ज़िम्मेदार राष्ट्र द्वारा हथियारों के निर्यात में वृद्धि के निर्णय का अनेक पर्यावरणीय संगठनों द्वारा विरोध किया जाना स्वाभाविक है–
- भारतीय विदेश नीति के आदर्श- यह सत्य है कि भारत ने सदैव अपने से कमज़ोर पड़ोसी देशों के प्रति 'बड़े भाई' की भूमिका का निर्वहन किया है और इसी संदर्भ में अनेक विचारकों द्वारा भारत के मिसाइल निर्यात के इस निर्णय को सामरिक एवं आर्थिक दृष्टि से सही ठहराने का प्रयास भी किया जा सकता है। किंतु

यहाँ हमें यह भी ज्ञात होना चाहिये कि भारतीय विदेश नीति का आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम', 'निशस्त्रीकरण' एवं 'शांतिपूर्ण सहअस्तित्व' के आदर्श पर निर्मित है। ऐसे में भारत द्वारा हथियार निर्यात में वृद्धि का यह निर्णय इन आदर्शों के विपरीत प्रतीत होता है।

- भारतीय संविधान एवं सतत विकास लक्ष्य के उद्देश्यों के विपरीत भारत का हथियार निर्यात का यह निर्णय भारतीय संविधान का अनुच्छेद-51, जो 'अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि' का कर्त्तव्य निर्धारित करता है एवं सतत विकास लक्ष्य-16 जो शांति एवं न्याय को स्थापित करने का उद्देश्य रखता है, से सामंजस्य नहीं रखता है। ऐसे में इस आधार पर इसका विरोध किये जाने की संभावना है।
- व्यापार नैतिकता से संबंधित मुद्दे- नैतिकता का यह रूप कारोबारी माहौल में पैदा हुए नैतिक सिद्धांतों और नैतिक समस्याओं की जाँच करता है तथा उसके संदर्भ में कुछ मानकों की स्थापना करता है। इस निर्णय द्वारा यद्यपि भारत को न सिर्फ आर्थिक लाभ होगा अपितु इससे अनेक रोज़गार पैदा होने की भी सम्भावना है जो व्यावसायिक दृष्टिकोण से एक अच्छा कदम होगा, किंतु इससे व्यावसायिक नैतिकता के मूल आयामों, जैसे- सामाजिक हित आदि के कमज़ोर होने की भी संभावना है।
- नैतिक द्वंद्व/दुविधा– इसमें मिसाइल जैसे विध्वंसक हथियारों के गलत हाथों में जाने की भी संभावना है। विश्व में आतंकवादी समूहों के होते प्रसार से आज कोई भी राष्ट्र अछूता नहीं है, ऐसे में यदि भारत द्वारा निर्यात किये गए हथियार किसी आतंकवादी समूह के हाथ लग गए तो इससे होने वाले नुकसान में भारत समान रूप से उत्तरदायी होगा। ऐसे में, भारत के समक्ष यह नैतिक दुविधा भी होगी कि राष्ट्रहित एवं नैतिक दायित्व में किसे चुने।

प्रश्न: रामपुरा, एक सुदूर जनजाति बहुल ज़िला, अत्यधिक पिछड़ेपन और दयनीय निर्धनता से ग्रसित है। कृषि स्थानीय आबादी की आजीविका का मुख्य साधन है लेकिन बहुत छोटे भूस्वामित्व के कारण यह मुख्यतया निर्वाह-खेती तक सीमित है। औद्योगिक या खनन गतिविधियाँ यहाँ नगण्य हैं। यहाँ तक कि लक्ष्यित कल्याणकारी कार्यक्रमों से भी जनजातीय आबादी को अपर्याप्त लाभ हुआ है। इस प्रतिबंधित परिदृश्य में, पारिवारिक आय के अनुपूरण हेतु युवाओं को समीप स्थित राज्यों में पलायन करना पड़ रहा है। अवयस्क लड़कियों की व्यथा यह है कि श्रमिक ठेकेदार उनके माता-पिता को बहला-फुसला कर उन्हें एक नज़दीक राज्य में बी.टी. कपास फार्मों में काम करने भेज देते हैं। इन अवयस्क लड़कियों की कोमल अँगुलियाँ कपास चुनने के लिये अधिक उपयुक्त होती हैं। इन फार्मों में रहने और काम करने की अपर्याप्त स्थितियों के कारण अवयस्क लड़कियों के लिये गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हो गई हैं। मूल निवास और कपास फार्मों के ज़िलों में स्वयंसेवी संगठन भी निष्प्रभावी लगते हैं और उन्होंने क्षेत्र के बाल श्रम और विकास की दोहरी समस्याओं हेतु कोई ठोस प्रयास नहीं किये हैं।

आपको रामपुरा का ज़िला कलेक्टर नियुक्त किया जाता है। यहाँ निहित नीतिपरक मुद्दों की पहचान कीजिये। अपने ज़िले के संपूर्ण आर्थिक परिदृश्य को सुधारने और अवयस्क लड़कियों की स्थितियों में सुधार लाने के लिये आप क्या विशिष्ट कदम उठाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Rampura, a remote district inhabited by a tribal population, is marked by extreme backwardness and abject poverty. Agriculture is the mainstay of the local population, though it is primarily subsistence due to the very small land holdings. There is insignificant industrial or mining activity. Even the targeted welfare programs have inadequately benefited the tribal population. In this restrictive scenario, the youth has begun to migrate to other states to supplement the family income. Plight of minor girls is that their parents are persuaded by labour contractors to send them to work in the Bt Cotton farms of a nearby state. The soft fingers of the minor girls are well suited for plucking the cotton. The inadequate living and working conditions in these farms have caused serious health issues for the minor girls. NGOs in the districts of domicile and the cotton farms appear to be compromised and have not effectively espoused the twin issues of child labour and development of the area.

You are appointed as the District Collector of Rampura. Identify the ethical issues involved. Which specific steps will you initiate to ameliorate the conditions of minor girls of your district and to improve the over-all economic scenario in the district?

उत्तर: उक्त प्रकरण में एक जनजाति बहुल ज़िलों में सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़ेपन के साथ ही शोषण तथा प्रवसन की समस्या को भी उजागर किया गया है। इसमें सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों की नैतिकता पर प्रश्न चिह्न लगाने के साथ ही लिंग पूर्वाग्रह जैसी समस्या भी मौजूद है। सम्पूर्ण प्रकरण में सरकारी तंत्र, स्वयंसेवी संगठन, जनजातीय आबादी, श्रमिक ठेकेदार तथा बी.टी. कपास फार्म प्रमुख हितधारक हैं।

नीतिपरक मुद्दे

- **संवैधानिक एवं कानूनी अधिकारों का उल्लंघन:**
  - बाल श्रम (निषेध और विनियमन) अधिनियम, 1986
  - अनुच्छेद 21, 23, 39, 42 तथा 46
  - शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009
- **बाल अधिकार का उल्लंघन:** बाल अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (CRC) और अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) एक बच्चे को 18 वर्ष से कम आयु के किसी भी व्यक्ति के रूप में परिभाषित करता है।

- **लिंग पूर्वाग्रह:** केवल अवयस्क लड़कियों को कपास फार्मों में कार्य हेतु चुना जाना।
- कॉरपोरेट की सामाजिक ज़िम्मेदारी की अवधारणा की अनदेखी।
- लक्षित कल्याणकारी कार्यक्रमों के समुचित क्रियान्वयन का अभाव।
- युवाओं का पलायन
- **आजीविका की समस्या:** कृषि ही स्थानीय आबादी की आजीविका का मुख्य साधन है।
- **कृषि की अनुपयोगिता:** कृषि जोतों का छोटा होना इसे आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक बनाता है।
- **गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ:** कपास फार्म में कार्य करने की अपर्याप्त स्थितियों के कारण।

ज़िला कलेक्टर के रूप में मैं निम्नलिखित विशिष्ट कदम उठाऊँगा-

- स्वयं सेवी संगठनों को विकास कार्यों में तेज़ी लाने के लिये प्रशासनिक सहयोग एवं निगरानी में वृद्धि करेंगे।
- संलग्न बी.टी. कपास फार्मों पर कंपनी अधिनियम के तहत कार्रवाई करने के लिये संबंधित राज्य सरकार से अनुशंसा करना।
- मनरेगा, सर्व शिक्षा अभियान, कस्तूरबा बालिका विद्यालय, पोषण अभियान, प्रवासी मज़दूरों के लिये एक राष्ट्र एक राशन कार्ड योजना, स्वास्थ्य बीमा योजना आदि लक्षित कार्यक्रमों का समुचित क्रियान्वयन सुनिश्चित करना।
- सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई लापरवाही का संज्ञान लेकर दोषियों पर उचित कानूनी कार्रवाई करना।
- दोषी श्रमिक ठेकेदार की पहचान कर उस पर कानूनी कार्रवाई करना।
- कृषि से संबंधित सब्सिडी तक किसानों की पहुँच सुनिश्चित करना।
- जोतों की चकबंदी सहित अन्य प्रकार की सुविधाओं के विकास द्वारा भूमि की उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास करना।
- स्थानीय आबादी को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास करना।

मेरे द्वारा की गई उक्त कार्रवाई से न केवल दोषियों को दंडित किया जा सकेगा बल्कि अत्यधिक पिछड़ेपन और दयनीय निर्धनता से ग्रस्त संबंधित ज़िले की मूल समस्याओं को भी काफी हद तक दूर किया जा सकेगा।

प्रश्न: आप एक बड़े नगर के निगम आयुक्त हैं तथा आपकी छवि एक अत्यंत ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी की है। आपके नगर में एक विशाल बहुउद्देशीय मॉल निर्माणाधीन है जिसमें बड़ी संख्या में दैनिक मज़दूरी पाने वाले श्रमिक कार्यरत हैं। मानसून के दौरान एक रात छत का बड़ा भाग गिर जाता है जिससे चार श्रमिकों की तात्कालिक मृत्यु हो जाती है जिनमें दो अवयस्क हैं। अनेक श्रमिक गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें तत्काल चिकित्सा सेवा की आवश्यकता थी। दुर्घटना से मचे हाहाकार ने सरकार को जाँच के आदेश देने हेतु बाध्य किया।

आपकी प्रारंभिक जाँच में अनेक विसंगतियों का खुलासा हुआ। निर्माण में लाई गई सामग्री निम्न गुणवत्ता की थी। स्वीकृत निर्माण योजना में केवल एक निम्नतल की अनुमति थी लेकिन एक अतिरिक्त निम्नतल का निर्माण कर लिया गया। नगर निगम के इंस्पेक्टर द्वारा समय-समय पर किये गए निरीक्षण के दौरान इसको अनदेखा किया गया। अपनी जाँच के दौरान आपने पाया कि मास्टर प्लान में उल्लिखित हरित पट्टी एवं एक अभिगम मार्ग के प्रावधान के बाद भी मॉल के निर्माण को अनुमति प्रदान कर दी गई। मॉल के निर्माण की स्वीकृति पूर्व निगम आयुक्त के द्वारा दी गई थी जो न केवल आपके वरिष्ठ हैं और पेशेवर रूप से आपसे अच्छी तरह परिचित हैं, साथ ही आपके अच्छे मित्र भी हैं।

प्रथमदृष्टया, यह प्रसंग नगर निगम के अधिकारियों और निर्माणकर्त्ता के बीच व्यापक साँठगाँठ का प्रतीत होता है। आपके सहकर्मी आप पर जाँच को मंद गति से करने का दबाव डाल रहे हैं। निर्माणकर्त्ता, जो कि समृद्ध और प्रभावशाली है, राज्य मंत्रिमंडल के एक शक्तिशाली मंत्री का निकट का रिश्तेदार है। निर्माणकर्त्ता आपको बड़ी राशि देने का वादा करके प्रसंग को रफादफा करने के लिये बहला-फुसला रहा है। वो यह भी ईशारा करता है कि यदि प्रसंग उसके हित में शीघ्र निपटाया नहीं जाता है तो कार्यालय में कोई आपके विरुद्ध यौन उत्पीड़न कार्यस्थल अधिनियम (पोश एक्ट) के अंतर्गत मामला दर्ज करने का इंतज़ार कर रही है।

इस प्रसंग में निहित नीतिपरक मुद्दों का विवेचन कीजिये। इस परिस्थिति में आपके पास कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं? आपके द्वारा चयनित क्रियाविधि को स्पष्ट कीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are a municipal commissioner of a large city, having the reputation of a very honest and upright officer. A huge multipurpose mall is under construction in your city in which a large number of daily wage earners are employed. One night, during monsoons, a big chunk of the roof collapsed causing instant death of four labourers including two minors. Many more were seriously injured requiring immediate medical attention. The mishap resulted in a big hue and cry, forcing the government to institute an enquiry.

Your preliminary enquiry has revealed a series of anomalies. The material used for the construction was of poor quality. Despite the approved building plans permitting only one basement, an additional basement has been constructed. This was overlooked during the periodic inspections by the building inspector of the municipal corporation. In your enquiry, you noticed that the construction of the mall was given the green

signal despite encroaching on areas earmarked for a green belt and a slip road in the Zonal Master Plan of the city. The permission to construct the mall was accorded by the previous Municipal Commissioner who is not only your senior and well known to you professionally, but also a good friend.

Prima facie, the case appears to be of a widespread nexus between officials of the Municipal Corporation and the builders. Your colleagues are putting pressure on you to go slow in the enquiry. The builder, who is rich and influential, happens to be a close relative of a powerful minister in the state cabinet. The builder is persuading you to hush up the matter, promising you a fortune to do so. He also hinted that if this matter is not resolved at the earliest in his favour there is somebody in his office who is waiting to file a case against you under the POSH Act. Discuss the ethical issues involved in the case. What are the options available to you in this situation? Explain your selected course of action.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण श्रमिकों की मृत्यु तथा अधिकारियों और निर्माणकर्त्ता के बीच व्यापक साँठगाँठ को प्रदर्शित करता है। इस मामले को सुलझाने के लिये सत्यनिष्ठा, मानवाधिकार तथा कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे मूल्यों को आधार बनाया जा सकता है। इसमें शामिल हितधारक हैं-

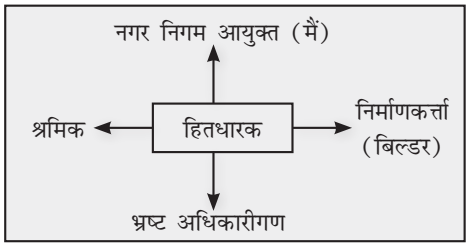

नैतिक मुद्दे

- **भ्रष्टाचार का मुद्दा:** इस मामले की जाँच के दौरान पाया गया कि अधिकारियों और निर्माणकर्त्ता के बीच व्यापक साँठगाँठ है। साथ ही सामग्री की निम्न गुणवत्ता तथा एक अतिरिक्त निम्नतल के निर्माण का मुद्दा सामने आया है।
- **प्राधिकरण पर लोगों के विश्वास का मुद्दा:** नगर निगम के इंस्पेक्टर के द्वारा निरीक्षण के दौरान कमियों को अनदेखा करना तथा हरित पट्टी एवं अभिगम मार्ग के प्रावधान के बाद भी मॉल के निर्माण को अनुमति प्रदान करने से प्राधिकरण पर लोगों में विश्वास की कमी महसूस की गई है।
- **संस्थागत नैतिकता:** इस मामले में शामिल अधिकारियों द्वारा अपने कर्त्तव्य से विमुखता तथा निर्माणकर्त्ता (बिल्डर) के प्रति अधिक झुकाव संस्थागत नैतिकता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।
- साहस और धैर्य का मुद्दा: चूँकि सहकर्मी जाँच को मंद गति से करने का दबाव डाल रहे हैं और निर्माणकर्त्ता भी मंत्रिमंडल के एक शक्तिशाली मंत्री का रिश्तेदार है। अत: इस स्थिति में साहस और धैर्य से ही समन्वय स्थापित किया जा सकता है।
- **ईमानदारी और अक्षमता:** इस मामले को रफादफा करने के लिये निर्माणकर्त्ता द्वारा बड़ी राशि (संपत्ति) तथा पोश एक्ट के द्वारा धमकी दी जा रही है। चूँकि मेरी छवि एक ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी की भी है, अत: ऐसी स्थिति में या तो मामले को रफादफा कर दिया जाये या तो ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ होकर मामले को सुलझाने का प्रयास किया जा सकता है।

मेरे पास उपलब्ध विकल्प

- निर्माणकर्त्ता द्वारा ऑफर किये गई मोटी रकम (संपत्ति) को स्वीकार करना: यह नैतिक रूप से गलत है और व्यावहारिक रूप से खतरनाक भी है क्योंकि इस तरह के गलत कार्य बहुत जल्द ही या बाद में पकड़े जा सकते हैं। साथ ही, ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी की छवि भी धूमिल हो सकती है।
- पोश एक्ट के आधार पर धमकी का सामना करना: मेरे लिये यह एकमात्र खतरा हो सकता है। चूँकि मेरे पास पहले से ही एक ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है, इसलिये कार्यालय में कोई भी इस तरह के फर्ज़ी मामलों पर विश्वास नहीं करेगा। अगर मामल दर्ज किया जाता है, तब भी मैं इस तरह के आरोपों के बारे में चिंता नहीं करूँगा और इसके लिये कोर्ट ऑफ लॉ में लड़ूँगा।

मेरे द्वारा चयनित क्रियाविधि

- इस स्थिति के बारे में अपने से उच्च अधिकारियों को सूचित करना क्योंकि इसमें कथित तौर पर राजनीतिक नेता शामिल हैं।
- पिछले नगर आयुक्त जो कि मेरे अच्छे दोस्त हैं, उन्हें इस संदेह से अवगत कराकर उनसे इस मामले पर बात करूँगा। यदि उसने जानबूझकर गलती की है, तो दोस्ती के रिश्ते से ऊपर उठकर उस पर उचित कार्रवाई की जाएगी।
- इस मामले की जाँच में पूछताछ की प्रक्रिया पूरी की जाएगी।
- उच्च अधिकारियों को मेरे परामर्श से निर्णय लेने देंगे।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है एक ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी होने के कारण श्रमिकों को सुरक्षा की भावना प्रदान करना तथा इस भ्रष्टाचार के मामले में संलिप्त अधिकारियों एवं राजनेता को सज़ा दिलाना मेरी नैतिक ज़िम्मेदारी होगी।

प्रश्न: परमल एक छोटा लेकिन अविकसित ज़िला है। यहाँ की ज़मीन पथरीली है जो कृषि योग्य नहीं है, यद्यपि थोड़ी जीविका कृषि ज़मीन के छोटे टुकड़ों पर की जाती है। क्षेत्र में पर्याप्त वर्षा होती है और सिंचाई की एक नहर वहाँ से बहती है। अमरिया एक मध्यम श्रेणी का शहर है जो कि इस ज़िले का प्रशासनिक केंद्र है। यहाँ एक बड़ा ज़िला अस्पताल, एक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान और कुछ निजी कौशल प्रशिक्षण केंद्र हैं। एक ज़िला मुख्यालय की सभी सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हैं। अमरिया से लगभग 50 किमी. दूर एक मुख्य रेलवे लाइन गुज़रती है। इसकी कमज़ोर संयोजकता यहाँ पर

किसी भी प्रकार के बड़े उद्योग के अभाव का मुख्य कारण है। नए उद्योग को बढ़ावा देने के लिये राज्य सरकार ने 10 वर्षों के लिये करावकाश दे रखा है।

वर्ष 2010 में, अनिल, एक उद्योगपति ने विभिन्न लाभों को लेने के लिये नूरा गाँव में, जो कि अमरिया से 20 किमी. दूर है, अमरिया प्लास्टिक वर्क्स (ए.पी.डब्ल्यू.) स्थापित करने का निर्णय लिया। जिस समय इस फैक्टरी का निर्माण हो रहा था तब अनिल ने आवश्यक मुख्य श्रमिकों को रोज़गार देकर उन्हें अमरिया के कौशल प्रशिक्षण केंद्रों में प्रशिक्षित करवाया। उसके इस कृत्य से मुख्य श्रमिक ए.पी.डब्ल्यू. के प्रति बहुत वफादार हो गए।

नूरा गाँव से ही सभी श्रमिकों को लेकर ए.पी.डब्ल्यू. ने 2011 में उत्पादन प्रारम्भ किया। अपने घरों के पास ही रोज़गार प्राप्त करके गाँव वाले बहुत खुश थे और मुख्य श्रमिकों ने उन्हें उत्पादन के लक्ष्यों को उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा करने के लिये प्रेरित किया। ए.पी.डब्ल्यू. ने बहुत लाभ कमाना प्रारम्भ किया जिसका एक बड़ा भाग नूरा गाँव में जीवन स्तर को सुधारने के लिये उपयोग में लिया गया। 2016 तक नूरा गाँव एक हरा-भरा गाँव होने का तथा गाँव के मंदिर के पुनर्निर्माण पर गर्व कर सकता था। स्थानीय विधायक से संपर्क साध कर अनिल ने अमरिया जाने के लिये गाँव से बस सेवाओं की निरंतरता भी बढ़ा दी। सरकार ने नूरा गाँव में ए.पी.डब्ल्यू. द्वारा निर्मित भवनों में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और प्राथमिक विद्यालय भी खोल दिया। अपने सी.एस.आर. कोष का उपयोग करते हुए ए.पी.डब्ल्यू. ने महिला स्वयं सहायता समूह स्थापित किये, गाँव के बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के लिये उपदान प्रदान किया और अपने कर्मचारियों और गरीबों के उपयोग के लिये एक रोगी वाहन प्राप्त किया।

2019 में ए.पी.डब्ल्यू. में एक छोटी-सी आग लगी। चूँकि फैक्टरी में अग्नि शमन सुरक्षा की उपयुक्त व्यवस्था थी इसलिये आग को शीघ्र बुझा दिया गया। जाँच में पता चला कि फैक्टरी अपनी अधिकृत क्षमता से अधिक बिजली का उपयोग कर रही थी। इसे शीघ्र ही सुलझा लिया गया। अगले वर्ष, देशव्यापी लॉकडाउन के कारण उत्पादन की आवश्यकता में चार महीनों के लिये गिरावट आ गई। अनिल ने निर्णय लिया कि सभी कर्मचारियों को नियमित रूप से भुगतान किया जाएगा। उसने कर्मचारियों को वृक्षारोपण और गाँव के प्राकृतिक वास को सुधारने के लिये काम में लिया। ए.पी.डब्ल्यू. ने उच्चस्तरीय उत्पादन और अभिप्रेरित श्रमिक बल की ख्याति अर्जित की।

ए.पी.डब्ल्यू. की कहानी का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये और अंतर्निहित नीतिपरक मुद्दों का उल्लेख कीजिये। क्या आप ए.पी.डब्ल्यू. को पिछड़े हुए क्षेत्रों के विकास के लिये आदर्श मॉडल के रूप में देखते हैं? कारण दीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

Parmal is a small but underdeveloped district. It has rocky terrain that is not suitable for agriculture, though some subsistence agriculture is being done on small plots of land. The area receives adequate rainfall and has an irrigation canal flowing through it. Amria, its administrative centre, is a medium sized town. It houses a large district hospital, an Industrial Training Institute and some privately owned skill training centres. It has all the facilities of a district headquarters. A trunk railway line passes approximately 50 kilometres from Amria. Its poor connectivity is a major reason for the absense of any major industry therein. The state government offers a 10 years tax holiday as an incentive to new industry.

In 2010 Anil, an industrialist, decided to take benefits to set up Amria Plastic Works (APW) in Noora village, about 20 km from Amria. While the factory was being built, Anil hired the required key labour and got them trained at the skill training centres at Amria. This act of his made the key personnel very loyal to APW.

APW started production in 2011 with the labour drawn fully from Noora village. The villagers were very happy to get employment near their homes and were motivated by the key personnel to meet the production targets with high quality. APW started making large profits, a sizeable portion of which was used to improve the quality of life in Noora. By 2016, Noora could boast of a greener village and a renovated village temple. Anil liaised with the local MLA to increase the frequency of the bus services to Amria. The government also opened a primary health care centre and primary school at Noora in buildings constructed by APW. APW used its CSR funds to set up women's self-help groups, subsidize primary education to the village children and procure an ambulance for use by its employees and the needy.

In 2019, there was a minor fire in APW. It was quickly extinguished as fire safety protocols were in place in the factory. Investigations revealed that the factory had been using electricity in excess of its authorized capacity. This was soon rectified. The next year, due to a nationwide lockdown, the requirement of production fell for four months. Anil decided that all employees would be paid regularly. He employed them to plant trees and improve the village habitat.

APW had developed a reputation of high quality production and a motivated workforce.

Critically analyse the story of APW and state the ethical issues involved. Do you consider APW as a role model for development of backward areas? Give reasons.

उत्तर: दिये गए प्रकरण में एक अविकसित ज़िले के एक छोटे-से गाँव 'नूरा' के सामाजिक-आर्थिक विकास की कहानी में एक प्राइवेट फर्म के महत्त्वपूर्ण योगदान को दर्शाया गया है। उक्त फर्म ने लोगों के

जीवन स्तर को उठाने के साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा के लिये भी उल्लेखनीय कार्य किया है।

इस कहानी में ए.पी.डब्ल्यू. ने लोगों को रोज़गार उपलब्ध कराने के साथ ही प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और प्राथमिक विद्यालय खोलने में सरकार का सहयोग किया, रोगी वाहन की व्यवस्था की और महिला स्वयं सहायता समूह भी स्थापित किये। लॉकडाउन जैसी विकट परिस्थिति में भी अपने कर्मचारियों का ध्यान रखा और उन्हें प्रकृति के संरक्षण के कार्यों में व्यस्त कर दिया। आदर्श रूप में एक प्राइवेट फर्म होने के नाते ए.पी.डब्ल्यू. ने सराहनीय कार्य किया है तथा इससे अधिक की उम्मीद करना उचित प्रतीत नहीं होता है। इतने के बावजूद यह कहना अनुचित नहीं होगा कि फैक्टरी ने अपने कार्यों को नूरा गाँव तक सीमित करके परमल जो एक अविकसित ज़िला है, के अन्य लोगों को संभावित लाभ से दूर रखा। ए.पी.डब्ल्यू. बिज़िनस वर्ल्ड से संपर्क कर ज़िले के अन्य क्षेत्रों में भी विभिन्न उद्योगों को स्थापित करने हेतु प्रोत्साहित कर सकता था। अमरिया को मुख्य रेलवे लाइन से जोड़ने हेतु व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास कर सकता था।

नैतिक मुद्दे

- कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन।
- पर्यावरण संबंधी चिंताओं का ध्यान रखकर सतत विकास को बढ़ावा देना।
- कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से मानव संसाधन का विकास।
- मंदिर बनवाकर स्थानीय लोगों के प्रति सांस्कृतिक संवेदना का परिचय देना।
- लॉकडाउन की दुरूह परिस्थिति में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का परिचय देना।
- अधिकृत क्षमता से अधिक बिजली का उपयोग कर दुर्घटना को आमंत्रित कर लोगों के जीवन को जोखिम में डालना।

इस कहानी में ए.पी.डब्ल्यू. ने उच्च व्यावसायिक मूल्यों के साथ ही नैतिक सिद्धांतों के सभी मानकों का अनुपालन करते हुए अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा किया है। ए.पी.डब्ल्यू. ने एक पिछड़े हुए क्षेत्र के विकास के लिये लाभ के एक बड़े भाग को उन सभी आवश्यक कार्यों को करने पर खर्च किया जिन्हें अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के लिये किया जाना चाहिये। अत: ए.पी.डब्ल्यू. के प्रयासों को थोड़े सुधार (क्षेत्रीय विस्तार) के साथ पिछड़े हुए क्षेत्रों के विकास के लिये आदर्श मॉडल के रूप में देखा जाना चाहिये।

प्रश्न: नगरीय अर्थतंत्र के सहायक श्रमिक बल के रूप में मूक रह कर सेवा प्रदान करते हुए, प्रवासी श्रमिक सदैव हमारे समाज के सामाजिक-आर्थिक हाशिये पर रहे हैं। महामारी ने उन्हें राष्ट्रीय केंद्रबिंदु पर ला दिया है।

देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा से, प्रवासी श्रमिकों की एक बड़ी संख्या ने अपने रोज़गार के स्थानों से अपने मूल गाँवों को लौटने का निर्णय लिया। आवागमन की अनुपलब्धता ने अपनी समस्याएँ खड़ी कर दीं। इसके अलावा अपने परिवारों की भुखमरी और असुविधा का डर भी उन्हें सता रहा था। इनके चलते प्रवासी श्रमिकों ने अपने गाँवों को लौटने के लिये मज़दूरी और आवागमन की सुविधाएँ मांगीं। उनकी मानसिक व्यथा बहु कारणों से और भी बढ़ गई, जैसे- आजीविका का आकस्मिक नुकसान, भोजन के अभाव की संभावना और समय पर घर नहीं पहुँच पाने से रबी की फसल की कटाई में मदद नहीं करने की असमर्थता। उनकी आशंकाएँ ऐसी खबरों से और भी बढ़ गईं जिनमें रास्ते में कुछ ज़िलों में रहने और खाने के अपर्याप्त प्रबंध के बारे में बताया गया था।

जब आपको अपने ज़िले के ज़िला आपदा मोचन बल की कार्यवाही का संचालन करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी तो इस परिस्थिति से आपने अनेक सबक हासिल किये। आपके मतानुसार सामयिक प्रवासी संकट में क्या नीतिपरक मुद्दे उभर कर आए? एक नीतिपरक सेवा प्रदाता राज्य से आप क्या समझते हैं? समान परिस्थितियों में प्रवासियों की पीड़ाओं को कम करने में सभ्य समाज क्या सहायता प्रदान कर सकता है? (250 शब्द, 20 अंक)

Migrant workers have always remained at the socio-economic margins of our society, silently serving as the instrumental labour force of urban economics. The pandemic has brought them into national focus.

On announcement of a countrywide lockdown, a very large number of migrant workers decided to move back from their places of employment to their native villages. The non-availability of transport created its own problems. Added to this was the fear of starvation and inconvenience to their families. This caused, the migrant workers to demand wages and transport facilities for returning to their villages. Their mental agony was accentuated by multiple factors such as a sudden loss of livelihood, possibility of lack of food and inability to assist in harvesting their rabi crop due to not being able to reach home in time. Reports of inadequate response of some districts in providing the essential boarding and lodging arrangements along the way multiplied their fears.

You have learnt many lessons from this situation when you were tasked to oversee the functioning of the District Disaster Relief Force in your district. In your opinion what ethical issues arose in the current migrant crisis? What do you understand by an ethical care giving state? What assistance can the civil society render to mitigate the sufferings of migrants in similar situations?

उत्तर: एक 'प्रवासी श्रमिक' वह व्यक्ति होता है जो अपने क्षेत्र से इतर असंगठित क्षेत्र में अपने देश के भीतर या इसके बाहर काम करने के लिये पलायन करता है। प्रवासी श्रमिक आमतौर पर उस देश या क्षेत्र

में स्थायी रूप से रहने का उद्देश्य नहीं रखते हैं जिसमें वे काम करते हैं। वर्तमान महामारी के दौर में देश में स्वतंत्रता के पश्चात अब तक का सबसे बड़ा प्रवासी पलायन संकट सामने आया है। उपर्युक्त केस स्टडी इसी रिवर्स माइग्रेशन की समस्या से संबंधित है।

प्रकरण से संबंधित हितधारक समूह

- प्रवासी श्रमिक
- ज़िले के ज़िला आपदा मोचन बल की कार्यवाही के संचालक के रूप में 'मैं'
- एक लोककल्याणकारी राज्य के रूप में केंद्र एवं राज्य सरकार
- समाज एक नीतिपरक सेवा प्रदाता राज्य से आशय ऐसे राज्य से है जो अपने नागरिकों के लिये व्यापक समाज सेवाओं की व्यवस्था करता है। ऐसे राज्य का मुख्य ध्येय अपने नागरिकों को न्यूनतम जीवन स्तर प्रदान करना एवं यथासंभव समानता स्थापित करना होता है। प्रो. लास्की के अनुसार: "एक नीतिपरक सेवा प्रदाता राज्य लोगों का ऐसा संगठन है, जिसमें सभी का अधिकाधिक हित सामूहिक हित में निहित होता है।"

सामयिक प्रवासी संकट से संबंधित नैतिक मुद्दे

- स्वास्थ्य एवं जीवनयापन की निम्न स्थिति
- मनो-सामाजिक विकार
- आजीविका का संकट
- दस्तावेज़ीकरण और पहचान संबंधी समस्या
- महिला प्रवासियों से संबंधित मुद्दे
- सामाजिक स्वास्थ्य के संकट (संक्रमण फैलने की स्थिति में)
- भविष्य में औद्योगिक केंद्रों में श्रमिकों की कमी का संकट

मेरे अनुसार एक सभ्य समाज प्रवासियों के इस संकट के समाधान में निम्नलिखित प्रकार से सहायता प्रदान कर सकता है–

- सिविल सोसाइटी संगठनों की सहायता से जगह-जगह पर श्रमिकों के ठहरने हेतु अस्थायी निवास स्थानों का प्रबंध एवं स्थानीय क्षेत्रों में रोज़गार उपलब्ध कराए जा सकते हैं।
- महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देते हुए स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा सकता है।
- स्थानीय निकायों को निश्चित रूप से वापस लौटे और प्रवासी श्रमिकों की खोज करनी चाहिये और जॉब कार्ड प्राप्त करने की आवश्यकता वाले लोगों की मदद करनी चाहिये।
- प्रवासी श्रमिकों से किसी भी प्रकार के परिवहन का शुल्क नहीं लेना चाहिये।
- राज्य सरकारों द्वारा प्रवासी श्रमिकों को उनके गाँव भेजने के लिये आर्थिक सहायता दी जा सकती है। जैसा कि हाल ही में राज्य सरकारों (जैसे-बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश) ने प्रवासी श्रमिकों को भेजने के लिये एकमुश्त नकद हस्तांतरण की घोषणा की।
- सिविल सोसाइटी संगठनों की सहायता से प्रवासी श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा का भी अस्थायी प्रबंध किया जा सकता है।

समाज के अतिरिक्त एक नीतिपरक सेवा प्रदाता राज्य होने के चलते इस दिशा में सरकार द्वारा भी निम्नलिखित प्रयासों को किये जाने की आवश्यकता है-

- आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 और महामारी रोग अधिनियम, 1897 के तहत महामारी रोकथाम के लिये एक राष्ट्रीय योजना और दिशानिर्देश तैयार किये जाने की आवश्यकता है।
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) के तहत एक विशिष्ट विंग का गठन किया जाना चाहिये, जिसके पास महामारी से निपटने में विशेषज्ञता हो और जो सार्वजनिक क्षेत्र, कॉरपोरेट्स, गैर-सरकारी संगठनों तथा अन्य हितधारकों के साथ सरकार की साझेदारी में अग्रणी भूमिका अदा करे।
- भविष्य में इस तरह के संकट के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया के लिये केंद्र, राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के बीच समन्वय हेतु एक प्रभावी संस्थागत तंत्र की आवश्यकता है।
- नीति निर्माताओं को जल्द-से-जल्द प्रवासी श्रमिकों से संबंधित एक राष्ट्रीय डेटाबेस लॉन्च करना चाहिये, ताकि महामारी और लॉकडाउन से प्रभावित लोगों को अतिशीघ्र राहत प्रदान की जा सके। इस डेटाबेस के तहत प्रवासी मज़दूरों के स्रोत और गंतव्य, उनके रोज़गार तथा कौशल की प्रकृति आदि से संबंधित विवरण शामिल किये जा सकते हैं।
- देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा से कुछ दिन पूर्व एक नोटिस जारी करना चाहिये जिससे श्रमिक पहले ही अपनी व्यवस्था कर सकें।
- अल्पकालिक उपाय हेतु प्रवास करने वाले श्रमिकों को उनके ही क्षेत्र में रोज़गार उपलब्ध कराने की व्यवस्था करना तथा प्रवसन हेतु नि:शुल्क यातायात के साधनों की व्यवस्था करना सरकार की अहम ज़िम्मेदारी है।

प्रश्न: आप किसी ज़िले के ज़िलाधिकारी हैं। आपके ज़िले एवं राज्य की अर्थव्यवस्था को उन्नत बनाने में प्रवासी कामगारों का अहम योगदान रहा है। आपके ज़िले की एक 14 माह की बच्ची के साथ एक प्रवासी व्यक्ति ने दुष्कर्म करने की कोशिश की, जिससे न केवल ज़िले में अपितु पूरे राज्य में कामगारों के प्रति घृणा का माहौल व्याप्त है। कुछ स्वार्थी तत्त्व इस परिस्थिति का फायदा उठाने के लिये प्रयासरत हैं। कामगारों को डरा-धमकाकर माहौल को और खराब करने की कोशिश की गई।

ऐसे में स्वयं की एवं परिवार की सुरक्षा को ध्यान में रखकर बड़ी संख्या में प्रवासी कामगार अपने गृह राज्य की ओर पलायन करने लगे हैं। इससे न केवल राज्य की छवि खराब हो रही है बल्कि ज़िले की आर्थिक स्थिति भी क्षीण होने की संभावना है।

ऐसे में एक लोकसेवक होने के नाते आपके क्या दायित्व हैं एवं ऐसी परिस्थिति से सामना होने पर आप क्या करेंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the district collector of a district. Migrant workers have been a major contributor to the economic development of your district and the state. A migrant tried to molest a 14-month-old girl in your district, due to which an atmosphere of hatred towards the workers is prevalent not only in the district but in the whole state. Some selfish elements are trying to take advantage of the situation. Attempts were made to worsen the atmosphere by intimidating the workers. In such a situation, a large number of migrant workers have started returning to their home state considering their own and families" safety. Because of it, not only the state's image is taking a hit, but the economic condition of the district is also likely to be impaired.

Being a public servant, what are your responsibilities and what will you do if you face this situation?

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी विविधता से परिपूर्ण देश में एक साथ रह रहे लोगों में अविश्वास एवं घृणा को उभारने के प्रयास के साथ ही अत्यंत संवेदनशील घटना; अबोध बालिका के साथ दुष्कर्म एवं हत्या से संबंधित है।

ऐसे में एक लोकसेवक होने के नाते मेरे विभिन्न नैतिक एवं प्रशासकीय दायित्व हैं जिनका निर्वहन मैं ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, समानुभूति, देशप्रेम एवं संवेदनशीलता के साथ करने का प्रयास करूँगा। मेरे प्रमुख दायित्व हैं-

- बालिका के साथ अत्याचार का प्रयास करने वाले दोषी को कानूनी प्रक्रिया से दंड दिलवाना।
- संबंधित राज्य के आर्थिक एवं सामाजिक हितों की रक्षा करना।
- विविधता में एकता की संस्कृति को आगे बढ़ाने का प्रयास करना।
- घृणा के माहौल का विस्तार करने वाले लोगों पर सख्त कार्यवाही करना।

उक्त परिस्थिति से सामना होने पर मेरे द्वारा उठाए जाने वाले कदम निम्नलिखित हैं-

- सर्वप्रथम दोषी व्यक्ति की पहचान एवं गिरफ्तारी के लिये त्वरित प्रयास करूंगा।
- असामाजिक तत्त्व जो घृणा फैलाने का कार्य कर रहे हैं, उन पर युक्ति-युक्त कार्यवाही करूंगा।
- स्थानीय लोगों को, दोषियों को यथाशीघ्र दंडित करने का आश्वासन दिलाकर शांत करने का प्रयास करना।
- प्रवासियों पर हो रहे हमले रोकने हेतु पुलिस बल को अलर्ट करना जिससे कि उनमें विश्वास बहाल करके उनके गृह राज्य की ओर पलायन को रोका जा सके।

अत: स्पष्ट है कि उक्त प्रयासों से अबोध बालिका के प्रति न्याय किया जा सकेगा एवं प्रवासियों की वापसी को रोककर राज्य की छवि के साथ-साथ राज्य की आर्थिक गतिविधियों को क्षीण होने से भी रोका जा सकेगा। साथ ही, भविष्य में बच्चों से दुष्कर्म, हत्या जैसी घटना दुहराई न जा सके इस हेतु विभिन्न कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन भी सुनिश्चित किया जाएगा।

प्रश्न: पश्चिमी देशों में महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार, यौन शोषण करने वाले लोगों के खिलाफ आवाज़ उठाने की समयसीमा खत्म करके अग्रगामी प्रयास किये जा रहे हैं। यहाँ चल रहे आंदोलन का प्रभाव भारत में भी द्रष्टव्य होने लगा है। आप एक कर्त्तव्यनिष्ठ पुलिस अधीक्षक हैं। उक्त आंदोलन से प्रेरित होकर आपके समक्ष एक महिला शिकायत लेकर आती है कि एक वरिष्ठ अधिकारी ने उसके साथ तब दुष्कर्म किया था जब वह 17 वर्ष की थी एवं चुप न रहने पर जान से मारने की धमकी भी दी थी। अब वह न्याय चाहती है एवं त्वरित कार्यवाही की मांग कर रही है। ऐसे में, उस अधिकारी ने महिला की शिकायत दर्ज नहीं करने का आदेश दिया है एवं आज्ञा का पालन न करने पर आपको भ्रष्टाचार के आरोपों में फँसाने की धमकी भी दी है।

(a) उक्त परिस्थिति में आपके समक्ष उपलब्ध विकल्पों का उल्लेख कीजिये।

(b) विकल्पों के गुण-दोषों की चर्चा करते हुए सर्वोत्तम विकल्प बताएँ। (250 शब्द, 20 अंक)

In the Western countries, progressive efforts are being made towards eliminating the deadline for exposing misbehaviour with women and sexual exploitation by offenders. The effect of this movement is also visible in India. You are a conscientious Superintendent of police. Inspired by the movement, a woman comes to you to complain that a senior officer had molested her when she was 17 and had threatened to kill her if she did not maintain silence. Now she wants justice and demands swift action. In such a situation, the senior officer has ordered not to register the woman's complaint and threatened to ensnare you in corruption charges if you disobey him.

(a) Mention the options available to you in this situation.

(b) Describe the best option while discussing the merits and demerits of options.

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी महिलाओं के खिलाफ हुए अपराधों को सबके सामने लाने हेतु स्वयं उनके द्वारा चलाए गए एक अभियान के साथ ही एक सिविल सेवक की नैतिकता, समानुभूति, महिलाओं के कल्याण के प्रति उसकी अभिवृत्ति जैसे गुणों का परीक्षण करने से संबंधित है।

उत्तर : (a) उक्त परिस्थिति में मेरे समक्ष उपलब्ध विकल्प निम्न हैं-

- अपने वरिष्ठ अधिकारी की बात मानकर मैं इस मामले के प्रति उदासीन रहूँ।
- अपना स्थानांतरण किसी अन्यत्र स्थान पर करा लूँ।
- उस महिला के पक्ष मे अपने वरिष्ठ अधिकारी के खिलाफ त्वरित कार्यवाही करूँ।
- वरिष्ठ अधिकारियों को इस मामले के संदर्भ में अवगत कराकर महिला की शिकायत दर्ज करना।

उत्तर : (b) प्रथम विकल्प को चुनने से न केवल यथास्थिति बनी रहेगी बल्कि संभव है अपने वरिष्ठ अधिकारी की आज्ञा का पालन करने पर विशेष कृपा भी मिल जाए। किंतु इससे एक सिविल सेवक की नैतिकता पर प्रश्नचिह्न लगेगा, जैसे- ऐसा करने पर लोक सेवकों में कर्त्तव्यनिष्ठा, सत्यनिष्ठा जैसे सद्गुणों का ह्रास होगा और साथ ही महिला की सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

द्वितीय विकल्प का फायदा यह होगा कि द्वंद्वों से छुटकारा मिलेगा एवं शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत होगा किंतु इसका सबसे बड़ा दोष यह है कि इससे मेरी पलायनवादी प्रवृत्ति का पता चलता है। साथ ही, यह मेरे अंदर नेतृत्व क्षमता की कमी को भी प्रतिबिंबित करता है।

तृतीय विकल्प को चुनने से न केवल महिला को न्याय मिल सकेगा बल्कि एक अधिकारी के रूप में मेरे कर्त्तव्य पालन, सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता, निष्पक्षता, जनसेवा के प्रति समर्पण को भी सुनिश्चित किया जा सकेगा। भारतीय संविधान में सबको समान माना गया है, अत: अपराध सिद्ध होने पर एक अधिकारी को भी सामान्य लोगों की तरह ही दंड मिल सकेगा। वहीं इस विकल्प को चुनने से मुझे व्यक्तिगत हानि उठानी पड़ सकती है और साथ ही, मेरे खिलाफ अनियमितता एवं भ्रष्टाचार के झूठे आरोप लगाकर मेरी छवि को ख़राब किया जा सकता है।

चतुर्थ विकल्प उचित प्रतीत होता है क्योंकि इससे न केवल महिला को न्याय मिल सकेगा बल्कि उसके सम्मान की रक्षा की जा सकेगी और इससे मेरी व्यक्तिगत हानि उठाने की संभावना भी कम हो जाती है। तथापि यह हो सकता है कि वरिष्ठ अधिकारी आपस में मिले हुए हों किंतु ऐसा आवश्यक नहीं है। साथ ही इस मामले में आवश्यकता पड़ने पर न्यायालय एवं मीडिया का भी सहयोग लिया जा सकता है जिससे इस विकल्प की संभावित कमियों की दूर किया जा सके।

अत: स्पष्ट है कि चतुर्थ विकल्प सर्वोत्तम है। इसके माध्यम से सभी पहलुओं को साधा जा सकता है। इसके अलावा, इस विकल्प को अपनाने से विभाग को भी लाभ होगा क्योंकि पीड़ित के पक्ष में विभाग द्वारा अपने ही किसी अधिकारी के विरुद्ध कार्यवाही की जाएगी, जिससे विभाग की महिलाओं के यौन शोषण के प्रति 'ज़ीरो टॉलरेंस' की नीति का पता सभी लोगों को चल सकेगा।

प्रश्न: आप एक इंजीनियर हैं तथा आपके निर्देशन में फ्लाइओवर बनाने का काम चल रहा है। इस दौरान आपको उच्च अधिकारी द्वारा दिशा-निर्देश दिये जाते हैं कि समय पर कार्य को पूरा करना है। आपने पूरा प्रयास किया कि कार्य समय पर खत्म हो जाए परंतु जब कुछ कार्य शेष रह गया था तब आपने पुल का निरीक्षण किया और पाया कि पुल की गुणवत्ता सही नहीं है। इससे भविष्य में दुर्घटना होने की संभावना है एवं कई लोगों की जान भी जा सकती है। अत: आपने उक्त पुल का उद्घाटन करने के लिये स्वीकृति नहीं दी। आपके उच्च अधिकारी एवं संबंधित मंत्री पुल पर आवाजाही शुरू करने की स्वीकृति देने के लिये आप पर दबाव डालते हैं। आपके मना करने पर आपको निलंबित करने एवं आपके परिवार को हानि पहुँचाने की धमकी भी दी है।

(a) ऐसी स्थिति में आप किस प्रकार की नैतिक दुविधाओं का सामना करेंगे?

(b) आपके समक्ष उपस्थित विकल्पों का उल्लेख करें एवं प्रत्येक के गुण-दोषों की चर्चा करते हुए यह बताएँ कि आप कौन-सा विकल्प चुनेंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

You are an engineer and in your supervision the work of a flyover construction is underway. Meanwhile, you have been instructed by the senior official to complete the work on time. You have made effort to the fullest to finish the work on time but when there was some work left, you inspected the bridge and found that the quality of the bridge is not as per standards. This is likely to cause an accident in the future and many people may be killed. So you did not approve the inauguration of the bridge. Your senior official and the concerned minister put pressure on you to give approval to start the movement on the bridge. Upon your refusal, you have also been threatened with suspension and harm to family.

(a) What kind of moral dilemmas you face in such a situation?

(b) Mention the options present before you and discussing pros and cons of each, spell out which option would you choose?

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी कर्त्तव्य पालन, ईमानदारी, जनहित एवं व्यक्तिगत हित में व्याप्त द्वंद्वों को प्रतिबिंबित करती है। इस प्रकरण में जवाबदेही को भी सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया है क्योंकि इसके कमज़ोर होने पर ही भ्रष्टाचारी अपने लक्ष्य में सफल होता है। जवाबदेही के कारण ही मैं इंजीनियर के रूप में पुल के मानकों को पूरा न कर पाने की स्थिति में पुल के उद्घाटन एवं पुल पर आवाजाही का आदेश नहीं दे सकता।

उत्तर : (a) उपर्युक्त स्थिति में मेरे समक्ष उत्पन्न नैतिक दुविधाएँ निम्नलिखित हैं-

- व्यापक जनहित बनाम व्यक्तिगत हित।
- पदीय दायित्व, ईमानदारी एवं कर्त्तव्य बनाम उच्चाधिकारियों के आदेशों का पालन।
- कार्य की गुणवत्ता बनाम समयबद्धता।

उपर्युक्त स्थिति में मेरे समक्ष उपस्थित विकल्प निम्नलिखित हैं-

- उच्च अधिकारी की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी बात मान लेना।
- उच्च अधिकारी की बात न मानकर इस विषय को मीडिया के माध्यम से उठाएँ ताकि उच्च अधिकारी तथा मंत्री पर उचित कार्यवाही का दबाव बढ़े।
- स्थानांतरण करवाकर इस स्थिति से छुटकारा पा लेना।
- वस्तुस्थिति की गंभीरता को बताते हुए विस्तृत रिपोर्ट सौंप कर उच्च अधिकारी से लिखित आदेश मांगना इत्यादि।

उत्तर: (b) प्रथम विकल्प चुनने से आवाजाही समयानुसार शुरू की जा सकेगी एवं आज्ञा पालन जैसे मूल्य को सुनिश्चित किया जा सकेगा। इसके अलावा व्यक्तिगत हित को भी साधा जा सकता है। वहीं इस विकल्प का दोष यह है कि इससे व्यापक जनहित की अनदेखी होगी, साथ ही कार्य की गुणवत्ता की उपेक्षा होगी। इसके अतिरिक्त मेरे नैतिक गुणों यथा- कर्त्तव्य पालन, ईमानदारी, संवेदनशीलता का भी ह्रास होगा।

द्वितीय विकल्प कुछ हद तक ठीक प्रतीत होता है, इस संदर्भ में तार्किक रूप से प्रशासनिक प्रक्रिया का पालन करना आवश्यक है किंतु मीडिया के माध्यम से ऐसा करने से गोपनीयता का उल्लंघन होगा। संभव है कि सेवा नियमावली का उल्लंघन भी हो जाए।

तृतीय विकल्प सर्वाधिक आसान है क्योंकि इससे न केवल पारिवारिक सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी बल्कि भविष्य में जवाबदेही मेरे ऊपर नहीं आएगी। किंतु यह मेरी पलायनवादी प्रवृत्ति का परिचायक होगा, साथ ही यह विकल्प विभिन्न समस्याओं का सामना करने में मेरी अक्षमता का भी परिचायक होगा।

चतुर्थ विकल्प एक बेहतर विकल्प है क्योंकि विस्तृत रिपोर्ट सौंपने से वस्तुस्थिति अधिक स्पष्ट हो सकेगी ऐसा संभव है कि उच्च अधिकारी को स्थिति की गंभीरता समझ में आए और वह अपना आदेश बदलते हुए जनहित को ध्यान में रखे। यदि ऐसा नही होता है तो लिखित आदेश के रूप में उसकी जवाबदेही को सुनिश्चित किया जा सकेगा। जिससे भविष्य में यदि कोई अप्रिय घटना होती है तो उससे जवाब तलब किया जा सकेगा।

उपर्युक्त विकल्पों में से चतुर्थ विकल्प सर्वाधिक उचित होगा। मेरे द्वारा इसी विकल्प का चयन करना उचित है किंतु यदि यह विकल्प कारगर साबित नहीं हुआ तो द्वितीय विकल्प को चुनना उपयुक्त होगा।

प्रश्न: हर वर्ष उत्तर-पश्चिमी राज्यों में पराली दहन से निकला दूषित धुआँ सर्दियों के मौसम में आस-पास के शहरों में स्मॉग की समस्या उत्पन्न कर देता है। इससे स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ बढ़ जाती हैं एवं प्रदूषित वायु के संपर्क में आने पर अस्थमा के रोगियों को साँस लेने में दिक्कत होती है। इस संबंध में केंद्र सरकार ने राज्यों को पराली दहन न करने के लिये कहा है। किंतु राज्यों द्वारा उदासीन रवैये के कारण इस दिशा में प्रयास नहीं किये गए। अखबारों में पराली जलाने की खबरें प्रकाशित होने लगी हैं। एक अनुमान के अनुसार, इस वर्ष गंभीर समस्या उत्पन्न होने की संभावना ज़्यादा है। किसान पर्याप्त जागरूकता एवं आवश्यक आधारभूत संसाधनों के अभाव में पराली जलाने को विवश हैं, जबकि इससे पर्यावरण का ह्रास हो रहा है। आपको इस संदर्भ में सरकार द्वारा गठित बोर्ड के अध्यक्ष पद की ज़िम्मेदारी दी गई है।

इसमें निहित नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिये तथा उपरोक्त परिस्थिति से निपटने के लिये आप क्या सुझाव देंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

Every year in the North-Western states, the contaminated smoke emanating from the burning of agricultural residues causes smog problems in nearby cities during the winter season. This augments health-related concerns and when exposed to polluted air, asthma patients face breathing problems. In this regard, the Central Government has asked the states not to burn the crop residue. But efforts were not made in this direction due to the indifferent attitude of the states. News of the burning of crop residues has started to appear in the newspapers. According to an estimate, the probability of worsening of its impact is high this year. Farmers are compelled to burn the residues thanks to lack of adequate awareness and necessary infrastructure, while the environment is degrading due to it. You have been given the responsibility of the chairmanship of the Board constituted by the Government in this context. Identify the ethical issues involved in it. What would you suggest to deal with the above situation?

उत्तर: उपरोक्त विषयवस्तु सर्दियों में पराली दहन से उत्पन्न प्रदूषण की समस्या से संबंधित है। इससे पर्यावरण एवं स्वास्थ्य दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। साथ ही, पर्याप्त जागरूकता के अभाव में किसान खेतों में बचे अवशेषों का उचित उपयोग करने में असमर्थ हैं। इसी तरह इस समस्या का सबसे बुरा प्रभाव समाज के कमज़ोर वर्गों, जैसे- बुजुर्ग, वृद्ध, गरीब आदि पर ज़्यादा पड़ता है। इस परिस्थिति में उत्पन्न नैतिक मुद्दे निम्नलिखित हैं-

- स्वस्थ जीवन के मौलिक अधिकार की उपेक्षा।
- पर्यावरणीय नैतिकता का उल्लंघन।
- पर्यावरणीय न्याय के बाधित होने से सामाजिक न्याय में भी बाधा।
- जागरूकता के अभाव में कृषकों के सामाजिक-आर्थिक हित बाधित।
- सरकारों का उदासीन रवैया लोकसेवा के बुनियादी मूल्यों की उपेक्षा।

सरकार द्वारा गठित बोर्ड का अध्यक्ष होने के कारण में समस्या के नैतिक एवं व्यावहारिक पक्षों को ध्यान में रखते हुए समस्या के तात्कालिक एवं दीर्घकालिक संदर्भों में सुझाव दूँगा। सर्वप्रथम तात्कालिक दृष्टि से मैं निम्न सुझाव दूँगा-

- शहरों में प्रदूषण या स्मॉग को उस अधिकतम स्तर पर पहुँचने से पहले तुरंत रोकने का प्रयास करना जिससे स्वास्थ्य के लिये आपात स्थिति उत्पन्न न हो। इसके लिये ऑड-इवेन फॉर्मूला, कार पूलिंग, सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग आदि को प्रोत्साहित करने का प्रयास कर सकते हैं।
- सरकारी अस्पतालों में अस्थमा आदि के मरीज़ों के उपचार के लिये अस्पताल को पूरी तरह तैयार रहने का सुझाव देना।
- केंद्र सरकार के माध्यम से राज्य सरकारों को ग्रामीण क्षेत्रों में पराली दहन रोकने के लिये आवश्यक उपाय करने का तुरंत निर्देश देने का सुझाव (इन प्रयासों के अंतर्गत राज्य सरकारें किसानों को प्रोत्साहन राशि आदि दे सकती हैं, अति आवश्यकता पड़ने पर कुछ सीमा तक कानूनी कार्यवाही का भी सहारा ले सकती हैं। साथ ही किसानों को पराली दहन के नकारात्मक पक्ष जैसे- मृदा उर्वरता में कमी, प्रदूषण आदि की समस्या से परिचित कराया जा सकता है)।

हालाँकि, उपरोक्त सुझाव समस्या के तात्कालिक दुष्प्रभाव को कम कर सकते है लेकिन इसका स्थायी समाधान नहीं कर सकते। स्थायी समाधान के लिये दीर्घकालिक पक्षों पर ध्यान देना होगा, इसके लिये निम्न सुझाव हैं-

- पराली दहन रोकने को किसानों के लिये लाभकारी बनाने का प्रयास करना होगा। जैसे पराली से बायो-ईंधन बनाने वाले संयंत्रों की स्थापना का प्रयास सरकारों को करने का सुझाव।
- किसानों द्वारा पराली दहन के मुख्य क्षेत्रों की पहचान व निगरानी करके उन क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर पर प्रयास करने होंगे।
- पराली दहन के नकारात्मक प्रभावों के प्रति किसानों को जागरूक करने के लिये जागरूकता कार्यक्रमों, मीडिया सहयोग तथा कृषक नेतृत्व वर्ग का सहयोग लिया जा सकता है।
- किसानों को जैविक कृषि की ओर प्रेरित करते हुए पराली का प्रयोग जैविक खाद के रूप में करने पर ध्यान देना होगा।
- सरकार को पराली दहन की समस्या से निपटने के लिये स्थायी निधि, पर्याप्त निवेश तथा प्रभावी अनुसंधान तंत्र की व्यवस्था करने का सुझाव देना।
- आम लोगों को भी प्रदूषण की समस्या के प्रति सचेत करते हुए 'इको फ्रैंडली' जीवनशैली के लिये अभिप्रेरित करने का सुझाव देना।

इस प्रकार उपरोक्त सुझावों से समग्रता के साथ लागू करने पर लोगों के स्वस्थ जीवन के अधिकारों की रक्षा की जा सकती है तथा पर्यावरणीय नैतिकता, पर्यावरणीय न्याय, सामाजिक न्याय तथा किसानों के सामाजिक-आर्थिक हितों को संरक्षित किया जा सकता है।

प्रश्न: आप एक ज़िला पंचायत में मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। आपके ज़िले के एक गाँव में काफी समय पश्चात् एक महिला मुखिया के रूप में चुनी गई है जो निःसंदेह बदलाव का सूचक है। किंतु चिंताजनक बात यह है कि मुखियापति की हैसियत से उस महिला का पति मुखिया पद के सभी अधिकारों का उपभोग कर रहा है। हाल ही में सरकार द्वारा स्थानीय स्तर पर स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत शौचालय बनाने के लिये धन आवंटित किया गया है। मुखियापति ने जिन लोगों के घर में शौचालय पहले से बने हुए हैं उनको पैसे उपलब्ध करा दिये और उन्होंने निर्मित शौचालय का रंगरोगन करवा लिया ताकि भविष्य में जाँच होने पर वे बच जाएँ, जबकि जो ज़रूरतमंद परिवार हैं उन्हें व्यक्तिगत झगड़े के कारण फॉर्म नहीं भरने दिया गया। कोई इसके खिलाफ आवाज़ उठाने के लिये तैयार नहीं है क्योंकि अधिकांश गाँव वाले मुखियापति से मिले हुए हैं एवं कुछ लोग भयवश ऐसा करने से हिचक रहे हैं।

(a) उक्त स्थिति में उत्पन्न नैतिक मुद्दों को बताएँ।

(b) आपके समक्ष उपलब्ध विकल्पों को बताएँ एवं प्रत्येक के गुण-दोषों का भी वर्णन कीजिये। इस परिस्थिति में आप क्या कदम उठाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

You are the Chief Executive Officer in a District Panchayat. In a village of your district, a woman has been elected as 'Mukhiya' (the leader of Panchayat) after ages which is a sign of social change. But it is a matter of concern that the husband of the woman (Mukhiyapati) is enjoying all the rights of the position of the 'Mukhiya'. Recently funds have been allocated by the government to construct toilets at the local level under the Swachh Bharat Abhiyan. The husband has made available the money to people who already have a toilet in their home. They have painted the toilet already there, so that they can evade any investigation in the future; while those who were the needy families, have not been allowed to fill the form due to personal disputes. Nobody is ready to raise voice against it as most of the villagers are in connivance with the husband of the 'Mukhiya' and some people are hesitant to do so due to the fear.

(a) Describe the ethical issues in this situation.

(b) Spell out the options available to you and describe the pros and cons of each. What steps will you take in this situation?

उत्तर: (a) उपर्युक्त केस स्टडी स्थानीय स्वशासन की कमज़ोरियों को प्रतिबिंबित करता है, साथ ही उक्त मामला महिला सशक्तीकरण हेतु किये जा रहे सरकारी प्रयासों की विफलता का भी परिचायक है। सामाजिक धारणा, रूढ़ियाँ, परंपराओं की जड़ें गहरे रूप में जमे होने के परिणामत: सरकारी योजनाओं के साथ-साथ सरकारी पदों का भी दुरुपयोग होता है। इसमें निहित विभिन्न नैतिक मुद्दे निम्नलिखित हैं-

- मुखिया पद की गरिमा एवं जनमत का उल्लंघन।
- सरकारी धन का दुरुपयोग।
- निर्दोष महिला के विरुद्ध कार्रवाई की संभावना।
- ज़मीनी स्तर पर भ्रष्टाचार की समस्या।
- महिला के विधिक अधिकारों का हनन इत्यादि।

उत्तर : (b) उपर्युक्त समस्या से निपटने के लिये मेरे समक्ष उपलब्ध विकल्प निम्नलिखित हैं-

- उक्त स्थिति के संदर्भ में जानकर भी उदासीन बने रहना।
- निर्वाचित महिला के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करना।
- निर्वाचित महिला को चेतावनी देकर पद पर बने रहने देना।
- सरकारी धन के दुरुपयोग में संलग्न व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही करना एवं जनमानस में जागरूकता लाकर धारणात्मक परिवर्तन हेतु प्रयास किया जाना साथ ही भ्रष्टाचार रोकने हेतु 'सोशल ऑडिट' की प्रक्रिया अपनाना।

प्रथम विकल्प को चुनने से परिस्थिति पूर्व की तरह बनी रहेगी एवं अनावश्यक उलझनों से बचा जा सकेगा क्योंकि यह स्थिति लगभग हर गाँव की स्थिति है। इस विकल्प का दोष यह है कि कर्त्तव्य पालन, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का ह्रास होगा।

वहीं, द्वितीय विकल्प को चुनने का लाभ यह है कि जनमानस के हित को सुनिश्चित किया जा सकेगा एवं भय के माहौल को कम किया जा सकेगा। किंतु इस विकल्प का दोष यह है कि निर्वाचित महिला के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही करके भी इस समस्या का प्रभावी समाधान नहीं होगा क्योंकि समस्या के मूल में सामाजिक व्यवस्था में विद्यमान कमियाँ हैं, न कि निर्वाचित महिला की अनुशासनहीनता।

तृतीय विकल्प कुछ सीमा तक उचित है जिसे चुना जा सकता है क्योंकि इससे न केवल महिला के साथ अन्याय को रोका जा सकता है बल्कि संबंधित गाँव के लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जानकारी प्राप्त होगी। वहीं, इसका दोष यह है कि उस महिला का पति अप्रत्यक्ष रूप से या अनैतिक तरीकों से दूसरे मौकों का भी लाभ उठाने का प्रयास कर सकता है।

चतुर्थ विकल्प सर्वाधिक उचित है जिससे न केवल वंचितों को लाभ होगा बल्कि व्यापक सामाजिक हित सुनिश्चित किया जा सकेगा। दोषियों पर कार्यवाही से विधि का शासन सुनिश्चित होगा एवं जागरूकता से महिलाओं में अपने अधिकारों को लेकर गंभीरता बढ़ेगी किंतु इस विकल्प को चुनने से हिंसात्मक गतिविधियों के बढ़ने की संभावना है जिसको पुलिस बल के समुचित प्रबंधन से रोका जा सकता है।

अत: उपर्युक्त केस स्टडी में द्रष्टव्य स्थानीय स्वशासन की कमियों को दूर करने के लिये मैं ज़िला पंचायत के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में महिलाओं में नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु आवश्यक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करूंगा, स्थानीय सुशासन की अभिकल्पना को साकार करने हेतु 'सोशल ऑडिट' जैसे प्रयासों से जन भागीदारी बढ़ाने का प्रयास करूंगा। साथ ही महिलाओं के प्रति समाज की धारणा में सकारात्मक परिवर्तन लाने के प्रयास करूँगा।

प्रश्न: आप कोई गैर-सरकारी संगठन (NGO) चलाते हैं जो दलित वर्ग के उत्थान, सशक्तीकरण एवं उनके जीवनयापन की बेहतर सुख-सुविधाओं में वृद्धि के लिये प्रयास करता है। आप स्वयं संभ्रात वर्ग या परिवार से हैं, लेकिन आप समाजवादी विचारों से प्रेरित हैं और इन वर्गों की भलाई के लिये कार्य करना चाहते हैं। अचानक आपको पता चलता है कि गाँव में आपके पिताजी का स्वास्थ्य खराब चल रहा है और आप अपने पिताजी का अत्यधिक सम्मान करते हैं; अपने जीवन की कठिन एवं विकट परिस्थितियों में आपको अपने पिताजी का बहुत सहयोग मिला है। ऐसे में, आप अपने पिताजी को बेहतर इलाज हेतु शहर में अपने पास बुला सकते हैं लेकिन आपको ज्ञात है कि आपके पिताजी परंपरावादी विचारों से संबंधित रूढ़ियों से ग्रसित हैं और इस कारण उन्हें निम्न जातियों (तथाकथित जाति व्यवस्था के अनुसार) के लोगों से आपका मिलना पसंद नहीं होगा। पिताजी की इस मनोवृत्ति से आपके समाजसेवी कार्य में बाधा उत्पन्न हो सकती है एवं आपको असहजता की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

(a) उक्त परिस्थिति में आपके समक्ष कौन-कौन सी नैतिक दुविधाएँ हैं?

(b) इन परिस्थितियों में आपके समक्ष कौन-कौन से विकल्प मौजूद हैं? प्रत्येक विकल्प के गुण-दोषों का अवलोकन करते हुए बताएँ कि आप किस विकल्प का चयन करेंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

You run a non-governmental organization (NGO) which works for the upliftment, empowerment and improvement in living conditions of the lower classes (dalits). You yourself are from an elite class or family, but you are influenced by socialist ideals and want to work for the good of these classes. Suddenly you come to know that your father's health is worsening in the village. You immensely respect your father;

you have got a lot of support from your father in difficult and adverse circumstances of life. In this situation, you could call your father for better treatment in the city. But you are aware that your father believes in orthodox customs related to traditional ideas, and therefore he will not appreciate your mingling with the lower castes (as per the norms of the caste system). This attitude of your father can interfere with your social work and you may have to face a situation of discomfort.

demerits of each option spell out the option you will choose?

(a) What moral dilemmas do you face in the above situation?

(b) What are the options available to you in these circumstances? By examining the merits and

उत्तर : (a) जातिगत भेदभाव हमारे समाज का एक कटु यथार्थ है। आधुनिक मूल्यों के प्रभाव के कारण वर्तमान पीढ़ी में जाति के प्रति रूढ़धारणा (स्टीरियोटाइप) कमज़ोर अवश्य हुई है, किंतु आज भी जातीय पूर्वाग्रह हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं एवं दृष्टिकोण में गहन

रूप से स्थापित हैं जिनका प्रभाव पिताजी के भी दृष्टिकोण में दिखाई पड़ रहा है। उपर्युक्त प्रकरण इन्हीं रूढ़िगत जातीय पूर्वाग्रहों तथा दलित एवं सामाजिक सशक्तीकरण, समाजवादी विचारों की बढ़ती स्वीकार्यता के मध्य सामाजिक एवं पीढ़ीगत द्वंद्व को प्रस्तुत करता है।

उक्त परिस्थिति में मेरे समक्ष निम्न नैतिक दुविधाएँ हैं-

- सामाजिक दायित्व बनाम व्यक्तिगत दायित्व (जैसे- दलितोत्थान बनाम पिताजी के स्वास्थ्य की देखभाल)।
- व्यावसायिक संबंध बनाम व्यक्तिगत संबंध (जैसे- गैर-सरकारी संगठन को चलाने के लिये सभी जातियों से समान भाव से मिलना आवश्यक है जबकि पिताजी को इस तरह अन्य जातियों से मिलना पसंद नहीं)।
- परंपरागत विचार बनाम आधुनिक मूल्य (जैसे- पिताजी के परंपरावादी विचारों और मेरे समाजवादी विचार तथा समानता जैसे मूल्य)।

उत्तर: (b) इन परिस्थितियों में मेरे सामने निम्न विकल्प हैं-

- पिताजी को अपने पास न बुलाऊँ जहाँ वो रह रहे हैं वहीं इलाज की व्यवस्था कर दूँ।
- जब तक पिताजी पास में हैं तब तक निम्न जातियों (तथाकथित जाति व्यवस्था के अनुसार) से न मिलूँ।
- पिताजी को बेहतर इलाज हेतु अपने पास बुला लिया जाए, किंतु उनके रुकने की व्यवस्था अन्यत्र स्थान पर की जाए।
- पिताजी की रूढ़िगत जातीय अभिवृत्ति को यथासंभव परिवर्तित करने का प्रयास करूँ, साथ ही उनको अपने पास बुलाकर इलाज करवाऊँ।

प्रथम विकल्प का गुण यह है कि इससे मैं अपने व्यावसायिक संबंधों को निर्बाध पूरा कर सकूंगा तथा अपने एन.जी.ओ. को बेहतर तरीके से संचालित कर पाऊंगा। किंतु इस विकल्प का दोष यह है कि पिताजी को बेहतर इलाज नहीं मिलेगा क्योंकि वे गाँव में रह रहे हैं, साथ ही यह मेरे व्यक्तिगत दायित्वों की उपेक्षा है।

द्वितीय विकल्प का गुण यह है कि इससे पिताजी को अपने साथ रखकर उनका इलाज करवा सकूंगा। साथ ही, उनकी भावनाओं का भी सम्मान होगा क्योंकि मैं निम्न जातियों से नहीं मिल रहा। किंतु इस विकल्प का दोष यह है कि इसके चयन से मैं अपने सामाजिक तथा व्यावसायिक दायित्वों का निर्वहन नहीं कर पाऊंगा, साथ ही ये विकल्प मेरे समाजवादी विचारों के भी प्रतिकूल हैं।

तृतीय विकल्प का गुण यह है कि इससे पिताजी को बेहतर इलाज मिल सकेगा, साथ ही मैं अपने सामाजिक तथा व्यावसायिक दायित्वों को भी निभा सकूंगा। किंतु इस विकल्प का दोष यह है कि इससे मेरे व्यक्तिगत दायित्व की उपेक्षा होगी तथा पिताजी के साथ न्याय नहीं हो पाएगा क्योंकि जीवन की कठिन एवं विकट परिस्थितियों में उन्होंने मुझे अत्यधिक सहयोग दिया है।

चतुर्थ विकल्प का गुण यह है कि इससे पिताजी को बेहतर इलाज, भावनात्मक सहयोग तो मिलेगा ही, साथ ही उनकी जातीय अभिवृत्ति (पूर्वाग्रह) को भी बदला जा सकेगा। उन्हें उदाहरण दिया जा सकता है कि आपका इलाज करने वाला डॉक्टर किस जाति का है नहीं पता, किंतु उसका ज्ञान तथा मानवीय मूल्य आपके लिये लाभकारी हैं। अतः जातीय पूर्वाग्रह अनुचित है। किंतु, इस विकल्प की सीमा यह है कि इस तरह से अभिवृत्ति परिवर्तन में लंबा समय लग सकता है।

इस प्रकार मेरे द्वारा चतुर्थ विकल्प का ही चयन किया जाएगा क्योंकि यह समस्या का एक स्थायी तथा संतुलित समाधान है।

प्रश्नः आप सिविल सेवा की तैयारी करने वाले गंभीर अभ्यर्थी हैं और आपकी यह इच्छा है कि आप सिविल सेवा में चयनित होकर देश के विकास में समुचित योगदान दे सकें। आप पाँच भाई और बहन हैं। बड़े भाई होने के कारण आप परिवार संबंधी दायित्वों का निर्वहन करने तथा स्वयं की व्यक्तिगत ज़रूरतों की पूर्ति के लिये किसी कॉरपोरेट कंपनी में जॉब भी करते हैं। कॉरपोरेट कंपनी में जॉब करने और अपनी पढ़ाई को जारी रखने के मध्य संतुलन के लिये आप अथक प्रयास करते हैं और आपको उम्मीद है कि आप कॉरपोरेट कंपनी में जॉब करते हुए सिविल सेवा में चयनित हो जाएंगे। साथ ही, आप अपनी जॉब को छोड़ भी नहीं सकते हैं क्योंकि इससे आपकी व्यक्तिगत ज़रूरतें पूरी न होने के साथ ही आप परिवार संबंधी दायित्वों का भी निर्वहन नहीं कर पाएंगे।

आपकी परीक्षा नज़दीक है और आप छुट्टी संबंधी सुविधाओं का उपयोग पूर्ण रूप से कर चुके हैं। इस कारण कंपनी आपको परीक्षा के लिये छुट्टी नहीं दे रही है, लेकिन इसके कारण आपकी परीक्षा संबंधी तैयारी बाधित हो रही है और आप अपने लक्ष्य से दूर होते जा रहे हैं किंतु आपको कंपनी में कार्य करते रहना भी आवश्यक है।

उपर्युक्त परिस्थितियों में उपलब्ध विकल्पों को बताते हुए अपने द्वारा चयनित किये जाने वाले विकल्प का औचित्य भी स्पष्ट करें। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a serious candidate who is preparing for the civil services and your wish is to make appropriate contribution to the development of the country by securing a selection. You have five brothers and sisters. Being an elder brother, you also work in a corporate company to fulfill your personal needs and to bear your family responsibilities. You work tirelessly to balance the job and your studies and you hope that you will be selected in the civil services while working on the job. Also, you can not leave your job because you will not be able to discharge your family obligations and meet your personal needs.

Your exam is near and you have completely exhausted your leaves facilities. So, the company is not sanctioning your leave for the exam. Because of this, your preparation is affected and you are getting farther away from your goal. Also you need to continue working in the company.

By explaining the options available in the above circumstances, justify the rationale for the choice you make.

उत्तर: उक्त परिस्थिति में मुख्यत: दो पक्ष हैं- एक, सिविल सेवा का मेरा लक्ष्य तथा दूसरा मेरी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक आवश्यकताएँ। एक तरफ मेरा कॅरियर सिविल सेवा में सफलता पर निर्भर करता है तो दूसरी तरफ मेरी व्यक्तिगत आवश्यकताओं एवं पारिवारिक दायित्वों को पूरा करने के लिये कॉरपोरेट कंपनी में जॉब आवश्यक है। इन परिस्थितियों में मेरे समक्ष निम्न विकल्प उपलब्ध हैं-

- कंपनी से त्यागपत्र दे दूँ तथा परीक्षा समाप्त होने तक अपनी बचत से पारिवारिक एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करूँ। परीक्षा समाप्त होने के बाद पुन: जॉब ज्वॉइन कर लूँ।
- कंपनी से त्यागपत्र देने के पश्चात् किसी छोटे भाई या बहन को कोई जॉब ज्वॉइन करने को कहूँ, जिससे परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके तथा परीक्षा के पश्चात् मैं पुन: पारिवारिक दायित्व का निर्वहन करूँ।
- कोई ऐसी जॉब ढूँढ़ने का प्रयास करूँ जहाँ मैं आंशिक (पार्ट टाइम) काम करते हुए व्यक्तिगत एवं पारिवारिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकूँ और साथ ही परीक्षा के लिये पढ़ाई भी कर सकूँ।
- मैं वर्तमान कंपनी के ही प्रबंधन तंत्र से वार्ता करके परीक्षा के कुछ दिनों पूर्व अवैतनिक अवकाश प्रदान करने का अनुरोध करूँ। साथ ही, इस परीक्षा की तैयारी के प्रारंभ से ही 'समय प्रबंधन' पर विशेष ध्यान दूंगा, जिससे जॉब तथा अध्ययन में संतुलन बना रहे।

उपर्युक्त विकल्पों में से मेरे द्वारा चौथे विकल्प का चयन किया जाएगा, क्योंकि-

- इस विकल्प के द्वारा मैं अपनी परीक्षा को सुचारु रूप से दे सकूंगा।
- अवैतनिक अवकाश की भरपाई पूर्व की बचत द्वारा की जा सकती है।
- साथ ही, इस विकल्प के चयन से छोटे भाई या बहन को भी रोज़गार के लिये तत्काल प्रयास नहीं करना पड़ेगा और न ही मुझे नई जॉब तलाश करनी होगी।
- इस विकल्प के चयन से 'समय प्रबंधन' का गुण विकसित होगा जो किसी भी कार्य में सफल होने के लिये अनिवार्य आवश्यकता है।
- चतुर्थ विकल्प में वर्तमान की परीक्षा की तैयारी की समस्या भी हल हो जाएगी, साथ ही भविष्य की रोज़गार की सुरक्षा भी बनी रहेगी, जिससे व्यक्तिगत ज़रूरतें एवं पारिवारिक आवश्यकताएँ भी पूरी हो सकेंगी।

इस प्रकार उपर्युक्त विशेषताओं को धारण करने के कारण दी गई परिस्थितियों में मैं चतुर्थ विकल्प का चयन करूंगा। जबकि अन्य विकल्पों में उपर्युक्त विशेषताओं का अभाव है तथा वे समस्या के सभी पक्षों का समाधान नहीं कर पा रहे हैं। इसीलिये शेष तीन विकल्पों का चयन नहीं करूंगा।

प्रश्न: आपकी नियुक्ति एक ऐसे ज़िले में पुलिस अधीक्षक के रूप में होती है जहाँ आए दिन महिलाओं के साथ छेड़छाड़ और यौन उत्पीड़न के बढ़ते हुए मामले दिखाई देते हैं। इसके कारण कामकाजी महिलाओं को सदैव किसी अनहोनी की आशंका बनी रहती है। पुलिस अधीक्षक होने के नाते आपके ज़िले में ऐसे कृत्य कानून व्यवस्था के प्रभावी संचालन को नहीं दर्शाते हैं। इसके अलावा महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न एवं छेड़छाड़ के बढ़ते हुए मुद्दे किसी भी समाज में नैतिकता के ह्रास को बतलाते हैं। आप महिलाओं से संबंधित मुद्दों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं और जिस ज़िले में भी आपकी नियुक्ति होती है, वहाँ पर आप इन घटनाओं को रोकने के लिये कठोर कदम उठाते हैं। ज़िले में इन अपराधों के विरुद्ध पुलिस द्वारा विभिन्न कार्रवाइयाँ और गिरफ्तारी की गई, लेकिन पर्याप्त सबूतों के अभाव में आरोपी बच जाते हैं। इन परिस्थितियों में आपके अधीनस्थ अधिकारी समाज द्वारा मौके पर त्वरित न्याय के समर्थन में तर्क प्रस्तुत करते हैं।

(a) इस प्रकार की स्थितियों में त्वरित न्याय से संबंधित विभिन्न नैतिक मुद्दों की चर्चा करें।

(b) महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये एक पुलिस अधीक्षक के तौर पर आप कौन-से दीर्घकालिक कदम उठाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

You are appointed as the Superintendent of Police in a district where cases of molestation and sexual harassment of women are reportedly on the rise. Due to this, working women in the district always have the fear of some untoward incident. Being the Superintendent of Police, such acts in your district do not reflect an effective operationalisation of the legal system. That aside, rise in cases of sexual harassment and molestation of women depict a degradation of ethics in a society. You are highly sensitive to women's issues and in the districts where you are posted, you take strict actions to prevent such incidents. Various operations and arrests were done by the police against these crimes in the district, but the accused escape the law due to lack of adequate evidence. In these circumstances, your subordinate officers argue in support of on-the-spot instant justice delivery by the society.

(a) Discuss the various ethical issues related to dispensing instant justice in such situations.

(a) Which long-term steps will you take as a Superintendent of Police to ensure the safety of women?

उत्तर: कामकाजी महिलाओं के साथ यौन दुर्व्यवहार वर्तमान समाज का कटु यथार्थ है तथा हाल के '# मी टू' मूवमेंट ने इस यथार्थ को सशक्त अभिव्यक्ति दी है। किसी भी समाज में महिलाओं के साथ होने वाले यौन दुर्व्यवहार न केवल कानून व्यवस्था की कमी दर्शाते हैं बल्कि सामाजिक नैतिकता के अधोपतन को भी दर्शाते हैं।

उत्तर: (a) उपरोक्त समस्या के तात्कालिक समाधान की प्रक्रिया में कभी-कभी त्वरित न्याय को समाज द्वारा अपनाया जाने लगता है, किंतु त्वरित न्याय की बढ़ती स्वीकार्यता निम्न नैतिक मुद्दों को उत्पन्न करती है–

- त्वरित न्याय कानूनी (विधिक) नैतिकता का उल्लंघन है क्योंकि कानून द्वारा दोषी को सज़ा देने की एक निर्धारित प्रक्रिया का पालन किया जाता है।
- त्वरित न्याय आरोपित व्यक्ति के निर्दोष होने की स्थिति में उसके मूल अधिकारों का उल्लंघन करता है। साथ ही, न्यायिक गलतियों में सुधार की संभावना को नगण्य कर देता है, जिससे न्याय के मूल्य की उपेक्षा होती है।
- त्वरित न्याय 'भीड़ हिंसा' (मॉब लिंचिंग) जैसी गतिविधियों को प्रेरित कर सकता है जो समाज का मूल्यात्मक पतन प्रदर्शित करेगा। एक पूरा समाज अपराधी की तरह व्यवहार करने लगता है जो सामाजिक नैतिकता में कमी का संकेत है।

इस प्रकार त्वरित न्याय का सुझाव गांधीजी के नैतिक चिंतन 'पाप से घृणा करो पापी से नहीं' तथा हमारी कानून प्रक्रिया के मूल ध्येय कि 'सौ अपराधी भले छूट जाएँ किंतु कोई निर्दोष सज़ा न पाए' के विरुद्ध है। इस तरह की त्वरित न्यायिक प्रक्रिया सामाजिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था के सामने नैतिक संकट उत्पन्न करती है।

उत्तर: (b) पुलिस अधीक्षक के तौर पर महिला सुरक्षा मेरा न केवल पदीय कर्त्तव्य है बल्कि नागरिक दायित्व भी है। इसके लिये मैं पुलिस पेट्रोलिंग, नियमित मॉनीटरिंग तथा 'लॉ एंड ऑर्डर' से जुड़ी तात्कालिक समाधान प्रक्रिया को सशक्त करने के साथ-साथ कुछ दीर्घकालिक कदम भी उठाऊंगा, जो निम्नलिखित हैं-

- महिला सुरक्षा से जुड़े विषयों को पूरी संवेदनशीलता से संभालने के लिये पुलिस विभाग के लिये विशेष कार्यशालाएँ तथा प्रशिक्षण का प्रबंध करूंगा, जिससे पीड़ितों को न्याय तथा दोषियों को कानून के माध्यम से सज़ा मिल सके।
- छेड़छाड़ के अतिसंवेदनशील स्थानों की पहचान तथा उन स्थानों पर सी.सी.टी.वी. कैमरे की व्यवस्था और पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ाने के निर्देश दूंगा। इससे छेड़खानी की घटनाओं पर नियंत्रण लगेगा।
- महिलाओं की त्वरित सहायता हेतु 24 × 7 निःशुल्क महिला हेल्पलाइन का प्रभावी संचालन सुनिश्चित करूंगा।
- ज़िले के महिलाओं से संबद्ध सभी कार्यस्थलों पर महिला सुरक्षा से जुड़े कानूनों तथा सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों, जैसे विशाखा गाइडलाइन आदि का अनुपालन सुनिश्चित करूंगा।
- महिलाओं के प्रति समाज में सकारात्मक अभिवृत्ति के सतत् विकास हेतु स्कूलों में बच्चों के बीच विशेष कार्यशालाओं का आयोजन कराने का प्रयास करूंगा।

इस प्रकार सामाजिक नैतिकता के संवर्द्धन तथा कानून के प्रभावी क्रियान्वयन से महिला सुरक्षा को दीर्घकालिक स्तर पर सुनिश्चित किया जा सकता है।

प्रश्न: राघवेंद्र एक होनहार एवं कुशल छात्र है, जो राज्य के एक प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज में आपके साथ ही पढ़ता है। कुछ ही समय में आपकी उसके साथ अच्छी दोस्ती हो जाती है। राघवेंद्र के माता-पिता अत्यधिक गरीब हैं और उन्होंने बड़ी कठिनाइयों से राघवेंद्र को पढ़ाया है। आप उसके साथ उसकी बहन की शादी में भाग लेने के लिये उसके गाँव जाती हैं। गाँव पहुँचकर आपको पता चलता है कि उसकी बहन की आयु विवाह के योग्य नहीं है जो कानूनन सुसंगत नहीं है। राघवेंद्र के माता-पिता ने बाद में दहेज़ देने से बचने के लिये तथा प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों के कारण राघवेंद्र की बहन का विवाह करना उचित समझा। अगर राघवेंद्र की बहन की शादी और अधिक उम्र में की जाती, तो उसके माता-पिता को अत्यधिक दहेज़ देना पड़ता। जब आप राघवेंद्र से इस संबंध में वार्तालाप करती हैं, तो वह स्वयं को विवश पाता है। आप अच्छी तरह से जानती हैं कि इससे राघवेंद्र की बहन का शोषण होने के साथ ही मानवाधिकारों का भी उल्लंघन होगा। अगर आप इसकी शिकायत पुलिस में करेंगी, तो इससे राघवेंद्र के घरवालों की संपूर्ण समाज में बदनामी होगी और राघवेंद्र पर गहरा मानसिक आघात होगा। आप धर्मसंकट में हैं।

(a) उपर्युक्त प्रकरण में कौन-से नैतिक मुद्दे उपस्थित हैं?

(b) आपके समक्ष कौन-से विकल्प मौजूद हैं? प्रत्येक विकल्प के गुण-दोषों को बताते हुए आप कौन-से विकल्प का चुनाव करेंगी; तर्क सहित उत्तर दें। (250 शब्द, 20 अंक)

Raghavendra is a promising and skilled student who studies with you in a prestigious Medical College of the state. In a short time you have become a good friend with him. Raghavendra's parents are very poor people. They educated Raghavendra with much difficulties. You go to his village with him to attend his sister's marriage. After reaching the village, you come to know that his sister is underage for marriage and it is in contravention of law. Raghavendra's parents considered it right to marry his sister due to adverse economic conditions and to avoid the dowry to be paid if she is married older. When you talk to Raghavendra about this, he finds himself helpless. You are fully aware that this marriage will lead to exploitation of Raghavendra's sister and violation of her human rights. If you complain about it to the police, then it will bring disrepute to Raghavendra's family in the society and will also cause a deep mental trauma on Raghavendra.

(a) Which ethical issues are present in the above situation?

(b) What are the options available to you? By explaining the merits and demerits of each, spell out the option you will chose giving the reasoning for it.

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी में बाल विवाह तथा दहेज़ के अंतर्संबंध को दिखाया गया है। दोनों सामाजिक बुराइयों का सर्वाधिक दुष्प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है। ये सामाजिक बुराइयाँ हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा परंपरागत दृष्टिकोण से इतनी गहराई से जुड़ी हैं कि एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी इनके सामने कभी-कभी कमज़ोर साबित होता है तथा इनके लिये कानूनी प्रावधान भी अपर्याप्त प्रतीत होते हैं।

उत्तर: (a) इन परिस्थितियों में उपर्युक्त प्रकरण में निम्न नैतिक मुद्दे विद्यमान हैं-

- बाल अधिकारों (स्वास्थ्य, शिक्षा, संरक्षण तथा विकास के अवसरों) की उपेक्षा।
- लैंगिक समानता के मूल्य का उल्लंघन।
- कानूनी नैतिकता का उल्लंघन (जैसे- दहेज़ एवं बाल विवाह कानून का उल्लंघन)।
- गरीबी की उपस्थिति तथा दहेज़ की बुराई ने सामाजिक-आर्थिक न्याय को भी कमज़ोर किया है।
- व्यक्तिगत संबंध तथा सामाजिक दायित्व में सामंजस्य स्थापित करने का नैतिक संकट भी विद्यमान है।

उत्तर: (b) इन परिस्थितियों में मेरे सामने निम्न विकल्प विद्यमान हैं-

- मैं बाल विवाह को होने दूँ तथा विवाह में शामिल होने के बाद वापस लौट आऊँ।
- मैं बाल विवाह की शिकायत नज़दीकी पुलिस स्टेशन पर करूँ तथा बाल विवाह को रोकने का प्रयास करूँ।
- मैं राघवेंद्र (मित्र) के परिवार तथा राघवेंद्र से बाल विवाह को रोकने के संदर्भ में वार्ता करूँ। साथ ही, परिवार की अभिवृत्ति को परिवर्तित करने का प्रयास करूंगी और इस विवाह के लिये विद्यमान कानूनी विधानों तथा दंड से उन्हें परिचित करवाऊंगी।

प्रथम विकल्प का गुण यह है कि इससे मित्र के साथ व्यक्तिगत संबंध अच्छे बने रहेंगे तथा उसके परिवार की बदनामी नहीं होगी। किंतु, इस विकल्प का दोष यह है कि इससे बाल विवाह, दहेज़ प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों को प्रोत्साहन मिलेगा तथा एक स्त्री होकर मेरे द्वारा महिला एवं बाल अधिकारों की उपेक्षा होगी।

द्वितीय विकल्प का गुण यह है कि इससे तात्कालिक तौर पर बाल विवाह को रोक सकूंगी। किंतु, इसका दोष यह है कि इससे मित्र के साथ संबंध खराब होंगे, उसके परिवार की बदनामी होगी, साथ ही यह विकल्प एक सामाजिक बुराई का स्थायी समाधान भी नहीं है।

मैं तृतीय विकल्प का चयन करूंगी क्योंकि इससे सामाजिक बुराइयों (बाल विवाह तथा दहेज़) का स्थायी समाधान हो सकेगा। साथ ही, मित्र के साथ व्यक्तिगत संबंध भी बने रहेंगे तथा उसके परिवार की बदनामी भी नहीं होगी। इस विकल्प की सीमा यह है कि तात्कालिक तौर पर परिवार की अभिवृत्ति बदलना आसान नहीं है। किंतु परिवार को यह समझाया जा सकता है कि बेटी को बेहतर शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बना सकते हैं, साथ ही ऐसी स्थिति में आपको दहेज़ भी नहीं देना पड़ेगा। इसके अलावा बाल विवाह तथा दहेज़ लेना व देना दोनों दंडनीय अपराध हैं। साथ ही, इससे महिला व बच्चों के स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर पड़ता है।

इस प्रकार अनुनयन (Persuasion), कानून का भय तथा जागरूकता के प्रसार आदि के माध्यम से सामाजिक व पारिवारिक अभिवृत्ति में बदलाव लाकर बाल विवाह और दहेज़ जैसी सामाजिक बुराइयों को रोका जा सकता है।

प्रश्न: अनुराग कृषि में परास्नातक करने के पश्चात गाँव जाकर आधुनिक कृषि कार्यों में संलग्न होकर कृषि क्षेत्र में अपना कॅरियर बनाना चाहता है। साथ ही, वह गाँव के व्यक्तियों को भी आधुनिक कृषि कार्यों के लिये प्रेरित करके इसे लाभ का व्यवसाय बनाना चाहता है।

जाह्नवी, अनुराग की प्रिय मित्र है और उसके विचारों से अत्यधिक प्रभावित है। कॉलेज में छुट्टियाँ प्रारंभ होने के पश्चात अनुराग अपने घर वापस चला गया है और जाह्नवी भी उसके साथ घूमने के उद्देश्य से उसके साथ गाँव में आ जाती है। किंतु, गाँव पहुँचने के पश्चात् जाह्नवी यह देखती है कि अनुराग के गाँव में कोई भी शौचालय नहीं है और महिलाएँ शौचालय के लिये घर से बाहर जाती हैं जिसके कारण उनमें असुरक्षा का भय बना रहता है।

अनुराग का गाँव विभिन्न प्रकार के रूढ़िवादी विचारों से ग्रस्त है। इसके अतिरिक्त अनुराग के पिताजी अत्यधिक धार्मिक रूढ़िवादी विचारों से ग्रसित हैं जिसके कारण वह घर में शौचालय बनाने को घर के लिये 'अशुभ' मानते हैं। जबकि आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि घर में शौचालय न होने से महिलाओं को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करने के साथ ही गाँव के बच्चों एवं अन्य लोगों को विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं। अनुराग भी शौचालय के सामाजिक एवं आर्थिक लाभों तथा इस दिशा में सरकारी प्रयासों से परिचित है किंतु पिताजी के दबाव तथा एक गलत आदत की सहज सामाजिक स्वीकार्यता के कारण वह जाह्नवी का साथ नहीं दे पा रहा।

(a) उपर्युक्त प्रकरण को आप किस प्रकार देखते हैं?

(b) जाह्नवी आपके पास, अनुराग तथा उसके परिवार वालों एवं गाँव वालों की अभिवृत्ति में परिवर्तन की सलाह के लिये आती है, आप क्या सुझाव देंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

After completing a postgraduate in agriculture Anurag wants to go back to the village and make his career in agriculture by engaging in modern agricultural work. At the same time, he also wants to inspire the people of the

village for modern agricultural works and make it a profitable enterprise.

Jahnavi is a dear friend of Anurag and is highly influenced by his thoughts. When the holidays began in college, Anurag returned to his home. Jahnvi also came to his village for travel and tourism. But after reaching the village Jahnavi finds out that there is no toilet in the village and women go out of their house for defecation due to which they always feel insecure.

Anurag's village is in grip of various conservative beliefs. Anurag's father harbours extreme religious conservative ideas, due to which he believes that making a toilet in the house will be inauspicious. It is well known that due to lack of toilets in homes, women face multiple problems and children and others face health related problems.

Anurag is also familiar with the social and economic benefits of the toilet and the government's efforts in this direction, but due to the ease of social acceptability of a wrong habit and father's pressure, he is unable to fully support Jahnavi.

(a) How do you see the above situation?

(b) Jahnavi comes to you for advice to change the attitude of Anurag, his family and the villagers. What would you suggest?

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण ग्रामीण पिछड़ापन, गलत आदत की सहज सामाजिक स्वीकार्यता, अंधविश्वास तथा सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव के परिणामस्वरूप शौचालय प्रयोग के प्रति कमज़ोर सकारात्मक अभिवृत्ति या नकारात्मक अभिवृत्ति को व्यक्त करता है। साथ ही, अभिवृत्ति परिवर्तन ही इस प्रकरण का प्रभावी समाधान हो सकता है।

उत्तर: (a) इस प्रकरण को मैं निम्न प्रकार से देखता हूँ-

- गाँव तथा परिवार में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव, धार्मिक रूढ़िवाद तथा अंधविश्वास की उपस्थिति है।
- शौचालय प्रयोग के सामाजिक-आर्थिक लाभों के प्रति जागरूकता का अभाव है।
- खुले में शौच (एक गलत आदत) की सहज सामाजिक स्वीकार्यता है।
- शौचालय के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति (पूर्वाग्रह) है।
- अनुराग द्वारा पारिवारिक दबाव में एक गलत आदत को स्वीकारना उसकी शौचालय प्रयोग के प्रति कमज़ोर सकारात्मक अभिवृत्ति को व्यक्त करता है।

उत्तर: (b) उपर्युक्त परिस्थितियों में अनुराग तथा उसके परिवार एवं गाँववालों की अभिवृत्ति में परिवर्तन करना आवश्यक है। अभिवृत्ति परिवर्तन के प्रयासों के अंतर्गत मैं जाह्नवी को निम्न सुझाव दूंगा-

- शौचालय के प्रति गाँव व परिवार की अभिवृत्ति में परिवर्तन के लिये 'अनुनयन' (Persuasion) का प्रयोग करे।
- पिताजी धार्मिक कारणों से शौचालय को बनवाना अशुभ मान रहे हैं। अत: इनके लिये किसी ऐसे वक्ता (संदेश स्रोत के रूप में) का चयन करे जिसकी धार्मिक स्वीकार्यता हो, साथ ही वह शौचालय के सामाजिक-आर्थिक लाभों से भलीभाँति परिचित हो।
- शौचालय के प्रति लोगों में सकारात्मक अभिवृत्ति के विकास हेतु मीडिया, क्षेत्रीय राजनीतिक नेतृत्व के सहयोग से जागरूकता लाने का प्रयास करे। लोगों को बताए की खुले में शौच से बच्चों में पोलियो, विकलांगता, हैजा तथा डायरिया जैसी बीमारियाँ होती हैं, स्वास्थ्य व्यय बढ़ता है एवं गरीबी बढ़ती है।
- शौचालय के प्रयोग से महिलाओं को सुरक्षात्मक परिवेश मिल सकेगा।
- शौचालय के प्रति अनुराग की सकारात्मक अभिवृत्ति में मज़बूती (तीव्रता) लाने हेतु उसमें 'स्वजागरूकता' को और विकसित करने का प्रयास करना, जिससे रूढ़िवादी सामाजिक/पारिवारिक दबाव का प्रभाव कम या खत्म किया जा सके।
- प्रशासनिक सहयोग से सरकार के स्वच्छता एवं शौचालय प्रयोग से जुड़े व्यवहार परिवर्तन संबंधी प्रयास, जैसे- स्वच्छ भारत मिशन को पूरी प्रभावशीलता से लागू करना।

इस प्रकार, अतिरिक्त सूचनाओं एवं बच्चों तथा महिलाओं की समस्या के प्रति गाँव व परिवार का ध्यान आकृष्ट कर इस क्षेत्र के लोगों की अभिवृत्ति के संज्ञानात्मक व भावनात्मक पक्ष में उचित परिवर्तन लाया जा सकता है, जिससे अंतत: समग्र अभिवृत्ति में व्यावहारिक स्तर पर शौचालय के प्रति सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

प्रश्न: भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं औद्योगिक गतिविधियों के कुशल संचालन के लिये ऊर्जा की अत्यधिक आवश्यकता और महत्ता होती है। आप भारत सरकार की किसी बड़ी तेल कंपनी के अधिकारी हैं और आपको भारत सरकार ने विदेश में तेल कंपनी की निविदा प्राप्त करने के लिये भेजा है। यह निविदा प्राप्त करना भारत के राष्ट्रीय हितों के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण है तथा इसके माध्यम से न सिर्फ भारत की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति होगी अपितु आर्थिक विकासात्मक कार्यों को बढ़ावा देकर भारत की संवृद्धि को प्रोत्साहित किया जा सकता है। किंतु, आपको उस देश में जाकर पता चलता है कि उस देश में बिना रिश्वत दिये कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता है। इसी कारण आपको यह निविदा प्राप्त करने के लिये रिश्वत देना होगा। आप अपने व्यक्तिगत जीवन में उच्च मानवीय मूल्यों का अनुसरण करते हैं और किसी भी कार्य संचालन के लिये भ्रष्टाचार जैसी प्रवृत्ति को महत्त्व नहीं देते हैं, भले ही इस प्रकार के मूल्यों में व्यक्तिगत नुकसान भी हो जाए। जबकि अन्य देशों के अधिकारी भी निविदा प्राप्त करने के लिये रिश्वत देने के उद्देश्य से आए हैं। आपको पता है कि भारत संयुक्त राष्ट्र भ्रष्टाचार रोधी अभिसमय का हस्ताक्षरकर्त्ता देश है। इन परिस्थितियों में आप भारत सरकार को क्या सलाह देंगे और क्यों? विशेषत: जब आप यह जानते हैं कि यह योजना भारत के हितों के लिये महत्त्वपूर्ण है। **(250 शब्द, 20 अंक)**

To meet the demands of India's growing population and for the efficient operation of industrial activities, there is a crucial need and importance of energy. You are the official of a big oil company of the Government of India and you have been sent abroad by the government to secure a bid for the company. This tender is very important for India's national interests; it will not only fulfill the various needs of India but also encourage India's growth by promoting economic developmental activities.

But after arrival in that country, you have realized that no work there can be accomplished without paying a bribe. Therefore, you will have to pay bribe to secure this tender. You adhere to exalted human values in your personal life and do not promote corruption for getting work done even if it causes you a personal loss. Officials from other countries have come with a view to pay bribe to get the tender. You are aware that India is a signatory to the United Nations Convention Against Corruption. In these circumstances, what advice would you give to the Indian government and why? Especially when you know that this project is important for India's interests.

उत्तर: मेरे अनुसार उपर्युक्त प्रकरण में व्यक्तिगत ईमानदारी तथा नैतिकता बनाम राष्ट्रीय हित के लिये रिश्वत अदायगी और राष्ट्रीय हित बनाम अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता जैसी नैतिक दुविधाएँ विद्यमान हैं। कुछ विद्वान अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में राष्ट्रीय हितों को स्थायी तथा सर्वोपरि मानते हुए इनको विशेष महत्त्व देते हैं क्योंकि राष्ट्रीय हितों के संरक्षण से ही किसी देश की सरकार की राष्ट्रीय छवि बनती है तथा उस देश के नागरिकों का कल्याण होता है।

किंतु उपरोक्त दृष्टिकोण कुछ विसंगतियों को व्यक्त करता है, क्योंकि राष्ट्रीय हितों को महत्त्व देने की प्रक्रिया में जब अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की नैतिकता तथा न्याय, निष्पक्षता, सतत् विकास और समता जैसे मूल्यों की उपेक्षा की जाती है तो विश्व में साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद या संरक्षणवाद जैसी स्वार्थपूर्ण प्रक्रियाएँ विस्तार पाती हैं, जिसका अंतिम परिणाम मानव तथा मानवता के लिये हानिकारक होता है।

अत: उपरोक्त परिस्थितियों में मैं भारत सरकार से रिश्वतखोरी की पृष्ठभूमि में संचालित इस निविदा प्रक्रिया को तात्कालिक संदर्भ में रोककर निविदा प्रक्रिया की सत्यता की अपने स्तर पर गहन जाँच का अनुरोध करूंगा। जाँच की इस प्रक्रिया में अपने वरिष्ठ अधिकारियों से सलाह ली जा सकती है। साथ ही, निविदा प्रक्रिया से जुड़ी विसंगतियों की जानकारी इस प्रक्रिया को देखने वाले गृह देश के उच्च अधिकारियों तथा अन्य प्राधिकरणों, जैसे न्यायपालिका आदि को देने के लिये भारत सरकार से अनुरोध करूंगा। इसके अतिरिक्त, भारत सरकार को यह मांग रखने का भी सुझाव दूंगा कि जो देश इस प्रक्रिया से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का उल्लंघन करते हैं उन्हें काली सूची में डालने की मांग करे।

मेरे द्वारा दी गई उपर्युक्त सलाह के पीछे मुख्य कारण निम्न हैं-

- रिश्वतखोरी वाले अंतर्राष्ट्रीय लेन-देन क्षणिक रूप से राष्ट्रीय हित को भले पोषित कर देंगे, किंतु दीर्घकाल में हमारे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के आधारभूत सिद्धांतों को हानि पहुँचाते हैं।
- भ्रष्टाचार पर आधारित लेन-देन किसी देश की आर्थिक, सामरिक या किसी अन्य प्रकार की संवृद्धि को सतत् रूप से आगे नहीं बढ़ा सकता।
- चुनौतियों की वर्तमान वैश्विक प्रकृति (जैसे- जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, आर्थिक अपराध, साइबर खतरा) का सामना सीमित राष्ट्रीय हित के दृष्टिकोण से नहीं किया जा सकता।

इस प्रकार मैं भारत सरकार को उस देश के कानून में पूर्ण विश्वास करने का सुझाव दूंगा जहाँ यह निविदा प्रक्रिया संपन्न हो रही है। साथ ही, भारत सरकार को यह सलाह भी दूँगा कि वह निविदा प्रक्रिया को संपन्न कराने वाले देश को यह प्रक्रिया शुचितापूर्ण ढंग से संचालित करने के लिये प्रेरित करें। इससे व्यक्तिगत एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता का पालन होगा तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हितों की रक्षा हो सकेगी।

प्रश्न: आप 'राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण' में अध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। महानगरों में वायु प्रदूषण के खतरनाक स्तर को देखते हुए सरकार निम्नलिखित कदम उठाने पर विचार कर रही है और इन उपायों की व्यवहार्यता पर आपकी सलाह मांगती है।

(a) निजी वाहनों के इस्तेमाल को हतोत्साहित करने हेतु प्रति परिवार एक वाहन की सीमा निर्धारित करना, रोड टैक्स में भारी बढ़ोतरी करना एवं नए वाहनों की खरीद पर रोक लगाना।

(b) महानगरों में सामानों की आपूर्ति करने वाले सभी भारी वाहनों का प्रवेश निषेध करना।

(c) सभी प्रकार के डीज़ल इंजनों सहित डीज़ल की बिक्री पर तत्काल रोक लगाना।

(d) खेतों, पार्कों, सड़कों के अपशिष्टों को जलाना गैर-ज़मानती अपराध घोषित करना।

उपरोक्त सुझावों के गुण-दोषों का परीक्षण करते हुए आप सरकार को दी जाने वाली अपनी सलाह की चर्चा करें। (250 शब्द, 20 अंक)

You are working as chairperson of National Green Tribunal. Looking at the dangerous levels of air pollution in major cities, the govt. is planning to take the following steps for which it is seeking your opinion on their feasibility:

(a) Establishing a limit of one vehicle for one family, heavily increasing road tax and prohibiting the purchase of new vehicles to dis-incentivite the use of privates vehicle.

(b) Putting a ban on entry of all heavy vehicles which bring various commodities in major cities.

(c) Prohibiting sale of all types of diesel engines and diesel fuel with immediate effect.

(d) Declaring the burning of waste material of fields, parks and roads a non-bailable crime.

Examining the pros and cons of the above mentioned steps, discuss your suggestions to the government.

उत्तर: वर्तमान में नगरीकरण के दुष्प्रभाव तथा अनियमित व कुप्रबंधित विकास ने महानगरों में प्रदूषण की स्थिति को अत्यधिक भयावह बना दिया है। दिल्ली जैसे शहर सर्दियाँ आते ही गैस चैम्बर में परिवर्तित हो जाते हैं। ऐसे में इसके नियंत्रण के लिये अविलंब ठोस कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। 'राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण' में अध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहते हुए मैं उपरोक्त विकल्पों के संदर्भ में निम्नलिखित सलाह देना प्रासंगिक समझता हूँ-

उत्तर: (a) प्रति परिवार एक वाहन की सीमा निर्धारित करना एक बेहतर विकल्प हो सकता है। इससे सड़कों पर निजी वाहनों की संख्या में कमी आएगी। इसी प्रकार रोड टैक्स में भारी बढ़ोतरी से भी वाहनों की संख्या में कमी आएगी। साथ ही नए वाहनों की खरीद पर रोक भी वाहनों की संख्या को कम करेगा।

ये कदम वाहनों की संख्या को कम कर प्रदूषण नियंत्रण में कुछ हद तक तो सक्षम हैं परंतु इनकी अपनी कई सीमाएँ हैं। रोड टैक्स में भारी बढ़ोतरी से सार्वजनिक परिवहन भी महँगा होगा जिसका प्रभाव आम जनजीवन पर पड़ेगा। फिर निजी वाहनों की संख्या सीमित करने से पहले सार्वजनिक परिवहन की स्थिति में महत्त्वपूर्ण सुधार करना आवश्यक है।

उत्तर: (b) महानगरों में सामानों की आपूर्ति करने वाले सभी भारी वाहनों का प्रवेश निषेध करने से भी प्रदूषण को कुछ हद तक नियंत्रित किया जा सकता है, तथापि इससे सार्वजनिक आपूर्ति दुष्प्रभावित होगी जिसका प्रभाव आम जनजीवन पर पड़ेगा।

उत्तर: (c) सभी प्रकार के डीज़ल इंजनों सहित डीज़ल की बिक्री पर तत्काल रोक लगाने से प्रदूषण तो नियंत्रित होगा परंतु यह एक अव्यावहारिक कदम होगा क्योंकि वर्तमान में डीज़ल इंजन पर वाहनों की निर्भरता काफी अधिक है इसलिये बेहतर होगा कि इसमें क्रमिक रूप से कमी करते हुए ई-वाहनों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।

उत्तर: (d) खेतों, पार्कों, सड़कों के अपशिष्टों को जलाने की गतिविधियों को गैर-ज़मानती अपराध घोषित करने से भी प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायता मिलेगी क्योंकि प्रदूषण का एक बड़ा कारण अपशिष्टों को जलाने से निकलने वाला धुआँ है। परंतु इसमें भी बदलाव के लिये क्रमिक प्रयास किये जाने की आवश्यकता है, न कि एकाएक इसे एक संगीन गैर-ज़मानती अपराध घोषित कर देना।

इससे अतिरिक्त प्रदूषण नियंत्रण के कुछ अन्य प्रयास भी किये जा सकते हैं, जैसे-

- सार्वजनिक परिवहन की स्थिति में सुधार कर उसे विश्वस्तरीय बनाना ताकि लोग सार्वजनिक परिवहन का प्रयोग करने के लिये प्रेरित हों।
- हरित, तकनीक को बढ़ावा देना तथा इसे क्षेत्र में अनुसंधान एवं शोध को प्रेरित करना।
- लोगों की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने के लिये व्यावहारिक मनोविज्ञान का प्रयोग करना ताकि लोग प्रदूषण कम करने में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

प्रश्न: निजी अस्पतालों के विषय में लोगों की आमधारणा सामान्यत: यह बनती जा रही है कि-

(a) निजी अस्पताल अपने पेशागत नैतिक मूल्यों को भूल चुके हैं तथा आर्थिक लाभ के लिये उनके द्वारा अपनाए जा रहे अनैतिक एवं अनुचित तौर-तरीके आपराधिक कृत्य बनते जा रहे हैं।

(b) निजी अस्पतालों की मनमानी एवं अमानवीय व्यवहारों के लिये प्रभावी नियम-कानूनों के साथ-साथ सक्षम नियामक संस्थाओं का अभाव ज़िम्मेदार है।

आप स्वास्थ्य विभाग में प्रधान सचिव के पद पर कार्यरत हैं। हाल के दिनों में, समाचार की सुर्खियाँ बन रही मेडिकल पेशे को शर्मसार करने वाली शिकायतों एवं इस संबंध में लोगों की उपरोक्त धारणा के आलोक में आप क्या सुधारात्मक कदम उठाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

The general opinion of people towards private hospitals now a days is:

(a) Private hospitals have forgotten their professional moral values and are employing immoral and illegal means for commercial gains leading to criminal acts.

(b) The high handedness and inhuman conduct of private hospitals is an outcome of the lack of effective rules & regulations and competent regulatory agencies.

You are posted as Principal Secretary is Health department. What corrective measures would you take in backdrop of news headlines regarding the complaints bringing dishonor to medical profession and the above mentioned assumptions of the people?

उत्तर: देश में सार्वजनिक चिकित्सा व्यवस्था की बदहाल स्थिति लोगों को निजी चिकित्सकों और अस्पतालों की शरण में जाने को मजबूर करती है। निजी अस्पतालों की मनमानी से पूरा देश भली-भाँति परिचित है। इनका एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना है और जनता की सेवा से इनका कोई सरोकार नहीं है। ये अस्पताल सामान्य से रोगों के लिये भी अत्यधिक महँगी दवाइयाँ, अनावश्यक जाँच, गैर-ज़रूरी होने पर भी सर्जरी तथा आई.सी.यू (ICU) में रोगी को भर्ती कर एक मोटी रकम वसूलने का कोई मौका नहीं छोड़ते।

इतना ही नहीं कई बार तो ये अस्पताल इतने घृणित अमानवीय कार्य करते हैं जिससे पूरी मानवता शर्मसार हो जाती है। गैर-कानूनी रूप से अंग प्रत्यारोपण, रोगी के मृत होने पर भी बिल बनाने के लिये उसे एडमिट करना तथा कई बार थोड़े पैसों की कमी के कारण रोगी के इलाज से साफ इनकार कर देना। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि चिकित्सा देश में आज एक ऐसा गोरखधंधा बना गया है जिसमें आम जनता अपनी जमा पूंजी लुटाकर भी अच्छा स्वास्थ्य नहीं प्राप्त कर पा रही है। इस बदहाल स्थिति के लिये हम निम्नलिखित कारणों को ज़िम्मेदार मान सकते हैं-

- सार्वजनिक चिकित्सा व्यवस्था की खस्ता हालत। देश में चिकित्सा पर सार्वजनिक निवेश जीडीपी का महज 1% है। पर्याप्त संसाधन व अवसंरचना के अभाव में लोग मज़बूरन निजी क्षेत्र की शरण में जाते हैं।
- निजी अस्पताल व चिकित्सकों को नियमित व नियंत्रित करने वाले स्पष्ट नियम-कानूनों का अभाव।
- चिकित्सकों तथा अस्पताल प्रबंधन के नैतिक मूल्यों का क्षरण।
- दवा कंपनियों, अस्पतालों तथा चिकित्सकों का गठजोड़ जोकि इस दिशा में हुए कुछ सरकारी प्रयासों को भी अप्रभावी बना देता है।
- अज्ञानता, अशिक्षा व जागरूकता का अभाव भी इस स्थिति के लिये बहुत हद तक ज़िम्मेदार है।

सुधारात्मक उपाय

- चिकित्सा के क्षेत्र में सार्वजनिक निवेश बढ़ाया जाए। इस संबंध में हाल ही में नीति आयोग द्वारा अपने "विज़न पत्र" में दिये गए सुझाव महत्त्वपूर्ण हैं।
- निजी अस्पतालों की कार्य-प्रणाली के संबंध में एक बेहतर विनियामक तंत्र का निर्माण किया जाए। विनियामक संस्था पर्याप्त शक्तिशाली हो, राजनीतिक हस्तक्षेपों से मुक्त हो तथा इसमें सभी हितधारकों की भागीदारी हो, विशेष रूप से आम जनता और इस क्षेत्र में कार्य करने वाले एन.जी.ओ. (NGO) की।
- विनियामकों द्वारा पारदर्शिता पर बल दिया जाना चाहिये। अस्पतालों को स्पष्ट रूप से अपने चिकित्सा प्रणाली के मानक दरों की चर्चा करनी चाहिये। साथ ही विभिन्न प्रकार के अस्पतालों में खर्चों की एक प्रामाणिक दर होनी चाहिये और इनमें विचलन तार्किक होना चाहिये। विनियामकों द्वारा मानक दरों से विचलन के संबंध में निरंतर जानकारी प्राप्त की जानी चाहिये।
- सरकार द्वारा चिकित्सा बीमा तंत्र को प्रभावी व मज़बूत बनाए जाने की आवश्यकता है। इस संबंध में पश्चिमी देशों के मॉडल को अपनाया जा सकता है।
- चिकित्सा के नाम पर अमानवीय कृत्यों में संलिप्त अस्पतालों व चिकित्सकों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाने की व्यवस्था तथा इसके लिये एक निश्चित समय-सीमा तय की जानी चाहिये।
- सरकारी प्रयासों के संबंध में जनजागरूकता फैलाए जाने की आवश्यकता है।
- सबसे बढ़कर यह समझने की आवश्यकता है कि चिकित्सा महज एक व्यवसाय नहीं बल्कि मानवता की सेवा है। चिकित्सकों को भगवान का रूप माना जाता है। अत: चिकित्सकों में प्रारंभ से ही चिकित्सकीय नैतिकता के अनुरूप अभिवृत्तिक बदलाव के प्रयास किये जाने चाहियें। इस अभिवृत्ति को चिकित्सीय शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में स्थापित किये जाने की आवश्यकता है।

प्रश्न: आप रक्षा मंत्रालय में सैन्य साज़ो-सामान की खरीद के मामले में वरिष्ठ अधिकारी हैं। सेना को विश्वस्तरीय रिवॉल्वरों की तत्काल आवश्यकता के आलोक में सरकार द्वारा टेंडर जारी किया गया है, जिस पर कई कंपनियों ने अपने उत्पादों को बेचने का प्रस्ताव आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। साथ ही, आपके एक मित्र के संबंधी ने भी इसके लिये प्रस्ताव पेश किया है और आप उसके उत्पाद की उच्च गुणवत्ता एवं मूल्य-प्रभाविता से संतुष्ट हैं। आप एक ईमानदार अधिकारी हैं लेकिन आपके ही एक रिश्तेदार पर भ्रष्टाचार के एक गंभीर मामले में अभियोग चल रहा है, जिस कारण आप उक्त रक्षा खरीद मामले में निर्णय लेने में खुद को नैतिक दुविधा की स्थिति में पाते हैं।

इस दुविधा का सामना आप कैसे करेंगे? इस परिस्थिति में आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? अपने निर्णय के औचित्य का परीक्षण करें। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a senior officer in Defence Ministry responsible for buying military equipments. The military requires world class revolvers immediately for which government has come out with a tender on which many companies have submitted their proposals. A relative of your friend has also submitted a proposal and you are satisfied with the quality and value proposition of his product. You are an honest officer but one of your relative is facing prosecution in a corruption case due to which you find yourself in a moral dilemma while taking a decision in this particular case.

How will you deal with this situation? What will be your decision? Examine the rationality of your decision.

उत्तर: दी गई परिस्थिति में मुख्य रूप से चार हितधारक हैं- (i) सेना (ii) विभिन्न कंपनियाँ जिन्होंने टेंडर भरा (iii) मेरे मित्र का संबंधी तथा (iv) रक्षा मंत्रालय के द्वारा इस खरीद के लिये नियुक्त वरिष्ठ अधिकारी के रूप में मैं।

- उक्त परिस्थिति में सर्वप्रमुख नैतिक दुविधा मेरी सत्यनिष्ठा पर प्रश्नचिह्न उठने की है। चूँकि मेरे मित्र के संबंधी ने टेंडर भरा है और यदि उन्हें ये टेंडर प्राप्त होता है तो कुछ लोगों द्वारा आपत्ति उठाई जा सकती है। ऐसी स्थिति में जबकि मेरे रिश्तेदार पर भ्रष्टाचार के मामले में अभियोग चल रहा है तो इस बात को और तूल दिये जाने की संभावना है।

- अत: इस परिस्थिति में मैं टेंडर के लिये खुली बोली की व्यवस्था करवाऊंगा। टेंडर की प्रक्रिया के संबंध में स्पष्ट जानकारी मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध करवाऊंगा। साथ ही विवरण में इस बात की स्पष्ट जानकारी प्रदान करूंगा कि किन आधारों पर किसी टेंडर को अन्य की तुलना में अधिक वरीयता दी जाएगी।

इसके साथ ही एक विशेषज्ञ समिति, जिसमें रक्षा तकनीक से जुड़े लोग हों, का निर्माण करूंगा, जो रिवॉल्वर की गुणवत्ता तथा मूल्य प्रभाविता की निष्पक्ष जाँच कर रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। इस रिपोर्ट के आधार पर जिस कंपनी को टेंडर देने की अनुशंसा की जाएगी, मैं उसी कंपनी को टेंडर दिये जाने की अनुशंसा करूंगा।

इन आधारों पर यदि मेरे संबंधी की कंपनी पात्र होती है तो मैं उसे ही टेंडर दिये जाने की अनुशंसा करूंगा अन्यथा नहीं। भविष्य में इस टेंडर को लेकर कोई आरोप न लगे तथा अन्य कोई विवाद न रहे इसलिये इस टेंडर के लिये विभिन्न कंपनियों द्वारा भरे गए विवरणों की जानकारी मैं मंत्रालय की वेबसाइट पर उपलब्ध करवाने का प्रयास करूंगा।

इस प्रकार एक स्पष्ट व पारदर्शी प्रक्रिया के माध्यम से मैं सैन्य खरीद के कार्य को पूर्ण करूंगा ताकि भ्रष्टाचार या विवाद की कोई संभावना न रहे।

प्रश्न: एक बड़े निजी स्कूल में 5 साल के एक मासूम बच्चे की हत्या के मामले में जाँच एजेंसी ने उसी स्कूल के एक किशोर छात्र को अभियुक्त पाया है। आरोपी छात्र किशोर एवं वयस्क अवस्था की दहलीज़ पर खड़ा है। पीड़ित पक्ष की मांग है कि आरोपी को वयस्क मानते हुए उस पर दंडात्मक कार्रवाई की जाए, जबकि आरोपी पक्ष एवं कई मानवाधिकार संगठनों की मांग है कि उसे किशोर मानते हुए उदार एवं सुधारात्मक कार्रवाई की जाए। यह मामला जुवेनाइल कोर्ट में आपके समक्ष विचार के लिये आता है, जहाँ आप न्यायाधीश हैं।

उक्त मामले के निर्णयन में आप किन-किन पक्षों पर ध्यान देंगे और क्यों? ऐसे हादसों के लिये आप किसे उत्तरदायी मानते हैं? (250 शब्द, 20 अंक)

In a case of murder of a 5 year old in a big private school, the investigating agencies found an adolescent student of the same school to be the accused. The accused student is on the verge of adulthood. The victims family are demanding that the accused must be treated as adult and punished accordingly while the accused's family and many human rights organisations are demanding that he should be treated as a juvenile for the proceedings. This matter comes up before you in a juveniles count where you are the Judge. In deciding the above case which factor will you consider and why? Whom would you hold responsible for such incidents?

उत्तर: हाल के दिनों में किशोरों की हिंसक प्रवृत्ति में काफी उभार देखने को मिल रहा है। नोएडा में एक बारहवीं कक्षा के बच्चे ने दूसरी कक्षा के बच्चे की हत्या कर दी; नोएडा में एक किशोर ने अपनी माँ व छोटी बहन की हत्या कर दी। इसी प्रकार की अन्य घटनाएँ देश के विभिन्न भागों में देखने-सुनने को मिलती रहती हैं।

दी गई परिस्थिति एक संवेदनशील प्रश्न को उपस्थित करती है। एक तरफ एक मासूम बच्चे की हत्या के मामले में आरोपी को सज़ा तथा पीड़ित पक्ष को न्याय मिलना चाहिये तो वहीं, दूसरी ओर किशोर के भविष्य को भी ध्यान में रखा जाना चाहिये और उसे सुधरने का एक मौका मिलना चाहिये।

उक्त मामले में कोई निर्णय देने से पूर्व मैं निम्नलिखित बातों पर ध्यान दूँगा-

- छात्र की मानसिक स्थिति ठीक है या नहीं। इसके लिये एक मनोचिकित्सक द्वारा जाँच की व्यवस्था करवाऊंगा।
- किन परिस्थितियों में छात्र ने हत्या की? क्या यह हीट ऑफ द मोमेंट (Heat of the Moment) या पूर्व तैयारी पर आधारित था?
- छात्र को अपने कृत्य पर दु:ख और शोक है या नहीं?
- छात्र के चरित्र में सुधार की संभावनाओं का भी अध्ययन किया जाना चाहिये और उसी के अनुरूप निर्णय लिया जाना चाहिये।

किशोरों की हिंसक प्रवृत्तियाँ और स्कूल में हिंसा के लिये कई कारण उत्तरदायी हैं। प्रमुख कारणों को हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं-

- यदि भारतीय संदर्भ में देखें तो परवरिश की समस्या एक प्रमुख कारण के रूप में उभर कर सामने आ रही है। वर्तमान समय में माता-पिता दोनों 'वर्किंग' हैं और एकल परिवार का प्रचलन बढ़ा है जिससे बच्चों में एकाकीपन व कुंठा बढ़ी है।
- तकनीक का कुप्रभाव एक अन्य प्रमुख कारण है। इंटरनेट व मोबाइल गेम्स तथा हिंसक फिल्मों, वीडियो आदि ने बाल मन को गहरे स्तर पर दुष्प्रभावित किया है।
- ड्रग तथा एल्कोहल की लत ने भी किशोरों को हिंसक तथा उग्र बनाने में अपनी भूमिका अदा की है।
- इसके अतिरिक्त चिंता, ईर्ष्या, हीन भावना, क्रोध आदि नकारात्मक भावनाओं ने भी युवाओं व किशोरों को हिंसक बनाने का कार्य किया है।
- बच्चों पर पेरेंट्स की महत्त्वाकांक्षाओं का अतिरिक्त दबाव।
- विकसित देशों में खतरनाक हथियारों तक आसान पहुँच तथा विकासशील देशों की लचर कानून व न्याय व्यवस्था ने भी अप्रत्यक्ष रूप से इसमें योगदान दिया है।

नियंत्रण के उपाय

- सबसे पहले बच्चों की परवरिश पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। माता-पिता, बच्चों के साथ समय व्यतीत करें, उनसे संवाद स्थापित कर उनके तनाव, चिंता, मानसिक कुंठा आदि को प्रेम व स्नेह से दूर करने का प्रयास करें।
- बच्चों पर पेरेंट्स अपनी महत्त्वाकांक्षाओं का अतिरिक्त दबाव न बनाएँ। बाल मनोविज्ञान को समझते हुए बच्चों की अनावश्यक तुलना न करें। जहाँ तक संभव हो बच्चों को पसंद के क्षेत्र में ही कॅरियर बनाने के लिये प्रोत्साहित करें।

- इंटरनेट, मोबाइल, गेम्स आदि पर ध्यान देते हुए बच्चों पर बेहतर निगरानी रखें।
- घर पर बच्चों के समक्ष माता-पिता न लड़ें तथा एक खुशनुमा वातावरण उपलब्ध कराएँ।
- स्कूलों में एक सक्षम व मज़बूत अनुशासनात्मक तंत्र का निर्माण किया जाए तथा पेरेंट्स भी इसमें सकारात्मक सहयोग दें।
- इसके अतिरिक्त स्कूलों तथा स्कूल में प्रायोजित कार्यक्रमों में एक सक्षम व 'अप टू डेट' सुरक्षा व्यवस्था होनी चाहिये, जो परिसर में प्रवेश से पूर्व छात्रों की ठीक से जाँच करे तथा किसी प्रकार के हथियार आदि के परिसर में प्रवेश को वर्जित करे।

प्रश्न: आपको ज़िलाधिकारी के रूप में एक ऐसे ज़िले का पदभार सौंपा गया है जो महिलाओं के प्रति अपराधों में उस राज्य में शीर्ष स्थान पर है। वह ज़िला पुरुषवादी सामाजिक जड़ता से बुरी तरह ग्रस्त है, वहाँ बालिका शिशु मृत्युदर उच्च है, लिंगानुपात निम्न है तथा परिवार में महिलाओं-बालिकाओं की दोयम स्थिति है। आप एक खुले विचारों वाली निडर महिला अधिकारी हैं एवं किसी भी प्रकार के लैंगिक विभेद को गलत मानती हैं। आप महिलाओं की सुरक्षा एवं उनके विकास हेतु कई कदम उठाती हैं, लेकिन आपको समाज का सहयोग नहीं मिल रहा है और प्रशासनिक तंत्र भी उदासीन रवैया अपनाए हुए है। उक्त परिस्थिति में आप समाज की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने एवं महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु क्या पहल करेंगी?

(250 शब्द, 20 अंक)

You have been given charge as District collector of a district which holds the top rank in the state in number of crimes committed against women. This district is known for its partriarchal mindset and secondary status of women reflected in high rate of female infant mortality and a low sex ratio. You are an open-minded, brave women officer who considers any kind of gender discrimination to be wrong. You take many steps for women's security and development but are not getting desired cooperation from the society compounded by the cold response from the administrative setup. In such a situation what steps will you initiate to bring about change in societal mindset and to bring women into development mainstream?

उत्तर: दी गई परिस्थिति भारत के कई क्षेत्रों की वास्तविक तस्वीर पेश करती है। आज 21वीं सदी में डेढ़ दशक से अधिक समय बीत जाने के बाद भी भारत के कई भागों में महिलाओं को दोयम दर्जे का स्थान प्राप्त है। समानता की बात तो दूर कई बार उनके साथ अत्यंत ही क्रूर अमानवीय व्यवहार होता है। उक्त परिस्थिति में समाज की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने एवं महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने के लिये मैं निम्न पहल करूंगी-

- सबसे पहले महिलाओं के विरुद्ध अपराध को नियंत्रित करने के लिये कड़े कदम उठाऊंगी। ऐसे अपराधों में संलिप्त दोषियों के विरुद्ध मज़बूत गवाह तथा सबूत पेश करते हुए फास्ट ट्रैक निपटान का प्रयास करूंगी।
- उन क्षेत्रों में जो महिलाओं की सुरक्षा के लिये गंभीर चुनौती उत्पन्न करते हैं वहाँ पुलिस गश्ती तथा अन्य सुरक्षा उपाय के प्रयास करूंगी।
- कामकाजी महिलाओं तथा देर तक बाहर रहने वाली महिलाओं की सुरक्षा का विशेष उपबंध करने का प्रयास करूंगी। संवेदनशील क्षेत्रों में सी.सी.टी.वी. (CCTV) की व्यवस्था करूंगी।
- बाल लिंगानुपात में सुधार के लिये भी कई स्तर पर प्रयास करूंगी। चूँकि भ्रूण हत्या एक कानूनी अपराध है, अत: ऐसे कार्यों में लिप्त डॉक्टरों, अस्पतालों तथा अन्य लोगों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही करूंगी।
- महिलाओं की शिक्षा, सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, कौशल विकास के लिये विशेष प्रयास करूंगी तथा इस दिशा में कार्य करने वाले NGO की भी मदद ली जा सकती है।
- लोगों की अभिवृत्ति में परिवर्त्तन के लिये व्यावहारिक मनोविज्ञान का सहारा लिया जा सकता है। समाज के कुछ ऐसे प्रतिष्ठित लोग जो महिला सशक्तीकरण के समर्थक हैं, की सहायता से लोगों की मनोवृत्ति में परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा सकता है।
- महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता तथा लाभों पर सेमिनार का आयोजन किया जा सकता है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों की कुछ प्रमुख सफल महिलाओं को बुलाकर लोगों को प्रेरित करने का प्रयास किया जा सकता है।
- प्रशासनिक तंत्र को अपनी ज़िम्मेदारियों का आभास कराने का प्रयास करूंगी।
- मीडिया का भी सहारा लिया जा सकता है।

प्रश्न: आप केंद्रीय विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। आप अपनी एक सहकर्मी के प्रति आकर्षित हैं और उसे विवाह का प्रस्ताव देते हैं। वह खुशी-खुशी इसे स्वीकार कर लेती है। आपके इस निर्णय को आप दोनों के परिवार वाले भी खुशी-खुशी सहमति प्रदान कर देते हैं। एक दिन रात्रि भोजन के लिये वह आपको अपने घर पर आमंत्रित करती है और आपको अपने माता-पिता व भाई-बहन से मिलवाती है। आपको सबका व्यवहार काफी अच्छा व आत्मीय लगता है। भोजन के उपरांत वह आपको घर दिखाने ले जाती है। घर के एक कोने में आपको छोटा सा कमरा दिखता है जो घर के बाकी हिस्सों की तुलना में काफी गंदा व अस्त-व्यस्त है और उसके भीतर से आपको एक बूढ़ी महिला के खाँसने की आवाज़ सुनाई देती है। आपके पूछने पर वह बताती है कि बूढ़ी औरत उसकी दादी है जो मानसिक रूप से बीमार है और सबको परेशान करती है, इसलिये उन्हें अलग रखा जाता है। जब आप स्वयं उसकी दादी से मिलते हैं और बात करते हैं तो पाते हैं कि वह एकदम सामान्य है। बातों-बातों में आपको यह भी पता चलता है कि परिवार वाले उनके साथ एकदम उदासीन व उपेक्षित व्यवहार करते हैं।

(a) इस पूरे प्रकरण को आप किस रूप में देखते हैं?

(b) उक्त प्रकरण के आलोक में हमारे देश में वृद्धों की समस्या पर संक्षिप्त टिप्पणी करें और इसके समाधान के उपाय भी सुझाएँ। (250 शब्द, 20 अंक)

You are working as an Assistant Professor in a Central University. You are attracted to one of your women colleagues and propose marriage to her. She accepts it and both the families also give their consent. One day, she invites you to her home for dinner and introduces you to her mother, father and siblings. You find their behaviour quite pleasing and affectionate. After dinner your fiancée shows you the house. You come across a small room in a corner of the house which is very much dirty and in disarray and you hear an old woman coughing from inside that room. On asking, your fiancée tells you that the old woman is her grandmother who is mentally ill and troubles everyone, and therefore she has been kept in isolation. When you meet and talk to her grandmother, you find her to be absolutely normal. During this conversation you also realise that the family treats her badly and completely undervalues her.

(a) How do you see this whole issue?

(b) In the light of aforementioned case, comment upon the problems faced by senior citizens in our country and suggest some measures to tackle it.

उत्तर: (a) उक्त प्रकरण हमारे सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों में आए ह्रास को दर्शाता है। वर्तमान समय में वृद्धों का असम्मान, एकाकीपन व उनके प्रति असंवेदनशील व्यवहार समाज की एक बड़ी समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है। जीवन की भागदौड़ में बुज़ुर्गों की उपेक्षा लगातार बढ़ती जा रही है। भारत में संयुक्त परिवार व्यवस्था का चरमराना बुर्ज़ुगों के लिये नुकसानदायक साबित हुआ है। वर्तमान भौतिकतावादी संस्कृति के प्रसार ने भी इस समस्या को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उत्तर: (b) वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार, भारत में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों का प्रतिशत कुल जनसंख्या में लगभग 8.6 है। जन-स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण आने वाले वर्षों में कुल जनसंख्या में वृद्ध जनसंख्या का प्रतिशत तेज़ी से बढ़ने की उम्मीद है जो अपने साथ कई समस्याओं को लेकर आएगी। वृद्धावस्था की अपनी समस्याएँ हैं जो शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित हैं। इसके अतिरिक्त भी कई अन्य समस्याएँ हैं जो बदलते सामाजिक-पारिवारिक मानदंडों के कारण उत्पन्न हो रही हैं जिसे हम निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं-

- **अकेलेपन व पृथक्करण की समस्या:** वर्तमान युवा पीढ़ी द्वारा वृद्धों के प्रति उदासीन व्यवहार करना तथा उनके अनुभवों, विचारों, परामर्शों आदि की उपेक्षा करने के कारण वृद्ध स्वयं को परिवार व समाज की मुख्यधारा से अलग-थलग पाते हैं। इतना ही नहीं कई बार उन्हें या तो वृद्धाश्रमों में रखा जाता है या फिर अकेले जीवन व्यतीत करने को बाध्य होना पड़ता है। हाल के दशकों में यह समस्या तेज़ी से बढ़ी है।
- **आर्थिक निर्भरता तथा परावलंबन की समस्या:** कार्यक्षमता में कमी के कारण वृद्धों की आर्थिक स्थिति प्रभावित होती जिससे उनकी दूसरों पर निर्भरता बढ़ती है। इसके अतिरिक्त बढ़ती उम्र के साथ कई अन्य कार्यों के लिये भी वृद्ध-जन परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर होते हैं परंतु उन्हें उचित सहयोग व सहारा नहीं प्रदान किया जाता है।
- **स्नेह तथा आत्मीय सहयोग का अभाव:** बुज़ुर्गों की एक अन्य प्रमुख समस्या है जो छोटे-बड़े स्तर पर लगभग हर परिवार में आज देखने को मिल रही है।
- वृद्धों का तिरस्कार व अनादर एक बड़ी पारिवारिक व सामाजिक समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है।
- इसके अतिरिक्त वृद्धों के प्रति बढ़ते अपराध भी हाल के वर्षों में एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आए जिनकी आवृत्ति पहले की तुलना में काफी बढ़ी है।

बुज़ुर्ग हमारे परिवार व समाज के आधार स्तंभ हैं। यदि आधार कमज़ोर होगा तो हमारा समाज भीतर से खोखला होता जाएगा, इसलिये आज आवश्यकता है बुज़ुर्गों के प्रति संवेदनशील व सहयोगात्मक व्यवहार की।

- स्नेह व प्रेम की मीठी बात बुज़ुर्गों में जीने की आस व चाह बढ़ाती है। अत: स्नेह व आत्मीय व्यवहार बुज़ुर्गों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा व सम्मान होगा।
- अपने परंपरागत सामाजिक व पारिवारिक मूल्यों के प्रति लोगों को जागरूक बनाया जाना चाहिये।
- बुज़ुर्गों के स्वास्थ्य व सुरक्षा के बेहतर प्रबंध किये जाने की आवश्यकता है।
- आर्थिक रूप से बुज़ुर्गों को आत्मनिर्भर बनाने के लिये वृद्धावस्था पेंशन का दायरा बढ़ाया जाए।

प्रश्न: आप एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र व सामाजिक न्याय के प्राध्यापक हैं। गजेंद्र जोशी व सुखीराम घनिष्ठ मित्र हैं और आपके प्रिय छात्र हैं। गजेंद्र तथाकथित उच्च जाति से आता है और सुखीराम दलित वर्ग से। दोनों प्रतिभावान व प्रगतिशील विचार वाले हैं। एक दिन दोनों के बीच आरक्षण के मुद्दे पर तीखी बहस होती है। गजेंद्र का कहना है कि न तो उसने और न ही उसके परिवार वालों ने कभी जातिगत आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव किया। उसके मित्रों में सभी जाति-वर्ग के लोग शामिल हैं, जिनकी आर्थिक स्थिति किसी भी मामले में गजेंद्र से खराब नहीं है, फिर आरक्षण के रूप में महज़ जाति के नाम पर उसके साथ भेदभाव क्यों होता है? वे दोनों आपके पास आते हैं और इस मुद्दे पर आपके विचार जानना चाहते हैं। आरक्षण से संबंधित नैतिक मुद्दों की चर्चा करते हुए उपरोक्त स्थिति के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत करें। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a professor in sociology and social justice at a prestigious University. Gajendra Joshi and Sukhiram are best of friends and your favourite students. Gajendra comes from so called upper caste section of population while Sukhiram belongs to the Dalit community. Both are talented and have progressive mindsets. One day both of them get into a heated debate on the issue of reservation. Gajendra says that neither he nor his family has ever discriminated against anybody on the basis of caste. He further states that people belonging to all castes are among his friends and none of them have lower economic status as compared

to him but even then he is discriminated on the basis of caste in the form of reservations. Both of them come to you to know your opinion on this issue. Discussing the ethical aspects related to reservation, put your views on the aforementioned situation.

उत्तर: सामान्यत: आरक्षण से तात्पर्य है किसी वर्ग विशेष, जिसे शिक्षण संस्थान, सरकारी नौकरी, नीति निर्माण आदि में जनसंख्या के अनुपात में उचित प्रतिनिधित्व न प्राप्त हो, उसके प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिये कुछ रियायतें प्रदान करना। स्वतंत्र भारत के इतिहास में आरक्षण सर्वाधिक विवादित मुद्दा रहा है। इसके समर्थकों का तर्क है कि आरक्षण ने सदियों पुरानी जाति व्यवस्था को कमज़ोर करने का काम किया है और सामाजिक न्याय स्थापित किया है। वहीं, दूसरी ओर आरक्षण विरोधियों का तर्क है कि आरक्षण ने प्रतिभा को नज़रअंदाज किया है और साथ ही सामाजिक वैमनस्यता को बढ़ाया है। आरक्षण ने कुछ नैतिक प्रश्नों को जन्म दिया है जिसे हम निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं-

- क्या भूत की गलतियों के लिये वर्तमान पीढ़ी को ज़िम्मेदार माना जा सकता है?
- किसे अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाए सामाजिक न्याय या प्रतिभा के सम्मान को?
- क्या जाति आधारित भेदभाव नैतिक है?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व यह समझ लेना आवश्यक है कि कोई भी समाज या तंत्र तब तक सुचारु रूप से काम नहीं कर सकता जब तक कि उसके सभी नागरिकों को विकास व प्रगति का समान अवसर नहीं मिलता है। हमारे समाज में जाति आधारित भेदभाव सदियों से व्याप्त रहा है जिसके परिणामस्वरूप समाज का एक बड़ा तबका पिछड़ता चला गया और उसके विकास व प्रगति की संभावना सीमित हो गई। ऐसे में समाज के अन्य वर्गों की यह नैतिक ज़िम्मेदारी बनती है कि वह ऐसे पिछड़े वर्गों को समाज की मुख्य धारा में लाने के लिये सक्रिय व सकारात्मक सहयोग दें।

आरक्षण की संकल्पना इसी सकारात्मक भेदभाव पर आधारित है। पुन: आरक्षण का एक सांकेतिक महत्त्व भी है जो पिछड़े तबकों का तंत्र में विश्वास बढ़ाता है। परंतु इन सकारात्मक पहलुओं के बाद भी आरक्षण के राजनीतीकरण ने इसे दुष्प्रभावित किया है। हाल के दशकों में आरक्षण सामाजिक न्याय से अधिक राजनीतिक हथकंडा बन गया है, जिसने सामाजिक सौहार्द व वैमनस्य को भी बढ़ाया है। वस्तुत: आज आवश्यकता है आरक्षण पर खुली बहस कर इसकी विसंगतियों को दूर करने की ताकि वास्तविक अर्थों में यह सामाजिक न्याय सुनिश्चित कर सके।

प्रश्न: आपकी नियुक्ति कृषि विकास अधिकारी के रूप में एक पिछड़े ज़िले के सुदूर ब्लॉक में होती है। इस क्षेत्र की भूमि काफी उपजाऊ है, फिर भी पुरानी कृषि तकनीकों के उपयोग के कारण प्रति हेक्टेयर उत्पादन औसत से काफी कम है। आप अपने क्षेत्र के पंचायत प्रमुखों से मिलते हैं तथा नवीन कृषि तकनीकों के प्रसार के संबंध में सरकारी योजनाओं की जानकारी देते हैं। यद्यपि वे इन योजनाओं के प्रति बहुत उत्साहित नहीं दिखते तथापि सहयोग का पूरा आश्वासन देते हैं। जब आप क्षेत्र के किसानों से मिलते हैं तो वे इन नई कृषि विधियों/तकनीकों को लेकर पूर्णत: उदासीन दिखते हैं। साथ ही, कई लोग पुरानी कृषि विधियों के प्रति रूढ़िवादी रुख प्रकट करते हैं। अधिकांश लोगों का मानना है कि वे और उनके पूर्वज हमेशा से खेती-किसानी करते रहे हैं इसलिये उन्हें खेती के तरीके सिखाने की आवश्यकता नहीं है। जब आप अपने वरिष्ठ व अन्य सहयोगियों से बात करते हैं तो वे आपको अनावश्यक तनाव न लेने और ब्लॉक स्थित दफ्तर में बैठकर मज़े लेने की सलाह देते हैं।

(a) उक्त परिस्थिति में आपके पास कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं? प्रत्येक के गुण-दोषों की जाँच करें।

(b) उपरोक्त परिस्थिति में लोगों की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने के लिये आप क्या प्रयास करेंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

You have been appointed as agricultural development officer in a remote block of a backward district. Even though the land in this region is very fertile, yet the yield per hectare is much lower than the average on account of the use of outdated agricultural techniques. You meet the Panchayat heads of the area and provide them information on government schemes focused on the spread of new agricultural technology. Though the Panchayat heads do not seem very excited about these schemes but they do give assurance of full cooperation. When you meet the farmers of the area, they appear to be totally disinterested in making use of these new agricultural methods / techniques. You also see that the behaviour of many farmers is rude and majority of them believe that they and their ancestors have been engaged in farming since time immemorial and they need not learn from anyone on how to do farming. When you inform your seniors and other colleagues about this issue, they advise you not to take unnecessary stress and enjoy life sitting at the block office.

(a) What are the options available to you in the above situation? Examine the merits and demerits of each.

(b) What will you do to bring change in people's attitude in the above situation?

उत्तर: कृषि आज भी देश का सर्वप्रमुख व्यवसाय है और यदि देश के विकास को वास्तविक अर्थों में सर्वसमावेशी बनाना है तो इसके लिये कृषि का विकास अनिवार्य शर्त है। देश में कृषि के पिछड़े होने के कई कारण हैं यथा- निवेश की कमी, सरकार की उदासीनता, प्रौद्योगिकी व तकनीकी का अपर्याप्त विस्तार, परिवर्तन के प्रति लोगों की अनिच्छा व उदासीनता। उपरोक्त केस स्टडी इसी प्रकार की कुछ समस्याओं को इंगित करती है।

उत्तर: (a) उक्त परिस्थिति में मेरे समक्ष निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध हैं-

- अपने वरिष्ठ व सहकर्मियों की बात मानते हुए ब्लॉक दफ्तर में ही समय व्यतीत करना। इसका लाभ यह होगा कि मुझे न तो अनावश्यक तनाव होगा और न ही इधर-उधर भटकने की ज़रूरत होगी। चूँकि उस क्षेत्र के लोग स्वयं उदासीन व अनिच्छुक हैं तो मैं बेकार का तनाव क्यों लूँ। तथापि यह एक कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति व अधिकारी के रूप में मेरे लिये स्वीकार्य नहीं होगा और इससे कहीं-न-कहीं देश का वृहत्तर हित दुष्प्रभावित होगा।
- किसी अन्य क्षेत्र में स्थानांतरण करा लेना, जहाँ लोगों का व्यवहार सहयोगात्मक हो। इसका लाभ यह होगा कि मैं अपने ज्ञान का सही उपयोग करते हुए कृषि व देश की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक भूमिका निभा पाऊंगा। परंतु यह निर्णय पलायनवादिता को दर्शाता है। समस्याओं से भागना समाधान नहीं हो सकता है। कहीं-न-कहीं यह निर्णय देश के सर्वांगीण व समावेशी विकास को भी प्रभावित करेगा।
- लोगों की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाते हुए उन्हें इन नवीन कृषि तकनीक के फायदों के बारे में जानकारी देना और उन्हें इसे अपनाने के लिये प्रेरित करना। हो सकता है प्रारंभ में लोग इसे स्वीकार न करें, तथापि धीरे-धीरे कुछ लोग प्रभावित होकर इसे स्वीकार कर सकते हैं। संभव है कि कुछ लोगों को प्राप्त हुए सकारात्मक परिणामों से अन्य लोग भी प्रेरित हों और नवीन तकनीक अपनाएँ। यदि मुझे सीमित सफलता भी मिलती है तो भी यह एक संतुष्टिदायक स्थिति होगी क्योंकि मैंने एक सकारात्मक बदलाव के लिये प्रयास किया। मेरे विचार में यह सर्वोत्तम विकल्प है और मेरे द्वारा इसी का चयन किया जाएगा।

उत्तर : (b) उपरोक्त परिस्थिति में लोगों की अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने के लिये निम्नलिखित प्रयास किये जा सकते हैं-

- लोगों को नई तकनीक के लाभों से अवगत कराने के लिये आस-पास के इलाके में जहाँ इसका प्रयोग किया जा रहा हो, का उदाहरण प्रस्तुत करना।
- क्षेत्र के कुछ पढ़े-लिखे तथा जागरूक लोगों के सहयोग से अन्य लोगों को समझाने का प्रयास करना।
- रेडियो, टेलीविज़न तथा अन्य साधनों के माध्यम से जागरूकता लाने का प्रयास करना। इसके लिये नुक्कड़ नाटक आदि का भी सहारा लिया जा सकता है।
- नई तकनीक के प्रयोग के लिये लोगों को प्रेरित करने हेतु पुरस्कार व प्रोत्साहन की भी व्यवस्था की जा सकती है।

प्रश्न: आशा गोपालन एक युवा आईपीएस (IPS) अधिकारी हैं। कारागार अधीक्षक के रूप में उनकी नियुक्ति एक ऐसे कारागृह में होती है जहाँ कुछ प्रभावी राजनेता व बाहुबली अपराधी सज़ा काट रहे हैं। अपना कार्यभार संभालते ही आशा को पता चलता है कि इस कारागृह में राजनेताओं तथा अपराधियों को वी.वी.आई.पी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं तथा कारावास एक प्रकार से उनके लिये होटल जैसी सुविधाएँ प्रदान करता है। इतना ही नहीं, वे जब चाहे कारागृह से बाहर आ-जा सकते हैं और ये सब उनके लिये बड़ी सामान्य सी बात है। आशा जब इस संबंध में वरिष्ठ अधिकारियों से बात करती हैं, तो उन्हें चुप रहने की सलाह दी जाती है। आशा विरोध करती हैं और इससे पहले कि वह कोई निर्णय लेतीं उनका तबादला कर दिया जाता है।

(a) उपरोक्त केस स्टडी के आलोक में देश के कारागृहों की अनियमितता पर संक्षिप्त टिप्पणी करें।

(b) इस घटना से आशा का सिस्टम पर से भरोसा उठ जाता है और वह अपने पद से त्यागपत्र देने का निर्णय लेती हैं। एक मित्र के रूप में आप आशा को क्या सलाह देंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

Asha Gopalan is a young IPS officer. She is appointed as a jail superintendent in a jail where some influential politicians and high profile criminals are serving their sentences. As soon as she takes charge, she comes to know that VVIP facilities are being provided to politicians and criminals in this jail and the prison has become a hotel for them. Not only this, they can venture in and out of prison as and when they like. When Asha informs senior officials about this, she is advised to remain silent. Asha opposes this arrangement but before she can take any decision, she is transferred.

(a) In the light of the above case study comment briefly on the irregularities in the country's prison system.

(b) Due to the above mentioned situation Asha loses her faith in the system and decides to resign from the post. What advice would you give to Asha as her friend?

उत्तर : (a) न्यायिक तंत्र के एक अभिन्न अंग के रूप में कारागृहों का महत्त्व सर्वविदित है, तथापि कारागृहों से संबंधित अनियमितताएँ व इनका कुप्रबंधन एक ऐसा मुद्दा है जो समय-समय पर मीडिया रिपोर्टों की सुर्खियाँ बनता रहता है परंतु इसका कोई प्रभावी समाधान अभी तक नहीं निकाला जा सका है। कारागृहों से संबंधित कुछ प्रमुख समस्याओं के रूप में हम निम्नलिखित की गणना कर सकते हैं-

- कारागृहों का क्षमता से अधिक भरा होना तथा जेल कर्मचारियों की कमी।
- भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी।
- कारागृहों में कैदियों के लिये अमानवीय स्थिति विशेषकर सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग से आने वाले कैदियों के लिये।

एक रिपोर्ट के अनुसार, दो-तिहाई से अधिक कैदी जो भारतीय जेलों में बंद हैं वे 'अंडर ट्रायल' मुकदमों के अंतर्गत हैं। इनमें अधिकांश कैदी सामाजिक आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों से आते हैं। कुल कैदियों के प्रतिशत के रूप में इनकी हिस्सेदारी कुल जनसंख्या में इनके प्रतिशत से कहीं अधिक है। फिर इनमें से एक बड़ी संख्या ऐसे कैदियों की है जो 'अंडरट्रायल' कैदी के रूप में जेल में इतना समय काट चुके होते हैं, जो उनको मिलने वाली अधिक सज़ा से भी ज़्यादा है। जेल में भ्रष्टाचार का आलम यह है कि यदि कोई बड़ा नामचीन अपराधी या सफेदपोश अपराधी या राजनेता जिन्हें संगीन अपराधों के लिये सज़ा सुनाई गई है तो उन्हें 'फाइव स्टार' होटलों जैसी सुविधाएँ मुहैया कराई जाती हैं। यहाँ तक कि वे अपनी मर्जी से बाहर आ-जा सकते हैं। ऐसी कई रिपोर्ट देश के हर भाग से समय-समय पर सुनने को मिलती रहती हैं।

इसके अतिरिक्त जेल में हिंसा की भी कई घटनाएँ समय-समय पर देखने-सुनने को मिलती रहती हैं। कैदियों को आसानी से हथियार भी उपलब्ध हो जाते हैं। NCRB की रिपोर्ट के अनुसार 2001 से 2010 के दौरान 12 हज़ार से अधिक कैदियों की जेल में अप्राकृतिक मृत्यु हुई।

उत्तर : (b) उपरोक्त केस स्टडी में वर्णित परिस्थिति किसी भी निष्ठावान अधिकारी के मनोबल व अभिप्रेरणा को तोड़ने का काम करेगा परंतु त्यागपत्र देना पलायनवादिता को दर्शाता है, इसलिये मैं आशा को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने की सलाह दूँगा।

एक सिविल सेवक के लिये दृढ़-संकल्प, साहस, प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी अभिप्रेरणा बनाए रखने की क्षमता, लचीलापन आदि वे गुण हैं जो सत्यनिष्ठा के समान ही अपेक्षित व वांछनीय हैं। मैं आशा को यह समझाने का प्रयास करूंगा कि सिस्टम में रहकर ही सिस्टम में बदलाव लाया जा सकता है। उसे भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रयोग करते हुए अपना निर्णय लेना चाहिये न कि भावना में बहकर।

मैं उसे सलाह दूँगा कि उसे सिस्टम में रहकर इस प्रकार अनियमितता व भ्रष्टाचार के संबंध में पहले मज़बूत सबूत जुटाने चाहिये और फिर सक्षम प्राधिकारियों की सहायता से इस पर कार्यवाही करने का प्रयास करना चाहिये। भविष्य में इसमें मीडिया की भी सहायता ली जा सकती है।

साथ ही मैं उसे यह भी अहसास दिलाऊंगा कि उसके जैसे सत्यनिष्ठ व ईमानदार अधिकारियों की देश को सख्त ज़रूरत है और वृहद् जनहित को ध्यान में रखते हुए उसे अपने निर्णय पर अवश्य ही पुनर्विचार करना चाहिये। मेरे तर्कों से संभव है कि आशा अपने त्यागपत्र के निर्णय को वापस ले और यही उचित भी होगा।

प्रश्न: आप जिस ज़िले में ज़िलाधिकारी के रूप में पदस्थापित हैं, उसी ज़िले में आपके भाई का एक बड़ा आवासीय विद्यालय है। विद्यालय काफी प्रसिद्ध व स्तरीय है तथा राज्य के सर्वश्रेष्ठ आवासीय विद्यालयों में इसकी गणना की जाती है। एक दिन अचानक कुछ छात्रों की तबीयत खराब हो जाती है। चिकित्सीय जाँच में खाद्य विषाक्तता (फूड पॉइज़निंग) को इसका कारण बताया जाता है। छात्रों के अभिभावकों व अन्य लोगों द्वारा एक विरोध मार्च निकाला जाता है और आपके भाई को तुरंत गिरफ्तार करने की मांग की जाती है। आप जानते हैं कि इस विरोध मार्च में आपके भाई के विरोधी व अन्य विद्यालयों के मालिकों की भी मिली-भगत है, तथापि आम लोगों के विरोध व मीडिया के कारण मामला काफी ज़ोर पकड़ता है। यदि आप अपने भाई को गिरफ्तार करते हैं तो विरोधियों द्वारा आपके भाई व उसके विद्यालय के खिलाफ दुष्प्रचार कर स्कूल की प्रतिष्ठा को काफी धूमिल किया जाएगा।

(a) इस संदर्भ में आपके पास कौन-कौन से विकल्प हैं? प्रत्येक के गुण-दोषों की जाँच करते हुए उस विकल्प को बताएँ जिसका चयन आप करेंगे।

(b) देश में आवासीय विद्यालयों को अधिकाधिक रूप में छात्रों के अनुकूल बनाने के लिये कुछ उपाय सुझाएँ।

(250 शब्द, 20 अंक)

In the district where you are appointed as a district magistrate, your brother has a large residential school. The school is quite famous and is counted among the best residential schools in the state. One day all of a sudden some students become ill. On medical investigation food poisoning is revealed as the cause for this. A protest march is taken out by the parents of the students and others demanding the immediate arrest of your brother. You realize that in the protest-march, opponents of your brother and the owners of other schools are also involved, however due to opposition of the general public and media pressure the matter remains on the boil. If you arrest your brother then his opponents will use it to tarnish the reputation of the school.

(a) What are the options before you? Examine the merits-demerits of each option and mention the option that you will select.

(b) Suggest measures for making the residential schools more student-friendly.

उत्तर : (a) उपरोक्त परिस्थिति में सार्वजनिक व निजी कर्त्तव्य के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। उक्त परिस्थिति में मेरे समक्ष निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध हैं-

- अपने भाई को गिरफ्तार कराना, इसका लाभ यह होगा कि जन-विरोध व मार्च को रोकने में व आम जनजीवन को बहाल करने में सहायता मिलेगी। तथापि यह एकपक्षीय निर्णय होगा और संभव है कि विद्यालय में हुए हादसे में मेरे भाई की कोई गलती न हो और उसे षड्यंत्र के तहत फँसाया गया हो। इसलिये यह बहुत प्रभावी व उचित निर्णय नहीं होगा।
- भाई के पक्ष में अनैतिक व गैर-कानूनी रूप से काम करना। विरोध मार्च को सख्ती से दबा देना व अपने भाई को निर्दोष सिद्ध करने के लिये गैर-कानूनी तरीकों का इस्तेमाल करना। इसका लाभ यह होगा कि मैं अपने भाई के प्रति अपना कर्त्तव्य निर्वाह कर पाऊंगा, किन्तु एक सत्यनिष्ठ अधिकारी के रूप में यह स्वीकार्य नहीं होगा। इससे वृहद् जनहित भी प्रभावित होगा। साथ ही संभव है कि भविष्य में इससे और अधिक मज़बूत विरोध हो जिसे नियंत्रित कर पाना संभव न हो।
- अपना स्थानांतरण करवा लेना। इससे मैं इस नैतिक दुविधा से बच पाऊंगा परंतु यह निर्णय पलायनवादिता को दर्शाता है। इससे न तो मैं अपना सार्वजनिक और न ही निजी दायित्व का सही ढंग से निर्वाह कर पाऊंगा।
- एक निष्पक्ष जाँच करवाना और उसके अनुरूप कार्य करना। चूँकि इस केस से मेरा जुड़ाव लोगों में संदेह उत्पन्न कर सकता है इसलिये मैं एक निष्पक्ष अधिकारी द्वारा इसकी जाँच की सलाह दूँगा और लोगों को आश्वासन दूँगा कि दोषियों के खिलाफ अवश्य कार्यवाही होगी। यदि लोग फिर भी नहीं मानते हैं तो तात्कालिक रूप में अपने भाई को गिरफ्तार कर विरोध की स्थिति को सामान्य करने का प्रयास करूँगा। अपने भाई को सलाह दूँगा कि वह अपना पक्ष जाँच अधिकारियों के सामने रखे और यदि वह बेकसूर है तो उसे कोई

सज़ा नहीं होगी, बस वह जाँच प्रक्रिया में सहयोग करे। इस जाँच रिपोर्ट के अनुरूप मैं आगे की कार्यवाही करूँगा या करवाने की सलाह दूँगा। मेरे विचार में यही सर्वोत्तम विकल्प है और मैं इसी का चयन करूँगा।

उत्तर : (b) देश में निजी व सरकारी दोनों ही आवासीय विद्यालय कई प्रकार की समस्याओं से ग्रसित हैं जो छात्रों के हितों को प्रतिकूल रूप में प्रभावित करते हैं। इनमें सुधार तथा इन्हें अधिकाधिक रूप में छात्रों के अनुकूल बनाने के लिये निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं-

- विद्यालय में सफाई व स्वच्छता के प्रति विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। कई मीडिया रिपोर्टों में सरकारी आवासीय विद्यालयों की 'अस्वास्थ्यकर' (Unhygienic) परिस्थितियों की काफी चर्चा की गई है।
- छात्रों के उचित पोषण पर भी ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है।
- छात्रों की सुरक्षा व उनके उत्पीड़न को रोकने के लिये सख्त कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। इस संबंध में विद्यालयों में विशेष तंत्र के निर्माण की आवश्यकता है।
- एक बेहतर फीडबैक मैकेनिज़्म की भी आवश्यकता है ताकि छात्रों की शिकायत पर उचित कार्यवाही की जा सके।
- इसके अतिरिक्त नियमित जाँच की भी व्यवस्था की जानी चाहिये।

प्रश्न: असहिष्णुता व कट्टरता के खिलाफ आवाज़ उठाने वाली एक पत्रकार की गोली मारकर हत्या कर दी गई। आपको इसकी जाँच के लिये राज्य के मुख्यमंत्री के निर्देश पर पुलिस कमिश्नर द्वारा गठित जाँच दल का प्रभारी नियुक्त किया गया है। आपके जाँच करने पर पता चलता है कि हत्या में मौजूदा गठबंधन सरकार में भागीदार एक दल के प्रमुख नेता का हाथ है जिसके हाथ खींचने पर सरकार अल्पमत में आ जाएगी। आप पर मुख्यमंत्री, प्रमुख नेता एवं पुलिस कमिश्नर द्वारा तथ्यों के साथ छेड़छाड कर मामले को रफा-दफा करने का दबाव बनाया जा रहा है। आपके जाँच से हटने एवं उनके अनुसार कार्य न करने पर आपके परिवार को जान से मारने एवं आपके खिलाफ आय से अधिक संपत्ति बनाने जैसे मामलों में आपको फँसाए जाने की धमकी दी जा रही है।

(a) आपके पास क्या-क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) विभिन्न विकल्पों के गुण-अवगुण बताते हुए सर्वोत्तम विकल्प बताएँ। (250 शब्द, 20 अंक)

A journalist, who raised her voice against intolerance and fanaticism, was shot dead. On the directions of Chief Minister of the state you have been appointed the officer in-charge of the investigation team constituted by the Police Commissioner. You find upon investigation that one of the leaders of a party in the coalition government was involved in the murder and withdrawal of his support will reduce the government to minority. You are being pressurized by the Chief Minister, main leader and Police Commissioner to tamper with the facts and dismiss the case. You are getting threats like killing your family and implicating you in cases of disproportionate assets if you pull out of the investigation or do not act as per their directions.

(a) What are the options available to you?

(b) Evaluate the pros and cons of the various options available and suggest the best option.

उत्तर: किसी पत्रकार की हत्या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दमन को तो व्यक्त करती ही है, साथ ही देश में असहिष्णुता एवं कट्टरतावादी गतिविधियों को बढ़ावा देने के मत का भी समर्थन करती है। ऐसे मामलों में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा हेतु निष्पक्ष जाँच होनी चाहिये।

उत्तर : (a) उपरोक्त प्रकरण का अध्ययन करने के बाद मेरे पास कई विकल्प उपलब्ध हैं जिन्हें निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है-

- इस आपराधिक गतिविधि में संलिप्त व्यक्तियों के निर्देशों का पालन करूँ।
- मैं पुलिस कमिश्नर से जाँच दल के प्रभारी के रूप में अपनी नियुक्ति को रद्द करने की सिफारिश करूँ।
- मैं किसी भी बात पर ध्यान दिये बिना निष्पक्ष तरीके से कार्यों का निर्वहन करूँ।
- शीर्षस्थ पदों पर कार्यरत अपने अन्य अधिकारियों को भी इस मामले से परिचित करवाना, मीडिया एवं अन्य संचार माध्यमों को गुप्त तरीके से उपयोग में लाकर मामले को सार्वजनिक करने का प्रयास करूंगा। साथ ही, केंद्र सरकार एवं न्यायालय को भी मामले से अवगत कराकर अपने एवं परिवार के लिये व्यक्तिगत सुरक्षा से संबंधित उपायों की मांग करूंगा। तत्पश्चात् बिना किसी पक्षपात के निष्पक्ष तरीके से मामले की जाँच कर रिपोर्ट को केंद्र सरकार व न्यायालय तक पहुँचाने का प्रयास करूंगा।

उत्तर : (b) उपरोक्त चारों विकल्पों में से पहले विकल्प का चयन किसी भी दृष्टि से उचित नहीं होगा क्योंकि यह विकल्प अधिकारी की कर्त्तव्यनिष्ठता पर प्रश्नचिह्न लगाता है, साथ ही निष्पक्षता ईमानदारी जैसे मूल्यों के पतन को भी संकेतित करता है। इस विकल्प का समर्थन करना पलायनवादिता को भी दर्शाता है।

इसी प्रकार दूसरे विकल्प का चयन भी मेरे द्वारा पलायनवादिता के समर्थन को संकेतित करता है जो एक कर्त्तव्यनिष्ठ एवं ज़िम्मेदार अधिकारी के मानकों को पूरा नहीं करता, अत: इस विकल्प का समर्थन करना भी उचित नहीं समझूंगा।

तीसरे विकल्प का समर्थन करना नैतिकता एवं कर्त्तव्यनिष्ठता की दृष्टि से तो उचित है लेकिन इससे मुझे व्यक्तिगत स्तर पर क्षति उठानी पड़ सकती है, साथ ही मुझे इस मामले में फँसाया भी जा सकता है। मेरे द्वारा लिये गए इस प्रकार के त्वरित निर्णय से आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को बचने का मौका मिल सकता है जिससे लोगों का न्याय पर भरोसा कमज़ोर होगा। अत: इस विकल्प में कुछ निहित कमज़ोरियों के कारण इसका समर्थन करना सही नहीं होगा।

चयन की दृष्टि से मैं चौथे विकल्प का समर्थन करना उचित समझूंगा क्योंकि इस विकल्प में नैतिकता से संबंधित सभी उचित मापदंडों का पालन किया गया है। निष्पक्षता, कर्त्तव्यनिष्ठता जैसे मूल्यों का संरक्षण भी इस विकल्प में निहित है। साथ ही इसमें अपराध में संलिप्त व्यक्तियों के बचने की संभावना भी कम होगी। वैसे भी एक कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी की दृष्टि से भविष्य की चिंता किये बिना निष्पक्ष जाँच का ही समर्थन करना चाहिये।

इस प्रकार उपर्युक्त चारों विकल्पों में से चौथा विकल्प सभी उचित मानकों एवं उपायों का समर्थन करने के कारण सर्वश्रेष्ठ विकल्प है, एक ज़िम्मेदार अधिकारी के नाते इसी विकल्प का समर्थन करना उचित होगा।

प्रश्न: आप देश के सामान्य नागरिक हैं। आपके क्षेत्र में आपके जाति समुदाय का व्यापक वर्चस्व है। आपके क्षेत्र के पास से गुज़रने वाली अन्य निम्न जाति समुदाय की छात्राओं पर आपके जाति समुदाय के कुछ नवयुवकों द्वारा प्रतिदिन छींटाकशी की जाती है। आप अच्छी तरह समझते हैं कि यह गलत कार्य है और आने वाले समय में आपके घर-परिवार की बहन-बेटियों के साथ भी ऐसे कृत्य किये जा सकते हैं। ये नवयुवक राजनीतिक एवं प्रशासनिक रूप से प्रभावशाली घराने से संबंध रखते हैं। छात्राओं के परिजनों द्वारा पुलिस में प्राथमिकी दर्ज करने पर आपको चश्मदीद गवाह के तौर पर बुलाया जाता है। आपको वास्तविक स्थिति बताने पर आरोपी नवयुवकों द्वारा आपके परिवार को गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी जाती है।

(a) उक्त परिस्थिति में आपके पास कौन-कौन से विकल्प मौजूद हैं? सभी विकल्पों के गुण-दोषों की चर्चा करें।

(b) छेड़खानी की समस्या के समाधान हेतु आप किस प्रकार की कार्रवाई करेंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

You are a common citizen of the country. Your caste group has dominance in your area. Some of the youth from your caste daily tease some girls of the lower castes who pass by your area. You understand that this is a wrong thing to do and in future, these things can be done with the sisters and daughters of your family as well. These youths belong to politically and administratively powerful families. You are summoned as an eye witness when the family members of those girls file an FIR with the police. You are threatened by the accused youths of serious consequences if you disclose the real situation.

(a) In the given situation what options do you have? Discuss the pros and cons of all the options.

(b) What actions will you take to solve the problem of eve teasing?

उत्तर: (a) समाज में छात्राओं व लड़कियों के साथ छेड़-छाड़ होना आम बात हो गई है। इस प्रकार की अवांछित गतिविधि से सामाजिक सौहार्द पर तो विपरीत प्रभाव पड़ता ही है साथ ही, इससे दो वर्गों के बीच सामुदायिक तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होती है। लगातार इस प्रकार की गतिविधि में वृद्धि होने से यह अत्यधिक हिंसक रूप भी ले लेता है जिससे कानून के समक्ष भी कई प्रकार की चुनौतियाँ उठ खड़ी होती हैं, ऐसा देश में हुई पिछले कुछ दिनों की घटनाओं में देखा जा सकता है।

उपरोक्त परिस्थिति का अवलोकन करने पर मेरे सामने कई विकल्प मौजूद होंगे जो निम्नवत हैं-

- आरोपी नवयुवकों द्वारा दिये गए निर्देशों का पालन करूँ।
- मैं चश्मदीद गवाह बनने से मना कर दूँ या घटना के दौरान अपनी अनुपस्थिति का बहाना बनाकर मामले से पूरी तरह से तटस्थ हो जाऊँ।
- मैं आरोपी नवयुवकों द्वारा दी जा रही धमकी से पुलिस को अवगत कराऊंगा, साथ ही पुलिस द्वारा अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास करूंगा। तत्पश्चात् बिना किसी पक्षपात के मामले की वास्तविकता से पुलिस को परिचित कराऊंगा।

पहले विकल्प के चयन में गुण की दृष्टि से देखा जाए तो इससे आरोपी युवकों से किसी प्रकार के व्यक्तिगत हानि की संभावना कम होगी, साथ ही आरोपियों से किसी प्रकार के कटुतापूर्ण संबंध भी स्थापित नहीं होंगे लेकिन एक ज़िम्मेदार नागरिक की दृष्टि से इस विकल्प का समर्थन किसी भी दृष्टि से उचित नहीं होगा। साथ ही, इस विकल्प का चयन आपके चारित्रिक पतन को भी संकेतित करता है और स्वार्थवादी प्रवृत्ति को भी बढ़ावा देता है। वहीं, इस तरह के मामलों में चुप रहने से अपने परिवार के साथ भी इस प्रकार की घटनाएँ घट सकती हैं।

दूसरे विकल्प में भी लाभ यह होगा कि मैं बिना किसी व्यक्तिगत हानि के मामले से पूरी तरह अलग हो जाऊंगा जिससे मेरा जीवन पूर्ववत् चलता रहेगा लेकिन इस विकल्प में भी हानि की दृष्टि से उपरोक्त विकल्प के समान स्थितियाँ उत्पन्न होंगी, इसलिये इस विकल्प का समर्थन करना भी सही नहीं होगा।

उपरोक्त दोनों विकल्पों को अस्वीकृत करने के बाद मैं तीसरे विकल्प का चयन करना उचित समझूंगा, नैतिक दृष्टि से इस विकल्प का समर्थन सही होगा क्योंकि इस विकल्प में पीड़ित पक्ष के साथ न्याय हो रहा है, साथ ही आरोपियों द्वारा किये गए कृत्य के लिये उन्हें सज़ा मिलने की संभावना भी दिख रही है। इस प्रकार के मामलों में आरोपियों को सबक सिखाने से समाज में भी एक अच्छा संदेश जाएगा। यहाँ एक ज़िम्मेदार नागरिक के सभी कर्त्तव्यों का पालन भी हो रहा है। अगर इस विकल्प में दोष की दृष्टि से देखा जाए तो इससे आपका आरोपियों के साथ व्यक्तिगत संबंध खराब हो सकता है। लेकिन एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते व्यक्तिगत संबंधों की अनदेखी कर इसी विकल्प का समर्थन करना सही होगा, साथ ही पुलिस सुरक्षा की मांग भी की जानी चाहिये।

उत्तर: (b) लड़कियों के साथ होने वाली छेड़खानी की समस्या के समाधान हेतु मैं निम्नलिखित कार्यवाहियों का सहारा लूंगा-

- अति संवेदनशील स्थानों पर सी.सी.टी.वी. कैमरों की व्यवस्था करने की सिफारिश करूंगा।
- संचार माध्यमों द्वारा जनता में जागरूकता लाने का प्रयास करूंगा।
- इस तरह की घटनाओं में पीड़ित पक्ष को बिना किसी डर के त्वरित पुलिस में प्राथमिकी दर्ज़ करवाने की सलाह दूंगा।
- इस प्रकार की घटनाओं के संदर्भ में समाज के बुद्धिजीवी एवं प्रभावी व्यक्तित्व के लोगों को लामबंद करने का प्रयास करूंगा।

प्रश्न: आज पूरी दुनिया में शरणार्थी समस्या एक प्रमुख सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा नैतिक चुनौती के रूप में उभरी है। धार्मिक एवं नृजातीय संघर्षों तथा प्राकृतिक व मानवीय आपदाओं ने इस समस्या को और ज़्यादा जटिल बनाया है। शरणार्थी समस्या के दीर्घकालिक समाधान हेतु शरणार्थियों के लिये संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त (UNHCR) कार्यालय ने सभी राष्ट्रों से अपने-अपने दृष्टिकोण पत्र प्रस्तुत करने का आह्वान किया है।

आप भारतीय विदेश मंत्रालय में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं तथा भारत सरकार ने शरणार्थी समस्या पर दृष्टिकोण पत्र निर्मित करने का कार्य आपको सौंपा है। आप इस दृष्टिकोण पत्र में शरणार्थी समस्या के दीर्घकालिक समाधान के लिये किन-किन तत्त्वों को समाहित करेंगे तथा आपके द्वारा प्रस्तुत दीर्घकालिक समाधान वाले दृष्टिकोण पत्र में किन-किन बिंदुओं को शामिल किया जाएगा?

(250 शब्द, 20 अंक)

The problem of refugees has emerged as a major social, political, economic and moral challenge. This problem has been made more complex by communal and racial conflicts and natural and man-made disasters. The United Nations High Commission for Refugees (UNHCR) has called all the nations to present their approach paper for a lasting solution of this issue.

You are working as a top officer in Foreign Ministry of India and Indian government has delegated you the task of preparing the approach paper on refugee issue. Which elements will you incorporate for a long-term solution of this issue in your approach paper and what points will be included in the approach paper presented by you?

उत्तर: शरणार्थी संकट के प्रस्तुत स्वरूप को ध्यान में रखते हुए मेरे द्वारा जो दीर्घकालिक समाधान प्रस्तुत किया जाएगा उस दृष्टिकोण पत्र में निम्नलिखित तत्त्व शामिल होंगे-

- शरणार्थी समस्या के दीर्घकालिक समाधान हेतु आवश्यक है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में नैतिकता का संवर्द्धन हो। इसके अंतर्गत वसुधैव कुटुम्बकम, सहिष्णुता, उत्तरदायित्व, शांति व संयम जैसे मूल्यों को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में महत्त्व प्राप्त हो। इससे समस्या का नैतिक समाधान संभव हो सकेगा।
- शरणार्थी समस्या के समाधान हेतु नैतिक पक्ष के साथ-साथ व्यावहारिक पक्ष को भी महत्त्व देना आवश्यक है जिससे इसके द्वारा उत्पन्न सामाजिक व आर्थिक चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

वास्तव में नैतिक पक्ष व व्यावहारिक पक्ष एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, अत: दीर्घकालिक समाधान हेतु दृष्टिकोण पत्र में नैतिक व व्यावहारिक दोनों तत्त्वों को समाहित करने का प्रयास करूंगा।

शरणार्थी समस्या के दीर्घकालिक समाधान हेतु प्रस्तुत दृष्टिकोण पत्र में निम्नलिखित बिंदु शामिल होंगे-

- शरणार्थी समस्या के स्थायी समाधान हेतु प्रथम आवश्यकता है युद्ध व अशांति को समाप्त करना। किंतु जब तक ये उपाय व्यावहारिक स्वरूप न प्राप्त कर सकें तब तक हम रुक नहीं सकते और न ही उन शरणार्थियों को दोष दे सकते हैं जो इन संकटों से बचने के लिये तथा बेहतर जीवन की तलाश के लिये शरणार्थी बनते हैं। इन परिस्थितियों में हम होते तो यही करते। अत: शरणार्थी संकट का समाधान करना हमारा नैतिक दायित्व है।
- शरणार्थियों के समाधान की प्रक्रिया में यह प्रयास होना चाहिये कि उन्हें स्वयं के राष्ट्र में ही संरक्षण व सहयोग प्राप्त हो तथा अपना राष्ट्र न छोड़ना पड़े।
- यदि स्वराष्ट्र में उनका संरक्षण असंभव हो तब निकटवर्ती क्षेत्रों में उन्हें अस्थायी निवास प्रदान-करना चाहिये तथा इस हेतु भौतिक संसाधनों की आवश्यकता होगी। इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु संपन्न राष्ट्रों और अपेक्षाकृत कम संपन्न (विकासशील) राष्ट्रों को 'सामान्य किंतु विभेदकारी उत्तरदायित्व' (CBDR) के उपागम को अपनाना चाहिये। ये उपागम नैतिक भी हैं तथा व्यावहारिक रूप से संभव भी।
- इस संदर्भ में एक बहुपक्षीय शरणार्थी नीति हो तथा शरणार्थियों के सत्यापन, पुनर्वास हेतु एकल शरणार्थी एजेंसी का गठन हो।
- शरणार्थी समस्या के अंतर्गत पर्यावरणीय व जलवायु परिवर्तन जनित आपदाओं से उत्पन्न शरणार्थी संकट की अब तक उपेक्षा की गई है, अत: ऐसी स्थिति में शरणार्थियों के लिये मानक निर्धारित किये जाएँ।
- शरणार्थी समस्या के स्थायी व दीर्घकालिक समाधान हेतु गैर-सरकारी संगठनों, धार्मिक निकायों, सिविल सोसाइटी तथा स्पोर्ट्स क्लबों को भी शामिल किया जाए ताकि शरणार्थी संकट उत्पन्न होने पर बाह्य राष्ट्रों में शरणार्थियों को अपने लिये खतरा न माना जाए बल्कि उनके (शरणार्थियों) लिये सकारात्मक सामाजिक जनमत का निर्माण हो सके।

सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से दुनिया को यह समझाने की आवश्यकता है कि अमेरिका को महाशक्ति बनाने में वहाँ गए शरणार्थियों का विशेष योगदान रहा है। शरणार्थी अपने साथ कार्यशील आबादी तथा बेहतर स्वप्न लेकर किसी दूसरे राष्ट्र में पहुँचते हैं, अत: वृद्ध होती यूरोपीय आबादी के लिये शरणार्थी मानव संसाधन बन सकते हैं।

अत: शरणार्थी समस्या का दीर्घकालिक समाधान 'ज़ीनोफोबिया' में न होकर उसके नैतिक व व्यावहारिक तत्त्वों को समग्रता में आत्मसात करते हुए उसके क्रियान्वयन में है।

प्रश्न: आपकी नियुक्ति उत्तर प्रदेश के एक अत्यन्त पिछड़े ज़िले में ज़िलाधिकारी के रूप में की जाती है। ज़िले में नाममात्र की नगरीय आबादी है। यहाँ के गाँवों में आप पाते हैं कि बड़ी संख्या में अनुसूचित जातियाँ निवास करती हैं जो सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ी हुई हैं। कृषि के लिये इनके पास ज़मीन भी नहीं है। राजनीतिक उदासीनता और सिविल सेवकों की किंकर्त्तव्यविमूढ़ता के कारण इस

क्षेत्र में सामाजिक सेवा कार्यक्रमों का उचित क्रियान्वयन नहीं किया जा रहा है। जब आप समस्या की जड़ में पहुँचते हैं तो आपको इसके पीछे एक अलग ही कहानी का पता चलता है। इस ज़िले में राजनीतिक पहुँच वाले तथा दबंगों ने अपने-अपने लघु और मध्यम उद्योग लगा रखे हैं जिनमें गरीब लोग अपने बच्चों सहित श्रमदान कर रहे हैं। उनके मन में अपने मालिक को पालनहार मानने की प्रवृत्ति विकसित हो चुकी है। वे अपने शोषण के प्रति पूरी तरह से अनभिज्ञ हैं।

(a) शोषण के इस स्वरूप के पीछे विद्यमान कारणों की पहचान करें।

(b) इस समस्या के समाधान के लिये आप कौन-कौन से नवप्रवर्तनकारी कदम उठा सकते हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

You have been appointed as the District Collector of an extremely backward district. The district has got barely any urban population. You find that the villages of this district are mostly inhabited by scheduled castes who are socio-economically backward. They don't even own lands for farming. Social welfare schemes have not been implemented properly in this region due to political indifference and escapism of civil servants. When you arrive at the roots of the problem, you come across a different story altogether. Politically influential people and goons have set up their small and medium industries in which the poor and their kids are providing labour. They have come to accept their employers as their masters. They are totally unaware of their exploitation.

(a) Identify the reasons behind this pattern of exploitation.

(b) What innovative steps you can take to resolve this issue?

उत्तर: (a) प्रस्तुत केस स्टडी में विद्यमान समस्या के कारणों की प्रभावी पहचान करने के लिये आवश्यक है कि हम समस्या के स्वरूप की पहचान करें। समस्या के स्वरूप निर्धारण के क्रम में हम पाते हैं कि यह समस्या सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा कानूनी पक्षों पर राज्य व समाज की असफलता को व्यक्त करती है। इस समस्या में शोषण का स्वरूप ऐसा है जिसे शोषित भी नहीं पहचान पा रहा है तथा बंधुआ मज़दूरी एवं बाल श्रम जैसे कानूनी विषय भी समस्या में विद्यमान हैं। इस समस्या के यदि प्रमुख कारणों की चर्चा करें तो वे निम्नलिखित हैं-

- इस पिछड़े ज़िले की अधिकांश आबादी ग्रामीण है। अत: यहाँ अशिक्षा, जातीय विभेद एवं सामंती परिवेश की उपस्थिति के साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति अनुसूचित जातियों में जागरूकता का अभाव होगा।
- भारत में अनुसूचित जातियाँ सांस्कृतिक दृष्टि से भी पिछड़ रही हैं तथा भूमिहीन होने के कारण गाँवों में धनी वर्ग पर इनकी निर्भरता परंपरागत रूप से बनी हुई है जिससे इनके शोषण की अंतहीन प्रक्रिया विद्यमान है।
- उपरोक्त सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक कारणों के अलावा शोषण के इस स्वरूप के पीछे राजनीतिक व प्रशासनिक कारण भी मौजूद हैं जिन्होंने अपने उत्तरदायित्वों का प्रभावी निर्वहन नहीं किया। राजनीतिक नेतृत्व का यह कर्त्तव्य था कि सामाजिक रूपांतरण की प्रक्रिया को प्रभावी बनाकर दलितों को जागरूक व अधिकार संपन्न बनाता। प्रशासनिक नेतृत्व का यह कर्त्तव्य था कि लोकनीतियों को प्रभावी रूप में अनुसूचित जातियों तक पहुँचाता तथा इनके लिये विद्यमान सुरक्षात्मक उपायों को प्रभावी रूप में लागू किया जाता।

उत्तर: (b) इस ज़िले के ज़िलाधिकारी के रूप में मेरे द्वारा निम्नलिखित नवप्रवर्तनकारी उपाय अपनाए जाएंगे-

- सर्वप्रथम ज़िले के श्रम प्रवर्तन अधिकारी के माध्यम से लघु और मध्यम उद्योगों में विद्यमान बाल श्रमिकों व बंधुआ मज़दूरों को मुक्त कराया जाएगा तथा बंधुआ मज़दूर अधिनियम व बाल श्रम उन्मूलन अधिनियम के तहत उनके पुनर्वास का प्रबंध किया जाएगा।
- मिड डे मील, मनरेगा, आई.सी.डी.एस. तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली जैसी सामाजिक-आर्थिक योजनाओं का लाभ लोगों तक पहुँचाकर लोकनीतियों को प्रभावी बनाया जाएगा।
- प्रदेश में विद्यमान भू-सुधार कानूनों के तहत ज़िले में भू-सुधार कार्यक्रम चलाया जाएगा ताकि अनुसूचित जातियों को भूमि उपलब्ध कराई जा सके।
- शिक्षा व्यवस्था को प्रभावी बनाकर बच्चों को सार्वभौमिक शिक्षा अभियान का लाभ प्रदान किया जाएगा जिससे अनुच्छेद-21A को प्रभावी बनाया जा सके।
- सामाजिक रूपांतरणकारी प्रयासों के अंतर्गत राजनीतिक नेतृत्व को भी इस प्रयास में शामिल करने का प्रयास किया जाएगा, जिससे समाज के सभी वर्गों को जागरूक किया जा सके।

इस समस्या के स्वरूप के निर्धारण, उसके पीछे विद्यमान कारणों की पहचान कर एक ज़िलाधिकारी के रूप में बहुआयामी प्रयास से इस पिछड़े ज़िले की समस्या का अंत किया जा सकता है।

प्रश्न: आप अपने कॉलेज के दिनों से ही आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों से अत्यधिक नफरत करते हैं। इसी नफरत से आपको आईपीएस बनने की प्रेरणा भी मिली है। आईपीएस अधिकारी बन जाने पर पुलिस कप्तान के रूप में आपकी नियुक्ति ऐसे क्षेत्र में की जाती है जहाँ हत्या, लूट और बलात्कार जैसे मामले होते ही रहते हैं। एक दिन आपके कार्यालय से महज़ एक किलोमीटर की दूरी पर एक बच्ची के साथ बलात्कार की घटना होती है, जिसने आपको उद्वेलित कर दिया है। कुछ देर बाद आपको पता चलता है कि भीड़ द्वारा बलात्कारी को पकड़ लिया गया है और उसे क्रूरता से मारा-पीटा जा रहा है। संबंधित क्षेत्र के थाना प्रभारी भी भीड़ के सामने असहाय हैं। आपके सहयोगी आपको सलाह देते हैं कि अच्छा है उसे (अपराधी) मरने दो।

(a) उक्त परिस्थिति में निहित कानूनी और नैतिक मुद्दों की जाँच करें।

(b) आपके पास कौन-कौन से विकल्प मौजूद हैं? आप कौन-सा विकल्प चुनेंगे और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

You hate people with criminal tendencies since your college days. This hate has motivated you to become an IPS. When you become an IPS, you are appointed as a Police Chief in an area where cases of murder, loot and rapes keep happening. One day you are perturbed by a rape incident that happened just one kilometre away from your office. After some time, you came to know that the crowd has been able to catch the rapist and he is being beaten barbarically. The Police Officer of the concerned area is also helpless before the mob. Your associates suggest you that it's good if you let him (the criminal) get beaten up by the mob.

(a) Examine the legal and ethical issues implicit in the given situation.

(b) What are the options available to you? Which option will you choose and why?

उत्तर: भारत में हाल की कुछ घटनाएँ नैतिक प्रश्न उत्पन्न करती हैं। पिछले कुछ समय से भीड़ द्वारा लोगों को पकड़कर मार डालने की घटनाएँ सामने आई हैं जो एक व्यक्ति विशेष के अधिकारों के दमन को तो संकेतित करती ही हैं, साथ ही देश की लोकतांत्रिक छवि के विश्वास को भी धूमिल कर रही हैं। आज भीड़ द्वारा इस प्रकार की घटनाओं को अंजाम देना आम बात हो गई है। इस प्रकार की घटनाओं को अंजाम देने के उद्देश्य के पीछे किसी व्यक्ति विशेष का निजी स्वार्थ एवं धर्म व समुदाय विशेष द्वारा असहिष्णुता को बढ़ावा देना भी हो सकता है।

उत्तर: (a) उपरोक्त प्रकरण का विश्लेषण करने पर कई कानूनी व नैतिक मुद्दे उत्पन्न होते हैं जिसे हम निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं-

- यहाँ भीड़ द्वारा कानून को अपने हाथ में लेने का प्रयास किया जा रहा है।
- व्यक्ति पर लगाए गए आरोपों की छान-बीन एवं पुष्टि किये बिना उसे अपराधी मान लेना, व्यक्ति के मूल अधिकारों का हनन एवं कानूनी प्रक्रिया के उल्लंघन जैसी स्थितियों को दर्शाता है।
- भीड़ द्वारा व्यक्ति विशेष पर किये जा रहे हमले में व्यक्ति विशेष के निर्दोष होने की स्थिति में उसे न्याय मिलने की संभावना नगण्य होगी जोकि कानून के समक्ष कई प्रश्न उत्पन्न करेगी।

उत्तर: (b) उपरोक्त परिस्थिति में त्वरित निर्णय लेने की आवश्यकता है, ऐसे में मेरे सामने तीन विकल्प हैं, जो निम्नलिखित हैं-

- अपराधी को दंड देने की दृष्टि से भीड़ द्वारा किये जा रहे कृत्य को सही मान लेना एवं किसी कार्यवाही के प्रति निष्क्रिय रहना।
- भीड़ पर त्वरित कार्यवाही करते हुए इस प्रकार के कृत्यों को रोकने का प्रयास करना।
- तुरंत एक विशेष कार्यकारी बल का गठन, लाउड स्पीकर या अन्य संचार माध्यमों से भीड़ को समझाने का प्रयास करना। साथ ही यह चेतावनी देना कि आपके द्वारा किये जा रहे कृत्यों की वीडियो रिकॉर्डिंग हो रही है, इसलिये प्रत्येक व्यक्ति पर हिंसा के प्रयास का केस दर्ज हो सकता है। साथ ही भीड़ को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करना कि व्यक्ति पर लगाए गए आरोप सही पाए जाने पर उसे कानूनी कार्यवाही द्वारा सज़ा दिलाने का मैं प्रयास करूंगा।

उपरोक्त विकल्पों में पहले विकल्प का चयन उचित नहीं होगा, क्योंकि बिना इस बात की पुष्टि हुए कि व्यक्ति ने अपराध किया भी है कि नहीं, उसे भीड़ द्वारा हिंसा का शिकार बनाया जाना सही नहीं है। वैसे भी यहाँ भीड़ द्वारा कानून को अपने हाथ में लेने का प्रयास किया जा रहा है जो कानूनी प्रक्रियाओं के पालन का स्पष्ट उल्लंघन करता है। साथ ही, यहाँ मेरा निष्क्रिय रहना एक गैर-ज़िम्मेदार अधिकारी होने को संकेतित करेगा।

दूसरे विकल्प का चयन करना इस दृष्टि से सही नहीं होगा क्योंकि इससे आक्रोशित भीड़ का शिकार मैं स्वयं हो सकता हूँ, मुझे भी व्यक्तिगत रूप से शारीरिक क्षति का शिकार होना पड़ सकता है।

इस प्रकार मेरे द्वारा दोनों विकल्पों की अस्वीकृति के बाद मैं तीसरे विकल्प का समर्थन करूंगा क्योंकि इसमें घटना विशेष के संबंध में एक उचित कार्यवाही का क्रमागत पालन का समर्थन किया गया है। साथ ही यहाँ भीड़ की क्रूरता का शिकार हुआ व्यक्ति एवं एक ज़िम्मेदार अधिकारी दोनों के प्रति कर्त्तव्यों का उचित पालन हो रहा है।

प्रश्न: आप राजस्व विभाग में एक अधिकारी हैं। आपको आर्थिक अपराधों की जाँच से संबंधित एक मामले का दायित्व दिया गया है। कार्यवाही अपने पक्ष में करने के लिये अपराधी आपको एक बड़ी राशि का प्रस्ताव देता है। साथ ही, प्रस्ताव ठुकराने की स्थिति में अंजाम भुगतने की चेतावनी भी देता है। वास्तव में आप पहले जिस विभाग में कार्यरत थे वहाँ ऐसे ही किसी मामले में आपको विभागीय कार्यवाही का सामना करना पड़ा था। आपको डर है कि यदि आप प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करते हैं तो आपको झूठे मामले में पुनः फँसाया जा सकता है और मीडिया द्वारा इस मामले को प्रचारित किया जा सकता है।

(a) उक्त परिस्थिति में आपके पास कौन-कौन से विकल्प मौजूद हैं?

(b) सभी विकल्पों के गुण-दोषों की जाँच करें।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are an officer in the revenue department. You have been delegated with a case related to the investigation of financial offences. The offender offers you a big amount in lieu of acting in his favour. He also warns you of stern consequences in case you reject the offer. Actually you had faced departmental action in a similar case in the department you were working previously. You are afraid of being implicated in a false case again if you do not accept the offer and media may also publicise this issue.

(a) What are the options available to you in the given situation?

(b) Examine the pros and cons of each option.

उत्तर: (a) उपरोक्त केस स्टडी, एक ईमानदार अधिकारी द्वारा दायित्वों के निर्वहन में उठाए जाने वाले कदमों एवं उसके निर्वहन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को व्यक्त करती है, इस प्रकरण में मेरे समक्ष कई विकल्प मौजूद हैं जिसे निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है-

- अपराधी द्वारा दिये जाने वाले प्रस्ताव को स्वीकार कर लेना एवं अपराधी के पक्ष में निर्णय देना।
- अपराधी के प्रस्ताव को अस्वीकृत करने के साथ-साथ अपराधी पर तुरंत उचित कार्यवाही करना।
- अपने विभाग से संबंधित उच्च पदस्थ अधिकारी को मामले का संज्ञान देकर उन्हें अपने विश्वास में लेते हुए प्रस्ताव को अस्वीकृत करना तथा घटना की निष्पक्ष जाँच करते हुए उचित कार्यवाही करना।

उत्तर: (b) पहले विकल्प में यदि गुण की बात की जाए तो इसमें अपना व्यक्तिगत लाभ तो दिखाई देता है, साथ ही आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों से किसी प्रकार के नुकसान पहुँचने की संभावना भी कम है, लेकिन इस प्रकार के मामले के उजागर होने से आप पर भ्रष्टाचार से संबंधित अपराध का मुकदमा चलाया जा सकता है। अपराध सही साबित होने की स्थिति में आपका पूरा कॅरियर समाप्त हो सकता है। साथ ही एक ज़िम्मेदार व कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी की दृष्टि से भी इस विकल्प का समर्थन अनुचित है। इस विकल्प का चयन सत्यनिष्ठा, ईमानदारी व निष्पक्षता जैसे मूल्यों के पतन को व्यक्त करता है। अत: इस प्रकार के विकल्प का समर्थन सही नहीं होगा।

दूसरे विकल्प का चयन नैतिक दृष्टि से तो सही है लेकिन आपके द्वारा इस मामले में त्वरित कार्यवाही का निर्णय लेना सही नहीं होगा। इससे अपराधी अपने स्तर पर साँठ-गाँठ करके आपको फँसा भी सकता है, क्योंकि आप पहले भी इस प्रकार की कार्यवाहियों से गुज़र चुके हैं, इसलिये आपकी बातों पर विश्वास संबद्ध विभाग में कम ही लोग करेंगे।

उपर्युक्त दोनों विकल्पों को अस्वीकृत करने के बाद मैं कार्यवाही में तीसरे विकल्प का चयन करना उचित समझूंगा क्योंकि इस विकल्प में सभी उचित मापदंडों के पालन की बात कही गई है, साथ ही इस विकल्प में नैतिकता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा आदि जैसे नैतिक मूल्यों का संरक्षण भी हो रहा है। इसलिये एक कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी की दृष्टि से भी इसका समर्थन किया जाना सही होगा।

प्रश्न: प्रकाश झा बाढ़ से प्रभावित राज्य में सहायता आयुक्त हैं। राज्य में अधिक वर्षा होने पर जलभराव के कारण ग्रामीण इलाकों में बाढ़ आ जाती है जिससे बोई हुई फसलें पानी में डूब जाती हैं। तो वहीं कुछ लोगों ने इस आपदा को लाभ कमाने का अनैतिक धंधा बना लिया है। जैसे ही बाढ़ की खबरें अखबारों में छपती हैं और टेलीविज़न चैनलों में प्रसारित होती हैं, प्रभावित ज़िलों में पटवारियों के कार्यालयों में बाढ़ राहत हेतु अनुरोधों की बाढ़ आ जाती है। यदि किसी गाँव का 10 प्रतिशत भू-भाग भी प्रभावित हुआ है तो इसमें भी 95-99 प्रतिशत लोग बाढ़ राहत के लिये आवेदन दे देते हैं। सर्वाधिक दयनीय स्थिति यह है कि हानियों का सर्वेक्षण केवल कागज़ों पर ही किया जा रहा है। पंचायत के कर्मचारी व गाँव के दबंग लोग सर्वेक्षण दल को वही सब लिखने के लिये दबाव डालते हैं, जो वे कहते हैं। प्रकाश झा को अगले सप्ताह में भारी वर्षा की अग्रिम सूचना मिली है और वे इस दुविधा में है कि जैसा चल रहा है वैसा ही चलने दें या भारी विरोध के होते हुए भी राहत कार्य में कुछ मूलभूत सुधार करें।

अगर आप प्रकाश झा की जगह होते तो आप इस समस्या के संबंध में क्या निर्णय लेते और उपर्युक्त समस्या का समाधान किस प्रकार करते? विश्लेषण सहित उत्तर दें।

(250 शब्द, 20 अंक)

Prakash Jha is an Assistant Commissioner in a flood affected state. Heavy rainfall causes water logging and flooding in the rural areas which leads to submersion of crops. A few people exploit the situation to make money. With the dissemination of the news of flood from newspapers and television channels the offices of the Patwaris get flooded with applications for flood relief. Even if only the 10 percent of the village has been affected 95-99 percent of the people apply for flood relief. The most pitiable reality is that the claims are examined only on paper. The employees of the Panchayat and the dominant villagers pressurize the survey team to report as per their wishes. Prakash Jha has received an early warning of heavy rains in the next week and he is in dilemma whether to continue with the prevalent modus operandi or introduce some fundamental reforms in relief work, braving heavy resistance. If you were in the position of Prakash Jha what would have been your decision and how would you have solved the problem? Answer with explanation.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में एक सहायता आयुक्त के रूप में मेरी सत्यनिष्ठता, कार्य के प्रति सेवा भावना, निष्पक्षता जैसे मूल्यों का परीक्षण है।

उपर्युक्त समस्या के प्रति एक नज़रिया यह हो सकता है कि जैसा सर्वेक्षण चल रहा है, वैसा ही चलने दूँ; क्योंकि राहत कार्य में मूलभूत सुधार करने पर राजनीतिक दबाव भी बढ़ सकता है। साथ ही, जनता का विरोध प्रदर्शन भी हो सकता है या फिर मैं छुट्टी लेकर इस समस्या के समाधान से बच सकता हूँ। किंतु विरोध प्रदर्शन के भय से राहत कार्य में सुधार न करना या छुट्टी लेकर चले जाना अपनी ज़िम्मेदारियों से मुँह मोड़ना है तथा एक प्रशासक से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती है। उपर्युक्त प्रकरण में निम्नलिखित समस्याएँ हैं-

(क) बाढ़ से उत्पन्न जलभराव की समस्या।

(ख) सर्वेक्षण करने में विसंगतियाँ, जैसे- क्षतिपूर्ति हेतु योग्य लोगों का चयन करना, सर्वेक्षण टीम को ग्रामीण समुदाय के दबंगों द्वारा सर्वेक्षण न करने देना, सर्वेक्षण का कागज़ों पर होना अर्थात् ज़मीनी हकीकत से दूर होना इत्यादि।

(ग) राज्य के धन का सही उपयोग कैसे किया जाए अर्थात् न्यायपूर्वक वितरण सुनिश्चित करना।

उपर्युक्त समस्याओं के समाधान के प्रति मेरा दृष्टिकोण इस प्रकार होगा-

(i) सर्वेक्षण टीम को ग्रामीण समुदाय के दबंगों द्वारा डराया जाता है, अत: मैं सर्वेक्षण टीमों के साथ सशस्त्र सहकर्मियों का प्रबंध करूंगा जिससे सर्वेक्षण टीम को बाढ़ से संबंधित क्षति की सही जानकारी प्राप्त हो सके। इसके अतिरिक्त, बाढ़ग्रस्त ज़िले में अन्य ज़िलों के सर्वेक्षकों को लगाया जा सकता है। अन्य ज़िलों के सर्वेक्षकों को लगाने से गाँववालों के लिये उन्हें प्रभावित करना मुश्किल होगा।

(ii) यदि सर्वेक्षण टीम के साथ गाँव के दबंग व्यक्तियों द्वारा कोई गलत व्यवहार किया जाता है तो उनके विरुद्ध कार्रवाई की जा सकती है। हाँ, यह बात ज़रूरी है कि इस कार्रवाई से ग्रामीण व्यक्तियों में डर पैदा हो सकता है। किंतु यह एक उपचारात्मक उपाय है, क्योंकि बिना ग्रामीण समुदाय के सहयोग के सर्वेक्षण का कार्य करना कठिन है।

(iii) बाढ़ग्रस्त इलाकों की सही जानकारी के लिये रिमोट सेंसिंग जैसी तकनीकी का भी प्रभावी उपाय किया जा सकता है।

अगर सर्वेक्षण से संबंधित विसंगतियों को समाप्त कर दिया जाए अर्थात् मुआवज़ा सही व्यक्तियों तक पहुँच जाए तो राज्य के धन का सही उपयोग हो जाएगा।

प्रश्न: आप किसी पिछड़े हुए गाँव में डॉक्टर हैं। आपको सरकारी फेलोशिप मिली थी ताकि आप अपनी पढ़ाई को विदेश में जारी रख सकें, लेकिन आपने पिछड़े गाँव के लोगों की सेवा करने का रास्ता चुना। आपको पता चलता है कि इस गाँव में हर साल महामारी आती है, जिसमें कई लोगों की मृत्यु हो जाती है। अत: आपने इस महामारी से निपटने के लिये एक नई दवाई का निर्माण किया है ताकि एक भी व्यक्ति की जान न जा सके। किंतु यह गाँव रूढ़िवादी और परंपराओं से बंधा हुआ है तथा गाँव के व्यक्ति आपकी दवाओं का उपयोग करने से मना कर देते हैं जबकि इन दवाओं का उपयोग इनके स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है ताकि महामारी से बच सकें। उपर्युक्त प्रकरण में आप क्या निर्णय लेंगे? निर्णय की कारण सहित व्याख्या कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a doctor in a backward village. You had received a government fellowship to continue your studies abroad but you have chosen to serve the people of this backward village. You have come to know that every year an epidemic outbreak kills several people in the village. You have invented a new medicine to deal with this epidemic and to prevent deaths caused by it. But this village is tied in conservative beliefs and the people refuse to use your medicine despite it being an essential for their health and a way to defeat the epidemic.
In the above situation what will be your decision? Justify.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में मैं गाँव के व्यक्तियों को दवाओं का उपयोग करने के लिये प्रेरित करूंगा; क्योंकि इन दवाओं का उपयोग करने से ही इन व्यक्तियों को महामारी से बचाया जा सकता है। यह बात सत्य है कि गाँव के व्यक्तियों का रूढ़ियों और परंपराओं से बंधा होने के कारण दवाओं का उपयोग करवाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। लेकिन गाँव के एक भी व्यक्ति की मृत्यु न हो, यही मेरी प्रतिबद्धता है, जिसके लिये निम्नलिखित प्रयास किये जा सकते हैं-

- सर्वप्रथम, मैं गाँव के व्यक्तियों को समझाना-बुझाना अर्थात् 'पर्सुएशन' का उपयोग करूंगा; जिसके द्वारा गाँव के कुछ बुज़ुर्गों एवं युवा व्यक्तियों को इस समस्या से अवगत कराऊंगा और उनके सहयोग से गाँव के अन्य व्यक्तियों को भी दवाओं के सेवन के लिये कहा जा सकता है।
- गाँव के आस-पास मौजूद सिविल सोसायटी या सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से गाँव के व्यक्तियों को जागरूक किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मीडिया का भी उपयोग किया जा सकता है।
- गाँव में सरकार के सहयोग से विशेष जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा सकता है, जिसमें राजनीतिक व्यक्तियों और समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बुलाकर गाँव के व्यक्तियों से संवाद करवाकर महामारी के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सकती है।
- गाँव के जो व्यक्ति अत्यधिक रूढ़ि एवं परंपराओं से युक्त हैं और जो व्यक्ति इन दवाओं का सेवन न करने के लिये लोगों पर दबाव डालते है; उन्हें कानूनी कार्रवाई का भय दिखाया जा सकता है।

मुझे उम्मीद है कि उपर्युक्त प्रयासों के द्वारा गाँव के व्यक्तियों को दवाओं का सेवन करने के लिये प्रेरित किया जा सकता है तथा महामारी से बचाया जा सकता है। इस प्रकार मैं डॉक्टर होने के नाते ग्रामीण एवं वंचित वर्गों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने की प्रतिबद्धता का पालन कर सकता हूँ।

प्रश्न: आप एक पेशेवर खिलाड़ी हैं और एक खिलाड़ी के तौर पर आपको इतनी आर्थिक मदद नहीं मिलती है, जिससे आप अपनी तथा परिवार की ज़रूरतों को पूरा कर सकें। इसका नकारात्मक प्रभाव आपके प्रदर्शन पर भी पड़ रहा है। इसी क्रम में आपको विपक्षी टीम के प्रशासकों द्वारा फिक्सिंग में सम्मिलित होने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है। आपके परिवार की आर्थिक स्थिति लगातार गिरती जा रही है तथा आपके फिक्सिंग में सम्मिलित होने पर एक तरफ जहाँ आपके परिवार के जीवन-स्तर में सुधार होगा, वहीं दूसरी तरफ आपके प्रदर्शन में सुधार हो सकता है और आप एक खिलाड़ी के तौर पर नई उपलब्धियों को पा सकते हैं।

उपर्युक्त प्रकरण में आपके समक्ष कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं? प्रत्येक विकल्प के गुण-दोषों को उल्लिखित करते हुए समुचित निष्कर्ष दें। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a professional player but you do not get sufficient remuneration as a player to fulfill your and your family's needs. This also negatively impacts your performance. In this situation you are approached by the managers of opposition team to involve in fixing. Amidst the deteriorating financial condition of your family if you involve in the fixing not only the quality of life of your family but also your performance will improve and you can achieve new feats as a player.

In the above mentioned case what are the options available to you? Explain the pros and cons of each option to reach appropriate conclusion.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में मेरे समक्ष निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध हैं-

(क) मैं, विपक्षी टीम के प्रशासकों से फिक्सिंग में सम्मिलित होने के लिये 'हाँ' कह दूँ।

(ख) मैं, फिक्सिंग में सम्मिलित होने के लिये मना कर दूँ।

(ग) मैं, विपक्षी टीम के प्रशासकों को इस संबंध में कोई जवाब न दूँ अर्थात् इस संबंध में कोई निर्णय न लूँ।

प्रत्येक विकल्प के गुण-दोष निम्नलिखित हैं-

(i) फिक्सिंग में सम्मिलित होने पर मैं आर्थिक तंगी को दूर कर सकता हूँ जिससे मेरी तथा परिवार की व्यक्तिगत ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त, फिक्सिंग में सम्मिलित होने से प्रदर्शन को सुधार कर एक खिलाड़ी के तौर पर नई उपलब्धियाँ पा सकता हूँ।

वर्तमान डिजिटल मीडिया के युग में फिक्सिंग को पकड़ना अपेक्षाकृत आसान है; फिक्सिंग में पकड़े जाने पर मेरा कॅरियर समाप्त हो सकता है। इसके अतिरिक्त, 'अनैतिक साधनों' का उपयोग करते हुए सफलता को ज़्यादा दीर्घकालिक नहीं बनाया जा सकता है।

(ii) फिक्सिंग में सम्मिलित नहीं होने पर मेरी आर्थिक तंगी और ज़्यादा गहरी हो सकती है। साथ ही, मेरी तथा परिवार की व्यक्तिगत ज़रूरतें भी पूरी नहीं होंगी जिसका नकारात्मक प्रभाव मेरे प्रदर्शन पर पड़ेगा।

फिक्सिंग में न सम्मिलित होने पर भले ही अल्पकाल में मेरे प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव पड़े, किंतु दीर्घकाल में अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिये ज़रूरी है कि मैं फिक्सिंग में सम्मिलित न हूँ। एक खिलाड़ी के तौर पर 'स्पोर्ट्समैनशिप' होनी चाहिये, जो यही सिखाती है कि खेल में अनैतिक साधनों का उपयोग कर अपने प्रदर्शन को बेहतर बनाने का प्रयास नहीं करना चाहिये।

(iii) अगर मैं विपक्षी टीम के प्रशासकों को इस संबंध में अपना निर्णय न दूँ तो वे यही समझेंगे कि यह फिक्सिंग के लिये तैयार है जिससे मेरी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा का ह्रास होगा। अतः आवश्यक है कि मैं अपना निर्णय उनको तुरंत दे दूँ।

सार यही है कि एक पेशेवर खिलाड़ी के तौर पर मेरी सत्यनिष्ठा अपने खेल तथा टीम के प्रति हो और फिक्सिंग जैसे गलत कृत्यों में शामिल न हूँ। अतः मैं विकल्प न. (ख) को अपने लिये बेहतर मानता हूँ।

प्रश्न: आप किसी शहर में अपने परिवार से दूर रहकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करते हैं तथा आप अपने परिवार में माता-पिता की अकेली संतान हैं। आपको पता चलता है कि आपकी माताजी की तबीयत बहुत खराब हो गई है तथा उनकी देखभाल करने के लिये एक ज़िम्मेदार व्यक्ति की आवश्यकता है। चूँकि, आपके पिताजी को अपने कार्यक्षेत्र में जाना पड़ता है और उनकी नौकरी से आपके परिवार का पालन-पोषण होता है, इन परिस्थितियों में आपके पिताजी आपसे अपनी माताजी की देखभाल करने के लिये कहते हैं। अगले ही कुछ दिनों में आपकी संघ लोक सेवा आयोग की मुख्य परीक्षाएँ शुरू होने वाली हैं तथा यह आपका अंतिम अनिवार्य प्रयास है।

इन परिस्थितियों में आपके सामने क्या-क्या विकल्प उपलब्ध हैं? प्रत्येक विकल्प के गुण-दोषों का अवलोकन करते हुए समुचित निष्कर्ष दें। (250 शब्द, 20 अंक)

You prepare for civil services exam by staying in a city away from your family and you are the only child of your parents. You came to know that the health of your mother has deteriorated and a responsible person is required to take care of her. Your father has to go to his work and his job is essential to meet the needs of your family. In these circumstances your father asks you to take care of your mother. In the next few days, your Union Public Service Commission main examination is going to start and this is your last attempt.

In the above mentioned case what are the options available to you? Explain the pros and cons of each option to reach appropriate conclusion.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में मेरे निजी जीवन की ज़िम्मेदारी और कॅरियर के मध्य द्वंद्व है। दी गई परिस्थितियों में मेरे समक्ष उपलब्ध विकल्पों को उनके गुण-दोषों सहित नीचे बिंदुओं में स्पष्ट किया गया है-

- उपर्युक्त समस्या का एक विकल्प यह हो सकता है कि मैं माताजी की खराब तबीयत होने पर उनकी देखभाल के लिये घर चला जाऊँ, क्योंकि मैं अपने माता-पिता की अकेली संतान हूँ और संकट के समय मेरी यह ज़िम्मेदारी बनती है कि मैं सब कार्यों को छोड़कर उनके साथ रहूँ। घर वापस जाने की स्थिति में मैं मुख्य परीक्षा में शामिल नहीं हो पाऊंगा।
- मेरे समक्ष दूसरा विकल्प यह है कि मैं माताजी की तबीयत के बारे में ज़्यादा चिंता न करूँ और अपना ध्यान मुख्य परीक्षा पर लगाऊँ। मुख्य परीक्षा देने के बाद मैं माताजी की देखभाल करूँ। परंतु यह भी हो सकता है कि इस बीच माताजी की तबीयत और ज़्यादा बिगड़ जाए और जीवन भर के लिये खुद की नज़रों में गिर जाऊँ।

- चूँकि माताजी की खराब तबीयत में उनकी देखभाल के लिये ज़िम्मेदार व्यक्ति की आवश्यकता है। मैं किसी ज़िम्मेदार सहायक या सहायिका को उनकी देखभाल के लिये कह सकता हूँ और मैं अपनी मुख्य परीक्षा देने के बाद माँ की ज़िम्मेदारी संभालने के लिये आ जाऊंगा। परंतु यह भी हो सकता है कि सहायक या सहायिका अपनी ज़िम्मेदारी का पालन न करे, जिसके पश्चात् माताजी की तबीयत और ज़्यादा खराब हो जाए।
- मैं मुख्य परीक्षा तक अपने पिताजी को माँ की ज़िम्मेदारी के लिये कह सकता हूँ क्योंकि पिताजी, सहायक या सहायिका की अपेक्षा अधिक ज़िम्मेदारी से माताजी की खराब तबीयत को सुधारने का प्रयास करेंगे। किंतु इसके साथ ही पिताजी द्वारा ज़िम्मेदारी संभालने पर आर्थिक तंगी की समस्या पैदा हो सकती है।

समग्रत: परीक्षा के कुछ दिन पूर्व तक मैं माताजी के स्वास्थ्य का ख़्याल रखूंगा तथा कुछ दिन पूर्व मैं अपने पिताजी को माताजी की तबीयत की ज़िम्मेदारी दूंगा। इसके पश्चात् परीक्षा समाप्त होने के पश्चात् मैं वापस माताजी के स्वास्थ्य की ज़िम्मेदारी संभालूँगा।

प्रश्न: आप किसी बाल सुधारगृह में कार्यरत अधिकारी हैं। आप इन बालक व बालिकाओं के आचरण में सुधार तथा इनके जीवन स्तर में सुधार लाने का प्रयास करते हैं। लेकिन आपको पता चलता है कि कुछ अधिकारियों और कर्मचारियों के गठजोड़ से इनको अपराध करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है तथा इनका यौन शोषण किया जाता है। आप इन अधिकारियों और कर्मचारियों पर कार्रवाई करने का निर्णय लेते हैं, लेकिन इन व्यक्तियों द्वारा मीडिया में आपके बारे में गलत जानकारी फैला दी जाती है। प्रशासन आपसे उक्त समस्या का जवाब मांगता है।

(a) उक्त प्रकरण में आपके समक्ष कौन-कौन से नैतिक मुद्दे उपस्थित हैं?

(b) नीचे दिये गए विकल्पों के गुण-अवगुण को बताइये-

(i) आप छुट्टी पर चले जाएंगे।

(ii) आप अपने उच्चस्थ अधिकारी से इस संबंध में सलाह मांगेंगे और उसका पालन करेंगे।

(iii) आप मीडिया में जाकर अपनी बात को रखेंगे।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are working as an officer in a juvenile home. You try to improve the quality of life and conduct of these boys and girls. But you have come to know that with the nexus of some officials and employees they are encouraged to commit crimes and are sexually exploited. You decide to take action on such officers and employees. But they disseminate false information about you in the media. The administration asks for your response on the allegations.

(a) In the above situation, bring out the ethical issues present before you?

(b) Explain the pros and cons of the options given below:

(i) You will go on leave.

(ii) You will ask your senior officer for advice and will follow it.

(iii) You will keep your point in the media.

उत्तर : (a) उक्त प्रकरण में मेरे समक्ष एक प्रशासक के तौर पर निम्नलिखित नैतिक मुद्दे उपस्थित हैं-

- बाल सुधार गृह में कार्यरत अधिकारी के तौर पर मेरी यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि मैं इन बालक व बालिकाओं के जीवन-स्तर में सुधार का प्रयास करूँ। इनका यौन शोषण और अपराध के लिये प्रोत्साहन इनको बड़ा अपराधी बनाने के लिये प्रेरित करेगा।
- अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा झूठी सूचना फैलाने में मेरी सत्यनिष्ठा, सेवा भावना जैसे मूल्यों का परीक्षण है।
- मेरी यह नैतिक ज़िम्मेदारी है कि इन अधिकारियों और कर्मचारियों के द्वारा इन बच्चों के साथ जो दुर्व्यवहार किया गया है उसकी सज़ा दिलाऊँ।
- उपर्युक्त प्रकरण में यह हो सकता है कि मैं इन अधिकारियों व कर्मचारियों को बचाने का प्रयास करूँ और इसके बदले इनके द्वारा मीडिया में जो गलत सूचना मेरे बारे में दी गई है उसको वापस लेने को कहूँ जिससे मैं इस कानूनी प्रक्रिया से बच सकूँ।

उत्तर : (b) नीचे दिये गए विकल्पों के गुण-अवगुण निम्नलिखित हैं-

(i) आप छुट्टी पर चले जाएंगे।

गुण: छुट्टी पर चले जाने पर मैं इस समस्त विवाद से बच सकूंगा और छुट्टी से वापस आने के पश्चात् विवाद ठंडा होने पर मैं अपने कार्यक्षेत्र में लग जाऊंगा।

अवगुण: छुट्टी पर चले जाना, एक तरह से अपनी ज़िम्मेदारियों से भागने के समान है। एक अधिकारी के रूप में 'मेरी शपथ' यह कहती है कि हमें अपने कार्यक्षेत्र के प्रति समर्पण भाव व सत्यनिष्ठा अपनानी चाहिये।

(ii) आप अपने उच्चस्थ अधिकारी से इस संबंध में सलाह मांगेंगे और उसका पालन करेंगे।

गुण: उच्चस्थ अधिकारी से इस संबंध में सलाह मांगना एक बेहतर विकल्प है, क्योंकि अपने कार्यक्षेत्र के दौरान उन्हें इनसे संबंधित मुद्दों का सामना करना पड़ा होगा और इस संबंधित विवाद में एक बेहतर समाधान दे सकते हैं। मैं उच्चस्थ अधिकारी द्वारा दी गई सलाह को अपनी विवेकाधीन शक्तियों के अनुरूप अपनाऊंगा और जो सलाह उचित होगी उसे मानूंगा।

(iii) मीडिया में जाकर अपनी बात को जनता के सामने रखा जा सकता है ताकि सच सामने आ सके और मैं अपनी बात को स्पष्ट और पारदर्शी तरीके से रखूँ। हालाँकि, यह बात सच है कि एक अधिकारी के रूप में 'आचार संहिता' और 'नीति संहिता' होती है जिनका पालन करना एक प्रशासक के लिये अनिवार्य होता है। अत: मैं इन संहिताओं के दायरे में रहते हुए मीडिया का उपयोग करूंगा।

निष्कर्षत: बाल सुधारगृह में कार्यरत एक अधिकारी के तौर पर मेरी यह प्राथमिक ज़िम्मेदारी है कि मैं इन बच्चों के जीवन-स्तर को व्यापक एवं प्रगतिशील बनाऊँ। साथ ही इन कर्मचारियों एवं अधिकारियों को भी दंड मिलना चाहिये। इन सभी प्रयासों के लिये नैतिक रूप से ज़िम्मेदारी मेरी है कि बिना डर या दबाव के सत्यनिष्ठता से इन प्रयासों के लिये अग्रसर रहूँ।

प्रश्न: आप किसी ऐसे राज्य के मुख्य सचिव हैं जहाँ पर ज़हरीली शराब पीने के कारण कुछ लोगों की मृत्यु हो गई। आपको पता है कि 'गरीबी' में नशा (मद्यपान) जैसी प्रवृत्तियाँ गरीबी के दुश्चक्र को और गहरा देती हैं तो वहीं कुछ सामाजिक संगठनों, महिला संगठनों व विपक्ष द्वारा लगातार दबाव बनाया जा रहा है कि राज्य में शराबबंदी को लागू किया जाए। हाल ही में विभिन्न राज्यों द्वारा शराबबंदी लागू की गई और आपको पता चलता है कि शराबबंदी वाले राज्यों में इससे कुछ दूसरे प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो गईं, जैसे पड़ोसी राज्यों से शराब की अवैध तस्करी जिससे राज्य में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिला। तो वहीं इससे उन राज्यों की अर्थव्यवस्था पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा क्योंकि शराब की बिक्री से प्राप्त आय राज्य के राजस्व का मुख्य स्रोत है जिससे उन राज्यों में अनेक कल्याणकारी कार्यक्रमों को लागू करने में कठिनाई आ रही है। उपर्युक्त प्रकरण में आप सरकार को क्या निर्णय लेने का सुझाव देंगे? प्रभावी कारण सहित समुचित निष्कर्ष दें।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the chief secretary of a state where few people have died due to consumption of toxic liquor. You know that alcoholism in poverty deepens the vicious cycle of poverty. There are persistent pressures by some social organizations, women organizations and the opposition for enforcing the prohibition on liquor in the state. You have come to know that the prohibition of alcohol in some states has caused some other types of problems like illegal smuggling of alcohol from neighboring states, which has encouraged corruption in those states. It also has negative impact on the economy of those states because the revenue from the sale of liquor was the main source of revenue for them which helped them in implementation of many welfare programs.

In the above situation, what will be your recommendation to the government? With proper reasoning suggest appropriate conclusion.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में एक प्रशासक के रूप में यह द्वंद्व है कि वह 'मद्यपान' या नशा जैसी सामाजिक बुराइयों पर प्रतिबंध लगाए या फिर राज्य की अर्थव्यवस्था को मज़बूत करे जिससे विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं को लागू करके 'सामाजिक कल्याण' को बढ़ावा दे।

(क) उपर्युक्त समस्या का कारण ज़हरीली शराब पीने के कारण लोगों की हुई मृत्यु है। अत: ज़रूरी है कि राज्य में ज़हरीली शराब के निर्माण पर रोक लगाई जाए तथा ज़हरीली शराब बनाने वाले व्यक्तियों पर कानूनी कार्रवाई की जाए। किसी भी कल्याणकारी राज्य से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती है कि व्यक्तियों की इस प्रकार मृत्यु हो। इसके अतिरिक्त, ज़हरीली शराब बनाने जैसी क्रियाएँ राज्य में भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति को भी बढ़ाती हैं, जिस पर अंकुश लगाया जाना ज़रूरी है।

(ख) गौरतलब है कि मद्यपान और नशा जैसी प्रवृत्तियाँ किसी भी परिवार के गरीबी के 'दुष्चक्र' का कारण बनती हैं जिससे वह व्यक्ति और उसका परिवार बाहर नहीं निकल पाता है। एक प्रशासक के रूप में मेरी यह ज़िम्मेदारी है कि नशा जैसी प्रवृत्तियों के विरुद्ध लोगों को जागरूक किया जाए। इन जागरूक कार्यक्रमों में विभिन्न सिविल सोसायटी, सामाजिक समूह संगठन तथा मीडिया का सहारा लेकर इन्हें और ज्यादा प्रभावी बनाया जा सकता है। साथ ही, शिक्षा व्यवस्था में भी आधारभूत परिवर्तन किया जा सकता है।

(ग) उपर्युक्त समस्या का एक समाधान 'शराबबंदी' जैसा विकल्प भी हो सकता है। इस बात पर गौर करना ज़रूरी है कि शराब बिक्री राज्य की आय का प्रमुख राजस्व स्रोत होता है और शराबबंदी के कारण 'राजस्व हानि' होगी। किंतु किसी भी सभ्य समाज और कल्याणकारी राज्य में 'राजस्व हानि' को 'जनहानि' पर वरीयता नहीं दी जा सकती है। यह बात सत्य है कि भले ही अल्पकाल में राज्य की अर्थव्यवस्था पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़े, किंतु दीर्घकाल में राज्य के कुशल मानव संसाधन के लिये यह उपयोगी साबित होगा। इसके अतिरिक्त, राज्य के आय के स्रोत बढ़ाने के लिये वैकल्पिक स्रोत जैसे आर्थिक क्रियाओं को बढ़ावा देना, राज्य के संसाधनों का अनुकूलतम दोहन इत्यादि का सहारा लिया जा सकता है।

प्रश्न: आप एक अध्ययनरत छात्र हैं। आप अध्ययन के लिये किसी नए शहर में किराये के कमरे में रहते हैं। इसी दौरान आपने पाया कि आपकी मकान मालकिन काम करने वाली एक बच्ची को रोज़ किसी-न-किसी बात को लेकर प्रताड़ित करती है। आपसे एक दिन रहा नहीं गया, आपने मकान मालकिन से इस मामले में बात की लेकिन उसने इसे अपना व्यक्तिगत मामला कहकर गुस्से से टाल दिया। आपका शहर में कोई परिचित भी नहीं है। आपको पता है कि आपका मकान मालिक बहुत ही सक्षम एवं आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। उसका पड़ोसियों से भी अच्छा संबंध है। पुलिस में शिकायत करने पर आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

(a) इस संबंध में आपके सामने कौन-कौन सी नैतिक दुविधाएँ उत्पन्न होंगी?

(b) इस समस्या के समाधान के लिये आपके समक्ष कौन-कौन से विकल्प हैं? प्रत्येक विकल्प का परीक्षण करते हुए बतायें कि आप किस विकल्प का समर्थन करेंगे और क्यों? **(250 शब्द, 20 अंक)**

You are a student and live in a rented room in a new city for your studies. You find that your landlady tortures the girl child working at her home as help, everyday on some pretexts. One day when it became unbearable, you talked to the landlady about this. But by calling it her personal matter she angrily refused to talk about it. You have no acquaintance in the city. You know that your landlord is a very resourceful and also has criminal background. He has good relations with his neighbors also. You may face trouble if you complain to the police.

(a) In this situation what ethical dilemmas do you face?

(b) What are the options you have to solve this problem? Examine each option. Which one will you choose and why?

उत्तर: समाज में बच्चों के साथ किसी प्रकार का शारीरिक, लैंगिक या भावनात्मक दुर्व्यवहार व हिंसा करना बाल उत्पीड़न माना जाता है, बच्चों के साथ होने वाले उत्पीड़न में घरेलू नौकरों के रूप में कार्य करने वाले बच्चों के उत्पीड़न के मामले अधिक देखने को मिलते हैं। इन बच्चों को न सिर्फ शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है बल्कि मानसिक व कहीं-कहीं यौन शोषण के रूप में प्रताड़ित किये जाने की घटनाएँ भी देखने को मिलती हैं। समाज में एक तरफ बच्चों के लिये सरंक्षण के लिये तमाम संवैधानिक व वैधानिक उपाय किये जाते हैं। वहीं, दूसरी तरफ बच्चों के खिलाफ होने वाले इस प्रकार के उत्पीड़न के प्रति निष्क्रियता आम धारणा हो गई है। एक समतामूलक व प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिये इस प्रकार की गतिविधियों पर नियंत्रण लगाया जाना चाहिये।

उत्तर: (a) उपर्युक्त प्रकरण का अध्ययन करने पर मेरे समक्ष कुछ नैतिक दुविधाएं उत्पन्न होती हैं जिन्हें निम्न रूपों में देखा जा सकता है।

नैतिक दुविधाएँ

- एक तरफ बच्ची को शोषण से बचाना ज़रूरी है तो दूसरी तरफ, मेरा अध्ययन भी अत्यधिक प्रभावित नहीं होना चाहिये।
- बच्ची को मकान मालकिन के शोषण से मुक्त कराना आवश्यक है लेकिन इसके बाद बच्ची के समक्ष आर्थिक समस्या की विकट परिस्थिति उपस्थित हो जाएगी इस ओर भी ध्यान देना होगा।
- बच्चों से काम करवाना कानूनन अपराध है ऐसे में इस शोषण और कानून की अवहेलना को चुपचाप सहन करना सही नहीं होगा लेकिन साथ ही विधिक व पुलिस कार्यवाही के चक्र में उलझने की समस्या।
- शायद मकान मालकिन मुझे ही कमरा खाली करने को कहे, ऐसे में बच्ची का शोषण जारी रहने के साथ ही मेरे समक्ष आवास की समस्या।

(b) उपलब्ध विकल्प

- मैं इस मामले की अनदेखी कर सिर्फ अपने अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करूँ।
- मकान मालकिन से इस संबंध में बात कर उन्हें समझाने का प्रयास करूं और उन्हें इसके कानूनी प्रावधानों के बारे में समझाने के साथ ही उनसे मानवता के संदर्भ में भी इस शोषण को रोकने का आग्रह करूं।
- बच्ची से बात कर उसकी मन:स्थिति और आर्थिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में जानकारी प्राप्त करूँ और उसके परिवार से संपर्क स्थापित कर समस्या का समाधान करने का प्रयास करूं।
- बच्ची के शोषण की जानकारी वहाँ के निवासियों से साझा करूं और उनका मत जानने के साथ ही अगर कोई स्थानीय नागरिक समिति है तो उसे भी जानकारी दूँ।
- बच्ची के शोषण के चित्र को लेकर या वीडियो बनाकर बच्चों के लिये समर्पित किसी गैर-सरकारी संगठन को इसकी जानकारी दूँ और उनसे बच्ची को इस शोषण से मुक्त कराने के साथ ही पुलिस कार्यवाही और बच्ची के लिये समुचित व्यवस्था करने की प्रार्थना करूं।

प्रथम विकल्प का चयन करने से मैं अनावश्यक विवाद व समस्या से स्वयं को बचा सकूंगा लेकिन यह निर्णय समस्याओं के प्रति पलायनवादी मानसिकता को दर्शाता है, इसलिये मैं इस विकल्प का चयन नहीं करूंगा। दूसरा विकल्प एक आवश्यक प्रयास है लेकिन अगर मकान मालकिन में इतनी मानवीयता होती तो वो बच्ची का शोषण ही नहीं करती, ऐसे में इस विकल्प का प्रयोग कर बच्ची के शोषण को रोकना मुश्किल होगा। साथ ही यहाँ कानून का उल्लंघन हुआ है ऐसे में इस मामले में उचित कार्यवाही होनी ही चाहिये।

तीसरे विकल्प के प्रयोग से बच्ची की मानसिक स्थिति को जानकर उसे शोषण और अधिकारों के बारे में जानकारी दी जा सकती है, साथ ही उसके परिवार के लोगों से संपर्क कर उन्हें शोषण से अवगत कराया जा सकता है। शायद वे बच्ची को यहाँ काम पर न भेजें लेकिन दूसरी जगह भेजेंगे ऐसे में बाल श्रम का सिलसिला जारी रहेगा। अगर परिवार बच्ची को कहीं भी बाल श्रम करने हेतु न भेजने के लिये राजी हो तभी इस समस्या का समाधान हो सकता है लेकिन ऐसा होना मुश्किल लगता है।

चौथे विकल्प की प्रभाविता भी कम ही होगी क्योंकि मकान मालिक सक्षम और आपराधिक प्रवृत्ति का है। साथ ही हो सकता है कि अन्य घरों में भी ऐसा ही शोषण हो रहा हो, ऐसे में इस विकल्प की सफलता की संभावना भी कम ही है।

पाँचवां विकल्प का चयन सभी दृष्टियों से उचित है क्योंकि बाल श्रम कानूनन अपराध के साथ ही मानवीयता की दृष्टि से भी उचित नहीं है। बच्ची को शिक्षा व उसके बचपन जैसे मूल अधिकारों से वंचित किया जा रहा है, इसीलिये गैर-सरकारी संगठन से संपर्क कर और उन्हें आवश्यक सबूत उपलब्ध कराकर मकान मालकिन के खिलाफ कानूनी कार्यवाही होनी चाहिये जिससे अन्य लोगों में भी बाल श्रम को लेकर डर उत्पन्न होगा, साथ ही बच्ची के लिये समुचित शिक्षा और अन्य आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था गैर-सरकारी संगठन के माध्यम से हो सकेगी। मैं भी अपनी क्षमता अनुसार बच्ची की मदद करने का प्रयास करूंगा और अगर मुझे मेरा कमरा खाली भी करना पड़ा तो भी मुझे खुशी ही होगी कि मैंने शोषण के खिलाफ संघर्ष किया है।

प्रश्न: आप एक राजनीतिक पार्टी के अध्यक्ष हैं। शीघ्र ही विधान सभा सदस्यों का चुनाव होना है। आप किसी क्षेत्र विशेष के लिये किसी महिला उम्मीदवार को अपनी पार्टी की तरफ से टिकट देना चाहते हैं। आपको महिला के बारे में पता है कि वह बहुत ही साफ छवि की नेता है और समाज के पिछड़े व कमजोर वर्ग के लिये कुछ करने के लिये दृढ़ संकल्पित है। आपके द्वारा लिये गए इस निर्णय का पार्टी के अन्य सदस्य विरोध कर रहे हैं। उनका मानना है कि महिला उम्मीदवार जनआकांक्षाओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं है। वे उसकी जगह किसी पुरुष के नाम का सुझाव दे रहे हैं, जो एक आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है। उस पर पहले भी भ्रष्टाचार व अपराध से संबंधित केस चल रहे हैं लेकिन वह पिछले दो बार से चुनाव जीतता आ रहा है। पार्टी के अन्य सदस्यों द्वारा विरोध इस आधार पर भी किया जा रहा है कि आपका महिला से व्यक्तिगत संबंध है।

(a) उक्त परिस्थिति के संदर्भ में आपके समक्ष कौन-कौन सी चुनौतियाँ हैं?

(b) इस प्रकरण में आप कौन-सा निर्णय लेंगे? साथ ही आप अपने विरोधियों को शांत करने के लिये क्या कदम उठाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

You are the president of a political party. Legislative Assembly elections are to be conducted soon. You want to give a ticket from your party to a female candidate. You know that the woman has a very clear image and is determined to do something for the backward and weaker sections of society. Other members of the party are opposing this decision taken by you. They believe that the woman candidate is not able to fulfill the wishes of the people. They are suggesting a man's name in her place, who is a person of criminal antecedent. Cases of corruption and crime are already lodged against him. He has been winning the election for the last two terms. The members of the party are also opposing on the basis that you have a personal relationship with the lady.

(a) What are the challenges you have in this situation?

(b) What will be your decision in this case? What steps will you take to pacify your opponents?

उत्तर: समाज में महिलाओं को हेय व निर्बल दृष्टि से देखने की अवधारणा बहुत प्राचीन समय से ही प्रचलन में रही है। बिना किसी वजह से हर मामले में उन्हें कमज़ोर मानकर उनकी प्रतिभा को दबा दिया जाता है। साथ ही, समाज विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा दिये जाने वाले उनके योगदान से भी अछूता रह जाता है। राजनीतिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को कम महत्त्व दिया जाता है जिसके कारण कई अयोग्य, भ्रष्ट व आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों का समावेश विभिन्न राजनीतिक पदों में होने लगता है। जबकि पिछले कुछ वर्षों को अगर उदाहरण के रूप में देखें तो महिलाओं की छवि, राजनीतिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा बेहतर रही है। विभिन्न सरकारी व गैर-सरकारी एजेंसियाँ भी इसका समर्थन करती हैं।

उत्तर: (a) उपर्युक्त प्रकरण का अवलोकन करने पर इस परिस्थिति के संदर्भ में कुछ चुनौतियाँ उत्पन्न होंगी, जिन्हें निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

- महिला को टिकट देने से पार्टी के अन्य सदस्यों द्वारा मेरे अध्यक्ष पद को लेकर विरोध किया जा सकता है।
- महिला उम्मीदवार की जगह पुरुष उम्मीदवार को पार्टी का टिकट देने से एक योग्य, ईमानदार व सफल छवि की महिला उम्मीदवार को नज़रअंदाज़ करना होगा, साथ ही इससे एक भ्रष्ट व्यक्ति का पार्टी में पदार्पण होगा जिससे पार्टी की छवि धूमिल हो सकती है, मेरे द्वारा उठाए गए इस कदम से चुनाव में परिणाम को लेकर विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।
- महिला उम्मीदवार को टिकट दिये जाने को पार्टी में विरोध कर रहे लोगों द्वारा इस आधार पर तूल दिया जा सकता है कि मैं पार्टी में व्यक्तिगत संबंधों को महत्त्व दे रहा हूँ, साथ ही इससे मेरी व्यक्तिगत छवि को धूमिल किया जा सकता है।

उत्तर: (b) उपर्युक्त प्रकरण के संदर्भ में मैं महिला उम्मीदवार को ही टिकट देने का निर्णय लूंगा क्योंकि महिला उम्मीदवार साफ छवि की नेता होने के साथ-साथ समाज के कमज़ोर वर्ग के लोगों के लिये कुछ करने के लिये दृढ़ संकल्पित है। पार्टी में ऐसे सदस्यों को स्थान देने से पार्टी की छवि, समाज में और मज़बूत होगी। मेरे द्वारा लिये गए इस निर्णय से पार्टी में एक आपराधिक प्रवृत्ति के भ्रष्ट नेता का प्रवेश होने से पार्टी को होने वाले नुकसान से भी बचाया जा सकेगा।

मैं इस मामले में अपने विरोधियों को शांत कराने के लिये सबसे पहले पार्टी में शामिल सभी सदस्यों को लेकर कार्यकारिणी की एक बैठक बुलाऊंगा तत्पश्चात् बैठक में प्रमुख उम्मीदवार को टिकट दिये जाने में इस कदम से पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को लेकर भी पार्टी के सदस्यों को परिचित कराऊंगा। साथ ही, महिला उम्मीदवार को लेकर सदस्यों की धारणा में बदलाव लाने का भी प्रयास करूंगा।

इस संदर्भ में अतीत में सफल कुछ महिला उम्मीदवारों की सूची प्रस्तुत करूंगा जिन्होंने समाज में अपने कार्यों द्वारा लोगों में एक सशक्त छवि बनाई है, साथ ही इससे पार्टी की छवि को मज़बूती भी मिली है। जहाँ तक सदस्यों द्वारा महिला से मेरे व्यक्तिगत संबंधों को लेकर विरोध किये जाने की बात है, मैं महिला के संबंध में उसकी योग्यता का परिचय देते हुए बिना किसी पक्षपात के टिकट दिये जाने के संकल्प की बात को दोहराऊंगा। ज़रूरत पड़ने पर उस महिला को विरोध करने वाले सदस्यों से व्यक्तिगत रूप से परिचित कराऊंगा, इस मामले में सफाई प्रस्तुत करके विरोधियों को शांत कराने का प्रयास करूंगा।

प्रश्न: आपको एक अत्यधिक पिछड़े ज़िले का ज़िलाधिकारी बनाया गया है। ज़िले में जादू-टोना, झाड़-फूंक पर अत्यधिक विश्वास किया जाता है। जिले के एक गाँव में पिछले कुछ दिनों से बच्चे किसी संक्रामक रोग के शिकार हो रहे हैं तथा इसके कारण कुछ बच्चों की मृत्यु भी हो गई। एक निर्धन महिला जो भिक्षावृत्ति कर जीवनयापन करती है, के ऊपर गाँव के लोग इस आपदा का आरोप लगा रहे हैं। गाँव के निवासियों द्वारा उस महिला को पकड़कर एक खम्भे में बांधकर डायन कहकर यातना दी जा रही है। इस यातना के कारण उस महिला की मृत्यु हो सकती है।

(a) समाज में घटित होने वाले इस प्रकार के प्रकरण को आप किस रूप में देखते हैं?

(b) इस प्रकरण के संबंध में आपके पास कौन-कौन से विकल्प हैं? इस संदर्भ में आप किस विकल्प का चुनाव करेंगे? तर्क के साथ चर्चा करें। (250 शब्द, 20 अंक)

You have been appointed as the District Magistrate of an extremely backward district. Sorcery is highly practiced in the district. For the last few days in a village in the district, children are becoming victims of some infectious disease and due to this some children have also died. People of the village are blaming a poor woman for this who makes a living by begging. The villagers have held her captive, tied her to a pillar and are torturing her by calling her a witch. The woman may die due to this torture.

(a) How do you look at these type of incidents happening in the society?

(b) What are the options available to you? Which option would you choose? Discuss.

उत्तर: आज भारत में महाराष्ट्र व कर्नाटक के बाद पूरे देश में जादू-टोना, झाड़-फूँक आदि के प्रति अंधश्रद्धा विरोधी कानून की सख्त ज़रूरत है ताकि आस्था की दुहाई देते हुए इस प्रकार के कृत्यों में लिप्त तमाम गरीब, वंचितों को छल से बचाया जा सके। देश में पिछड़े हुए कुछ ज़िलों में अभी भी इस प्रकार के कृत्यों के प्रति श्रद्धा दिखाई देती है, एक प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिये इस पर प्रभावी नियंत्रण किये जाने की आवश्यकता है।

उत्तर: (a) समाज में घटित होने वाले इस प्रकार के प्रकरणों से यह पता चलता है कि अभी भी समाज के कुछ क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों में वैज्ञानिक व तार्किक चेतना का अभाव है जिसके कारण इस प्रकार की गतिविधियों में वृद्धि हो रही है। इस प्रकार के प्रकरण को देखने से यह अंदाजा भी लगाया जा सकता है कि इस अंधश्रद्धा के कारण कुछ लोगों के मानवाधिकारों का उल्लंघन हो रहा है, साथ ही समाज के कुछ वर्गों में अभी भी शिक्षा व जागरूकता की कमी है। उस क्षेत्र विशेष में चिकित्सा व्यवस्था का अभाव है। अतीन्द्रिय व दुष्ट शक्तियों के प्रति लोगों का विश्वास अभी भी प्रबल है। साथ ही, इस प्रकार के मामलों को देखने से यह अंदाजा भी लगता है कि सरकार द्वारा लोगों में शिक्षा व जागरूकता लाने के लिये किये जाने वाले प्रयासों में कमी है जिसका कारण विभिन्न सरकारी योजनाओं के अप्रभावी क्रियान्वयन को माना जा सकता है।

उत्तर: (b) उपर्युक्त परिस्थिति के संदर्भ में निम्नलिखित विकल्पों का चयन किया जा सकता है-

- मैं इस घटना को नज़रअंदाज़ कर दूँ।
- अपनी कार्यवाही सिर्फ महिला को सुरक्षित करने तक ही सीमित रखूं।
- अपने उच्च अधिकारियों से संपर्क कर उनसे दिशा-निर्देश प्राप्त करूं और उसी अनुरूप कार्यवाही करूँ।
- बच्चों की संक्रामक रोगों से मृत्यु हो रही है, इसकी रोकथाम के लिये किये गए उपायों और जागरूकता के संबंध में अगर कोई लापरवाही हुई है तो आवश्यक कार्यवाही कर संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को दण्डित करूँ।

अगर प्रथम विकल्प अपनाकर मैं इस घटना को नज़रअंदाज़ करता हूँ तो यह एक गंभीर लापरवाही होगी शायद ग्रामीण उस वृद्ध महिला की हत्या कर दें और अगर मैं लापरवाही कर उचित कार्यवाही नहीं करता हूँ तो मैं भी एक रूप से इस कृत्य में भागीदार बन जाऊंगा। अत: मैं इस विकल्प का चयन नहीं करूंगा।

द्वितीय विकल्प का चयन कर मैं पुलिस प्रशासन को वृद्ध महिला को सुरक्षित करने का निर्देश दूँगा लेकिन इस कार्यवाही से शायद ग्रामीणों और पुलिस के बीच हिंसा हो सकती है, इसीलिये इस घटना में सिर्फ पुलिस कार्यवाही ही नहीं बल्कि सिविल अधिकारियों को भी अपनी उचित भूमिका का निर्वाह करना होगा। अत: मैं इस विकल्प का भी चयन नहीं करूंगा।

तृतीय विकल्प के अनुसार, अपने उच्च अधिकारियों से संपर्क कर उनसे दिशा-निर्देश प्राप्त करूंगा। लेकिन इस प्रक्रिया में वक्त लग सकता है और इस प्रकरण में त्वरित कार्यवाही की आवश्यकता है। अत: यह विकल्प भी अधिक प्रभावी नहीं लगता है।

चौथे विकल्प के अंतर्गत बच्चों की संक्रामक रोगों से मृत्यु हो रही है, ऐसे में क्या कोई प्रशासकीय लापरवाही हुई है जिससे बच्चों को उचित इलाज नहीं मिल सका और लोगों को जागरूक नहीं किया जा सका। अत: इस संबंध में भी दोषियों पर आवश्यक कार्यवाही होनी चाहिये लेकिन इस समय प्राथमिकता महिला को सुरक्षित करने की होनी चाहिये।

अत: अंतिम विकल्प का प्रयोग कर मैं स्वयं त्वरित रूप से गाँव में पुलिस बल को लेकर जाऊंगा और ग्रामीणों को समझाकर या थोड़ा बल प्रयोग कर महिला को सुरक्षित करूंगा। आवश्यक हुआ तो ग्रामीणों को उनके आपराधिक कृत्य के संबंध में जानकारी देकर उन पर आपराधिक मुकदमें की चेतावनी भी दूँगा। वृद्ध महिला को आवश्यक चिकित्सा उपचार के लिये अस्पताल भेजने की व्यवस्था करूंगा। इसके पश्चात् संक्रामक रोग के उपचार और जागरूकता की कमी के लिये ज़िम्मेदार लोगों पर उचित कार्यवाही करूंगा। यह सुनिश्चित करने का प्रयास करूंगा कि इस संक्रामक रोग से बच्चों की मृत्यु न हो, इसके साथ ही पुलिस को फर्ज़ी बाबाओं और तांत्रिकों के खिलाफ आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दूँगा। साथ ही, ज़िले में अंधविश्वासों के खिलाफ एक जनजागरूकता कार्यक्रम चलाने का भी प्रयास करूंगा।

प्रश्न: आप किसी ज़िले में पुलिस निरीक्षक के पद पर कार्यरत हैं, आपके ज़िले के कुछ दबंग लोगों द्वारा शराब का अवैध रूप से निर्माण किया जा रहा है। शराब बनाने वालों का अपने क्षेत्र के विधायक से अच्छे संबंध हैं; साथ ही, इस प्रकार की गतिविधियों में वह स्वयं भी सहयोग कर रहा है। इस प्रकार के बनने वाले शराब के सेवन से लोगों के स्वास्थ्य पर अत्यधिक विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। यहाँ तक कि कुछ लोगों की मृत्यु भी इसके कारण हुई है। आप इस प्रकार की गतिविधियों में लिप्त व्यक्तियों के खिलाफ कार्यवाही करते हैं तो इनके द्वारा रिश्वत दिये जाने की पेशकश की जाती है। आपके द्वारा मना किये जाने पर गंभीर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी जाती है।

(a) आपके समक्ष इस प्रकरण में कौन-से विकल्प मौजूद हैं?

(b) प्रत्येक विकल्प का परीक्षण करते हुए बेहतर विकल्प सुझाएँ। (250 शब्द, 20 अंक)

You are appointed as a Superintendent of Police in a district. Alcohol is being illegally produced by some influential people in your district. The wine makers have good relations with the local MLA who is also collaborating in such activities. Consumption of alcohol produced in such a manner has been making a profound adverse impact on people's health. Some people have even died due to this. If you take action against persons engaged in such activities, they offer you bribe. When you refuse, you are warned to suffer severe consequences.

(a) What are the options available to you?

(b) Examine each option and suggest the best alternative.

उत्तर: भारत के कुछ राज्यों के कुछ ज़िलों में शराब के अवैध निर्माण का कारोबार खूब फलता-फूलता रहा है। इस प्रकार के कारोबार में वहाँ के स्थानीय व दबंग लोगों की संलिप्तता तो पाई ही जाती है साथ ही इसमें वहाँ के स्थानीय राजनीतिज्ञों का सहयोग भी होता है, जिसके कारण इस प्रकार के अपराध में लिप्त लोगों को शह मिलती है और इन पर कानूनी कार्यवाही करने में भी बाधा आती है। शराब के इस प्रकार के उत्पादन में कई बार ज़हरीले तत्त्व पाए जाते हैं जिसके सेवन से कई लोगों की जान तक चली जाती है। इस प्रकार से बनी शराब की कीमत कम होने के कारण इसका सबसे अधिक सेवन गरीब लोग ही करते हैं जिसके कारण उनके स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसी घटनाएँ आए दिन समाचारों में देखने को मिलती हैं। इस प्रकार के अवैध कारोबार पर नियंत्रण लगाने के लिये प्रभावी प्रयास करना चाहिये।

उत्तर: (a) उपर्युक्त परिस्थिति के संदर्भ में मेरे समक्ष मौजूद विकल्पों को निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

- चूँकि इस मामले में आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों व राजनीतिक रूप से सशक्त लोगों की भूमिका है। अत: मुझे अपने व्यक्तिगत जीवन को जोखिम में डालने से बचने के लिये इस मामले को पूरी तरह नज़रअंदाज़ करना चाहिये।
- मुझे त्वरित पुलिस कार्यवाही करनी चाहिये जिससे इस प्रकार के अवैध शराब के उत्पादन को रोका जा सके एवं अपराधियों को दंड दिया जा सके।
- उच्च अधिकारियों से संपर्क कर उनसे दिशा-निर्देश प्राप्त कर कार्यवाही करूंगा।

उत्तर: (b) उपर्युक्त में से पहले विकल्प का चयन करने से मेरे व्यक्तिगत हित को क्षति पहुँचने की किसी भी संभावना को समाप्त करता है जिससे मेरा जीवन पूर्ववत की भाँति यथावत् आराम से चलता रहेगा और मैं अनावश्यक रूप से अपने व अपने परिवार को किसी जोखिम में डालने से स्वयं को बचा सकूँगा लेकिन मेरे इस निर्णय से इस प्रकार के अवैध कारोबार में लिप्त व्यक्तियों का मनोबल बढ़ेगा और वहीं शराब के अवैध कारोबार पर नियंत्रण न लगने से कई और लोगों की जान जा सकती है। साथ ही, इस विकल्प का चयन मेरी नैतिकता, ईमानदारी व सत्यनिष्ठता पर भी प्रश्नचिह्न उत्पन्न करता है, अत: इस विकल्प का चयन करना सही नहीं होगा।

दूसरे विकल्प का चयन करना तो नैतिक दृष्टि से सही है लेकिन त्वरित कार्यवाही करने से इस कारोबार में लिप्त दबंग लोग सतर्क हो जाएंगे। चूँकि इनके यहाँ के विधायकों से अच्छे संबंध हैं, अत: मुझे रिश्वत जैसे मामलों में फँसाया जा सकता है, साथ ही मेरा स्थानांतरण कहीं और कराया जा सकता है। इसलिये त्वरित कार्यवाही करने का निर्णय लेना तात्कालिक रूप से सही नहीं होगा।

उपर्युक्त दोनों विकल्पों को अस्वीकार करने के बाद मैं तीसरे विकल्प का चयन करना सही समझूंगा। मैं अपने उच्च अधिकारियों को संपूर्ण प्रकरण से अवगत कराऊंगा और उनसे उचित दिशा-निर्देश प्राप्त करने का प्रयास करूंगा। उनके दिशा-निर्देशों को अपनी कार्यवाही में यथासंभव सम्मिलित करने का प्रयास करूंगा और पुलिस दल-बल के साथ अवैध शराब के ठिकानों पर कार्यवाही कर उन्हें नष्ट करूंगा। साथ ही इसके बाद मीडिया और नागरिकों के सहयोग से शराब के विरुद्ध जनजागरूकता कार्यक्रम चलाने का प्रयास करूंगा और जहाँ तक दबंगों की धमकी का सवाल है, एक पुलिस निरीक्षक होकर अगर मैं उनकी धमकी से डरूंगा तो अपराधियों के हौसले बुलंद हो जाएंगे तथा लोगों का पुलिस से विश्वास उठ जाएगा। अत: मैं पूरी ईमानदारी, निडरता, सत्यनिष्ठा और बिना किसी राजनीतिक दबाव के कार्यवाही करूंगा।

प्रश्न: अभी हाल ही में आपके बड़े भाई की शादी हुई है। आपके माता-पिता परंपरागत एवं रूढ़िवादी सोच रखते हैं। आपके भाई की पत्नी का चयन किसी सरकारी पद हेतु हुआ है। आपके माता-पिता द्वारा इस पद को न धारण करने की स्वीकृति ज़ाहिर की जाती है। उनका मानना है कि औरतें घर का सम्मान होती हैं, बाहर जाकर नौकरी करने से परिवार के सम्मान में कमी आ सकती है। आपके परिवार का सामाजिक परिवेश भी इसी तरह की रूढ़िवादी व परंपरागत सोच वाला है। आपके बड़े भाई की पत्नी नौकरी करना चाहती हैं और इसके लिये परिवार का विरोध भी करती हैं। घरवालों के अड़ियल रवैये के कारण मामला तलाक तक पहुँच जाता है।

(a) उक्त परिस्थिति में आपके समक्ष कौन-कौन सी नैतिक दुविधाएँ हैं?

(b) इस मामले में आपके पास कौन-कौन से विकल्प हैं? प्रत्येक विकल्प का परीक्षण करते हुए बेहतर विकल्प सुझाएँ। (250 शब्द, 20 अंक)

Recently your elder brother has got married. Your parents are of traditional and conservative mindset. Your sister-in-law has been selected for a government post. Your parents are opposed to her taking up the job. They believe that women are honour of the home and respect of the family will be lowered by their going out at work. The social background of your family is also rooted in similar conservative and traditional mindset. Your sister-in-law wants to work and for this she is willing to oppose the family view. Due to the irreconcilable attitude of the family, the matter has reached to the point of divorce.

(a) What ethical dilemmas do you have in the above situation?

(b) What are the options available to you? Examine each option and suggest the best one.

उत्तर: समाज में स्त्री को सभी विरोधी व रूढ़िवादी विचारों से मुक्त करके स्त्री-पुरुष समानता लाए जाने की बात तो हमेशा ही चर्चा का विषय रहती है लेकिन अभी भी सम्मान के नाम पर स्त्रियों के साथ भेदभाव जारी है। कभी इस सम्मान के नाम पर सार्वजनिक जीवन में भाग लेने से स्त्रियों को मना किया जाता है तो कभी स्त्रियों को मिलने वाले अवसर से उन्हें वंचित कर दिया जाता है। लेकिन सच्चाई यही है कि बिना महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सम्मिलित किये तथा उनको प्राप्त होने वाले अवसरों की स्वीकृति दिये बिना महिलाओं का सशक्तीकरण संभव नहीं है। अत: समाज को महिलाओं के प्रति सोच बदलने की आवश्यकता है।

उत्तर: (a) उपर्युक्त प्रकरण का अवलोकन करने पर मेरे समक्ष निम्न नैतिक दुविधाएँ उत्पन्न होंगी-

- मेरे द्वारा इस मामले में चुप रहना तथा अपने माता-पिता और भाई का सहयोग करना क्या नैतिक दृष्टि से उचित कदम होगा?
- इस मामले में अपने बड़े भाई की पत्नी का सहयोग करना व उसका पक्ष रखने पर मेरे माता-पिता और भाई रुष्ट हो सकते हैं।
- इस जटिल सामाजिक परिवेश में रहने वाले अपने परिवार के परिजनों की रूढ़िवादी व परंपरागत सोच बदलने में क्या मैं सफल हो पाऊंगा।

उत्तर: (b) उपर्युक्त मामले के संदर्भ में निम्न विकल्पों का चयन किया जा सकता है-

- मैं इस मामले से पूरी तरह तटस्थ रहूँ, क्योंकि सामाजिक परिवेश जटिल होने के कारण माता-पिता और भाई की सोच में परिवर्तन संभव प्रतीत नहीं होता है।
- मैं अपने माता-पिता व भाई का समर्थन करूं तथा इस मामले में उनका पूरा सहयोग करूं।
- मैं इस मामले में अपने माता-पिता और भाई से बात करूंगा, उन्हें समझाने का प्रयास करूंगा।

उपर्युक्त विकल्पों में पहले विकल्प का चयन में अगर व्यक्ति हित की दृष्टि से देखा जाए तो इससे मैं अपने आप को अनावश्यक रूप से किसी विवाद में पड़ने से स्वयं को बचा सकूँगा लेकिन इस विकल्प का चयन किसी भी दृष्टि से उचित नहीं होगा क्योंकि इस विकल्प का चयन स्वार्थ व पलायनवादिता की ओर संकेत करता है, साथ ही इस विकल्प का समर्थन मेरी कर्त्तव्यनिष्ठता, उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों के पालन पर भी प्रश्नचिह्न उत्पन्न करता है। अत: इस विकल्प का समर्थन नहीं किया जा सकता।

दूसरे विकल्प का समर्थन करने से मैं अपने परिवार के सदस्यों से पहले से और बेहतर संबंध बनाने में तो सफल रहूँगा लेकिन इस विकल्प का समर्थन नैतिक दृष्टि से सही नहीं होगा क्योंकि इस विकल्प के समर्थन से महिला के अधिकारों का हनन होगा, साथ ही इस विकल्प का चयन मेरी वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता जैसे मूल्यों पर सवाल खड़ा करता है।

उपर्युक्त दोनों विकल्पों को अस्वीकार करने के बाद मैं एक बेहतर विकल्प के रूप में तीसरे विकल्प का समर्थन करूंगा क्योंकि महिलाओं को भी सार्वजनिक जीवन जीने की आज़ादी मिलनी चाहिये, किसी महिला के द्वारा सरकारी पद धारण करने मात्र से किसी के परिवार के सम्मान में कोई कमी नहीं आती, इस बात का समर्थन मैं आज समाज में उन्नति के शिखर पर पहुँच चुकी, तमाम महिलाओं को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करके करूंगा, जिससे इन महिलाओं के परिवार के सम्मान में वृद्धि हुई है, न कि कमी आई है। साथ ही मैं अपने परिजनों को यह समझाने का प्रयास भी करूंगा कि तलाक की स्थिति से हमारा परिवार बिखर सकता है। इस विकल्प में सभी उचित मापदंडों का पालन किया गया है, इस विकल्प में अपने परिवार को बचाने का प्रयास तो किया ही गया है, साथ ही यहाँ महिला अधिकारों के संरक्षण का समर्थन भी किया गया है।

प्रश्न: आपको किसी चुनाव क्षेत्र का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया है। आपके चुनाव क्षेत्र में एक ऐसे प्रत्याशी का चुनाव होना है जो आपराधिक प्रवृत्ति का व्यक्ति है, साथ ही उसके बारे में एक आम धारणा यह भी है कि उसने पूर्व के चुनावों में धांधली करके जीत हासिल की है। यह प्रत्याशी आपसे संपर्क करके चुनाव में अनियमितता किये जाने का दबाव बना रहा है। आपके द्वारा उसकी मांग को अस्वीकृत किये जाने पर अंजाम भुगतने की चेतावनी दी जाती है।

(a) चुनावों में होने वाले इस प्रकार के प्रकरण को आप किस रूप में देखते हैं? आपके अनुसार चुनाव में ऐसी गतिविधियों पर नियंत्रण हेतु क्या किया जाना चाहिये?

(b) आपके समक्ष कौन-कौन से विकल्प हैं? प्रत्येक विकल्प की समीक्षा चर्चा करते हुए बेहतर उपाय सुझाएँ।

(250 शब्द, 20 अंक)

You have been appointed as the Chief Electoral Officer of a constituency. In your constituency, one candidate is a person of criminal antecedent, about whom a general belief is also that he has won the previous

elections by rigging. The candidate is pressurizing you to allow irregularities in elections. If you reject the demand, you have been warned of unpleasant consequences.

(a) How do you look at this type of episodes during elections? According to you, what should be done to control such activities in elections?

(b) What are the options available to you? Examine each option and suggest the best one.

उत्तर: चुनाव में बढ़ता हुआ भ्रष्टाचार लोकतंत्र के मूलभूत सिद्धांतों पर चोट करता है, इसके कारण जन-आकांक्षाओं पर तो विपरीत प्रभाव पड़ता ही है। साथ ही राजनीति में भ्रष्टाचार व धन-बल का प्रभुत्व भी बढ़ता है, विधानसभा व लोकसभा में पहुँचने वाले ऐसे लोगों की वजह से राजनीति का माहौल खराब होता है जिसकी परिपाटी देश के विकास के अवरुद्ध होने के रूप में होती है। अत: एक स्वस्थ लोकतंत्र के आदर्शों की स्थापना हेतु चुनाव में इस प्रकार की गतिविधियों पर नियंत्रण लगाया जाना आवश्यक है।

उत्तर: (a) उपर्युक्त प्रकरण के संदर्भ का अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि अभी भी चुनाव में भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति वाले लोगों का प्रभुत्व है तथा धन-बल का प्रयोग कर आपराधिक प्रवृत्ति के लोग राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं, साथ ही इस प्रकरण में यह बात भी उभरकर सामने आती है कि विभिन्न राजनीतिक दल अभी भी कुछ भ्रष्ट व आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को टिकट वितरित कर रहे हैं और ऐसे लोगों को शह भी दे रहे हैं। साथ ही, इस प्रकरण से यह अंदाजा भी लगाया जा सकता है कि विभिन्न राजनीतिक दल ऐसे लोगों को टिकट देकर अपने व्यक्तिगत संबंधों को जनाकांक्षाओं की तुलना में अधिक महत्त्व दे रहे हैं जिसके कारण राजनीति में ऐसे लोगों का प्रवेश संभव हो पाता है।

चुनाव में होने वाली इस प्रकार की गतिविधियों हेतु निम्न उपाय किये जाने चाहिये-

- आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को चुनाव लड़ने से रोका जाना चाहिये।
- अवैध मतदान पर प्रभावी नियंत्रण का उपाय किया जाना चाहिये।
- मतदाताओं को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने का प्रयास करना चाहिये। इसके लिये चुनाव में सुरक्षा बलों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिये।

उत्तर: (b) उपर्युक्त प्रकरण के संदर्भ में निम्न विकल्पों का चयन किया जा सकता है-

- मैं प्रत्याशी द्वारा अनियमितता किये जाने के दबाव को स्वीकार कर लूँ।
- मैं इस मामले पर त्वरित कार्यवाही करते हुए उसकी गिरफ्तारी का आदेश दूँ।
- मैं विश्वस्त साक्ष्यों के साथ इस मामले को चुनाव आयुक्त के समक्ष पेश करूं। इस मामले में प्रत्याशी की उम्मीदवारी निरस्त करने व उसके खिलाफ कार्यवाही करने का आदेश देने की सिफारिश करूंगा। मामले में मीडिया का सहारा भी लिया जा सकता है।

उपर्युक्त विकल्पों में से पहले विकल्प का चयन करने से मुझे व्यक्तिगत लाभ हो सकता है, साथ ही मैं एक आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्ति से किसी प्रकार के विवाद की संभावना से स्वयं को बचा सकता हूँ; लेकिन इस विकल्प का चयन करने से मेरी नैतिकता, ईमानदारी व सत्यनिष्ठा पर प्रश्नचिह्न लगता है। अत: इस विकल्प का चयन करना किसी भी दृष्टि से सही नहीं होगा। दूसरे विकल्प का चयन करना नैतिक दृष्टि से तो सही है लेकिन इस मामले में आपको फँसाया भी जा सकता है। साथ ही प्रत्याशी साँठ-गाँठ कर आरोपों से मुक्त हो सकता है।

तीसरे विकल्प का चयन करना नैतिक दृष्टि से पूरी तरह उचित है क्योंकि इस विकल्प में सभी उचित मापदंडों का क्रमबद्ध पालन किया गया है। साथ ही, इस विकल्प से मेरी सत्यनिष्ठा, ईमानदारी जैसे मूल्यों का भी संरक्षण हो रहा है। अत: मैं एक बेहतर विकल्प के रूप में इसी विकल्प का चयन करना उचित समझूँगा।

प्रश्न: आप किसी ज़िले में पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्यरत हैं और आपके ज़िले में नक्सली गतिविधियाँ संचालित हैं। इन नक्सली गतिविधियों से संबंधित जाँच करने पर आपको पता चलता है कि इन नक्सलवादी लोगों से राजनीतिक नेताओं और कुछ स्थानीय व्यक्तियों का गठजोड़ है तथा इस गठजोड़ के कारण शासन के विकास कार्यों को बाधा पहुँचती है, जिससे यह क्षेत्र सामाजिक आर्थिक दृष्टि से पिछड़ गया है। इन लोगों द्वारा आप पर दबाव डाला जाता है कि आप भी इस गठजोड़ में शामिल हो जाएँ, क्योंकि इस पद पर जितने भी व्यक्ति आते हैं, वो इस गठजोड़ का लाभ लेकर आर्थिक प्रगति करते हैं और साथ ही उपर्युक्त क्रियाकलापों में सम्मिलित न होने पर आपको और परिवार के लोगों को जान से मारने की धमकी दी जाती है।

उपर्युक्त प्रकरण में आपके सामने क्या विकल्प हैं? प्रत्येक विकल्प के गुण-अवगुण बताइये। (250 शब्द, 20 अंक)

You are Superintendent of Police of a district and naxal activities are happening in your district. After investigating these naxal activities you discover that the naxalites operate in alliance with political leaders and some local people. And due to this alliance, the development work of the government is hampered whereby the area has been lagging socially and economically. You are pressurised by these people that you also join this nexus because whoever has come to the post has made economic gains by taking advantage of this syndicate. Moreover, if you do not involve in the above activities you and your family are threatened to be killed.

What are the options available before you in the above case? Discuss the merits and demerits of each option.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में एक पुलिस अधीक्षक के तौर पर मेरी सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्यनिष्ठता, वंचित वर्गों के हितों के प्रति न्याय जैसे मूल्यों का परीक्षण है। अत: उपर्युक्त परिस्थिति में मेरे समक्ष निम्नलिखित विकल्प मौजूद हैं-

- मैं, पुलिस अधीक्षक के तौर पर राजनीतिक नेताओं, नक्सलियों और स्थानीय व्यक्तियों के गठजोड़ में सम्मिलित होने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लूँ।
- मैं, उपर्युक्त गठजोड़ में शामिल होने से मना कर दूँ और इन व्यक्तियों पर तुरंत कार्यवाही करने का प्रयत्न करूँ।
- अपना ट्रांसफर किसी अन्य ज़िले या क्षेत्र में करवाने का प्रयास करूँ।
- अपने विभाग में कार्यरत उच्च अधिकारी से इस मामले में संज्ञान अर्थात् परामर्श लेने का प्रयत्न करूँ। साथ ही, मीडिया एवं अन्य संचार माध्यमों की भी सहायता ली जा सकती है।

उपर्युक्त विकल्पों के गुण-दोष निम्नलिखित हैं-

- अगर पहले विकल्प के संदर्भ में विचार करें तो इस गठजोड़ में सम्मिलित होने से मेरे 'व्यक्तिगत लाभ' की संभावना ज़्यादा है, क्योंकि इन व्यक्तियों द्वारा मुझे विभिन्न आर्थिक सुविधाएँ प्रदान की जाएंगी, जिससे मेरे और मेरे परिवार के जीवन स्तर की गुणवत्ता में सुधार होगा। इसके अतिरिक्त मेरे परिवार को इन व्यक्तियों से कोई सुरक्षा संबंधी खतरा नहीं होगा अर्थात् पारिवारिक सुरक्षा भी प्राप्त होगी। इस गठजोड़ में सम्मिलित होने से मुझे इन व्यक्तियों द्वारा किसी प्रकरण में व्यर्थ में नहीं फंसाया जा सकेगा, जिससे मीडिया एवं प्रशासन में मेरी छवि बेहतर होगी।

मेरे द्वारा इस गठजोड़ में सम्मिलित होने से मुझे व्यक्तिगत लाभ तो प्राप्त होगा, किंतु मैं अपने पद की शपथ की गरिमा के अनुरूप कार्य नहीं कर पाऊँगा। साथ ही मेरी सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्यनिष्ठता, जवाबदेही जैसे मूल्यों का भी ह्रास होगा। यह विचारणीय है कि मेरे इस कृत्य से इस क्षेत्र का सामाजिक-आर्थिक विकास और भी पिछड़ जाएगा, जिससे इस क्षेत्र में इन नक्सलवादी गतिविधियों को और बढ़ावा मिलेगा, जो राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के साथ देश के विकास में भी चुनौती उत्पन्न करेगा।

- अगर मैं उपर्युक्त गठजोड़ में शामिल होने से मना कर दूँ तथा इन व्यक्तियों पर कार्यवाही करने का प्रयास करूँ तो इससे मैं अपने कार्य के प्रतिपालन को पूरी निष्ठा से निभा पाऊँगा। साथ ही, इन व्यक्तियों पर कार्यवाही करने से इस क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधियों पर रोक लगाई जा सकेगी। इस क्षेत्र में सरकारी योजनाओं का भी प्रभावी क्रियान्वयन किया जा सकता है, जिससे इस क्षेत्र में विकास को बढ़ावा दिया जा सके और इन व्यक्तियों को राष्ट्र की मुख्यधारा में लाया जा सके।

उपर्युक्त विकल्प का दोष यह है कि मुझे और मेरे परिवार पर सुरक्षा का संकट उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि इन व्यक्तियों का इस क्षेत्र में वर्चस्व है। इसके अलावा इस गठजोड़ समूह द्वारा मेरे प्रशासनिक कार्यों में बाधा पहुँचाई जा सकती है। मुझे भ्रष्टाचार, अपने कार्यों के प्रति विमुखता जैसे मामलों में फँसाया जा सकता है जिससे मीडिया और प्रशासन में मेरी छवि खराब हो सकती है, जो मेरे सेवा कार्यकाल में प्रमोशन इत्यादि के लिये चुनौती पैदा करेगा।

- तीसरे विकल्प अर्थात् अपना ट्रांसफर करा लेने से मैं इस समस्या का सामना करने से बच सकता हूँ, जिससे मुझे और मेरे परिवार पर कोई संकट उत्पन्न नहीं होगा, साथ ही मीडिया एवं प्रशासन में मेरी छवि भी धूमिल नहीं होगी।

किंतु इस विकल्प में यह दोष निहित है कि मैं अपनी ज़िम्मेदारियों से भाग रहा हूँ अर्थात् यह विकल्प पलायनवादिता को दर्शाता है, जो किसी भी समस्या का दीर्घकालिक समाधान नहीं हो सकता है। हो सकता है कि अन्य क्षेत्र, जहाँ पर मैं अपना ट्रांसफर कराऊँ वहाँ पर मुझे इसी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़े, तो दूसरी तरफ इस क्षेत्र में इन नक्सलवादी गतिविधियों को और बढ़ावा मिलेगा और इस क्षेत्र में रहने वाले निवासियों का शोषण होता रहेगा।

- अपने विभाग में कार्यरत उच्च अधिकारी से इस संबंध में परामर्श लेने पर मुझे इस समस्या के समाधान की उचित जानकारी मिल सकती है, क्योंकि शायद उन्होंने भी इस प्रकार की समस्या का सामना किया हो, जिससे मैं अपने उच्च अधिकारी से विचार-विमर्श करके इस समस्या का समाधान निकाल सकूँ। मीडिया एवं अन्य संचार माध्यमों की भी सहायता ली जा सकती है और इस गठजोड़ के बारे में गुप्त तरीके से सूचना दी जा सकती है, जिससे जनता के सामने इस गठजोड़ की सच्चाई उजागर हो सके और जनता मेरे साथ आकर विकास कार्यों को बढ़ावा दे, जिससे इस क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों के जीवन गुणवत्ता के स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

उपर्युक्त विकल्प में यह दोष है कि हो सकता है कि मेरा उच्च अधिकारी इस गठजोड़ में सम्मिलित हो और मुझे इस मामले में शांत रहने के लिये दबाव बनाए। उच्च अधिकारी की बात न मानने पर मुझ पर कार्यवाही की धमकी दे और मेरी वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट को तथ्यों के साथ छेड़छाड़ करके खराब बनाकर भेजे।

समग्रत: एक पुलिस अधीक्षक के तौर पर मेरी यह ज़िम्मेदारी है कि मैं अपने क्षेत्र में शांति व्यवस्था को कायम करूँ। अत: मैं अपने उच्च अधिकारी से इस प्रकरण में परामर्श लेने का प्रयास करूँगा तो दूसरी तरफ मीडिया एवं अन्य संचार माध्यमों से इस गठजोड़ को गुप्त तरीके से लोगों के सामने उजागर कर सकूँगा। इसके अलावा सरकार की योजनाओं को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करके इस क्षेत्र के लोगों को समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास करूँगा, जिससे देश के विकास में सभी व्यक्तियों की समुचित भागीदारी हो सके और समावेशी विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

प्रश्न: आप किसी पिछड़े हुए ज़िले के ज़िलाधिकारी हैं। आपका ज़िला पर्यावरण की दृष्टि से समृद्ध है, लेकिन यहाँ पर उद्योगों का विकास न होने, कृषि योग्य भूमि की अनुपलब्धता के कारण व्यक्तियों को रोज़गार उपलब्ध नहीं हो पा रहा है, जिससे उनके जीवनयापन की कार्यदशाएँ कठिन हो गई हैं, लेकिन आपको पता चलता है कि आपके ज़िले में उद्योगों की स्थापना के लिये एवं कृषि योग्य भूमि को बढ़ाने के लिये पर्यावरण का दोहन किया जा रहा है तो दूसरी तरफ इन आर्थिक गतिविधियों के संचालित होने के कारण लोगों को रोज़गार मिलने से जीवनयापन में सुधार हो रहा है।

उपर्युक्त प्रकरण में आपके सामने कौन-कौन सी समस्याएँ हैं? तथा इन समस्याओं का समुचित समाधान बताएँ।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the District Collector of a backward district. Your district has rich ecological resources. But employment is not available for the people due to non-development of industries and unavailability of agricultural land. Thus their sustenance has become difficult. However, you discover that the environment is being exploited to set up industries in your district and to increase agricultural land. At the same time lifestyle of the people is improving by the availability of employment due to these economic activities. What are the problems faced by you in the said episode? And give a proper solution for these problems.

उत्तर: औद्योगिक क्रांति के समय से मनुष्य ने अपनी भोगवादी एवं स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया, जिसके कारण विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे- ग्लोबल वार्मिंग, अम्लीय वर्षा, बाढ़ एवं सूखा में मात्रात्मक वृद्धि उत्पन्न हुई, जिन्होंने मनुष्य के अस्तित्त्व पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है।

आज पर्यावरण बनाम आर्थिक विकास किसी एक क्षेत्र की समस्या न होकर संपूर्ण विश्व की समस्या बन गई है। एक तरफ पर्यावरण को बचाना आवश्यक है तो दूसरी तरफ आर्थिक विकास को गति देना ज़रूरी है, क्योंकि बिना आर्थिक विकास के गरीबी, बेरोज़गारी, रोज़गार में वृद्धि आदि समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता है तो वहीं अगर पर्यावरण की रक्षा नहीं की गई और पर्यावरण को इसी तरह क्षति पहुँचाते रहे तो मनुष्य के जीवन पर संकट उत्पन्न हो जाएगा। इसी कारण किसी विद्वान ने कहा है- 'या तो हमारा भविष्य हरा होगा, या होगा ही नहीं।'

अगर उपर्युक्त प्रकरण के संदर्भ में देखें तो एक ज़िलाधिकारी के पद पर मेरे समक्ष निम्नलिखित समस्याएँ हैं-

- बढ़ते हुए पर्यावरण के दोहन को रोकना।
- इस क्षेत्र के पिछड़ेपन की समस्या।
- कम रोज़गार उपलब्ध होने की समस्या।
- पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास में किसे ज़्यादा महत्त्व प्रदान किया जाए।

उपर्युक्त समस्याओं के संदर्भ में विचार करें तो इनके समाधान के लिये बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है-

- सर्वप्रथम, इस क्षेत्र में बढ़ते हुए पर्यावरण के दोहन पर रोक लगाने की आवश्यकता है, क्योंकि पर्यावरण के दोहन की शर्त पर आर्थिक विकास को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता है। इसके लिये इस क्षेत्र में पर्यावरण को क्षति पहुँचाने वाले व्यक्तियों पर कठोर दंड की आवश्यकता है, साथ ही पर्यावरण से जुड़े विभिन्न कानून जैसे- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम- 1986, फॉरेस्ट कन्जर्वेशन एक्ट-1980 तथा वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम-1972 इत्यादि को कड़ाई से लागू करने की आवश्यकता है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण दोहन की समस्या गहरे तौर पर उस समाज या राष्ट्र के दर्शन से उपजती है। अगर उस समाज में प्राकृतिक वस्तुओं या प्रकृति के प्रति सम्मान का भाव होगा तो वहाँ पर पर्यावरण संरक्षण को अधिक महत्त्व दिया जाएगा, वहीं जिस समाज में प्रकृति को मनुष्य से अलग देखा जाता है, वहाँ पर प्रकृति को लालची या भोगवादी प्रवृत्ति के तौर पर देखा जाएगा। अत: आवश्यकता है कि पर्यावरण के प्रति इस क्षेत्र के लोगों में मनोवृत्ति को बदला जाए जिसमें मीडिया, नागरिक समूह, प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा इस क्षेत्र के व्यक्तियों से बातचीत करना, प्रोत्साहन इत्यादि माध्यमों का उपयोग किया जा सकता है।

- यह क्षेत्र पिछड़ेपन की समस्या से ग्रस्त है अर्थात् लोगों में शिक्षा का अभाव, औद्योगिक विकास न हो पाना, रोज़गार की अनुपलब्धता इत्यादि समस्याएँ हैं। इन सभी समस्याओं के लिये बहुआयामी रणनीति की आवश्यकता है। जिसमें सर्वप्रथम इस क्षेत्र में शिक्षा को, बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिये, जिसके लिये विभिन्न सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाना चाहिये। इस क्षेत्र में रोज़गार बढ़ाने का एक विकल्प यह हो सकता है कि यहाँ पर 'पर्यटन' को प्रोत्साहित किया जाए। पर्यटकों के बढ़ने पर यहाँ पर रहने वाले व्यक्तियों के निम्न कार्यक्षेत्र से लेकर उच्च कार्यक्षेत्र तक सभी व्यक्तियों को रोज़गार मिलेगा। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये इस क्षेत्र में आधारभूत संरचना के विकास को बढ़ावा देना होगा। इसके साथ ही इस प्रकृति के महत्त्व को बताना होगा, तो वहीं युवाओं के कौशल विकास इत्यादि को बढ़ावा दिया जाना चाहिये।
- पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास में किसे ज़्यादा महत्त्व प्रदान किया जाए, यह आज के समय का सबसे उल्लेखनीय विवाद है। वस्तुत: पर्यावरण दोहन की शर्त पर आर्थिक विकास को बढ़ावा देना, यह उचित कदम प्रतीत नहीं होता। अत: ज़रूरत है कि हम प्रकृति को मानव के आवश्यक अंग के रूप में समझें और आर्थिक विकास के साथ प्रकृति को भी साथ लेकर चलें अर्थात् मानव-प्रकृति सहअस्तित्व पर बल देना होगा, जिससे संधारणीय विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

प्रश्न: आप किसी ऐसे ज़िले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी हैं, जहाँ पर सरकारी स्वास्थ्य सुविधाएँ समुचित रूप में उपलब्ध नहीं हैं। लोगों को अपनी स्वास्थ्य सुविधाओं के लिये निजी अस्पतालों पर निर्भर रहना पड़ता है। आपको पता है कि इन निजी अस्पतालों द्वारा लोगों से चिकित्सा सुविधाओं के लिये अत्यधिक धन लिया जाता है तथा त्रुटिपूर्ण चिकित्सा व्यवहारों का प्रयोग किया जाता है। आपके ज़िले में ऐसे निजी चिकित्सालयों की संख्या बढ़ती जा रही है। इन चिकित्सालयों द्वारा दोषपूर्ण कार्यवाहियों के कारण अक्सर तीमारदारों से इनका संघर्ष समाचारों में रहता है। इसी क्रम में गिरते चिकित्सा स्तर के कारण एक-दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। आप संबंधित निजी अस्पतालों पर कार्यवाही का प्रयास करते हैं, लेकिन आपको पता चलता है कि संबंधित निजी अस्पताल राज्य के बड़े राजनीतिक पद पर उपस्थित 'मिस्टर X' का है। 'मिस्टर X' आप पर कोई भी कार्यवाही न करने के लिये दबाव डालते हैं तथा कार्यवाही करने पर आपका स्थानांतरण करवाने और परिवार को जान से मारने की धमकी दी जाती है।

उक्त परिस्थितियों में आपके समक्ष कौन-कौन से नैतिक मुद्दे उपस्थित हैं? तथा इन नैतिक मुद्दों को समुचित समाधान सुझाते हुए अपना निर्णय बताएँ। (250 शब्द, 20 अंक)

You are the Chief Medical Officer of a district where adequate government health facilities are not available. People have to depend on private hospitals for their healthcare. You know that excessive money is derived by these private hospitals from the people for medical facilities and abusive medical practices are employed. The number of such private hospitals in your district is increasing. Due to exploitative procedures of these hospitals they are always in news for their conflict with attendants of patients. In this situation, a few persons have died due to decline in medical care. You try to take action on concerned private hospital but you find that it belongs to 'Mr. X' who is presently at an important political position in the state. 'Mr. X' puts pressure on you not to take any action and if you take action, you are threatened with transfer and killing of your family.

What are the ethical issues faced by you in the above case? And enumerate probable solutions to these ethical issues and suggest your effective decision.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपलब्धता तथा निजी चिकित्सालयों का अनुचित व्यवहार, जैसे स्वास्थ्य सुविधाओं की उचित गुणवत्ता न होना तथा व्यक्तियों से अधिक पैसे वसूलना जैसी समस्याएँ मौजूद हैं। गिरती स्वास्थ्य सुविधाएँ किसी भी कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

उपरोक्त प्रकरण का विश्लेषण करने पर कई नैतिक मुद्दे उत्पन्न होते हैं, जिसे हम निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं-

- निजी अस्पतालों का व्यावसायिक लाभ *बनाम* जन सामान्य के स्वास्थ्य से खिलवाड़;
- चिकित्सा सुविधाओं की गुणवत्ता का गिरता स्तर *बनाम* मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पद पर सत्यनिष्ठा, कर्त्तव्यपालन तथा जवाबदेही जैसे मूल्यों का पालन;
- सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देना *बनाम* मुख्य चिकित्सा अधिकारी का व्यक्तिगत हित।

उपर्युक्त बिंदुओं के संदर्भ में प्रथम बिंदु का स्वरूप अत्यंत भयावह है। निजी अस्पतालों की बढ़ती संख्या, चिकित्सा सुविधा की बेहतर आपूर्ति की बजाय व्यावसायिक लाभ को प्राथमिकता देते हुए जन सामान्य के स्वास्थ्य से खिलवाड़ किया गया है। अत: उन पर उचित कार्यवाही करते हुए उनका लाइसेंस रद्द करना सही कदम होगा, जिससे लोगों के जीवन को खतरे में पड़ने से बचाया जा सके। इस निर्णय का दोष यह है कि अवसंरचना के अभाव में (सरकारी अस्पतालों) आपातकालीन चिकित्सा आवश्यकता के कारण लोगों का जीवन खतरे में पड़ सकता है।

चिकित्सा सुविधा के गुणवत्ता सुधार हेतु निजी अस्पतालों को निर्देश देना भी द्वितीय विकल्प के तहत उचित कदम होगा एवं निर्धन परिवारों के लिये अस्पतालों में आरक्षित प्रणाली (बेड, दवाइयों, उपकरणों) अपनाने के आदेश दिये जाएंगे, जिससे किफायती मूल्य में गुणवत्तापरक सुविधा उपलब्ध कराई जा सके। निजी अस्पतालों की मनमानी व उचित निगरानी न होने पर इस उपाय के निष्प्रभावी होने की संभावना है।

तृतीय विकल्प में नैतिक दुविधा अत्यंत विकराल है, क्योंकि मेरे व्यक्तिगत हित के साथ ही मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पद की शपथ के अनुरूप कार्य करने का द्वंद्व है। अत: ज़रूरत है कि मैं अपने व्यक्तिगत हितों को पदीय कर्त्तव्यों से ज़्यादा महत्त्व न दूँ और समुचित रूप से अपने कर्त्तव्यों का पालन करूँ। इसके अतिरिक्त मैं अपने परिवार की सुरक्षा के लिये पर्याप्त पुलिस प्रोटेक्शन की मांग करूँगा, जिससे मेरा परिवार भी सुरक्षित रहे। साथ ही, निजी अस्पताल का लाइसेंस रद्द करने के साथ ही उस राजनीतिक नेता पर उचित कार्यवाही की जाएगी तथा अपने से उच्च पद पर स्थित अधिकारी से भी इस समस्या के संदर्भ में उचित विचार-विमर्श करके समस्या का समाधान खोजा जा सकता है।

अत: उपरोक्त स्थिति में उत्पन्न नैतिक मुद्दों एवं समाधान का स्पष्टत: विवरण देने के पश्चात् यह उल्लिखित करना अहम होगा कि मेरा निर्णय तात्कालिक कार्यवाही के अलावा दीर्घकालीन उपायों से परिपूर्ण होगा, जैसे- निगरानी संस्थाओं का गठन करने का प्रयास, अवसंरचना विकास हेतु ज़िलाधिकारी से संपर्क, सभी वर्गों को किफ़ायती चिकित्सा की पहुँच सुनिश्चित करवाने का प्रयास करना इत्यादि।

प्रश्न: आप 'खेल परिषद' के अध्यक्ष हैं। आपके यहाँ एक लब्धप्रतिष्ठ खिलाड़ी के डोपिंग का मामला आता है और उस खिलाड़ी से देश को काफी उम्मीदें हैं कि यह देश के लिये ओलंपिक में पदक लाएगा। आप जाँच में पाते हैं कि खिलाड़ी डोपिंग में सम्मिलित है, लेकिन खिलाड़ी द्वारा अपने को बार-बार निर्दोष बताया जाता है और कहता है कि गलती से मैंने उस दवाई का सेवन कर लिया। उसका तर्क है कि मुझे इस दवाई के प्रतिबंधित होने के बारे में जानकारी नहीं थी। आप इस असमंजस में हैं कि देश की भावनाओं के अनुकूल फैसला लें या खेल नैतिकता को ध्यान में रखते हुए उस खिलाड़ी को ओलंपिक जाने से प्रतिबंधित कर दें, ताकि अन्य खिलाड़ियों के लिये यह एक सबक बने और देश के विरोध को सहन करें।

उक्त परिस्थितियों में आप कौन-सा निर्णय लेंगे? अपने निर्णय तक पहुँचने के समुचित कारण सहित व्याख्या करें।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the President of the Sports Council. A case of doping of a celebrated player comes to you. The country has great expectations from the player that he will win medal in the Olympics for the country. You find in the inquiry that the player is involved in doping but he is pleading innocence repeatedly and he says that by mistake he consumed that medicine. His argument is that he was not aware of the restriction on the medicine. You are in a dilemma whether to take a decision according to the emotions of the nation or ban the player from going to the Olympics keeping the sports ethics in mind and tolerate the protest from the country, so that it becomes a lesson for other players.

What will be your decision in the given circumstances? Discuss the reasoning behind your final decision.

उत्तर: प्रस्तुत केस स्टडी खेल नैतिकता एवं नियमों का अनुपालन बनाम लोगों की भावनाओं एवं खिलाड़ी के व्यक्तिगत हित से संबंधित है, जिस संबंध में खेल परिषद के अध्यक्ष के समक्ष कार्यपालन एवं भावनात्मक आवेग को महत्त्व देने जैसे विकल्प उपस्थित हैं।

खेल परिषद के अध्यक्ष के रूप में मेरे द्वारा निम्नलिखित निर्णय लिये जा सकते हैं-

- खिलाड़ी के तर्क को ध्यान में रखते हुए उसे अपने आपको निर्दोष साबित करने का मौका दिया जाना।
- देश की भावनाओं के अनुकूल फैसला लेते हुए उस खिलाड़ी को ओलंपिक में खेलने की अनुमति दे देना।
- खेल नैतिकता एवं सभी खिलाड़ियों के समानता के अधिकारों के मद्देनज़र ओलंपिक में जाने की अनुमति नहीं देना।

उपरोक्त विकल्पों में प्रथम विकल्प का चयन इस दृष्टि से उचित होगा कि 'सभी को अपने बचाव का एक अवसर मिलना चाहिये।' साथ ही, जिससे खेल नैतिकता का उल्लंघन भी नहीं हो, परंतु ओलंपिक में कम समय शेष रहने की स्थिति में ये विकल्प अव्यावहारिक सिद्ध होगा।

द्वितीय विकल्प का चयन उपयुक्त नहीं होगा, क्योंकि मेरा यह निर्णय देश के अन्य खिलाड़ियों के लिये गलत मिसाल पेश करेगा, उन्हें भी ऐसी गतिविधियों में संलिप्त होने की प्रेरणा मिल सकती है। साथ ही, ये कदम खेल नैतिकता के विरुद्ध होगा एवं मेरी निर्णय लेने की क्षमता एवं कर्त्तव्यपरायणता पर प्रश्नचिह्न लग सकता है। हालाँकि, यह देश की भावनाओं को पुष्ट करने में सहायक हो सकता है।

तृतीय विकल्प का चयन सर्वाधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि यदि गलती से भी खिलाड़ी द्वारा प्रतिबंधित दवाओं का सेवन किया गया है तो अनुमति देना उचित नहीं होगा, क्योंकि वाडा (WADA) की जाँच में जब डोपिंग पॉज़िटिव पाया जाएगा तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की बदनामी होगी। साथ ही, अनैतिक तरीके से किसी खिलाड़ी के सफल हो जाने से समानता के अधिकारों का, खेल नैतिकता तथा नियमों का उल्लंघन होगा। इसलिये मेरा यह कदम अन्य खिलाड़ियों को इस प्रकार की लापरवाही से सचेत रहने के लिये प्रेरित करेगा।

उपर्युक्त कारणों के संदर्भ में मेरे द्वारा लिया गया निर्णय उचित होगा जिससे नैतिकता, प्रेरणा, कर्त्तव्यपरायणता आदि मूल्यों को सुनिश्चित किया जा सकेगा।

प्रश्न: हर साल अपने परिणाम से भयभीत होकर या निराश होकर सैकड़ों बच्चे 'आत्महत्या' कर लेते हैं। आप ज़िले के शिक्षा विभाग के अधिकारी के पद पर हैं। आप जानते हैं कि परीक्षा परिणाम घोषित होने के बाद आपके ज़िले में भी ऐसी ही परिस्थितियाँ उत्पन्न होती रही हैं तथा आपके राज्य शिक्षा बोर्ड के परिणाम कुछ दिनों में घोषित किये जाने वाले हैं। ऐसे में आप इन समस्याओं से निपटने के लिये क्या प्रयास करेंगे, ताकि इस प्रकार की घटनाओं में कमी आ सके। अपने निर्णय को कारण सहित स्पष्ट करें। (250 शब्द, 20 अंक)

Every year, frightened and frustrated with their examination results, hundreds of children 'commit' suicide. You are posted as an officer in the Department of Education of the district. You know that similar incidents have also been happening in your district after the announcement of the examination results. The result of your State Education Board is to be announced in a few days.

In this situation, how will you deal with the problem so that such incidents can be reduced? Discuss your decision with reasons.

उत्तर: उपरोक्त केस स्टडी परिणाम से निराश एवं भयभीत बच्चों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति से संबंधित है, जिसका समय पर यदि उपाय नहीं किया गया तो देश के भविष्य पर संकट आ सकता है।

वर्तमान वैश्वीकरण, निजीकरण एवं उदारीकरण के युग में प्रतिस्पर्द्धा लगातार बढ़ती जा रही है तथा इस प्रतिस्पर्द्धा का मनोभाव बच्चों पर भी पड़ने लगा है, जिसके कारण बच्चे वर्तमान में अपने परिणाम को लेकर अत्यधिक भयभीत रहते हैं और परिणाम अपेक्षाओं के अनुकूल न हो तो आत्महत्या जैसी घटनाएँ भी देखने को मिलती हैं। हर वर्ष ऐसी घटनाओं की संख्या बढ़ती जा रही है।

बोर्ड परीक्षा हो या प्रतिस्पर्द्धी परीक्षा हो असफलता के बाद अवसाद जैसी मन:स्थिति का उत्पन्न होना तथा उसका प्रबंधन न किया जाना इस समस्या का मूल कारण है।

इस समस्या से निपटने के लिये मेरे द्वारा निम्नलिखित प्रयास किये जा सकते हैं-

- माता-पिता से बच्चों के मन-मस्तिष्क से भय, निराशा जैसी विकृत भावनाओं को निकालकर असफलता से सीखने की प्रेरणा देने की अपील करना।
- माता-पिता अधिक नंबर लाने का दबाव बच्चों पर ना बनाएँ, ऐसी जागरूकता लाने का प्रयास करना।
- बोर्ड के परिणाम से पहले शिक्षकों, स्वयंसेवी संस्थाओं, मीडिया के माध्यम से बच्चों को प्रेरणा देने का प्रयास करना तथा बच्चों को यह समझाना कि यह परीक्षा सिर्फ जीवन का एक चरण है और इसमें सफलता-असफलता से ज़्यादा अंतर नहीं पड़ता है। अत: बच्चों को परिणाम से भयमुक्त बनाने का प्रयास करना चाहिये।
- काउंसिलिंग की व्यवस्था करना।
- प्रासंगिक उदाहरणों से बच्चों का मनोबल बढ़ाना तथा ऐसे व्यक्तियों का उदाहरण देना, जिन्होंने परीक्षा परिणाम में असफल होने के बावजूद जीवन में सफलता की बुलंदियों को छुआ हो, जैसे- क्रिस्टियानो रोनाल्डो अपने स्कूली पढ़ाई को पूरी नहीं कर पाए तो वहीं स्टीव जॉब्स, बिल गेट्स तथा मार्क ज़ुकरबर्ग अपने कॉलेज की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए; इसके बावजूद सफलता के शिखर पर पहुँचे।
- इस बिंदु पर भी गौर करना ज़रूरी है कि व्यक्ति की रुचि अलग-अलग क्षेत्रों में होती है तथा कोई व्यक्ति पढ़ाई में उतना तेज़ नहीं है, लेकिन हो सकता है कि वह संगीत, खेल तथा अन्य क्षेत्रों में ज़्यादा सफलता अर्जित कर सके। अत: ज़रूरत है कि इन बच्चों को ऐसे क्षेत्रों के प्रति बढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जाए, न कि ठोक-पीटकर एक जैसा बनाने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त कदम उठाने से निश्चित रूप से ऐसी घटनाओं में कमी आ सकती है, क्योंकि बच्चों की मानसिक अवस्था की पहचान कर उन्हें सही रास्ता दिखाना, उनके संवेगों पर नियंत्रण रखने में उनकी मदद करना, उन्हें अकेला ना छोड़ना, परिवार द्वारा सहयोगात्मक व्यवहार बच्चे को असफलताओं से सीखकर आगे बढ़ने को प्रेरित कर सकता है।

इस संदर्भ में मध्य प्रदेश के एक पिता द्वारा अप्रतिम उदाहरण पेश किया गया- उन्होंने अपने बच्चे की बोर्ड परीक्षा में असफलता पर मिठाइयाँ बाँटी एवं उसे अगली परीक्षा के लिये बेहतर तैयारी की प्रेरणा दी। अत: उपर्युक्त प्रयास अवश्य कारगर सिद्ध होंगे एवं बच्चों के भविष्य को सुरक्षित किया जा सकेगा।

प्रश्न: आपको एक नियुक्ति से संबंधित साक्षात्कार पैनल का अध्यक्ष बनाया गया है। इस साक्षात्कार में आपके एक मित्र के बेटे का भी साक्षात्कार होना है। आपके मित्र ने आपको अध्ययन के दिनों में आर्थिक मदद के साथ ही भावनात्मक सहयोग दिया है। अपने पुत्र के साक्षात्कार में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिये आपके मित्र ने आपसे संपर्क किया है। वे आप पर दबाव बना रहे हैं। आपको यह बात पहले से पता है कि उनका पुत्र साक्षात्कार के लिये बहुत योग्य नहीं है। आप पर अनियमितताओं से संबंधित मामले पहले भी उठाए जा चुके हैं।

(a) इस प्रकरण में आपके सामने कौन-कौन सी नैतिक दुविधा है?

(b) आपके सामने कौन-से विकल्प हैं? प्रत्येक विकल्प के गुण-दोषों की चर्चा करते हुए बेहतर विकल्प सुझाएँ।

(250 शब्द, 20 अंक)

You have been made the Chairman of an interview panel associated with appointment. In the interview, the son of one of your friends also has to give interview. Your friend has given you emotional support as well as financial help during your student life. Your friend has contacted you to ensure good marks for his son in the interview. He is pressurising you. You are already aware that his son is not very competent for the interview. Moreover, cases related to irregularities have already been raised against you.

(a) What are the ethical dilemmas faced by you in this episode?

(b) What options do you have? Discuss the pros-cons of each option and suggest the best one.

उत्तर : (a) उपर्युक्त प्रकरण कर्त्तव्यपालन एवं निजी संबंधों के मध्य विरोधाभास को प्रतिबिंबित करता है, जिसमें साक्षात्कार पैनल के अध्यक्ष के रूप में निर्णय लेने में असमंजस की स्थिति उत्पन्न हुई है।

मेरे समक्ष नैतिक दुविधा निम्नांकित है-

- साक्षात्कार पैनल के अध्यक्ष पद पर कर्त्तव्यपालन, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का पालन

  बनाम

  मित्र द्वारा किये गए व्यक्तिगत उपकार को पूरा करने का प्रयास करना;
- अन्य अभ्यर्थियों के साथ अन्याय

  बनाम

  व्यक्तिगत संबंधों को प्राथमिकता देना;
- पक्षपातपूर्ण व्यवहार की स्थिति में अध्यक्ष के पद का दुरुपयोग

  बनाम

  नियमों, कानूनों, उचित प्रक्रियाओं का पालन इत्यादि।

उत्तर : (b) यदि विकल्पों की बात की जाए तो उपरोक्त परिस्थिति में निम्नलिखित विकल्प एक अध्यक्ष के रूप में मेरे समक्ष उपस्थित होंगे-

- मित्र के उपकार को चुकाने का अच्छा अवसर मानते हुए उनकी बात मान लेना।
- मित्र से अनुरोध करना कि सर्वप्रथम बच्चे को उचित तैयारी कराएँ तत्पश्चात् साक्षात्कार प्रक्रिया में भाग लेने को कहेंगे।
- मित्र का प्रस्ताव अस्वीकृत करके उनको इस हेतु मदद देने में अपनी असमर्थता जता देना।
- साक्षात्कार पैनल के अध्यक्ष के पद से त्यागपत्र दे देना।

पहले विकल्प में यदि गुण की बात की जाए तो इसमें अपना व्यक्तिगत लाभ तो दिखाई देता है, जैसे- कृतज्ञता का अवसर। यह सही अवसर है, जब मैं अपने मित्र के प्रति ज़िम्मेदारियों का समुचित निर्वहन कर पाऊँगा, जिससे मेरे और मित्र के संबंधों में मधुरता बढ़ेगी और भविष्य में मैं भी उससे किसी अन्य सहायता की मांग कर सकता हूँ।

लेकिन इस प्रकार के मामले उज़ागर होने पर हानि उठानी पड़ सकती है, क्योंकि पहले से ही अनियमितता के आरोप मुझ पर हैं। ऐसी स्थिति में मेरी छवि को बहुत नुकसान पहुँचेगा और उस बच्चे के लिये व अन्य बच्चों हेतु यह गलत संदेश होगा कि बिना योग्यता के चयन संभव है। एक ज़िम्मेदार कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी के तौर पर यह नैतिक दृष्टि से भी उचित नहीं है।

द्वितीय विकल्प का चयन नैतिक दृष्टि से सही होगा, क्योंकि उचित प्रक्रिया द्वारा ही चयन किया जाना चाहिये, परंतु इससे मेरे और मेरे मित्र के व्यक्तिगत संबंधों पर असर पड़ेगा एवं यह मेरी स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति को प्रदर्शित करेगा।

मित्र के प्रस्ताव को अस्वीकृत करके मैं अपने पद की कर्त्तव्यनिष्ठा का पालन कर सकूँगा, साथ ही साक्षात्कार में आए हुए व्यक्तियों में से योग्य व्यक्तियों का चयन कर सकूँगा, जिससे मुझे मानसिक संतुष्टि मिलेगी। लेकिन विकल्प का दोष यह है कि इससे मेरे और मित्र के संबंधों में कड़वाहट आ जाएगी तथा हो सकता है कि उसके पुत्र का चयन न होने से वह मुझसे बदला ले या मेरे साथ कुछ गलत करने का प्रयास करे, क्योंकि उसने मुझे अध्ययन के दिनों में आर्थिक मदद के साथ ही भावनात्मक मदद दी थी अर्थात् व्यक्तिगत हानि की संभावना है।

चतुर्थ विकल्प का गुण यह है कि इस विकल्प के चयन से मैं व्यर्थ की परेशानियों से बच सकूँगा और मित्र के संबंधों में दूरियाँ भी उत्पन्न नहीं होंगी। साथ ही, अपने कर्त्तव्य पद के प्रति विमुखता भी उत्पन्न नहीं होगी। लेकिन यह विकल्प पलायनवादिता को दर्शाता है, जो किसी भी समस्या का दीर्घकालिक समाधान नहीं हो सकता है और भविष्य में मुझे ऐसी ही अन्य चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। अत: समस्या से भागने की बजाय उसका समुचित समाधान तलाशने की आवश्यकता है।

तृतीय विकल्प सर्वाधिक उचित है, क्योंकि व्यक्तिगत हित एवं सामूहिक हित में सदैव सामूहिक हित को वरीयता देते हुए नैतिकता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा को सुनिश्चित करते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही एक अधिकारी का प्रथम कर्त्तव्य है।

2019

प्रश्न: गंभीर प्राकृतिक आपदा से प्रभावित एक क्षेत्र में आप बचाव कार्य का नेतृत्व कर रहे हैं। हज़ारों लोग बेघर हो गए हैं तथा भोजन, पेयजल और अन्य मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो गए हैं। मूसलाधार वर्षा एवं आपूर्ति मार्गों के क्षतिग्रस्त होने से बचाव कार्य बाधित हो गया है। विलम्बित और सीमित राहत कार्य से स्थानीय लोग बहुत क्रोधित हैं। जब आपका दल प्रभावित क्षेत्र में पहुँचता है, तब लोग दल के कुछ सदस्यों पर हमला बोल देते हैं, यहाँ तक कि उनकी पिटाई भी कर देते हैं। आपके दल का एक सदस्य गंभीर रूप से घायल भी हो जाता है। संकट की इस स्थिति में, दल के कुछ सदस्य अपने जीवन को खतरे के डर से आपसे आग्रह करते हैं कि बचाव कार्य रोक दिया जाए। इन विषम परिस्थितियों में आपकी क्या अनुक्रिया होगी? एक लोक सेवक के उन गुणों का परीक्षण कीजिये जो ऐसी स्थिति को संभालने के लिये आवश्यक होंगे। (250 शब्द, 20 अंक)

You are heading the rescue operations in an area affected by severe natural calamity. Thousands of people are rendered homeless and deprived of food, drinking water and other basic amenities. Rescue work has been disrupted by heavy rainfall and damage to supply routes. The local people are seething with anger against the delayed limited rescue operations. When your team reaches the affected area, the people there heckle and even assault some of the team members. One of your team members is even severely injured. Faced with this crisis, some team members plead with you to call off the operations fearing threats to their life.

In such trying circumstances, what will be your response? Examine the qualities of a public servant which will be required to manage the situation.

उत्तर: इस तरह के उग्र व अशांत वातावरण में मेरी अनुक्रिया विचारशील, प्रभावशाली और मानवीय होनी चाहिये क्योंकि इसमें कई तरह की नैतिक दुविधाएँ शामिल हैं। हज़ारों लोगों को उसी हाल में छोड़कर जाना, जब वे पूरी तरह से सरकारी मदद पर निर्भर हैं, कायरता का कार्य होगा, जो कि एक लोक सेवक के लिये अनुचित है।

बचाव अभियान के प्रमुख के रूप में मेरी प्राथमिक अनुक्रिया 'समूह' का ध्यान पुनः अपने वास्तविक उद्देश्यों की ओर केंद्रित करना होगी। उनमें से कुछ लोग अभियान पर रोक लगाने का अनुरोध करेंगे तब मुझे कुछ उदाहरणों के साथ उन्हें प्रेरित करना होगा, जैसे- 2014 में कश्मीर में आई बाढ़ के दौरान, जब एन.डी.आर.एफ. की टीम ने बचाव अभियान शुरू किया तो उन पर पथराव किया गया, उनकी नावें छीन ली गईं और उनमें से एक को छुरा मार दिया गया, लेकिन उन्होंने हिंसक जवाब नहीं दिया और लक्ष्य से विचलित नहीं हुए तथा 50,000 से अधिक लोगों को बचा लिया गया। प्रारंभ में, जब महात्मा गांधी नोआखली के दंगा प्रभावित क्षेत्रों में नंगे पाँव चल रहे थे, तब उनके मार्ग में दंगों से प्रभावित लोगों ने कांच के टुकड़े और जानवरों का मल बिखेर दिया था। बाद में, उनके असीम साहस और मानवता के प्रति प्रेम ने चमत्कार कर दिया, जब लोगों ने खुद प्रतिशोध नहीं लेने का वादा किया।

यहाँ, सरकारी सेवकों के प्रति लोगों के मन में बनी धारणा के कारण गुस्सा भड़क गया है। एक बार, जब लोग बचाव कार्य में आत्म-त्याग, समर्पण और साहस का खुद गवाह बन जाएंगे, तो सहयोग करना शुरू कर देंगे। दूसरा, मैं उन लोगों से मदद लेकर, जो सहयोग करने के इच्छुक हैं, लोगों को मनाने, समझाने की कोशिश करूँगा। इस तरह की कार्रवाई में स्थानीय नेता भी मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, मैं अपनी टीम के सदस्यों की सुरक्षा के संबंध में सरकार से सहयोग प्राप्त करने की कोशिश करूँगा जिससे लोगों की मदद करने में वे आहत न हों।

ऐसी स्थिति को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए आवश्यक विशिष्ट गुण

- **सेवा की भावना:** चूँकि बचाव दल शारीरिक और मौखिक हमलों के लिये सुभेद्य है, केवल जनता के प्रति उच्च स्तर का समर्पण ही एक अधिकारी को शांतचित्त और समन्वित तरीके से बचाव कार्य में मदद कर सकते हैं।
- **नेतृत्व:** ऐसी परिस्थितियों में, किसी भी निर्णय की सफलता या असफलता पूरी तरह से नेता की बुद्धिमानी और विवेक पर निर्भर होती है। उसे भी व्यक्तिगत साहस और दृढ़ विश्वास प्रदर्शित करते हुए आगे बढ़कर टीम का नेतृत्व करने की आवश्यकता होती है।
- **समानुभूति और संवेगात्मक बुद्धि:** एक अधिकारी को असंतुष्ट स्थानीय लोगों के व्यवहार को समझने के लिये समानुभूति और संवेगात्मक बुद्धि की आवश्यकता होती है। अन्यथा कोई भी राहत मिशन को रोक सकता है। बल का उपयोग कर सकता है, जो केवल उनके क्रोध को बढ़ाएगा।
- **अनुनय (Persuasion) की शक्ति:** क्रोधित लोग प्रतिक्रियाशील और अदूरदर्शी होते हैं, उन्हें किसी बात के लिये सहमत करने के लिये अनुनय क्षमता की आवश्यकता होती है।
- **धैर्य और मानसिक सक्रियता की उपस्थिति:** एक लोक सेवक ऐसी स्थिति में स्वतः प्रवर्तित (सहज) निर्णय लेने का जोखिम नहीं उठा सकता है। आगे की कार्रवाई विचारशील मूल्यांकन और तीव्र चिंतन द्वारा मार्गदर्शित होनी चाहिये।

इस प्रकार, हमें स्थिति की संवेदनशीलता को समझना चाहिये और लोगों को उनकी प्रतिक्रियाओं के लिये दोष नहीं देना चाहिये। सहानुभूति और संबल कठिन समस्याओं में लोगों को बचाने की महत्त्वपूर्ण कुंजी है, जो कि एक लोक सेवक एक महत्त्वपूर्ण दायित्व भी है।

प्रश्न: ईमानदारी और सच्चाई एक सिविल सेवक के प्रमाणक हैं। इन गुणों से युक्त सिविल सेवक किसी भी सुदृढ़ संगठन के मेरुदंड माने जाते हैं। कर्त्तव्य निर्वहन के दौरान, वे विभिन्न निर्णय लेते हैं। कभी-कभी इनमें से कुछ निर्णय सद्भाविक

भूल बन जाते हैं। जब तक ऐसे निर्णय जानबूझकर नहीं लिये जाते हैं और व्यक्तिगत लाभ प्रदान नहीं करते, तब तक अधिकारी को दोषी नहीं कहा जा सकता है। यद्यपि कभी-कभी ऐसे निर्णयों के दीर्घावधि में अप्रत्याशित प्रतिकूल परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं।

अभी हाल में कुछ ऐसे उदाहरण सामने आए हैं जिनमें सिविल सेवकों को सद्भाविक भूलों के लिये आलिप्त किया गया है। उन्हें अकसर अभियोजित और बंदित भी किया गया है। इन प्रकरणों के कारण सिविल सेवकों की नैतिक रचना को अत्यधिक क्षति पहुँची है।

यह प्रवृत्ति लोक सेवाओं के कार्य निष्पादन को किस तरह प्रभावित कर रही है? यह सुनिश्चित करने के लिये कि ईमानदार सिविल सेवक सद्भाविक भूलों के लिये आलिप्त नहीं किये जाएँ, क्या उपाय किये जा सकते हैं? तर्कसंगत उत्तर दीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

Honesty and uprightness are the hallmarks of a civil servant. Civil servants possessing these qualities are considered as the backbone of any strong organization. In line of duty, they take various decision, at times some become bonafide mistakes. As long as such decisions are not taken intentionally and do not benefit personally, the officer cannot be said to be guilty. Though such decisions may, at times, lead to unforeseen adverse consequences in the long-term.

In the recent past, a few instances have surfaced wherein civil servants have been implicated for bonafide mistakes. They have often been prosecuted and even imprisoned. These instances have greatly rattled the moral fibre of the civil servants.

How does this trend affect the functioning of the civil services? What measures can be taken to ensure that honest civil servants are not implicated for bonafide mistakes on their part? Justify your answer.

उत्तर: लोक सेवकों की भूमिका उन निर्णयों को लेने की होती है, जिन से देश के सामाजिक-आर्थिक विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यद्यपि, ईमानदार अधिकारियों के गलत अभियोजन के उदाहरणों से ईमानदार अधिकारियों के मनोबल पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत में लोक सेवाओं के कार्य निष्पादन को इसने निम्नलिखित रूपों में प्रभावित किया है-

- **अधिकारियों के निर्णयन पर प्रभाव:** अधिकारियों को अपने विचार व्यक्त करने में बाधा होगी। यह उनके गलत निर्णयों के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई के भय से लाल फीताशाही को और बढ़ा सकता है।
- **आर्थिक विकास में बाधा:** सार्वजनिक सेवाओं में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ने के साथ अभियोजन का डर ईमानदार अधिकारियों को किसी भी क्षेत्र में प्रगतिशील, निर्भीक और साहसी निर्णय लेने से प्रतिबंधित कर सकता है। महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में देरी से दुर्बल शासन को बढ़ावा मिलेगा।
- **ईमानदार अधिकारियों को परेशान करने का उपकरण:** भ्रष्ट राजनीतिक नेताओं और नौकरशाहों द्वारा आधारहीन शिकायतों व निरीक्षण के माध्यम से ईमानदार अधिकारियों को परेशान किया जा सकता है। साथ ही ऐसे अभियोजनो से उन्हें समाज में बदनामी के अलावा मानसिक पीड़ा और अत्यधिक वित्तीय नुकसान भी झेलना पड़ता है।

ईमानदार लोक सेवकों को सद्भाविक भूलों के लिये आलिप्त न किया जाए, यह सुनिश्चित करने के लिये निम्नलिखित उपाय हैं-

- **प्रशासन में अधिकतम पारदर्शिता सुनिश्चित करना:** निर्णय कैसे लिये जा रहे हैं, इसके बारे में अधिकतम स्पष्टता और पारदर्शिता को सुनिश्चित करते हुए महत्त्वपूर्ण नीतिगत निर्णय लिये जाने चाहिये। यह गलत निर्णयों के लिये कुछ व्यक्तियों को दोष देने से रोकेगा।
- **नौकरशाही का राजनीतीकरण कम करना:** स्थानांतरण का डर, पदोन्नतियों से इनकार करना या सेवानिवृत्ति के बाद दंडित किये जाने का भय अधिकारियों के निर्णय लेने को प्रभावित कर सकता है। लोक सेवकों के लिये निश्चित कार्यकाल निर्धारित करना, लोक सेवाओं में संस्थागत सुधारों (Systemic Reforms) के लिये बहुत आवश्यक कदम है।

संस्थानों की भूमिका

- एक लोकतंत्र और तेज़ी से वृद्धि करती अर्थव्यवस्था में, न्यायपालिका को कानूनों की बहुत रचनात्मक व्याख्या के साथ निर्णय लेने होते हैं। इसे भ्रष्टाचार और गलत प्रशासनिक निर्णयों के बीच अंतर को स्पष्ट करना चाहिये।
- आई.ए.एस. एसोसिएशन ऑफ इंडिया और अन्य सिविल सोसाइटी समूहों को गलत अभियोजन के दौर से गुज़र रहे ईमानदार अधिकारियों का समर्थन करना चाहिये।
- आंतरिक निरीक्षण तंत्र बनाना: प्रत्येक विभाग में आंतरिक पूछताछ को सद्भाविक निर्णयों की आपराधिक जाँच के लिये सिफारिश करने से पहले अधिकारियों की सत्यनिष्ठा और पिछले पेशे के रिकॉर्ड पर विचार करना चाहिये।

तर्कसंगतता/औचित्य

चूँकि लिया गया हर निर्णय लंबे समय में सही साबित नहीं हो सकता, इसलिये गलतियों के लिये ईमानदार अधिकारियों को अभियोजित करना अन्यायपूर्ण है। युवा और आकांक्षी लोक सेवकों को ईमानदारी, निष्पक्षता और निडरता जैसे प्रमुख मूल्यों को स्वयं में संरक्षित करना चाहिये।

ऊर्जावान और ईमानदार अधिकारी, जो अच्छे उद्देश्यों के लिये जोखिम लेते हैं, को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। किसी भी नौकरशाह या लोक अधिकारी को सद्भाविक निर्णय के लिये भयभीत नहीं होना चाहिये।

अधिकारियों को ईमानदारी और सच्चाई के साथ रहना चाहिये और अंततः गलत पर सही की जीत ही होती है। जैसा कि राष्ट्रीय आदर्श वाक्य बताता है- 'सत्यमेव जयते' अर्थात् सत्य की सदैव ही विजय होती है; असत्य की नहीं।

उदाहरण के लिये कोयला मंत्रालय के पूर्व सचिव एच.सी. गुप्ता, जिन्हें उनकी ईमानदारी और स्वच्छ कॅरियर रिकॉर्ड के लिये जाना जाता है, को कोयला घोटाले में उनके खिलाफ आपराधिक कदाचार के आरोप साबित करने में सीबीआई के विफल रहने के बाद दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा बरी कर दिया गया था।

इस प्रकार, लोक सेवकों के लिये समय की आवश्यकता यही है कि उनके द्वारा 'आचार संहिता' के साथ-साथ 'नैतिक संहिता' का भी समुचित अनुपालन किया जाए।

प्रश्न: बड़ी संख्या में महिला कर्मियों वाली एक परिधान उत्पादक कंपनी के अनेक कारणों से विक्रय में गिरावट आ रही थी। कंपनी ने एक प्रतिष्ठित विपणन अधिकारी को नियुक्त किया, जिसने अल्पावधि में ही विक्रय की मात्रा को बढ़ा दिया। लेकिन उस अधिकारी के विरुद्ध कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न में लिप्त होने की कुछ अपुष्ट शिकायतें सामने आईं।

कुछ समय पश्चात् एक महिला कर्मचारी ने कंपनी के प्रबंधन को विपणन अधिकारी के विरुद्ध यौन उत्पीड़न की औपचारिक शिकायत दायर की। अपनी शिकायत के प्रति कंपनी की संज्ञान लेने में उदासीनता को देखते हुए, महिला कर्मी ने पुलिस में प्राथमिकी दर्ज की।

परिस्थिति की संवेदनशीलता और गंभीरता को भाँपते हुए, कंपनी ने महिला कर्मी को वार्त्ता करने के लिये बुलाया। कंपनी ने महिला कर्मी को एक मोटी रकम देने के एवज़ में अपनी शिकायत और प्राथमिकी वापस लेने तथा यह लिख कर देने के लिये कहा कि विपणन अधिकारी प्रकरण में लिप्त नहीं था।

इस प्रकरण में निहित नैतिक मुद्दों की पहचान कीजिये। महिला कर्मी के सामने कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

An apparel manufacturing company having large number of women employees was losing sales due to various factors. The company hired a reputed marketing executive, who increased the volume of sales within a short span of time. However, some unconfirmed reports came up regarding his indulgence in sexual harassment at the work place.

After sometime, a woman employee lodged a formal complaint to the management against the marketing executive about sexually harassing her. Faced with the compnay's indifference in not taking cognizance of her grievance, she lodged an FIR with the Police.

Realizing the sensitivity and gravity of the situation, the company called the woman employee to negotiate. In that she was offered a hefty sum of money to withdraw the complaint and the FIR and also give in writing that the marketing executive is not involved in the case.

Identify the ethical issues involved in this case. What options are available to the woman employee?

उत्तर: इस प्रकरण में निहित तथ्य-

- कार्यस्थल पर विपणन अधिकारी पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया गया।
- कंपनी के लिये विपणन अधिकारी एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है क्योंकि उसने अल्पावधि में ही विक्रय की मात्रा को बढ़ा दिया।
- महिला कर्मी की शिकायत का संज्ञान लेने के मामले में कंपनी प्रबंधन की उदासीनता।
- कंपनी ने महिला कर्मी पर प्राथमिकी वापस लेने का दबाव बनाया।

शामिल हितधारक	नैतिक मुद्दे
महिला कर्मी	● प्रकरण को आगे बढ़ाने में मानसिक पीड़ा व सामाजिक दबाव को संभालना। ● मौद्रिक लाभ के लिये कंपनी के साथ वार्त्ता करने से आत्मसम्मान को क्षति।
विपणन अधिकारी	● महिला कर्मी के साथ वार्त्ता करके पेशेवर जीवन को बचाना और दोष सिद्ध न होने पर निर्दोष साबित होना।
कंपनी प्रबंधन	● महिला कर्मी की गरिमा के प्रति असंवेदनशीलता। ● महिला कर्मी के साथ विधि-विरुद्ध वार्त्ता में लिप्त होकर संगठनात्मक मूल्यों पर लाभ को प्राथमिकता।
अन्य कर्मी	● अन्य महिला कर्मियों के नैतिक विवेक के विरुद्ध विपणन अधिकारी के साथ कार्य करना जारी रखना।

महिला कर्मी के पास निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध हैं

1. **कंपनी प्रबंधन के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाते हुए उस प्राथमिकी को जारी रखना**

इससे उसे न्यायालय में अपना दृष्टिकोण साबित करने का उचित मौका मिलेगा और इस प्रकार स्वयं के लिये लड़ कर उसे मानसिक शांति मिलेगी। हालाँकि, इस प्रकरण को आगे बढ़ाने में महिला कर्मी को मानसिक पीड़ा व सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ेगा। यह उसके पेशे में शामिल अन्य संभावनाओं के लिये हानिकारक भी साबित हो सकता है।

2. **महिला कर्मी कंपनी द्वारा वार्त्ता के दौरान पेश की गई राशि को स्वीकार करे और मामला वापस ले ले**

यह उसके कॅरियर के लिये लाभदायक हो सकता है और उसे सख्त जाँच प्रक्रिया से बचाएगा। हालाँकि, यह उसकी मानसिक शांति को प्रभावित करेगा क्योंकि उसका विवेक उसे आत्मसम्मान पर मौद्रिक लाभ स्वीकार करने की अनुमति नहीं देगा। इसके अलावा वह भविष्य में कभी भी स्वयं के लिये आवाज़ नहीं उठा पाएगी।

3. **वह कंपनी से त्यागपत्र दे और कॅरियर के अन्य अवसरों पर ध्यान केंद्रित करे**

यह उसे ऐसी विपरीत परिस्थिति से बचाएगा और उसके कॅरियर की अन्य संभावनाओं के लिये लाभदायक होगा। हालाँकि, इस यौन उत्पीड़न का प्रभाव जीवन भर उसके साथ रहेगा। भविष्य में उसे पछतावा होगा कि वह स्वयं, उसे न्याय से वंचित करने के लिये उत्तरदायी है।

इस परिस्थिति के उचित समाधान का सही उपाय विकल्प (1) प्रतीत होता है। यहाँ महिला कर्मी नेतृत्व की भूमिका निभा सकती है। उसकी लड़ाई अन्य महिला कर्मियों की वास्तविक मुद्दों को आवाज़ प्रदान करेगी। अनुकरणीय व्यवहार का पालन करना उसका नैतिक दायित्व है। यह न केवल उसे आत्म संतुष्टि प्रदान करेगा अपितु उसके आत्मविश्वास और आंतरिक शक्ति में भी वृद्धि करेगा।

इसके अलावा विपणन अधिकारी को बचाकर लाभ के उद्देश्यों को प्राथमिकता देना कंपनी प्रबंधन की गलती है और यदि कंपनी द्वारा कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (निवारण, निषेध एवं निदान) अधिनियम, 2013 के अंतर्गत 'आंतरिक शिकायत समिति' का गठन नहीं किया गया है, तो यह कानून का उल्लंघन है। गांधीजी ने 'नैतिकता के बिना व्यापार' को सात सामाजिक पापों में से एक संदर्भित किया है। इस प्रकार, यह न केवल एक व्यक्ति द्वारा किया गया अपराध है बल्कि एक संगठन में महिला की गरिमा, नैतिक कार्य-संस्कृति और लैंगिक समानता जैसे मूल्यों के अभाव को बतलाता है।

प्रश्न: आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था में, राजनीतिक कार्यपालिका और स्थायी कार्यपालिका की संकल्पना होती है। निर्वाचित जन प्रतिनिधि राजनीतिक कार्यपालिका का गठन करते हैं और अधिकारीतंत्र स्थायी कार्यपालिका का गठन करता है। मंत्रीगण नीति-निर्माण करते हैं और अधिकारी उन नीतियों को क्रियान्वित करते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् प्रारंभिक दशकों में, राजनीतिक कार्यपालिका और स्थायी कार्यपालिका के बीच अंतर्संबंध, एक-दूसरे के क्षेत्र में हस्तक्षेप किये बिना, परस्पर समझ, सम्मान और सहयोग पर आधारित थे।

लेकिन बाद के दशकों में स्थिति में परिवर्तन आया है। ऐसे प्रकरण आए हैं जहाँ राजनीतिक कार्यपालिका ने स्थायी कार्यपालिका पर अपनी कार्यसूची का अनुसरण करने का दबाव बनाया है। सत्यनिष्ठ अधिकारियों के प्रति सम्मान और सराहना में गिरावट आई है। इस प्रवृत्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है कि राजनीतिक कार्यपालिका में नैत्यिक प्रशासनिक प्रसंगों में, जैसे कि स्थानांतरण, प्रस्थापन आदि में अंतर्ग्रस्त होने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। इस परिदृश्य में 'अधिकारीतंत्र के राजनीतीकरण' की ओर एक निश्चित प्रवृत्ति है। सामाजिक जीवन में बढ़ते भौतिकवाद और संग्रहवृत्ति ने राजनीतिक कार्यपालिका और स्थायी कार्यपालिका पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

'अधिकारीतंत्र के इस राजनीतीकरण' के क्या-क्या परिणाम हैं? विवेचना कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

In a modern democratic polity, there is the concept of political executive and permanent executive. Elected people's representatives form the political executive and bureaucracy forms the permanent executive. Ministers frame policy decisions and bureaucrats execute these.

In the initial decades after independence, relationship between the permanent executive and the political executive were characterized by mutual understanding, respect and co-operation, without encroaching upon each others domain.

However, in the subsequent decades, the situation has changed. There are instances of the political executive insisting upon the permanent executive to follow its agenda. Respect for and appreciation of upright bureaucrats has declined. There is an increasing tendency among the political executive to get involved in routine administrative matters such as transfers, postings etc. Under this scenario, there is a definitive trend towards 'politicization of bureaucracy'. The rising materialism and acquisitiveness in social life has also adversely impacted upon the ethical values of both the permanent executive and the political executive.

What are the consequences of this 'politicization of bureaucracy'? Discuss.

उत्तर: निर्वाचित प्रतिनिधियों और नौकरशाहों के बीच सहयोग देश के लोकतांत्रिक शासन के लिये आवश्यक है। हालाँकि 'अधिकारीतंत्र के राजनीतीकरण' के कारण, लोक सेवाओं के कार्य निष्पादन में गिरावट आई है।

प्रकरण में अंतर्निहित मूल्य

- राजनीतिक तटस्थता और निष्पक्षता
- ईमानदारी और सच्चाई
- दृढ़ विश्वास का साहस
- आचार संहिता का पालन
- वैधानिक ज़िम्मेदारी

अधिकारीतंत्र के राजनीतीकरण के परिणाम

- **नौकरशाहों की नैतिक प्रकृति के लिये अहितकारी:** कई बार ईमानदार लोक सेवकों को भी राजनीतिक झुकाव रखने वाले एक राजनीतिक समूह के पक्ष में पक्षपातपूर्ण फैसले लेने पड़ते हैं।
- **व्यक्तिगत बनाम पेशेवर जीवन में दुविधा:** भौतिक लाभों में लिप्त नौकरशाह को अपनी अंतरात्मा की आवाज़ के साथ समझौता करना पड़ता है जिससे उसकी मन की शांति और कार्य की नैतिकता में व्यवधान पड़ता है।
- **शासन प्रणाली पर प्रभाव:** लोक सेवकों के कार्य निष्पादन में निष्पक्षता की कमी का दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में या तो सार्वजनिक सेवा वितरण अथवा सामाजिक कल्याण योजनाओं को लागू करने में उनके निर्णयों का सीधा प्रभाव पड़ता है।

- **अराजक स्थितियों में समस्याएँ:** सांप्रदायिक दंगों जैसी जटिल परिस्थितियाँ अधिकारियों से सख्त राजनीतिक तटस्थता की मांग करती हैं। पक्षपातपूर्ण फैसलों से जान-माल की हानि हो सकती है। इसलिये, एक लोक सेवक को ऐसी स्थितियों में अपने निर्णयों के लिये जवाबदेह होना चाहिये।
- **नीतिगत पक्षाघात/निर्बलता:** गैर-सहयोगी अधिकारियों का बार-बार स्थानांतरण, पदोन्नति में देरी, राजनीतिक प्रतिशोध का भय इत्यादि का परिणाम उनके निर्णयन में लालफीताशाही और गोपनीयता की कार्यसंस्कृति के रूप में सामने आता है।
- **नागरिक समाज पर नकारात्मक प्रभाव:** सरकार में शीर्ष पदों पर पदस्थ लोक सेवक आकांक्षी युवा भारतीयों के लिये प्रेरणास्रोत होते हैं। उनका पक्षपाती रवैया व्यापक स्तर पर सामाजिक नैतिकता के लिये अहितकारी है।

इसलिये एक लोक सेवक को राजनीतिक रूप से तटस्थ होना चाहिये। एक लोक सेवक के रूप में, उसकी जनता के प्रति ज़िम्मेदारियाँ होती हैं और इसके लिये उसे अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को ध्यान में रखते हुए संवैधानिक सिद्धांतों का पालन करना चाहिये। उनका प्राथमिक कार्य 'निष्काम कर्म' (नि:स्वार्थ सेवा और इच्छाविहीन कर्त्तव्य) करना है। वे जो भी कार्य सार्वजनिक तौर पर करते हैं उसके लिये उन्हें तर्कसंगत, अनुकरणीय और प्रतिबद्ध होना चाहिये।

इसके अतिरिक्त भौतिकतावादी वस्तुएँ किसी को केवल थोड़े समय के लिये सुख प्रदान कर सकती हैं। किसी व्यक्ति द्वारा अपना कार्य ईमानदारी से करने और अन्यों के जीवन में सकारात्मक योगदान देने से प्राप्त संतुष्टि लंबे समय तक रहती है। इस कारण, लोक सेवकों और यहाँ तक कि राजनेताओं को भी भौतिक लाभ से तटस्थ रहना चाहिये।

साथ ही, एक लोक सेवक को किसी भी समय किसी भी स्थिति में सेवा करने के लिये तैयार रहना चाहिये। स्थानांतरण के भय से एक लोक सेवक को सार्वजनिक लाभ और समाज के व्यापक हित के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से नहीं बचना चाहिये।

प्रश्न: एक सीमांत राज्य के एक ज़िले में नशीले पदार्थों का खतरा अनियंत्रित हो गया है। इसके परिणामस्वरूप काले धन का प्रचलन, पोस्त की खेती में वृद्धि, हथियारों की तस्करी व्यापक हो गई है तथा शिक्षा व्यवस्था लगभग ठप्प हो गई है। संपूर्ण व्यवस्था एक प्रकार से समाप्ति के कगार पर है। इन अपुष्ट खबरों से कि स्थानीय राजनेता और कुछ पुलिस उच्चाधिकारी भी ड्रग माफिया को गुप्त संरक्षण दे रहे हैं, स्थिति और भी बदतर हो गई है।

ऐसे समय में, परिस्थिति को सामान्य करने के लिये, एक महिला पुलिस अधिकारी, जो ऐसी परिस्थितियों से निपटने के लिये अपने कौशल के लिये जानी जाती है, को पुलिस अधीक्षक के पद पर नियुक्त किया जाता है।

यदि आप वही पुलिस अधिकारी हैं, तो संकट के विभिन्न आयामों को चिन्हित कीजिये। अपनी समझ के अनुसार, संकट का सामना करने के उपाय भी सुझाएँ।

(250 शब्द, 20 अंक)

In one of the districts of a frontier state, narcotics menace has been rampant. This has resulted in money laundering, mushrooming of poppy farming, arms smuggling and near stalling of education. The system is on the verge of collapse. The situation has been further worsened by unconfirmed reports that local politicians as well as some senior police officers are providing surreptitious patronage to the drug mafia.

At that point of time a woman police officer, known for her skills in handling such situations is appointed as Superintendent of Police to bring the situation to normalcy.

If you are the same police officer, identify the various dimensions of the crisis. Based on your understanding, suggest measures to deal with the crisis.

उत्तर: उपर्युक्त ज़िले की स्थिति सामाजिक और प्रशासनिक प्रणाली के पतन की ओर अग्रसर होने के साथ कठिन प्रतीत होती है। फलत: इस तरह के परिदृश्य का प्रसार मानव और सामाजिक पूंजी के अपव्यय, अपराध दर में वृद्धि और ज़िले में उपस्थित लोगों की भविष्य की संभावनाओं को खतरे में डालने का कार्य करेगा।

ज़िला असंख्य समस्याओं से जूझ रहा है। इस संकट के विभिन्न आयाम हैं जिन्हें संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है-

- **वैधानिक आयाम:** नशीले पदार्थों के खतरे से उत्पन्न होने वाली गतिविधियाँ, जैसे- धन शोधन, अफीम की खेती, हथियारों की तस्करी आदि वैधानिक रूप से संबंधित कानूनों के तहत प्रतिबंधित हैं।
- **सुरक्षा आयाम:** भारत में सीमांत ज़िले विध्वंसक समूहों के लिये अतिसंवेदनशील हैं, जो लोकतंत्र और राज्य के अधिकार को कमज़ोर करने की कोशिश कर रहे हैं। हथियारों की तस्करी और धन शोधन उनकी असामाजिक गतिविधियों के वित्त पोषण को आसान साधन प्रदान करता है।
- **सामाजिक आयाम:** इस तरह की विकृतियों से ग्रस्त समाज कभी भी शिक्षा, स्वास्थ्य, विकास, सशक्तीकरण और सामाजिक कल्याण पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता है जो कल्याणकारी राज्य का मुख्य उद्देश्य है।
- **आर्थिक आयाम:** ऐसी गतिविधियों में लोगों के शामिल होने से राज्य के विरुद्ध दीमक की तरह ब्लैक इकॉनमी का उदय होता है जो उस राज्य को बुरी तरह से प्रभावित करती है।
- **राजनीतिक और प्रशासनिक आयाम:** कथित रूप से, स्थानीय राजनेता और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का ड्रग माफिया के साथ गठजोड़ है और वे उन्हें गुप्त समर्थन प्रदान कर रहे हैं; जो सदाचार और नैतिक स्वामित्व का सवाल खड़ा करते हैं।

संकट से निपटने के उपाय

चूँकि समस्याएँ सामाजिक, राजनीतिक और प्रशासनिक संरचनाओं में रिसाव के माध्यम से उत्पन्न हुई हैं, इसलिये एक महिला पुलिस अधीक्षक के तौर पर मेरी अनुक्रिया परिकलित, सटीक और तीव्र होनी चाहिये जो कि लंबी अवधि के निहितार्थों को ध्यान में रखकर होगी।

सबसे पहले, व्यवस्था के अंदर मौजूद अपराधियों की पहचान करने के लिये स्वयं पुलिस प्रतिष्ठान के भीतर गहन जाँच की जानी चाहिये तत्पश्चात् उन्हें सज़ा मिलनी चाहिये।

विधि का प्रवर्तन: मैं मौजूदा कानूनों की जाँच और उनके सख्त क्रियान्वयन पर ध्यान केंद्रित करूँगी, जिसमें प्रेरणादायक महिला एसपी संजुक्ता पराशर से प्रेरणा ग्रहण करूँगी जिन्होंने कुशलता से पूर्वोत्तर भारत के अनेक राज्यों में विद्रोह पर अंकुश लगाया, साथ ही उग्रवादियों से अवैध हथियारों और गोला-बारूद को ज़ब्त किया।

सीमा रक्षक बलों की मदद लेना: चूँकि मेरा ज़िला एक सीमांत राज्य में है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय तत्त्वों के शामिल होने की संभावना भी हो सकती है। इसके लिये, पुलिस बल को सीमा सुरक्षा कर्मियों के साथ मिलकर कार्य करना होगा क्योंकि पेट्रोलिंग और तलाशी अभियान के साथ स्थानीय तत्त्वों को अलग किया जा सकता है।

विधि प्रवर्तन करने के अलावा, मैं ज़िलाधिकारी जैसे शीर्ष प्रशासनिक पदाधिकारियों के साथ समस्या के सामाजिक आयामों पर भी चर्चा करूँगी। साथ ही अन्य सहायक कर्त्ताओं, जैसे कि गैर-सरकारी संगठनों, पंचायत प्रमुखों आदि को भी इसमें शामिल करने को कहूँगी ताकि शिक्षा व्यवस्था पुन: स्थापित करने तथा समस्या को समग्र रूप से संबोधित करने के लिये संयुक्त तरीके से कार्य किया जा सके।

पोस्त की खेती से यदि कोई नियमित किसान जुड़ा है तो उससे यह छुड़वाने का प्रयास किया जाना चाहिये।

भारत के सीमांत ज़िलों को आर्थिक रूप से समृद्ध, सामाजिक रूप से समरसता और अवैध आपराधिक नेटवर्क से मुक्त रखने की आवश्यकता है, क्योंकि एक पीड़ित/व्यथित सीमांत ज़िले से भारत की सुरक्षा, एकता और अखंडता पर दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

प्रश्न: भारत में हाल के समय में बढ़ती चिंता रही है कि प्रभावी सिविल सेवा नैतिकता, आचरण-संहिताओं, पारदर्शिता उपायों, नैतिक एवं शुचिता व्यवस्थाओं तथा भ्रष्टाचार निरोधी अभिकरणों को विकसित किया जा सके। इस परिप्रेक्ष्य में, तीन विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है जो सिविल सेवाओं में शुचिता और नैतिकता को आत्मसात् करने हेतु प्रत्यक्ष रूप से प्रासंगिक हैं। ये क्षेत्र निम्नलिखित हैं-

1. **सिविल सेवाओं में, नैतिक मानकों और ईमानदारी के विशिष्ट खतरों का पूर्वानुमान करना,**
2. **सिविल सेवकों की नैतिक सक्षमता को सशक्त करना और**
3. **सिविल सेवाओं में नैतिक मूल्यों और ईमानदारी की अभिवृद्धि के लिये, प्रशासनिक प्रक्रियाओं एवं प्रथाओं का विकास करना।**

उपरोक्त तीन मुद्दों का हल निकालने के लिये संस्थागत उपाय सुझाइये। (250 शब्द, 20 अंक)

In recent times, there has been an increasing concern in India do develop effective civil service ethics, codes of conduct, transparency measures, ethics and integrity systems and anti-corruption agencies. In view of this, there is a need being felt to focus on three specific areas, which are directly relevant to the problems of internalizing integrity and ethics in the civil services. These are as follows:

1. **Anticipating specific threats to ethical standards and integrity in the civil services,**
2. **Strengthening the ethical competence of civil servants and**
3. **Developing administrative processes and practices which promote ethical values and integrity in civil services.**

Suggest institutional measures to address the above three issues.

उत्तर: हालिया परिदृश्य में, लोक सेवाओं से नैतिक व्यवहार और शुचिता के उच्च मानकों के लिये आम नागरिकों, कॉर्पोरेट क्षेत्र और नागरिक समाज की उम्मीद बढ़ रही है। इसे प्रोत्साहित करने के लिये विभिन्न उपाय, जैसे- आचार संहिता, नागरिक घोषणापत्र आदि विकसित किये गए हैं। हालाँकि, इसे और अधिक नागरिक-अनुकूल बनाने के लिये लोक सेवाओं में पेशेवर नैतिकता (प्रोफेशनल एथिक्स) और शुचिता को आत्मसात करने पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिये।

उपर्युक्त प्रकरण में अंतर्निहित मूल्य

- लोक सेवकों की नैतिक शुचिता
- शासन में सत्यनिष्ठा
- लोक सेवकों की नैतिक अभिवृत्ति
- जवाबदेही
- पारदर्शिता और नागरिक भागीदारी

1. सिविल सेवाओं में, नैतिक मानकों और शुचिता के लिये विशिष्ट खतरों का पूर्वानुमान करना

- **लालफीताशाही:** प्रभावी सेवा वितरण के लिये अनावश्यक प्रशासनिक जटिलताओं की पहचान की जानी चाहिये और उन्हें हटा दिया जाना चाहिये।
- **गोपनीयता की संस्कृति:** लोक सेवकों और सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा लिये गए निर्णय पारदर्शी और यथासंभव खुले (Open) होने चाहिये। साथ ही आधिकारिक निर्णयों के लिये कारण भी दिये जाने चाहिये।
- **अपर्याप्त शिकायत निवारण प्रणाली:** सार्वजनिक शिकायतों का समय पर समाधान और सार्वजनिक संगठनों को प्रदान की गई उपयुक्त प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिये प्रभावी तंत्र स्थापित किये जाने चाहिये। शिकायत निवारण प्रक्रियाओं की निगरानी की जानी चाहिये ताकि प्रणालियों की समीक्षा सुनिश्चित करते हुए प्रदर्शन में सुधार किया जा सके।
- **एकपक्षीय झुकाव और पक्षपातपूर्ण रवैया:** एक पेशेवर और गैर-पक्षपातपूर्ण लोक सेवकों के पदानुक्रम को बनाने के लिये आचरण नियमों और आचार संहिता का प्रभावी कार्यान्वयन होना चाहिये।

- **सिविल सेवकों का अभिजात्यवाद:** जन भागीदारी बढ़ाने और सार्वजनिक सेवा वितरण में सुधार के लिये लोक सेवकों में सार्वजनिक उन्मुखता महत्त्वपूर्ण है। नागरिक-हितैषी व्यवहार सुनिश्चित करने के लिये लोक सेवकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये।

2. लोक सेवकों की नैतिक सक्षमता को सशक्त करना

- **प्रशिक्षण और प्रदर्शन मूल्यांकन:** यह ईमानदार लोक सेवकों को प्रोत्साहित करेगा और उन्हें दूसरों के अनुकरण के लिये प्रेरणास्रोत बनाएगा।
- **पुरस्कार और सम्मान:** यह लोक सेवाओं के लिये बेहतर और नवाचारी समाधान विकसित करने के लिये सिविल सेवाओं में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देगा।
- **समावेशी कार्य संस्कृति को बढ़ावा देना:** सेवाओं की प्रभावशीलता तथा अधिकारियों के बीच सहयोग बढ़ाने के लिये सख्त पदानुक्रम को लचीला बनाना होगा।
- **सामाजिक और सांस्कृतिक सक्षमता:** इससे लोक सेवकों को विविधतावादी व बहुलतावादी भारतीय समाज को समझने और जनता की उच्च आकांक्षाओं के अनुरूप प्रदर्शन करने में मदद मिलेगी।

3. लोक सेवाओं में नैतिक मूल्यों और ईमानदारी की अभिवृद्धि के लिये, प्रशासनिक प्रक्रियाओं एवं प्रथाओं का विकास करना

- **जवाबदेही को बढ़ावा देना:** प्रभावी कानून और उनका उचित क्रियान्वयन जिनके लिये लोक सेवकों को अपने आधिकारिक निर्णयों के कारण देने की आवश्यकता होती है, उदाहरण के लिये- आरटीआई अधिनियम, 2005।
- **भ्रष्टाचार को कम करना:** प्रशासनिक कार्य की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिये भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, व्हिसलब्लोअर संरक्षण अधिनियम इत्यादि को मज़बूत करना। विवेकाधिकार को कम करने के लिये ई-गवर्नेंस के रूप में तकनीकी हस्तक्षेप, सामाजिक अंकेक्षण आदि जैसे प्रयासों को बढ़ावा देना।
- **मानव संसाधन प्रबंधन रणनीतियाँ:** प्रदर्शन-आधारित वेतन, पार्श्व प्रवेश (लैटरल एंट्री), बहु-चरण प्रशिक्षण इत्यादि सार्वजनिक सेवा वितरण की दक्षता और गुणवत्ता में वृद्धि करेंगे।
- **आंतरिक और बाह्य समितियाँ:** लोक सेवकों और जनता की शिकायतों के निवारण के लिये आंतरिक और बाह्य समितियों की स्थापना। यह संगठन की कार्य संस्कृति में सुधार करता है।
- **आचार संहिता के नियम:** यह लोक सेवकों से उचित व्यवहार सुनिश्चित करने के लिये है, जो कि बिना पक्षपात के होना चाहिये।

लोक सेवकों में नैतिक व्यवहार और शुचिता को बढ़ावा देना और सार्वजनिक प्रशासन को सुधारना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है; यह सुनिश्चित करने के लिये कि सामाजिक कल्याण की नीतियों को सही भावना से कार्यान्वित किया जाए। इससे आम नागरिकों के प्रति लोक सेवकों की जवाबदेही में सुधार होगा। साथ ही, इससे सरकारी व्यवस्था में जनता का विश्वास बढ़ेगा। बृहतर सामाजिक पूंजी बदले में नैतिक शासन को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है।

2018

प्रश्न: राकेश ज़िला स्तर का एक ज़िम्मेदार अधिकारी है जिस पर उसके उच्च अधिकारी भरोसा करते हैं। उसकी ईमानदारी को ध्यान में रखते हुए सरकार ने उसे वरिष्ठ नागरिकों के लिये एक स्वास्थ्य देखभाल योजना के लाभार्थियों की पहचान करने का दायित्व सौंपा है। लाभार्थी होने के लिये निम्नलिखित कसौटियाँ हैं-

(a) 60 वर्ष की या उससे अधिक आयु हो।
(b) किसी आरक्षित समुदाय से संबंधित हो।
(c) परिवार की वार्षिक आय ₹1 लाख से कम हो।
(d) इलाज के बाद लाभार्थी के जीवन की गुणवत्ता में सकारात्मक अंतर होने की प्रबल संभावना हो।

एक दिन एक वृद्ध दंपति राकेश के कार्यालय में योजना के लाभ के लिये आवेदन-पत्र लेकर आया। वे उसके ज़िले के एक गाँव में जन्म से रहते आए हैं। वृद्ध व्यक्ति की बड़ी आँत में एक ऐसे विरले विकार का पता लगा जिससे उसमें रुकावट पैदा होती है। परिणामस्वरूप, उसके पेट में बार-बार तीव्र पीड़ा होती है जिससे वह कोई शारीरिक श्रम नहीं कर सकता है। वृद्ध दंपति की देखरेख करने के लिये कोई संतान नहीं है। एक विशेषज्ञ शल्य चिकित्सक, जिससे वे मिले हैं, बिना फीस के उनकी शल्य चिकित्सा करने को तैयार है। फिर भी, उस वृद्ध दंपति को आकस्मिक व्यय, जैसे दवाइयाँ, अस्पताल का खर्च, आदि जो लगभग ₹1 लाख होगा, स्वयं ही वहन करना पड़ेगा। दंपति मानक 'ब' के अलावा योजना का लाभ प्राप्त करने की सारी कसौटियाँ पूरी करता है। फिर भी, किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता निश्चित तौर पर उनके जीवन की गुणवत्ता में काफी अंतर पैदा करेगी। राकेश को इस परिस्थिति में क्या अनुक्रिया करनी चाहिये?

(250 शब्द, 20 अंक)

Rakesh is a responsible district level officer, who enjoys the trust of his higher officials. Knowing his honesty, the government entrusted him with the responsibility of identifying the beneficiaries under a healthcare scheme meant for senior citizens.

The criteria to be a beneficiary are the following:

(a) 60 years of age or above.
(b) Belonging to a reserved community.
(c) Family income of less than ` 1 lakh per annum.
(d) Post-treatment prognosis is likely to be high to make a positive difference to the quality of life of the beneficiary.

One day, an old couple visited Rakesh's office with their application. They have been the residence of a village in his district since their birth. The old man is diagnosed with a rare condition that causes obstruction in the large

intestine. As a consequence, he has severe abdominal pain frequently that prevents him from doing any physical labour. The couple have no children to support them. The expert surgeon whom they contacted is willing to do the surgery without charging any fee. However, the couple will have to bear the cost of incidental charges, such as medicines, hospitalization, etc., to the tune of ` 1 lakh. The couple fulfills all the criteria except criterion 'b'. However, any financial aid would certainly make a significant difference in their quality of life.

How should Rakesh respond to the situation?

उत्तर: वृद्ध दंपति को विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अमानवीय दशाओं में अपना जीवन-यापन करना पड़ता है क्योंकि वृद्ध दंपति शारीरिक एवं मानसिक रूप से कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं। यह समस्या तब और जटिल हो जाती है जब उनकी देखभाल एवं रखरखाव के लिये कोई संतान न हो; उपर्युक्त प्रकरण में इन्हीं परिस्थितियों व समस्याओं को उल्लिखित किया गया है।

वस्तुत: राकेश की ईमानदारी को ध्यान में रखते हुए उसे वरिष्ठ नागरिकों के लिये एक स्वास्थ्य देखभाल योजना के लाभार्थियों की पहचान करने का दायित्व सौंपा गया है और लाभार्थी होने की कसौटियाँ भी बताई गई हैं। अत: राकेश का यह कर्त्तव्य व जवाबदेही बनती है कि वह कसौटियों के अनुसार ही योजना के लाभार्थियों का चयन करे तथा इन कसौटियों में वृद्ध दंपति मानक 'ब' का पालन नहीं करता है, इस कारण वह इस योजना का लाभार्थी नहीं हो सकता है। यह भी संभव है कि अगर इस वृद्ध दंपति को इस योजना का लाभार्थी बनाया जाए, तो कोई आरक्षित समुदाय का वृद्ध व्यक्ति इस योजना से बाहर हो जाए क्योंकि इस योजना का वास्तविक लाभार्थी आरक्षित समुदाय है जिससे इस योजना का उद्देश्य ही समाप्त हो जाएगा।

लेकिन, अब यह सवाल उठता है कि वृद्ध दंपति केवल मानक 'ब' का पालन नहीं करता है, जबकि अन्य सभी कसौटियों का प्रभावी पालन करता है। चूँकि, वृद्ध दंपति के पास कोई संतान भी नहीं है जो वृद्ध दंपति के इलाज का खर्च वहन कर सके। इन परिस्थितियों में यह प्रभावी विकल्प है कि मैं वृद्ध दंपति को योजना का लाभार्थी बनाऊँ और इलाज के लिये वित्तीय मदद करूँ।

इस बिंदु पर भी विचार करना ज़रूरी है कि एक विशेषज्ञ शल्य चिकित्सक भी उनकी शल्य चिकित्सा बिना फीस के करने को तैयार है। वृद्ध व्यक्ति के पेट में बार-बार तीव्र पीड़ा होती है जिससे वह शारीरिक श्रम नहीं कर सकता है। अत: वृद्ध दंपति की शल्य चिकित्सा पश्चात् वह शारीरिक श्रम करके अपनी जीवन-गुणवत्ता में सुधार के साथ ही राष्ट्र के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है और यह वृद्ध दंपति बोझ न बनकर योग्य मानवीय संसाधन में रूपांतरित हो सकेगा।

इसके अतिरिक्त, यह स्पष्ट है कि किसी भी प्रकार की वित्तीय सहायता निश्चित तौर पर उनकी जीवन की गुणवत्ता में काफी अंतर पैदा करेगी, जो कि योजना की कसौटियों का मूल है। अत: राकेश को निश्चित ही वृद्ध दंपति की सहायता का प्रयास करना चाहिये जिससे उनके जीवन में गुणात्मक सकारात्मक सुधार आ सके, जो कि कल्याणकारी राज्य के हितों के भी अनुकूल है।

उपर्युक्त प्रकरण में यह हो सकता है कि उच्च अधिकारियों को इस बात का पता लगने पर उसकी ईमानदारी व कर्त्तव्यनिष्ठता पर सवाल खड़े किये जा सकते हैं क्योंकि वृद्ध दंपति मानक 'ब' का पालन नहीं करता है। भले ही यह योजना की कसौटियों से थोड़ा-सा विचलन है लेकिन यह प्रयास वृद्ध दंपति के जीवन में गुणात्मक सुधार लाएगा, जो मानवीयता व नैतिकता के हितों के अनुकूल है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में खुशी लाना किसी भी ज़िम्मेदार अधिकारी का परम कर्त्तव्य है, अत: राकेश को वृद्ध दंपति की मदद करनी चाहिये। साथ ही किसी एनजीओ एवं स्वयंसेवी संगठन को भी इस कार्य में शामिल करने का प्रयास करना चाहिये क्योंकि मानक का उल्लंघन तो नहीं किया जा सकता, लेकिन उस वृद्ध दंपति की सहायता करना नैतिक दृष्टि से सर्वथा उचित है।

प्रश्न: अपने मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते आपकी पहुँच महत्त्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों तथा आने वाली बड़ी घोषणाओं, जैसे सड़क निर्माण परियोजनाएँ, तक जनता के अधिकार-क्षेत्र में जाने से पहले हो जाती है। मंत्रालय एक बड़ी सड़क निर्माण योजना की घोषणा करने वाला है जिसके लिये खाके तैयार हो चुके हैं। नियोजकों ने इस बात का पूरा ध्यान रखा है कि सरकारी भूमि का अधिक-से-अधिक उपयोग किया जाए ताकि निजी भूमि का कम-से-कम अधिग्रहण करना पड़े। निजी भूमि के मालिकों के लिये क्षतिपूर्ति की दरें भी सरकारी नियमों के अनुसार निर्धारित कर ली गई हैं। निर्वनीकरण कम-से-कम हो इसका भी ध्यान रखा गया है। ऐसी आशा है कि परियोजना की घोषणा होते ही उस क्षेत्र और आसपास के क्षेत्र की भूमि की कीमतों में भारी उछाल आएगी।

इसी बीच, संबंधित मंत्री ने आपसे आग्रह किया कि सड़क का पुन:सरेखण इस प्रकार किया जाए जिससे सड़क मंत्री के 20 एकड़ के फार्म हाउस के पास से निकले। इसके साथ ही मंत्री ने यह भी सुझाव दिया कि वह आपकी पत्नी के नाम, प्रस्तावित बड़ी सड़क परियोजना के आसपास एक बड़ा भूखंड प्रचलित दरों पर जो कि नाममात्र की हैं, क्रय करने में सहायता करेंगे। मंत्री ने आपको यह भी विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि इसमें कोई नुकसान नहीं है क्योंकि भूमि वैधानिक रूप से खरीदीजा रही है। वह आपसे यह भी वादा करता है कि यदि आपके पास पर्याप्त धनराशि नहीं है, तो उसकी पूर्ति में भी आपकी सहायता करेगा। लेकिन सड़क के पुन:सरेखण में बहुत-सी कृषि-योग्य भूमि का अधिग्रहण करना पड़ेगा, जिससे सरकार पर काफी वित्तीय भार पड़ेगा तथा किसान

भी विस्थापित होंगे। केवल यह ही नहीं, इसके चलते बहुत सारे पेड़ों को भी कटवाना पड़ेगा, जिससे पूरे क्षेत्र का हरित आवरण समाप्त हो जाएगा। इस परिस्थिति का सामना होने पर आप क्या करेंगे? विभिन्न प्रकार के हित-द्वन्द्वों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिये तथा स्पष्ट कीजिये कि एक लोक सेवक होने के नाते आपके क्या दायित्व हैं।

(250 शब्द, 20 अंक)

As a senior officer in the Ministry, you have access to important policy decisions and upcoming big announcements such as road construction projects before they are notified in the public domain. The Ministry is about to announce a mega road project for which the drawings are already in place. Sufficient care was taken by the planners to make use of the government land with minimum land acquisition from private parties. Compensation rate for private parties was also finalized as per government rules. Care was also taken to minimize deforestation. Once the project is announce, it is expected that there will be a huge spurt in real estate prices in and around that area.

Meanwhile, the Minister concerned insists that you realign the road in such a way that it comes closer to his 20 acres farm house. He also suggests that he would facilitate purchase of a big plot of land in your wife's name at the prevailing rate which is very nominal, in and around the proposed mega road project. He also tries to convince you by saying that there is no harm in it as he is buying the land legally. He even promises to supplement your savings in case you do not have sufficient funds to buy the land. However, by the act of realignment, a lot of agricultural land has to be acquired, thereby causing considerable financial burden on the government, and also displacement of the farmers. As if this is not enough, it will involve cutting down of a large number of trees, denuding the area of its green cover.

Faced with this situation, what will you do? Critically examine various conflicts of interest and explain what are your responsibilities as a public servant.

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में एक वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते मेरी कर्त्तव्यनिष्ठता, जवाबदेहिता, पारदर्शिता तथा सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का परीक्षण है। वरिष्ठ अधिकारी होने के कारण मुझे मंत्रालय के महत्त्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों की जानकारी पहले हो जाती है, अत: इसका उपयोग मैं अपने व्यक्तिगत हित में कर सकता हूँ।

लेकिन इस प्रकार की परिस्थिति का सामना होने पर मैं अपने व्यक्तिगत हितों पर सार्वजनिक हितों को वरीयता दूँगा और मंत्री द्वारा दिये जा रहे विभिन्न प्रस्तावों को अस्वीकार करने का प्रयास करूँगा। इसके अलावा, पहले जिस प्रकार सड़क का खाका तैयार किया गया है, जिसमें निजी भूमि का अधिग्रहण कम-से-कम होने के साथ ही निर्वनीकरण कम-से-कम हो, इसका ध्यान रखा गया है, इसी खाके के अनुसार 'बड़ी सड़क निर्माण योजना' की दिशा में कार्य करने का प्रयास करूँगा। हो सकता है कि मंत्री द्वारा प्रस्ताव को अस्वीकार करने के पश्चात् मेरे सामने विभिन्न प्रकार की चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे- मेरे परिवार पर सुरक्षा का संकट एवं मीडिया, आम जनमानस में मेरी छवि को खराब करना; लेकिन मैं इन सभी समस्याओं का समुचित समाधान करने का प्रयास करूँगा। उपर्युक्त प्रकरण में विभिन्न प्रकार के हित द्वंद्व निम्नलिखित हैं-

व्यक्तिगत हित बनाम अपने कर्त्तव्यों का समुचित निवर्हन सत्यनिष्ठा, जवाबदेहिता, पारदर्शिता जैसे मूल्यों का पालन बनाम अपने परिवार की सुख-सुविधाओं में वृद्धि करना समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना बनाम 'स्वहित' व भ्रष्टाचार को महत्त्व देना।

पहले हित द्वंद्व में मंत्री के प्रस्ताव को स्वीकार करने पर मंत्री का मेरे प्रति भरोसा बढ़ेगा और भविष्य में उससे अन्य प्रकार की भी मदद ले सकता हूँ। लेकिन इससे मैं पद की शपथ के अनुरूप अर्थात् कर्त्तव्यनिष्ठा से कार्य नहीं कर सकूँगा, जो एक लोक सेवक के दायित्व के विपरीत है।

दूसरे हित द्वंद्व में एक लोक सेवक होने के नाते मुझे सत्यनिष्ठा, जवाबदेहिता, पारदर्शिता जैसे मूल्यों का पालन करना चाहिये क्योंकि यह मेरी 'नैतिक संहिता' में उल्लिखित है। दूसरी तरफ अगर मैं इस समझौते में शामिल हो जाऊँ तो इससे मेरी पत्नी को प्रस्तावित बड़ी सड़क परियोजना के आसपास भूखंड को क्रय करने में मंत्री मेरी सहायता करेगा; इस भूखंड की कीमत अधिक है जिसे मैं अपने वेतन से प्राप्त नहीं कर सकता हूँ। अत: इस समझौते से मेरे परिवार की सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

तीसरे हित द्वंद्व में एक व्यक्ति व अधिकारी होने के नाते समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाना मेरा कर्त्तव्य है। तो वहीं मंत्री के प्रस्ताव को स्वीकार करके मैं भ्रष्टाचार के माध्यम से 'स्वहित' को महत्त्व दे सकता हूँ और मंत्री का सहयोग होने के कारण मेरा नाम भी उजागर होने की संभावना कम है। लेकिन यह कार्य मेरी आचार संहिता एवं सामाजिक हित के विपरीत है।

एक लोक सेवक होने के नाते मेरे निम्नलिखित दायित्व हैं-

- सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन करने का प्रयास करूँ जिससे सही लाभार्थियों तक संसाधनों की पहुँच सुनिश्चित हो सके।
- सरकार के वित्त का अनावश्यक दुरुपयोग न हो, क्योंकि यह जनता का धन है जिसका समुचित एवं देश के विकास में ही उपयोग होना चाहिये।
- अपने व्यक्तिगत हितों के ऊपर सार्वजनिक हितों को वरीयता दूँ।
- सिविल सेवक को आचार संहिता व नैतिक संहिता का पालन करते हुए संविधान के सुसंगत कार्य करने का प्रयास करना चाहिये।
- लोक सेवक को विस्थापन एवं समुचित पुनर्वास के साथ ही हरित वातावरण को भी महत्त्व देना चाहिये अर्थात् पर्यावरण-मानव सह-अस्तित्व विकास पर बल देना चाहिये।

निष्कर्षत: वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते मंत्री की बात को अस्वीकार करूँगा, जो कि मेरे कर्त्तव्य के अनुकूल होने के साथ ही सामाजिक हित में होगा।

प्रश्न: यह एक राज्य है जिसमें शराबबंदी लागू है। अभी-अभी आपको इस राज्य के एक ऐसे ज़िले में पुलिस अधीक्षक नियुक्त किया गया है जो अवैध शराब बनाने के लिये कुख्यात है। अवैध शराब से बहुत मौतें हो जाती हैं, कुछ रिपोर्ट की जाती हैं और कुछ नहीं, जिससे ज़िला अधिकारियों को बड़ी समस्या होती है।

अभी तक इसे कानून और व्यवस्था की समस्या के दृष्टिकोण से देखा जाता रहा है और उसी तरह इसका सामना किया जाता रहा है। छापे, गिरफ्तारियाँ, पुलिस के मुकदमे, आपराधिक मुकदमे–इन सभी का केवल सीमित प्रभाव रहा है। समस्या हमेशा की तरह अभी भी गंभीर बनी हुई है।

आपके निरीक्षणों से पता चलता है कि ज़िले के जिन क्षेत्रों में शराब बनाने का कार्य फल-फूल रहा है, वे आर्थिक, औद्योगिक तथा शैक्षणिक रूप से पिछड़े हैं। अपर्याप्त सिंचाई सुविधाओं का कृषि पर बुरा प्रभाव पड़ता है। विभिन्न समुदायों में बार-बार होने वाले टकराव अवैध शराब निर्माण को बढ़ावा देते हैं। अतीत में लोगों के हालात में सुधार लाने के लिये न तो सरकार के द्वारा और न ही सामाजिक संगठनों के द्वारा कोई महत्त्वपूर्ण पहलें की गई हैं।

समस्या को नियंत्रित करने के लिये आप कौन-सा नया उपागम अपनाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

It is a State where prohibition is in force. You are recently appointed as the Superintendent of Police of a district notorious for illicit distillation of liquor. The illicit liquor leads to many deaths, reported and unreported, and causes a major problem for the district authorities.

The approach till now had been to view it as a law and order problem and tackle it accordingly. Raids, arrests, police cases, criminal trials – all these had only limited impact. The problem remains as serious as ever.

Your inspections show that the parts of the district where the distillation flourishes are economically, industrially and educationally backward. Agriculture is badly affected by poor irrigation facilities. Frequent clashes among communities gave boost to illicit distillation. No major initiatives had taken place in the past either from the government's side or from social organizations to improve the lot of the people.

Which new approach will you adopt to bring the problem under control?

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में एक पुलिस अधीक्षक के रूप में मुझे ज़िले में अवैध शराब निर्माण तथा इसके पीछे विद्यमान कारणों को समाप्त करने हेतु नवीन उपागमों को अपनाने पर ध्यान देना होगा।

नवीन उपागमों को अपनाने से पहले मैं ज़िले की अवैध शराब से जुड़ी सभी समस्याओं को जानने का प्रयास करूँगा जो निम्नलिखित हैं-

- ज़िला अवैध शराब निर्माण हेतु कुख्यात है।
- अवैध शराब के सेवन से कई मौतें होती हैं तथा सबकी रिपोर्टिंग भी नहीं हो पाती।
- इस समस्या का प्रभावी समाधान कानून व्यवस्था के उपागम पर काम करके नहीं हो पा रहा है।

ज़िले में जब उपर्युक्त समस्याओं के मूल में विद्यमान कारणों पर गौर किया गया तो इसके पीछे प्रमुख कारण निम्नलिखित रहे-

- ज़िले का आर्थिक, शैक्षिक एवं औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ापन।
- सिंचाई व्यवस्था की कमी के कारण कृषि का पिछड़ापन।
- सामुदायिक टकराव।
- सरकारी व गैर-सरकारी संगठनों का उदासीन प्रयास जिससे लोगों का सही विकास ही नहीं हो पाया।

इन कारणों के समाधान हेतु मैं निम्नलिखित नवीन उपागमों पर कार्य करूँगा-

- सर्वप्रथम ज़िले में विद्यमान आर्थिक संभावनाओं का पता लगाऊँगा तथा ज़िला प्रशासन के साथ मिलकर ज़िले की शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन लाऊँगा।
- सरकार की कल्याणकारी एवं विकासपरक योजनाओं, जैसे कौशल विकास योजना, उस्ताद योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना आदि का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करूँगा। जिससे लोगों में कौशल विकास को बढ़ावा देकर छोटे एवं स्थानीय रोज़गार अवसरों का विकास किया जा सके। साथ ही कृषि हेतु सिंचाई की समस्या का निराकरण किया जा सके।
- औद्योगिक पिछड़ापन दूर करने के लिये राज्य सरकार से वार्त्ता करके इस ज़िले में उद्योगों को आकर्षित करने हेतु दीर्घकालिक प्रयासों को प्रभावी बनाया जा सकता है।
- क्षेत्र में कृषि एवं उससे संबद्ध रोज़गार अवसरों को विविधीकृत करने का प्रयास करूँगा, जैसे मधुमक्खीपालन, पशुपालन, मत्स्यपालन आदि। साथ ही, कृषि की ऐसी पद्धतियों को अपनाने हेतु लोगों में जागरूकता लाने का प्रयास करूँगा जो लागत प्रभावी एवं पर्यावरण के अनुकूल भी हों। जैसे जैविक खेती की दिशा में प्रयास करना, ज़ीरो बजट कृषि का विकास करना- जिससे जल की न्यूनतम आवश्यकता हो- तथा सिंचाई की नवीन विधियों का प्रसार करना।
- तात्कालिक तौर पर इस समस्या के समाधान हेतु अवैध शराब की बिक्री एवं आपूर्ति प्रक्रिया को रोकना होगा। इसके लिये आबकारी एवं पुलिस विभाग के प्रयोग से औचक जाँच तथा पेट्रोलिंग को बढ़ाया जाएगा। साथ ही सिविल सोसायटी, सामाजिक समूह के संगठन तथा मीडिया का सहारा लेकर लोगों को जागरूक किया जाएगा क्योंकि शराबबंदी लागू है फिर भी शराब का प्रयोग हो रहा है जो ज़िले में नशे की समस्या की ओर संकेत करता है। अत: 'नशामुक्ति' एवं 'शराबमुक्ति' हेतु प्रशासनिक एवं सामाजिक स्तर

पर गंभीर प्रयास करूँगा। इस कार्य में गैर-सरकारी संगठनों के माध्यम से प्रयासों का गहनीकरण किया जा सकेगा। साथ ही नशामुक्ति केंद्र भी खुलवाने का प्रयास करूँगा।

- ज़िले में सामुदायिक टकराव के मूल में विद्यमान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक कारकों की पहचान कर स्थानीय राजनीतिक नेतृत्व के सहयोग से समाधान का प्रयास करूँगा तथा सामुदायिक विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाऊँगा।
- चूँकि, इस समस्या का एक पक्ष कानून एवं व्यवस्था से जुड़ता है अत: अराजक तत्त्वों एवं अवैध शराब निर्माताओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। साथ ही, इससे संबंधित मौतों की पूर्ण रिपोर्टिंग हेतु पुलिस को विशेष निर्देश दूँगा।

इस प्रकार अवैध शराब के निर्माण एवं बिक्री से जुड़ी समस्या को सिर्फ कानून एवं प्रशासन के प्रयास से समाप्त नहीं किया जा सकता बल्कि इसके लिये स्थानीय लोगों को भी साथ में लेना होगा और ये लोग तभी साथ आएंगे जब इनको विकास की प्रक्रिया में साझीदार बनाया जाएगा। इसके अलावा नशावृत्ति के प्रति लोगों में जागरूकता को मज़बूत करना होगा। इस दिशा में तात्कालिक व दीर्घकालिक दोनों स्तरों पर प्रयास करने होंगे, नशामुक्ति केंद्रों तथा रोज़गार केंद्रों की संख्या बढ़ानी होगी। ज़िले के सभी सरकारी विभागों, जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, विकास एवं पुलिस आदि को इस समस्या से लड़ने हेतु सामूहिक प्रयास करना होगा।

प्रश्न: एक बड़ा औद्योगिक परिवार बड़े पैमाने पर औद्योगिक रसायनों के उत्पादन में संलग्न है। यह परिवार एक अतिरिक्त इकाई स्थापित करना चाहता है। पर्यावरण पर दुष्प्रभाव के कारण अनेक राज्यों ने इसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। किंतु एक राज्य सरकार ने, सारे विरोध को दरकिनार करते हुए, औद्योगिक परिवार की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और एक नगर के समीप इकाई स्थापित करने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

इकाई को 10 वर्ष पूर्व स्थापित कर दिया था और अभी तक बहुत सुचारु रूप से चल रही थी। औद्योगिक बहि:स्रावों से पैदा हुए प्रदूषण से क्षेत्र में भूमि, जल और फसलों पर दुष्प्रभाव पड़ रहा था। इससे मनुष्यों तथा पशुओं में गंभीर स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी आ रही थीं। परिणामस्वरूप, इकाई को बंद करने की मांग को लेकर शृंखलाबद्ध आंदोलन होने लगे। अभी-अभी एक आंदोलन में हज़ारों लोगों ने भाग लिया जिससे पैदा हुई गंभीर कानून और व्यवस्था की समस्या से निपटने के लिये पुलिस को सख्त कदम लेने पड़े। जनाक्रोश के पश्चात् राज्य सरकार ने फैक्टरी को बंद करने का आदेश दे दिया।

फैक्टरी के बंद होने के परिणामस्वरूप न केवल वहाँ काम करने वाले श्रमिक ही बेरोज़गार हुए अपितु सहायक इकाइयों के कामगार भी बेरोज़गार हो गए। इससे उन उद्योगों पर भी बुरा प्रभाव पड़ा जो उस इकाई द्वारा उत्पादित रसायनों पर निर्भर थे।

इस मुद्दे को संभालने के उत्तरदायित्व सौंपे गए एक वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते, आप इस उत्तरदायित्व का निर्वहन किस प्रकार करेंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

A big corporate house is engaged in manufacturing industrial chemicals on a large scale. It proposes to set up an additional unit. Many States rejected its proposal due to detrimental effect on the environment. But one State government acceded to the request and permitted the unit close to a city, brushing aside all opposition.

The unit was set up 10 years ago and was in full swing till recently. The pollution caused by the industrial effluents was affecting the land, water and crops in the area. It was also causing serious health problems to human beings and animals. This gave rise to a series of agitations demanding the closure of the plant. In a recent agitation thousands of people took part, creating a law and order problem necessitating stern police action. Following the public outcry, the State government ordered the closure of the factory.

The closure of the factory resulted in the unemployment of not only those workers who were engaged in the factory but also those who were working in the ancillary units. It also very badly affected those industries which depended on the chemicals manufactured by it.

As a senior officer entrusted with the responsibility of handling this issue, how are you going to address it?

उत्तर: उपर्युक्त प्रकरण में मुद्दे को संभालने के उत्तरदायित्व सौंपे गए एक वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते, समुचित उत्तरदायित्व निर्वहन के पूर्व विभिन्न प्रकार की समस्याएँ नज़र आती हैं, जैसे-

- पर्यावरण बनाम आर्थिक विकास में किसे महत्त्व दिया जाए।
- फैक्टरी को बंद करने के पश्चात् उसमें कार्य करने वाले श्रमिकों एवं सहायक इकाइयों के कामगार भी बेरोज़गार हो गए हैं। अत: इनके रोज़गार का प्रबंधन करना।
- यदि फैक्टरी को प्रारंभ किया जाता है तो इस क्षेत्र में बढ़ती हुई प्रदूषण की समस्या को किस प्रकार रोका जाए।
- फैक्टरी बंद करने के पश्चात् राज्य की आर्थिक गतिविधियों एवं विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि अन्य उद्योग इस इकाई द्वारा उत्पादित रसायनों पर निर्भर थे।

उपर्युक्त परिस्थितियों में उत्तरदायित्व के निर्धारण का एक विकल्प यह है कि इस औद्योगिक रसायन उद्योग को अन्यत्र स्थानांतरित कर दिया जाए; चूँकि यह उद्योग नगर के समीप स्थित है जिसके कारण उत्पन्न प्रदूषण से व्यक्तियों व पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इस विकल्प को अपनाने से आंदोलन भी कम हो जाएगा और कामगार भी बेरोज़गार नहीं होंगे। लेकिन फैक्ट्री को अन्यत्र स्थानांतरित करने से उस क्षेत्र में भी प्रदूषण संबंधित समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं और आंदोलन की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

फैक्ट्री को पुनः प्रारंभ करने से औद्योगिक गतिविधियाँ संचालित होने के साथ ही वहाँ काम करने वाले एवं सहायक इकाइयों के कामगार भी बेरोज़गार नहीं होंगे। इस प्रकार के आंदोलन को ज्यादा तरजीह नहीं देने की आवश्यकता है क्योंकि आज का दौर विकास का है और पर्यावरण को थोड़ी मात्रा में क्षति पहुँचाई जा सकती है। लेकिन, विचारणीय बिंदु है कि फैक्ट्री के संचालित होने से इस क्षेत्र में प्रदूषण की समस्या लगातार बढ़ती जा रही है और निवासियों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ सामने आ रही हैं, अतः इस प्रकार के विकास को प्रोत्साहन नहीं दिया जा सकता है।

उपर्युक्त प्रकरण में यह प्रयास भी किया जा सकता है कि इस रसायन उद्योग के प्रदूषण को कम करने के लिये इस औद्योगिक कारखाने को शहर से दूर स्थापित करने के साथ ही औद्योगिक परिवार द्वारा उचित एवं बेहतर तकनीक का उपयोग करने का प्रयास किया जाए, जिससे प्रदूषण की समस्या को कम किया जा सके। साथ ही, यहाँ के निवासियों से वार्त्तालाप के माध्यम से इस समस्या का समाधान खोजने का प्रयास किया जाए क्योंकि कंपनी के 'कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' के अंतर्गत यह उत्तरदायित्व बनता है कि वह अपने आसपास पर्यावरण की रक्षा करे और वहाँ रहने वाले निवासियों के जीवन-यापन में कोई व्यवधान न उत्पन्न करे।

अगर उपर्युक्त प्रयासों के बावजूद समस्या का समाधान नहीं होता है तो राज्य सरकार ने फैक्टरी को बंद करने का जो आदेश दिया है, उसी दिशा में निर्णय लेने का प्रयास करूँगा। वस्तुतः अत्यधिक जनाक्रोश के पश्चात् किसी भी क्षेत्र में समुचित तरीके से औद्योगिक गतिविधियाँ संचालित नहीं की जा सकती हैं। साथ ही, इस फैक्टरी के संचालित होने के कारण मानव एवं पशुओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं जिससे मानवीय संसाधन का ह्रास हो रहा है। फैक्टरी बंद होने के परिणामस्वरूप यहाँ के एवं सहायक इकाइयों के कामगारों को अन्य फैक्टरी में कार्य करने के लिये भेजा जा सकता है और उन्हें कौशल प्रशिक्षण देने का प्रयास किया जा सकता है। साथ ही, पर्यावरण के विनाश पर किसी भी आर्थिक विकास को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता है।

प्रश्नः डॉ. 'एक्स' शहर के एक प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं। उन्होंने एक धर्मार्थ न्यास स्थापित कर लिया है जिसके माध्यम से समाज के सभी वर्गों की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये, वे एक उच्च-विशेषज्ञता अस्पताल स्थापित करना चाहते हैं। संयोग से, राज्य के उस क्षेत्र की वर्षों से उपेक्षा रही है। प्रस्तावित अस्पताल उस क्षेत्र के लिये एक वरदान साबित होगा।

आप उस क्षेत्र की कर अन्वेषण इकाई के प्रमुख हैं। डॉक्टर के क्लीनिक के निरीक्षण के दौरान आपके अधिकारियों को कुछ बड़ी अनियमितताएँ ज्ञात हुई हैं। उनमें से कुछ गंभीर हैं जिनके कारण बड़ी मात्रा में करों से प्राप्य धनराशि रुकी रही, जिसका भुगतान डॉक्टर को अब करना चाहिये। डॉक्टर सहयोग के लिये तैयार है। वे तुरंत कर की राशि को अदा करने का वायदा करते हैं।

लेकिन उनके कर भुगतान में कुछ और भी खामियाँ हैं जो पूर्ण रूप से तकनीकी हैं। यदि अभिकरण द्वारा इन तकनीकी खामियों का पीछा किया जाता है, तो डॉक्टर का बहुत सारा समय और उसकी ऊर्जा कुछ ऐसे मुद्दों की तरफ मुड़ जाएगी जो न तो बहुत गंभीर हैं, न ही अत्यावश्यक और न ही कर भुगतान कराने में सहायक हैं। इसके अतिरिक्त, पूरी संभावना है कि इसके कारण अस्पताल के खोले जाने की प्रक्रिया भी बाधित होगी।

आपके समक्ष दो विकल्प हैं:

(i) व्यापक दृष्टिकोण रखते हुए, अधिकाधिक कर भुगतान अनुपालन सुनिश्चित करें और ऐसी कमियों को नज़रअंदाज़ करें जो केवल तकनीकी प्रकृति की हों।

(ii) मामले को सख्ती से देखें और सभी पहलुओं पर आगे बढ़ें, चाहे वे गंभीर हों या केवल तकनीकी।

कर अभिकरण के प्रमुख होने के नाते, आप कौन-से कार्य दिशा का विकल्प अपनाएंगे और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

Dr. 'X' is a leading medical practitioner in a city. He has set up a charitable trust through which he plans to establish a super-speciality hospital in the city to cater to the medical needs of all sections of the society. Incidentally, that part of the State had been neglected over the years. The proposed hospital would be a boon for the region.

You are heading the tax investigation agency of that region. During an inspection of the doctor's clinic, your officers have found out some major irregularities. A few of them are substantial which had resulted in considerable withholding of tax that should be paid by him now. The doctor is cooperative. He undertakes to pay the tax immediately.

However, there are certain other deficiencies in his tax compliance which are purely technical in nature. If these technical defaults are pursued by the agency, considerable time and energy of the doctor will be diverted to issues which are not so serious, urgent or even helpful to the tax collection process. Further, in all probability, it will hamper the prospects of the hospital coming up.

There are two options before you:

(i) Taking a broader view, ensure substantial tax compliance and ignore defaults that are merely technical in nature.

(ii) Pursue the matter strictly and proceed on all fronts, whether substantial or merely technical.

As the head of the tax agency, which course of action will you opt for and why?

उत्तरः प्रश्नोल्लिखित प्रकरण में डॉ. एक्स द्वारा स्थापित किये जा रहे उच्च-विशेषज्ञता युक्त अस्पताल की क्षेत्र को वर्षों से आवश्यकता है, किंतु डॉ. एक्स पर कर से जुड़ी कुछ अनियमितताएँ विद्यमान हैं।

ऐसी परिस्थिति में कर अन्वेषण इकाई के प्रमुख के रूप में मेरा दायित्व बनता है कि मैं इन अनियमितताओं को समाप्त करूँ। साथ ही, राज्य के लोकहित एवं कल्याण से जुड़े विषयों को भी निर्बाध रूप से चलने दूँ।

कर अन्वेषण इकाई के प्रमुख के रूप में यदि मैं प्रश्न में दिये गए विकल्प (i) को अपनाता हूँ तो इससे-

- क्षेत्र के लोगों का व्यापक हित सुनिश्चित होगा तथा अस्पताल निर्माण की प्रक्रिया निर्बाध चल सकेगी।
- इस संदर्भ में राज्य को कोई कर हानि भी नहीं उठानी पड़ रही है, साथ ही डॉक्टर एक्स अपेक्षित सहयोग भी इस संदर्भ में कर रहे हैं।
- व्यापक दृष्टिकोण आधारित प्रथम विकल्प को अपनाने पर डॉक्टर का समय व ऊर्जा तो बच ही रहा है जिसे वह अस्पताल निर्माण पर खर्च कर सकता है, साथ ही कर अभिकरणों पर आजकल 'टैक्स टेररिज़्म' के लगने वाले आरोपों से भी अपने विभाग को बचाया जा सकता है।
- प्रथम विकल्प 'टैक्स फ्रेंडली' प्रशासकीय प्रक्रिया को भी पोषित कर रहा है।

यद्यपि प्रथम विकल्प की सीमा यह है कि इसमें तकनीकी खामियों की उपेक्षा की जा रही है, इसी के समाधान हेतु प्रश्न में विकल्प (ii) दिया गया है। किंतु, ध्यान देने की बात है कि ये तकनीकी खामियाँ न तो बहुत गंभीर हैं, न ही अति आवश्यक हैं और न ही कर भुगतान की प्रक्रिया में उपयोगी। इसलिये इन तकनीकी खामियों पर केंद्रित विकल्प (ii) को अपनाना उचित नहीं होगा क्योंकि इससे लोककल्याण तथा कर भुगतान की प्रक्रिया बाधित होगी। साथ ही, कर अभिकरण पर टैक्स टेररिज़्म जैसे आक्षेप भी लगेंगे।

अत: कर अभिकरण के प्रमुख के रूप में अपने दायित्व निर्वहन की प्रक्रिया में मैं विकल्प (i) की कार्यदशा का चयन करूँगा। इस विकल्प के माध्यम से मैं अपने पद के कर्त्तव्यों को भी पूरा कर सकूँगा और समाज के हित में भी अपना सहयोग देकर सामाजिक हित को पूरा कर सकूँगा।

प्रश्न: एडवर्ड स्नोडन, एक कंप्यूटर विशेषज्ञ तथा सी.आई.ए. के पूर्व व्यवस्था प्रशासक, ने सरकार के निगरानी कार्यक्रमों के अस्तित्व के बारे में गोपनीय सरकारी दस्तावेज़ों का खुलासा प्रेस को कर दिया। अनेक विधि विशेषज्ञों और अमेरिकी सरकार के अनुसार, उसके इस कार्य से गुप्तचर्या अधिनियम, 1917 का उल्लंघन हुआ है, जिसके अंतर्गत राज्य गुप्त बातों का सार्वजनीकरण राजद्रोह माना जाता है। इसके बावजूद कि स्नोडन ने कानून तोड़ा था, उसने तर्क दिया कि ऐसा करना उसका एक नैतिक दायित्व था। उसने अपनी "जानकारी सार्वजनिक करने को (व्हिसल ब्लोइंग)" यह कह कर उचित ठहराया कि "जनता को यह सूचना देना कि उसके नाम पर क्या किया जाता है और उसके विरुद्ध क्या किया जाता है", बताना उसका कर्त्तव्य है।

स्नोडन के अनुसार, सरकार द्वारा निजता के उल्लंघन को वैधानिकता की परवाह किये बिना उसको उज़ागर करना चाहिये क्योंकि इसमें सामाजिक क्रिया तथा सार्वजनिक नैतिकता के अधिक महत्त्वपूर्ण मुद्दे शामिल हैं। अनेक व्यक्ति स्नोडन से सहमत थे। केवल कुछ ने यह तर्क दिये कि स्नोडन ने कानून तोड़ा है और राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ समझौता किया है, जिसके लिये उसे जवाबदेह ठहराया जाना चाहिये।

क्या आप इससे सहमत हैं कि स्नोडन का कार्य कानूनी रूप से प्रतिबंधित होते हुए भी नैतिकता की दृष्टि से उचित था? क्यों या क्यों नहीं? इस विषय में परस्पर स्पर्धी मूल्यों को तोलते हुए अपना तर्क दीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

Edward Snowden, a computer expert and former CIA systems administrator, released confidential Government documents to the press about the existence of Government surveillance programmes. According to many legal experts and the US Government, his actions violated the Espionage Act of 1917, which identified the leak of State secrets as an act of treason. Yet, despite the fact that he broke the law, Snowden argued that he had a moral obligation to act. He gave a justification for his "whistle blowing" by stating that he had a duty "to inform the public as to that which is done in their name and that which is done against them." According to Snowden, the Government's violation of privacy had to be exposed regardless of legality since more substantive issues of social action and public morality were involved here. Many agreed with Snowden. Few argued that he broke the law and compromised national security, for which he should be held accountable.

Do you agree that Snowden's actions were ethically justified even if legally prohibited? Why or why not? Make an argument by weighing the competing values in this case.

उत्तर: इस संदर्भ में सर्वप्रथम 'व्हिसल ब्लोइंग' को जानना आवश्यक है। 'व्हिसल ब्लोइंग' एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें संस्थान के भीतर कार्यरत व्यक्ति द्वारा संस्थान में व्याप्त कदाचार का 'सार्वजनिक रूप' से खुलासा किया जाता है। सामान्यतया संस्थान के कर्मचारी द्वारा ऐसा तब किया जाता है जब वह संस्थान के भीतर समस्या का निदान करने में असफल हो जाता है। इससे कर्मचारी स्वयं को व्यक्तिगत संकट में भी डाल लेता है। इस प्रकरण में यदि स्पर्द्धी मूल्यों पर विचार किया जाए तो ये निम्नलिखित हैं-

- संस्था (सी.आई.ए.) की भलाई तथा जनता की भलाई के बीच सामंजस्य बैठाने की दुविधा है।
- संस्था के कानून तथा सार्वजनिक नैतिकता का द्वंद्व है।
- इसमें सी.आई.ए. की विश्वसनीयता एवं गोपनीयता तथा आम जनता की निजता जैसे मूल्यों में स्पर्द्धा है।

- इस प्रकरण में एक ओर समाज के प्रति नागरिक उत्तरदायित्व, परोपकारिता, ईमानदारी, नैतिक प्रतिबद्धता जैसे मूल्य विद्यमान हैं तो वहीं दूसरी तरफ संस्थान के कार्य में पारदर्शिता, स्वच्छता, कदाचार से मुक्ति दिलाने का प्रशासकीय उत्तरदायित्व भी विद्यमान है।
- इसमें सामाजिक सुरक्षा एवं व्यक्तिगत सुरक्षा के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे स्पर्द्धी मूल्य विद्यमान हैं।

मूल्यों के बीच उपरोक्त द्वंद्व के आलोक में स्नोडन के कार्य को नैतिक दृष्टि से उचित भी कहा जा सकता है तथा अनुचित भी।

सर्वप्रथम, उन तर्कों को देखते हैं जिनके कारण स्नोडन का कार्य उचित है-

- स्नोडन का कार्य सार्वजनिक हित तथा नागरिक उत्तरदायित्व की दृष्टि से उचित है क्योंकि सी.आई.ए. एवं सरकार के निगरानी कार्यक्रमों से जनता की निजता पर संकट उत्पन्न हो रहा था, साथ ही जनता को यह संकट जानना उचित भी है।
- सी.आई.ए. अपनी स्वार्थपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अपने कर्मचारियों को धोखा दे रहा था। साथ ही, सरकार ने किसी ऐसी स्वतंत्र जाँच एजेंसी का निर्माण नहीं किया था जहाँ व्हिसल ब्लोअर बेझिझक मामलों की खबर दे सकें तथा निष्पक्ष जाँच सुनिश्चित की जा सके। इस तरह स्नोडन स्वयं को ठगा महसूस कर रहे थे जिससे उन्होंने कार्य किया।
- चूँकि 'व्हिसल ब्लोइंग के नकारात्मक परिणाम भी होते हैं, जैसे मानसिक यातना, कठिन अदालती कार्यवाही, अपमान, आजीविका एवं राष्ट्रीयता आदि का संकट। इन नकारात्मक परिणामों की संभावना होने पर भी स्नोडन द्वारा 'व्हिसल ब्लोइंग का बहादुरीपूर्ण कार्य नि:स्वार्थ भावना एवं सार्वजनिक हित में किया गया प्रयास प्रतीत होता है।
- स्नोडन ने अपने व्यक्तिगत विवेक तथा सही व गलत के गहन विश्लेषण के आधार पर यह कार्य किया था जिससे सी.आई.ए. का कदाचार दूर हो सके तथा समाज के अधिकारों की रक्षा भी हो सके।

स्नोडन के कार्य को उचित ठहराने वाले तर्कों के विपरीत ऐसे तर्क भी हैं जो स्नोडन के कार्य को अनुचित सिद्ध करते हैं-

- प्रशासकीय उत्तरदायित्व एवं सेवा की 'आचरण-संहिता' के प्रमुख मूल्य विश्वसनीयता एवं गोपनीयता का उल्लंघन किया गया।
- गुप्तचर्या अधिनियम, 1917 का उल्लंघन कहीं-न-कहीं कानूनी नैतिकता की उपेक्षा है।
- सी.आई.ए. (संस्थान) के भी अधिकारों का उल्लंघन हुआ क्योंकि प्रत्येक संस्थान अपने कर्मचारी से गोपनीयता व वफादारी का अधिकार रखता है।
- समाज की निजता की सुरक्षा के लिये राष्ट्रीय सुरक्षा का उल्लंघन किया गया।

अत: उपर्युक्त तर्कों के आधार पर स्नोडन का कार्य अनुचित अवश्य प्रतीत होता है, किंतु गहराई से देखें तो इसके पीछे सी.आई.ए. व सरकार की नीतिगत कमियाँ तथा स्वतंत्र जाँच एजेंसी के अभाव जैसे कारक विद्यमान हैं। साथ ही, एक आधुनिक राष्ट्र में सार्वजनिक निजता, नागरिक सुरक्षा तथा पारदर्शितापूर्ण व्यवस्था को विकसित किये बिना राष्ट्रीय सुरक्षा को सुनिश्चित नहीं कर सकते। अत: नागरिक उत्तरदायित्व व नि:स्वार्थ सार्वजनिक हित की दृष्टि से स्नोडन का कार्य नैतिक है। संभवत: यही कारण है कि 'अनेक व्यक्ति स्नोडन से सहमत थे।'

2017

प्रश्न: आप एक ईमानदार और ज़िम्मेदार सिविल सेवक हैं। आप प्राय: निम्नलिखित को प्रेक्षित करते हैं-

(a) एक सामान्य धारणा है कि नैतिक आचरण का पालन करने से स्वयं को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और परिवार के लिये भी समस्याएँ पैदा हो सकती हैं, जबकि अनुचित आचरण जीविका लक्ष्यों तक पहुँचने में सहायक हो सकता है।

(b) जब अनुचित साधनों को अपनाने वाले लोगों की संख्या बड़ी होती है, तो नैतिक साधन अपनाने वाले अल्पसंख्यक लोगों से कोई फर्क नहीं पड़ता।

(c) नैतिक तरीकों का पालन करना बृहत् विकासात्मक लक्ष्यों के लिये हानिकारक है।

(d) चाहे कोई बड़े अनैतिक आचरण में सम्मिलित न हो, लेकिन छोटे-मोटे उपहारों का आदान-प्रदान प्रणाली को अधिक कुशल बनाता है।

उपर्युक्त कथनों की उनके गुणों और दोषों सहित जाँच कीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are an honest and responsible civil servant. You often observe the following:

(a) There is a general perception that adhering to ethical conduct one may face difficulties to oneself and cause problems for the family, whereas unfair practices may help to reach the career goals.

(b) When the number of people adopting unfair means is large, a small minority having a penchant towards ethical means makes no difference.

(c) Sticking to ethical means is detrimental to the larger developmental goals

(d) While one may not involve oneself in large unethical practices, but giving and accepting small gifts makes the system more efficient.

Examine the above statements with their merits and demerits.

उत्तर: एक सिविल सेवक जो ईमानदार और ज़िम्मेदार हो तथा देश और समाज को बदलने में अपनी भूमिका के लिये प्रतिबद्ध हो; वह जब क्षेत्र में जाकर विभिन्न प्रकार की विसंगतियाँ देखता है तो उसका निराश एवं व्यथित होना स्वाभाविक है। इन्हीं परिस्थितियों में उसके मन में कुछ इस प्रकार के विचार आ सकते हैं-

उत्तर : (a) ऊपरी तौर पर ऐसा अवश्य प्रतीत होता है। कहा भी गया है कि सत्य की राह कठिन एवं काँटों भरी होती है लेकिन अत्यंत कष्ट के बाद भी यही वह पथ होता है जो हमें सफलता की ओर ले जाता है तथा उस मंज़िल तक पहुँचाता है जिससे सबके साथ न्याय हो तथा वह कानूनी, नैतिक एवं सामाजिक रूप से सही हो।

उदाहरण के लिये अपने परिवार के साथ रह रहे एक सिविल सेवक पर सरकारी ठेका देने का दबाव बनाया जाए या फिर गलत तरीके से किये जा रहे कार्य की सही रिपोर्ट बनाने को कहा जाए और ऐसा न करने पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तरीके से धमकी दी जाए तो ऐसा लग सकता है कि उनकी बात मान लेना ही ज़्यादा आसान है।

लेकिन गहराई से देखें तो यह निर्णय उसके खुद के लिये भी नुकसानदायक हो सकता है। इससे न केवल उसकी सत्यनिष्ठा एवं ईमानदारी जैसे मूल्यों पर संकट उत्पन्न होगा, बल्कि ये घटनाएँ सार्वजनिक होने पर अधिकारी के चरित्र एवं सम्मान पर भी आघात करेंगी। साथ ही यह सामाजिक दृष्टिकोण से भी अनैतिक है।

ऐसी परिस्थिति में हमारी पुलिस एवं सुरक्षा एजेंसियाँ सहायक हो सकती हैं। वे ऐसे असामाजिक तत्त्वों से निपट सकती हैं। इस प्रकार के दबाव में अगर निर्णय लिया गया तो ऐसे दबाव बढ़ते ही जाएंगे।

उत्तर : (b) चाहे गलत करने वाले लोग कितने ही अधिक क्यों न हों, सत्य के पक्ष में खड़ा एक व्यक्ति ही उन्हें रोकने में सक्षम होता है। क्योंकि उसके पास नैतिकता का आत्मबल होता है जो बड़ी-से-बड़ी अनैतिक ताकतों को रोक सकता है।

गलत साधन शुरुआती तौर पर भले ही हमारे जीवन को आसान बना दें और व्यक्तिगत लाभ पहुँचाएँ, पर कानूनी तौर पर गलत होने के कारण हमेशा ही दोषी ठहराए जाने की आशंका रहेगी। साथ ही यह मेरे लिये अंतरात्मा के साथ समझौता करने जैसा होगा।

नैतिक साधन अपनाने वाले लोग कितने ही अल्पसंख्यक क्यों न हों, जब ये अपनी आवाज़ उठाते हैं तो इनका साथ देने के लिये कानून व्यवस्था, जनता, मीडिया इत्यादि आते ही हैं। इसी से प्रेरणा लेकर सत्येंद्र दुबे, मंजूनाथ इत्यादि ने आवाज़ उठाई। भले ही उसके लिये इन्हें अपने प्राण गँवाने पड़े पर व्यवस्था में इन्होंने आमूलचूल परिवर्तन ला दिया।

वर्तमान में भी अशोक खेमका, संजीव चतुर्वेदी जैसे सिविल सेवक 'व्हिसलब्लोअर' बनकर यह अहसास दिलाते रहते हैं कि केवल संख्या बल पर सत्य की आवाज़ दबाई नहीं जा सकती है।

उत्तर : (c) नैतिक तरीकों के पालन द्वारा ही वृहद् विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। अनैतिक तरीके शुरुआत में भले ही विकास का भ्रम पैदा करें पर अंततः ये विनाशकारी ही होते हैं।

जैसे- यदि कोई परियोजना ऐसी है जिसकी शुरुआत करने से लाखों हेक्टेयर वन-विनाश होने की संभावना हो तथा इसके लिये कानूनी एवं अन्य प्रावधान भी अनैतिक तरीके से तोड़ने पड़ें तो इस परियोजना से शुरुआती तौर पर भले ही रोज़गार, औद्योगिक उत्पादकता एवं बिजली इत्यादि का लाभ हो पर इससे हुआ प्राकृतिक नाश अंततः गैर-विकासकारी ही होगा।

उत्तर : (d) कहा जाता है कि छोटे-मोटे उपहारों का आदान-प्रदान सिस्टम के बेहतर संचालन में 'ऑयलिंग' का काम करता है। यह कर्मचारियों को छोटे-मोटे लाभ प्रदान कर उनका मोटिवेशन बनाए रखता है।

लेकिन यही छोटे-मोटे उपहार कब लोभ का रूप ले लेते हैं पता भी नहीं चलता है। साथ ही, ऐसी इच्छाएँ निरंतर बढ़ती जाती हैं जिनका कोई अंत नहीं होता है। इसीलिये सिविल सेवा के 'कोड ऑफ कंडक्ट' में अधिकारियों के लिये कुछ प्रतीकात्मक उपहार ही लेने की अनुमति है, जैसे- गुलदस्ता, किताबें इत्यादि।

प्रश्नः आप आई.ए.एस. अधिकारी बनने के इच्छुक हैं और आप विभिन्न चरणों को पार करने के बाद व्यक्तिगत साक्षात्कार के लिये चुन लिये गए हैं। साक्षात्कार के लिये जब आप साक्षात्कार स्थल की ओर जा रहे थे तब आपने एक दुर्घटना देखी जहाँ एक माँ और बच्चा जो कि आपके रिश्तेदार थे, दुर्घटना के कारण बुरी तरह से घायल हुए थे। उन्हें तुरंत सहायता की आवश्यकता थी।

आपने ऐसी परिस्थिति में क्या किया होता? अपनी कार्यवाही का औचित्य समझाइये। (250 शब्द, 20 अंक)

You are aspiring to become an IAS officer and you have cleared various stages and now you have been selected for the personal interview. On the day of the interview, on the way to the venue you saw an accident where a mother and child who happen to be your relatives were badly injured. They needed immediate help.

What would you have done in such a situation? Justify your action.

उत्तरः उक्त परिस्थिति में मुख्यतः दो पक्ष सम्मिलित हैं- मैं और मेरे घायल रिश्तेदार। इस परिस्थिति में मेरे निजी और सामाजिक दायित्वों के बीच द्वंद्व की स्थिति है। एक ओर यहाँ मेरा कॅरियर सिविल सेवा के साक्षात्कार पर निर्भर करता है। वहीं दूसरी ओर मेरा सामाजिक दायित्व है कि मैं सड़क पर घायल व्यक्ति की सहायता करूँ। दी गई परिस्थिति में चूँकि घायल व्यक्ति मेरे रिश्तेदार हैं, अतः यहाँ मेरा पारिवारिक दायित्व भी जुड़ जाता है।

उक्त परिस्थिति में सर्वप्रथम मैं घायल माँ और बच्चे को प्राथमिक चिकित्सा मुहैया करवाने का प्रबंध करूँगा फिर उन्हें हॉस्पिटल भेजकर उचित चिकित्सा दिलाने का प्रयास करूँगा। यदि मेरे साथ कोई मित्र या अन्य रिश्तेदार हों तो उनके साथ उन्हें तुरंत हॉस्पिटल भेजकर अपने साक्षात्कार के लिये जाऊँगा, अन्यथा स्वयं उन्हें हॉस्पिटल पहुँचाउँगा। साथ ही, अन्य रिश्तेदारों को सूचित कर अविलंब हॉस्पिटल पहुँचने को कहूँगा।

हॉस्पिटल में उनकी चिकित्सा प्रारंभ करवाकर मैं अपने साक्षात्कार के लिये चला जाऊँगा। संभव है कि मैं साक्षात्कार के लिये कुछ विलंब हो जाऊँ फिर भी आयोग को पूरी घटना बताने के बाद उनसे आग्रह करूँगा कि मुझे साक्षात्कार में सम्मिलित होने दिया जाए। यदि मुझे साक्षात्कार में सम्मिलित होने का मौका मिलता है तो मैं अपनी पूरी क्षमता के साथ साक्षात्कार दूँगा। यदि मुझे मौका नहीं मिलता है तो मैं अगले वर्ष के लिये प्रयास करूँगा।

निश्चय ही इस प्रकार का निर्णय लेना एक कठिन कार्य है तथापि मुझे इस बात की संतुष्टि अवश्य रहेगी कि मैंने दो मानव जीवन की रक्षा की है। मनुष्य जीवन की रक्षा से बड़ी कोई उपलब्धि नहीं हो सकती है। यदि मैंने उनकी मदद नहीं की होती और उनकी मृत्यु हो जाती तो इसका अपराधबोध शायद मुझे पूरे जीवन असंतुष्ट रखता। फिर सिविल सेवा में भी मुख्य कार्य तो मानव कल्याण ही है और इस प्रकार के निर्णय से भले ही मैं सिविल सेवा से बाहर हो जाता परंतु एक मानव के रूप में मैं स्वयं को सफल पाऊँगा।

प्रश्न: आप किसी संगठन के मानव संसाधन विभाग के अध्यक्ष हैं। एक दिन कर्मचारियों में से एक का ड्यूटी करते हुए देहांत हो गया। उसका परिवार मुआवज़े की मांग कर रहा था किंतु कंपनी ने इस कारण से मुआवज़ा देने से इनकार कर दिया है क्योंकि कंपनी को जाँच द्वारा ज्ञात हुआ कि कर्मचारी दुर्घटना के समय नशे में था। कंपनी के कर्मचारी मृतक कर्मचारी के परिवार को मुआवज़ा देने की मांग करते हुए हड़ताल पर चले गए। प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष ने आपसे इस संबंध में सलाह देने को कहा।

प्रबंधन मंडल को आप क्या सलाह देंगे? अपनी दी गई सलाहों में से प्रत्येक के गुणों और दोषों की चर्चा कीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the head of the Human Resources department of an organisation. One day one of the workers died on duty. His family was demanding compensation. However, the company denied compensation because it was revealed in investigation that he was drunk at the time of the accident. The workers of the company went to strike demanding compensation for the family of the deceased. The Chairman of the management board has asked for your recommendation.

What recommendation would you provide the management? Discuss the merits and demerits of each of the recommendations.

उत्तर: किसी संगठन की प्रगति में कर्मचारियों की खुशहाली, उनकी सुरक्षा तथा कंपनी पर कर्मचारियों का विश्वास अहम होता है। अत: मानव संसाधन विभाग के अध्यक्ष के रूप में मेरी खास तौर पर यह ज़िम्मेदारी है कि कर्मचारियों के कल्याण तथा उनके विश्वास को बनाए रखा जाए। चूँकि, कर्मचारी की मौत के समय वह नशे में था तो क्या इसके लिये मुआवज़ा देने या न देने से संबंधित कोई प्रावधान कंपनी के नियमों में है या नहीं, मैं इसकी पड़ताल करूँगा। साथ ही, नियमों से भी परे जाकर मैं कंपनी हित में कुछ वैसे कदम उठाने का सुझाव दूँगा जिससे तत्कालीन उबाल शांत हो और कंपनी के अन्य कर्मचारी काम पर वापस आ जाएँ। ऐसी स्थिति में प्रबंधन को निम्नलिखित सलाह दूँगा-

मामले की एक बार पुन: जाँच कराई जाए जिसमें कर्मचारी वर्ग के सदस्यों को भी शामिल किया जाए। इससे कर्मचारियों का प्रबंधन में विश्वास बढ़ेगा और तत्कालीन उबाल शांत होकर कंपनी का दैनंदिन कार्य सुचारु रूप से हो सकेगा। अगर इस जाँच में भी कर्मचारी को नशे में पाया जाए तो निम्नलिखित विकल्प हो सकते हैं-

- मुआवज़ा देने से मना कर दिया जाए।
- हड़ताली कर्मचारियों को अनुशासनात्मक कार्रवाई का नोटिस दिया जाए।
- आधा मुआवज़ा दिया जाए।
- पूर्ण मुआवज़ा दिया जाए।

मुआवज़ा देने से मना करने पर कंपनी अपने कानून एवं नियमों पर सख्त रहेगी जिससे कर्मचारियों में अनुशासन आएगा तथा अन्य कर्मचारी भी नियमों की अवहेलना करने से डरेंगे। साथ ही, कंपनी भविष्य के किसी अनुचित दबाव के प्रति भी सख्ती का संदेश दे सकेगी कि दबाव देकर किसी गैर-कानूनी बात को मनवाया नहीं जा सकेगा, पर इससे कंपनी की तात्कालिक समस्या का समाधान नहीं हो सकेगा। हड़ताल के कारण कंपनी के कार्यदिवसों का भी नुकसान होगा और कर्मचारियों में भी अपनत्व की भावना टूटेगी तथा कंपनी पर से उनका विश्वास उठ सकता है। साथ ही, मृतक कर्मचारी के परिवार को भी कोई सहायता नहीं प्राप्त होगी।

इसी प्रकार हड़ताली कर्मचारियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई करने से मामला भड़क सकता है जो कंपनी एवं कर्मचारी किसी के लिये ठीक नहीं रहेगा। आधा मुआवज़ा देना इस दृष्टि से ठीक रहेगा कि कर्मचारी हड़ताल से वापस लौटेंगे और उनमें यह संदेश जाएगा कि यद्यपि कंपनी हमारी भावना का ख्याल रखती है परंतु हमें भी नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिये। अत: इससे कर्मचारियों की हड़ताल भी समाप्त होगी और कंपनी के नियमों की अहमियत भी बनी रहेगी।

पूर्ण मुआवज़ा देने से जहाँ एक ओर कंपनी पर कर्मचारियों की विश्वासबहाली हो सकेगी और कंपनी का काम सुचारु रूप से चल सकेगा, वहीं यह संदेश भी जा सकता है कि दबाव के द्वारा भी कंपनी से अपनी बात मनवाई जा सकती है। साथ ही, कर्मचारी के नशे में होने की ज़िम्मेदारी हमारी कंपनी पर भी है, क्योंकि इस बात की पड़ताल होनी चाहिये कि गेट पर सुरक्षा जाँच में यह सामने क्यों नहीं आया? वस्तुत: मेरा प्राथमिक और अंतिम उद्देश्य कंपनी के स्थायी हितों की रक्षा करना है। अत: मेरी सलाह रहेगी कि पूर्ण मुआवज़ा दे दिया जाए।

अंतत: एक विस्तृत गाइडलाइन बनानी चाहिये जिसमें कंपनी के नियमों और सुरक्षा प्रावधानों का स्पष्टता से उल्लेख किया जाए और एक प्रभावी मैकेनिज़्म बनाकर इसे सख्ती से लागू कराया जाए तथा जाँच की भी पर्याप्त व्यवस्था हो ताकि आगे से नशा करके या अन्य किसी प्रकार असावधानी करने वाले कर्मचारी को दुर्घटना से पहले ही रोका जा सके।

प्रश्न: आप एक स्पेयर पार्ट कंपनी के मैनेजर हैं और आपको एक बड़ी उत्पादक कंपनी 'बी' के प्रवेश से सौदे के लिये बातचीत करनी है। सौदा अत्यधिक प्रतिस्पर्द्धात्मक है तथा आपकी कंपनी के लिये यह सौदा प्राप्त करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। डिनर पर सौदा किया जा रहा है। डिनर के पश्चात् उत्पादक कंपनी 'बी' के मैनेजर ने आपको होटल अपनी गाड़ी से छोड़ने का प्रस्ताव किया। होटल जाते समय कंपनी 'बी' के मैनेजर से एक मोटरसाइकिल को टक्कर लग गई जिससे मोटरसाइकिल पर सवार व्यक्ति बुरी तरह से घायल हो गया।

आप जानते हैं कि मैनेजर तीव्र गति से गाड़ी चला रहा था और वह गाड़ी पर नियंत्रण खो बैठा था। विधि-प्रवर्तन अधिकारी इस घटना की जाँच करने के लिये आते हैं और आप इस घटना के एकमात्र प्रत्यक्ष साक्षी हैं। सड़क दुर्घटनाओं के कड़े कानूनों को जानते हुए आप इस बात से अवगत हैं कि आपके इस घटना के सच्चे बयान से कंपनी 'बी' के मैनेजर पर अभियोग चलाया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप सौदा होना खतरे में पड़ सकता है और यह सौदा आपकी कंपनी के लिये अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

आप किस प्रकार की दुविधाओं का सामना करेंगे? इस परिस्थिति के बारे में आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the manager of a spare parts company A and you have to negotiate a deal with the manager of a large manufacturing company B. The deal is highly competitive and sealing the deal is critical for your company. The deal is being worked out over a dinner. After dinner the manager of manufacturing company B offered to drop you to the hotel in his car. On the way to hotel he happens to hit motorcycle injuring the motorcyclist badly. You know the manager was driving fast and thus lost control. The law enforcement officer comes to investigate the issue and you are the sole eyewitness to it. Knowing the strict laws pertaining to road accidents you are aware that your honest account of the incident would lead to the prosecution of the manager and as a consequence the deal is likely to be jeopardised, which is of immense importance to your company.

What are the dilemmas you face? What will be your response to the situation?

उत्तर: कंपनी के लिये सौदा हासिल करने के साथ-साथ साक्ष्य के लिये गवाह के रूप में उपस्थित होना और घटना की तस्वीर बयाँ करना मेरा कर्त्तव्य है। अगर मैं गवाही देने से मना करता हूँ या झूठी गवाही देता हूँ तो यह अनैतिक एवं गैर-कानूनी होगा। साथ ही, दूसरा मुद्दा यह भी है कि मेरे सच्चे बयान से कंपनी 'बी' के मैनेजर पर अभियोग चलाया जा सकता है जिसके परिणामस्वरूप सौदा खतरे में पड़ सकता है।

स्पेयर पार्ट कंपनी के मैनेजर के रूप में मेरी दोहरी ज़िम्मेदारी है तथा दुविधा यह है कि इस परिस्थिति से निपटने में किस मूल्य को वरीयता दी जाए। अत: मेरे पास कुछ निम्नलिखित विकल्प हो सकते हैं-

- गवाही देने से इनकार कर देना।
- यह बताना कि घटना के वक्त मेरा ध्यान सड़क पर नहीं था इसलिये कुछ स्पष्ट बता पाने में अक्षम हूँ।
- साथी मैनेजर की गलती से पूर्णत: इनकार कर देना तथा मोटरसाइकिल सवार व्यक्ति की गलती बताना।
- घटना की सच्चाई प्रस्तुत कर देना।

चूँकि, भारतीय साक्ष्य अधिनियम के अनुसार गवाही देना कानूनी ज़िम्मेदारी है और ऐसा नहीं करने पर आई.पी.सी. के तहत मुझ पर कार्रवाई हो सकती है। भले ही इससे हमारी कंपनी को सौदा प्राप्त हो जाने की संभावना बढ़ सकती है पर कानूनी रूप से ऐसा करना संभव नहीं।

घटना के वक्त अपना ध्यान कहीं और बताने पर मेरी ज़िम्मेदारी खत्म हो सकती है तथा कोई विधिक कार्रवाई भी संभव नहीं हो सकेगी। साथ ही, इससे मेरी कंपनी को सौदा प्राप्त करना भी आसान हो सकता है। पर एक नैतिक व्यक्ति के रूप में मेरा हृदय मुझे इस बात की इजाज़त नहीं देगा।

साथी मैनेजर की गलती से इनकार कर उसका विश्वास जीतना मेरे प्रोफेशनल उत्तरदायित्व के लिये सबसे सटीक रहेगा पर मुझे इस गलतबयानी का खामियाज़ा भी भुगतना पड़ सकता है। गलत साक्ष्य देना कानूनी रूप से तो गलत है ही, साथ ही तकनीक का प्रयोग कर भी इस घटना की सत्यता परखी जा सकती है जिससे मेरे ऊपर आरोप लग सकता है और मुझे सज़ा हो सकती है।

घटना की सच्चाई प्रस्तुत कर देने से भले ही साथी मैनेजर को सज़ा हो जाए और मेरी कंपनी को सौदा प्राप्त न हो पर कानून का शासन प्रभावी होगा और घायल मोटरसाइकिल सवार को न्याय मिलेगा तथा मैं भी अपने नैतिक एवं विधिक कर्त्तव्य को पूरा कर सकूँगा।

और चूँकि कंपनी में सौदे व्यक्तिगत हित से अधिक व्यावसायिक नफा-नुकसान से ज़्यादा प्रेरित होते हैं। अगर हमारे उत्पाद में क्षमता होगी तो हमें यह सौदा अवश्य मिलेगा।

अंतत: यह भी मान लें कि सौदा हमें नहीं मिला मगर फिर हमें इस बात का फख्र होगा कि हमने अपने मूल्यों के साथ समझौता नहीं किया और देश की न्यायप्रणाली के साथ पूर्णत: सहयोग किया।

प्रश्न: एक मकान जिसे तीन मंज़िल बनाने की अनुमति मिली थी, उसे अवैध रूप से निर्माणकर्त्ता द्वारा छ: मंज़िला बनाया जा रहा था और वह ढह गया। इसके कारण कई निर्दोष मज़दूर, जिनमें महिलाएँ व बच्चे भी शामिल थे, मारे गए। सभी मृतक परिवारों को नकद-मुआवज़ा घोषित किया गया और निर्माणकर्त्ता को गिरफ्तार कर लिया गया।

देश में होने वाली इस प्रकार की घटनाओं के कारण बताइये। इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिये अपने सुझाव दीजिये। **(250 शब्द, 20 अंक)**

A building permitted for three floors, while being extended illegally to 6 floors by a builder, collapses. As a consequence, a number of innocent labourers including women and children died. These labourers are migrants of different places. The government immediately announced cash relief to the aggrieved families and arrested the builder.

Give reasons for such incidents taking place across the country. Suggest measures to prevent their occurrence.

उत्तर: उपर्युक्त वर्णित परिस्थिति में मुख्य रूप से चार पक्ष सम्मिलित हैं- (i) निर्माणकर्त्ता, (ii) नियामक संस्था, (iii) मज़दूर व (iv) सरकार। दी गई परिस्थिति में नैतिक व कानूनी दोनों मानकों का उल्लंघन हुआ है। उक्त परिस्थिति में मुख्य नैतिक मुद्दा निर्माणकर्त्ताओं के अनुचित आचरण से संबंधित है। निर्माणकर्त्ताओं द्वारा अपने संकीर्ण व्यावसायिक हितों को निर्दोष मज़दूरों के जीवन से अधिक महत्त्व दिया गया और इसके लिये कानूनी मानकों का भी स्पष्ट उल्लंघन किया गया।

इससे संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि जाँच अधिकारी द्वारा भी अपने कार्यों का उचित निर्वहन नहीं किया गया।

इस प्रकार की घटनाओं के मुख्य कारणों में हम निम्नलिखित की गणना कर सकते हैं-

- कानून का ठीक ढंग से अनुपालन नहीं। जब स्पष्ट रूप से केवल तीन मंज़िला मकान के निर्माण की अनुमति दी गई तो छः मंज़िला निर्माण कानून का स्पष्ट उल्लंघन।
- नियामक संस्था व जाँच अधिकारियों द्वारा निर्माण की समय-समय पर जाँच न किये जाने से भी लोग इस प्रकार के अनुचित निर्माण को प्रोत्साहित होते हैं।
- अनुचित लाभ के लिये निर्माणकर्त्ताओं द्वारा सुरक्षा मानकों का प्रायः उल्लंघन किया जाता है।
- निर्माण की गलत योजनाओं के कारण भी इस प्रकार की दुर्घटनाएँ देखने को मिलती हैं।
- कई बार गलत निर्माण सामग्रियों के प्रयोग के कारण भी निर्माण स्थायी नहीं हो पाता है और दुर्घटना होती है।

इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिये निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं-

- कानून का उचित अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। इसके लिये प्रत्येक निर्माण से पूर्व निर्माण की योजना और व्यवहार्यता की समुचित जाँच की जाए।
- समय-समय पर प्रोजेक्ट की समुचित जाँच कर यह सुनिश्चित किया जाए कि कोई अवैध निर्माण तो नहीं किया जा रहा है।
- मज़दूरों के सुरक्षा मानकों की पूर्णतः व्यवस्था कराई जाए।
- समय-समय पर विभिन्न निर्माण इकाइयों का निष्पक्ष एजेंसी से सर्वेक्षण कराया जाए।

प्रश्न: आप एक सरकारी विभाग में सार्वजनिक जनसूचना अधिकारी (पी.आई.ओ.) हैं। आप जानते हैं कि 2005 का आर.टी.आई. अधिनियम प्रशासनिक पारदर्शिता एवं जवाबदेही की परिकल्पना करता है। अधिनियम आमतौर पर कदाचित मनमाना प्रशासनिक व्यवहार एवं कार्यों पर रोक लगाने में कार्यरत है। किंतु एक पी.आई.ओ. के स्वरूप में आपने देखा है कि कुछ ऐसे नागरिक हैं जो अपने लिये याचिका फाइल करने की बजाय दूसरे हितधारकों के लिये याचिका फाइल करते हैं और इसके द्वारा अपने स्वार्थ को आगे करते हैं। साथ-साथ ऐसे आर.टी.आई. भरने वाले कुछ लोग भी हैं जो नियमित रूप से आर.टी.आई. याचिकाएँ भरते रहते हैं और निर्णयकर्त्ताओं से पैसा निकलवाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार की आर.टी.आई. गतिविधियों ने प्रशासन के कार्यकलापों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है और संभवतः विशुद्ध याचिकाओं को जोखिम में डाल दिया है जिनका लक्ष्य न्याय प्राप्त करना है। वास्तविक और अवास्तविक याचिकाओं को अलग करने के लिये आप क्या उपाय सुझाएंगे? अपने सुझावों के गुणों और दोषों का वर्णन कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a Public Information Officer (PIO) in a government department. You are aware that the RTI Act 2005 envisages transparency and accountability in administration. The act has functioned as a check on the supposedly arbitrarily administrative behaviour and actions. However, as a PIO you have observed that there are citizens who filed RTI applications not for themselves but on behalf of such stakeholders who purportedly want to have access to information to further their own interests. At the same time there are those RTI activists who routinely file RTI applications and attempt to extort money from the decision makers. This type of RTI activism has affected the functioning of the administration adversely and also possibly jeopardises the genuineness of the applications which are essentially aimed at getting justice.

What measures would you suggest to separate genuine and non-genuine applications? Give merits and demerits of your suggestions.

उत्तर: आर.टी.आई. अधिनियम का उद्देश्य सरकार के कामकाज को लेकर नागरिकों को सक्षम बनाना, पारदर्शिता तथा उत्तरदायित्व को बढ़ावा देना है जिससे हमारे लोकतंत्र में लोग वास्तविक भूमिका में आकर भ्रष्टाचाररहित नागरिक अधिकारों का अनुभव कर सकें।

एक पी.आई.ओ. के रूप में अपने कार्य-अनुभवों के दौरान इसमें कई विसंगतियाँ मेरे सामने आईं जिनमें देखा गया कि कुछ व्यक्ति/संगठन आर.टी.आई. के अधिकारों का दुरुपयोग कर प्रशासनिक निर्णय को प्रभावित कर रहे हैं। प्रशासनिक कार्य को सुचारु रूप से चलाने हेतु एवं नागरिकों के अधिकारों को भी उन तक सुचारु रूप से पहुँचाने के लिये याचिकाकर्त्ताओं की प्रवृत्ति के आधार पर वास्तविक तथा अवास्तविक याचिकाओं के श्रेणीकरण के लिये में निम्नलिखित सुझाव देना चाहूँगा/चाहूँगी-

वास्तविक (लोगों की याचिका अलग करने के लिये)

- जो लोग अपने लिये याचिका फाइल करते हैं।
- कभी-कभी आर.टी.आई. का प्रयोग करने वाले।

अवास्तविक (लोगों की याचिका अलग-अलग करने के लिये)

- जो लोग दूसरों के लिये याचिका फाइल करते हैं।
- जो लोग बार-बार याचिका फाइल करते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि अगर इस श्रेणीकरण का प्रयोग किया जाता है तो ज़ाहिर-सी बात है कि याचिकाकर्त्ता तथा उनकी संख्याएँ कम होंगी और प्रशासनिक कार्य (निर्णय स्तर पर) सुचारु रूप से चल सकेगा। लेकिन आर.टी.आई. अधिनियम के आधार पर उपरोक्त श्रेणी का परीक्षण अनिवार्य है, जो इस प्रकार है-

- वास्तविक श्रेणी में फाइल याचिका के द्वारा लोगों को प्रशासनिक एवं ज़रूरी निर्णीत सूचनाएँ प्राप्त हो सकेंगी, जो नागरिक अधिकारों के लिये ज़रूरी हैं।
- अवास्तविक श्रेणीकरण को लेकर समस्याएँ देखी जा सकती हैं कि-

ज़रूरी नहीं कि जो लोग दूसरों के लिये याचिका फाइल करते हों उनका उद्देश्य स्वार्थपूर्ण ही हो, क्योंकि भारत में शिक्षा का स्तर, कानूनों के प्रति जागरूकता एवं सामाजिक ढाँचा इस प्रकार है कि अभी भी बहुत बड़ी संख्या में लोग अपने अधिकारों से वंचित हैं।

ज़रूरी नहीं कि जो लोग बार-बार याचिका फाइल करते हों उनका उद्देश्य अधिकारी को ब्लैकमेल करना ही हो क्योंकि आज भी हमारे प्रशासन की जटिलताओं के कारण उद्देश्यपूर्ण सूचना नहीं मिल पाती है जिससे कई संगठन एवं याचिकाकर्त्ता बार-बार याचिकाओं का प्रयोग करने पर बाध्य होते हैं।

यदि कुछ लोगों के द्वारा याचिका या आर.टी.आई. अधिकारों का दुरुपयोग किया जा रहा है तो कार्रवाई को केवल उस व्यक्ति या संगठन तक ही सीमित रखना होगा। इसके आधार पर सामाजिक- आर्थिक-शैक्षिक रूप से पिछड़े लोगों के लिये कार्य करने वालों को आधार नहीं बनाना चाहिये।

2016

प्रश्न: इंजीनियरी की एक नई स्नातक (ग्रेजुएट) को एक प्रतिष्ठावान रासायनिक उद्योग में नौकरी मिली है। वह कार्य को पसंद करती है। वेतन भी अच्छा है। फिर भी कुछ महीनों के पश्चात् इत्तफाक से उसने पाया कि उच्च विषाक्त अवशेष को गोपनीय तरीके से नज़दीकी नदी में प्रवाहित किया जा रहा है। यह अनुप्रवाह में रहने वाले ग्रामीणों, जो पानी की आवश्यकता के लिये नदी पर निर्भर हैं, के स्वास्थ्य की समस्याओं का कारण बनता जा रहा है। वह विचलित है और वह अपनी चिंता सहकर्मियों को प्रकट करती है, जो लंबे समय से कंपनी के साथ रहे हैं। वे उसे चुप रहने की सलाह देते हैं, क्योंकि जो भी इस विषय का उल्लेख करता है, उसको नौकरी से निकाल दिया जाता है। वह अपनी नौकरी खोने का खतरा नहीं ले सकती, क्योंकि वह अपने परिवार की एकमात्र जीविका चलाने वाली है तथा उसे अपने बीमार माता-पिता एवं भाई-बहनों का भरण-पोषण करना होता है। प्रथमत: वह सोचती है- यदि उसके वरिष्ठ चुप हैं तो वह ही क्यों अपनी गर्दन बाहर निकाले। परंतु उसका अंत:करण नदी को एवं नदी पर निर्भर रहने वाले लोगों को बचाने के लिये कुछ करने की प्रेरणा देता है। अंत:करण से वह महसूस करती है कि उसके मित्रों द्वारा चुप रहने का दिया परामर्श उचित नहीं है, यद्यपि वह उसके कारण नहीं बता सकती है। वह सोचती है कि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं तथा वह आपका परामर्श पूछती है।

(a) चुप रहना उसके लिये नैतिक रूप से सही नहीं है, यह दर्शाने के लिये आप क्या तर्क प्रस्तुत कर सकते हैं?

(b) आप उसे कौन-सा रास्ता अपनाने की सलाह देंगे और क्यों देंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

A fresh engineering graduate gets a job in a prestigious chemical industry. She likes the work. The salary is also good. However, after a few months she accidentally discovers that a highly toxic waste is being secretly discharged into a river nearby. This is causing health problems to the villagers downstream who depend on the river for their water need. She is perturbed and mentions her concern to her colleagues who have been with the company for longer periods. They advise her to keep quite as anyone who mentions the topic is summarily dismissed. She cannot risk losing her job as she is the sole bread-winner for her family and has to support her ailing parents and siblings. At first, she thinks that if her seniors are keeping quiet, why should she stick out her neck. But her conscience pricks her to do something to save the river and the people who depend upon it. At heart she feels that the advice of silence given by her friends is not correct through she cannot give reasons for it. She thinks you are a wise person and seeks your advice.

(a) What arguments can you advance to show her that keeping quiet is not morally right?

(b) What course of action would you advice her to adopt and why?

उत्तर: उपर्युक्त परिस्थिति में अपनी नौकरी बचाने व परिवार का भरण-पोषण करने तथा एक नदी को बचाने व लोगों का स्वास्थ्य खराब न होने देने के बीच द्वंद्व है। साथ ही सहकर्मियों द्वारा चुप रहने का परामर्श दिया जाना तथा उसके अंत:करण को यह स्वीकार न होना इस द्वंद्व को सघन बनाता है।

उत्तर: (a) चुप रहना नैतिक रूप से सही नहीं है। यह दर्शाने के लिये मैं निम्नांकित तर्क प्रस्तुत करूँगा-

- चुप रहने का अर्थ नदी जैसे अमूल्य प्राकृतिक धरोहर की बर्बादी में सहभागी होना होगा। एक नौकरी की कीमत पर अमृत तुल्य जल प्रदान करने वाली नदी को बर्बाद होने देना, कहीं से भी उचित नहीं कहा जा सकता।
- हर मनुष्य अपने-आप में साध्य होता है, इसलिये अपनी नौकरी बचाने तथा परिवार का भरण-पोषण करने के लिये ग्रामीणों का जीवन खतरे में डालना एक निकृष्ट उदाहरण होगा।
- जबकि वह इसे गलत मानती है और उसके बाद भी कुछ-न-कुछ पाने का दंश उसे आंतरिक रूप से कमज़ोर कर देगा। अत: उसके लिये इस नैतिक बोझ के साथ जीना मानसिक तनाव भरा होगा।

उत्तर: (b) इस स्थिति से निपटने के लिये मैं उसे निम्नांकित सलाह दूँगा-

- सबसे पहले पूरे नैतिक बल के साथ उसे विरोध करना चाहिये तथा नौकरी की अधिक चिंता नहीं करनी चाहिये, क्योंकि उसके पास तकनीकी दक्षता है, इसलिये उसे थोड़ी-बहुत परेशानी के साथ पुन: नौकरी मिल जाएगी।

- आरंभिक कार्रवाई के तौर पर मैं उसे सलाह दूँगा कि वह बातचीत के माध्यम से अपने सहकर्मियों के बीच इसको लेकर एक सहमति बनाने का प्रयास करे। अगर ऐसा नहीं होता है तो उसे स्वयं ही कंपनी के सक्षम पदाधिकारी से बात करनी चाहिये।
- स्थिति की गंभीरता से उन्हें अवगत कराना तथा उन्हें कोई वैकल्पिक मार्ग सुझाना, जैसे- विषाक्त अवशेष के लिये ट्रीटमेंट प्लांट लगवाना तथा उपचारित जल नदी में प्रवाहित करना आदि।
- कंपनी को यह विश्वास दिलाना कि ऐसा करना कंपनी के हित में ही होगा तथा उसकी साख में वृद्धि होगी।
- एक अन्य मध्यवर्ती विकल्प के रूप में यह सुझाव दूँगा कि कंपनी के कुछ सूझ-बूझ वाले सहकर्मियों को साथ लेकर या वे तैयार नहीं होते हैं तो इसके बिना भी ग्रामीणों को इस बात की जानकारी देना। बहुत संभव है कि ग्रामीणों की बातों का कंपनी पर नैतिक दबाव पड़े और कंपनी के मालिक अथवा प्रबंधक संबद्ध समस्या हेतु कोई समाधान तलाश ले।
- अगर इन उपायों के बाद भी कंपनी तैयार नहीं होती है तो प्रशासन में इस बात की शिकायत करके जाँच में उनकी मदद करनी चाहिये।
- मुझे उम्मीद है कि उपर्युक्त क्रियाविधियों को अपनाकर वह महिला अभियंता उचित समाधान प्राप्त करने में सफल हो जाएगी। इन उपायों को अपनाने की सलाह मैं इसलिये दूँगा, क्योंकि ये उपाय प्रारंभिक तौर पर नौकरी और नदी दोनों को बचाने का विकल्प देते हैं तथा जिसमें अंतिम अवस्था में भी प्राकृतिक संसाधनों व ग्रामीणों के जीवन के साथ समझौता नहीं किया जाता।

प्रश्न: खनन, बांध एवं अन्य बड़े पैमाने की परियोजनाओं के लिये आवश्यक भूमि अधिकांशत: आदिवासियों, पहाड़ी निवासियों एवं ग्रामीण समुदायों से अर्जित की जाती है। विस्थापित व्यक्तियों को कानूनी प्रावधानों के अनुरूप मौद्रिक मुआवज़ा दिया जाता है। फिर भी भुगतान प्राय: धीमी गति से होता है। किसी भी हालत में विस्थापित परिवार लंबे समय तक जीवन-यापन नहीं कर पाते। इन लोगों के पास बाज़ार की आवश्यकतानुसार किसी दूसरे धंधे में लगने का कौशल भी नहीं होता है। वे आखिरकार कम मज़दूरी वाले आवर्जिक (प्रवासी) श्रमिक बन जाते हैं। इसके अलावा उनके सामुदायिक जीवन के परंपरागत तरीके अधिकांशत: समाप्त हो जाते हैं। अत: विकास के लाभ उद्योगों, उद्योगपतियों एवं नगरीय समुदायों को चले जाते हैं, जबकि विकास की लागत इन गरीब असहाय लोगों पर डाल दी जाती है। लागतों एवं लाभों का यह अनुचित वितरण अनैतिक है।

यदि आपको ऐसे विस्थापित व्यक्तियों के लिये अच्छे मुआवज़े एवं पुन:वास की नीति का मसौदा बनाने का कार्य दिया जाता है, तो आप इस समस्या के संबंध में क्या दृष्टिकोण रखेंगे एवं आपके द्वारा सुझाई गई नीति के मुख्य तत्त्व कौन-कौन से होंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Land needed for mining, dams and other large-scale projects is acquired mostly from Adivasis, hill dwellers and rural communities. The displaced persons are paid monetary compensation as per the legal provisions. However, the payment is often tardy. In any case, it cannot sustain the displaced families for long. These people do not possess marketable skills to engage in some other occupation. They end up as low paid migrant labourers. Moreover, their traditional ways of community living are destroyed. Thus, the benefits of development go to industries, industrialists and urban communities whereas the costs are passed on to these poor helpless people. This unjust distribution of costs and benefits is unethical.

Suppose you have been entrusted with the task of drafting a better compensation-cum-rehabilitation policy for such displaced persons, how would you approach the problem and what would be the main elements of your suggested policy?

उत्तर: प्रस्तुत परिस्थिति में एक तरफ परियोजना के माध्यम से क्षेत्र के विकास की ज़रूरत है तो दूसरी तरफ परियोजना से प्रभावित विस्थापित व्यक्तियों को उनके अधिकार की। इन दोनों में से किसी के साथ भी समझौता नहीं किया जा सकता। नि:संदेह बांध, खनन तथा अन्य परियोजनाएँ देश के विकास के लिये आवश्यक हैं क्योंकि अंतत: इनमें देश के निवासियों का ही हित शामिल है। किंतु वहीं दूसरी तरफ कुछ लोगों (विस्थापितों) को इसके लिये 'साधनमात्र' समझ लेना अनैतिक है। इस संबंध में मेरा दृष्टिकोण बिल्कुल स्पष्ट है कि असली समस्या विकास की परियोजनाएँ नहीं, बल्कि इनको क्रियान्वित करने का गलत तरीका है। उचित पुनर्वास नीति इसका एक अच्छा समाधान है। हाँ, यह सच है कि विस्थापन से उत्पन्न सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मानसिक पीड़ा की उसी मात्रा में पूर्ति नहीं की जा सकती, लेकिन हमें आरंभिक व आमतौर पर यह ध्यान रखना होगा कि यह प्रक्रिया कम-से-कम तकलीफदेह हो। साथ ही यह कि हमारा उद्देश्य विस्थापन नहीं है, बल्कि यह विकास मॉडल से उत्पन्न एक चुनौती है। अत: विकास मॉडल को भी अधिक समावेशी व सहभागितामूलक बनाने की आवश्यकता है। इस संबंध में मेरे द्वारा सुझाई गई नीति के मुख्य तत्त्व निम्नांकित होंगे-

- विकास कार्यों से स्थानीय लोगों तथा पर्यावरणविदों को जोड़ना सबसे महत्त्वपूर्ण है। इससे एक तो क्रियान्वयन की प्रक्रिया आसान हो जाएगी, दूसरे इससे व्युत्पन्न चुनौतियों से भी अधिक सटीकता के साथ निपटा जा सकेगा। उदाहरण के लिये यदि भूमि अधिग्रहण करना हो तो स्थानीय लोगों का सहयोग इसे आसान बना देगा। उदाहरणार्थ- 'पेसा एक्ट-1996' भी यह प्रावधान करता है कि अनुसूचित क्षेत्रों में किसी भी विकास कार्य के पूर्व ग्रामसभा की अनिवार्य सहमति ली जाए।
- अंतिम रूप से इस बात का ध्यान रखना कि कम-से-कम नुकसान के साथ कार्य करना है। उदाहरण के लिये फिर से भूमि अधिग्रहण का ही मसला लें तो पहले बंजर, फिर कम उर्वर तथा विकट परिस्थितियों में ही उपजाऊ भूमि का अधिग्रहण किया जाए। इससे प्रभावित लोगों की वैयक्तिक व सामुदायिक हितों की रक्षा हो सकेगी।

- किसी को भी उसकी भूमि व अन्य संसाधनों से तभी वंचित किया जाना चाहिये, जब उससे कोई महान हित सध रहा हो। उदाहरण के लिये 'सेज़ (SEZ)' जैसी गलती से बचना होगा, जहाँ हज़ारों हेक्टेयर अधिग्रहित भूमि यूँ ही बेकार पड़ी है।
- पुर्नवास नीति का मुख्य दृष्टिकोण 'लाभ में हिस्सा' होना चाहिये, न कि महज़ 'मुआवज़ा'। इसकी पुष्टि सर्वोच्च न्यायालय ने 'समाथा दिशा-निर्देश' के माध्यम से की है अर्थात् प्रभावित लोगों को आर्थिक सहायता के साथ-साथ रोज़गार, कौशल विकास, बच्चों की शिक्षा, आवास जैसी सुविधाएँ भी दी जाएँ, ताकि वे विस्थापन के बाद की विकास प्रक्रिया से जुड़े रहें। उदाहरण के लिये यदि कोई विस्थापित समूह किसी विशेष कौशल से युक्त है तो उसके निखरने के लिये उचित परिवेश प्रदान करना। साथ ही एक तो मुआवज़े की राशि महँगाई के साथ समायोजित हो तथा दूसरे, इसका समय से भुगतान हो। इस प्रक्रिया में आर्थिक विशेषज्ञ के साथ स्थानीय लोग भी शामिल हैं।
- पुनर्वास के समय इस बात का ध्यान रखना कि यह सामाजिक व सांस्कृकि दृष्टि से कम तकलीफदेह हो अर्थात् जहाँ तक संभव हो सके विस्थापितों को भूमि से निकट ही बसाया जाए तथा उन्हें मूल समूह के साथ बसाया जाए। इससे वे सांस्कृतिक अलगाव महसूस नहीं करेंगे।

मुझे पूरी उम्मीद है कि उपर्युक्त क्रियाविधि को अपनाकर न केवल विकास के समावेशी मॉडल का निर्माण किया जा सकेगा, बल्कि विस्थापन की पीड़ा को कम भी किया जा सकेगा।

प्रश्नः कल्पना करें कि आप एक सामाजिक सेवा योजना की क्रियान्विती के कार्य प्रभारी हैं, जिससे बूढ़ी एवं निराश्रय महिलाओं की सहायता प्रदान करनी है। एक बूढ़ी एवं अशिक्षित महिला योजना का लाभ प्राप्त करने के लिये आपके पास आती है। यद्यपि उसके पास पात्रता के मानदंडों को पूरा करने वाले कागज़ात दिखाने के लिये नहीं हैं। परंतु उससे मिलने एवं उसे सुनने से आप यह महसूस करते हैं कि उसे सहायता की निश्चित रूप से आवश्यकता है। आपकी जाँच में यह भी आया है कि वास्तव में वह दयनीय दशा में निराश्रित जीवन व्यतीत कर रही है। आप इस धर्मसंकट में हैं कि क्या किया जाए। उसे बिना आवश्यक कागज़ात के योजना में सम्मिलित किया जाना, नियमों का स्पष्ट उल्लंघन होगा। उसे सहायता के लिये मना करना भी निर्दयता एवं अमानवीय होगा।

(a) क्या आप इस धर्मसंकट के समाधान के लिये कोई तार्किक तरीका सोच सकते हैं?

(b) इसके लिये अपने कारण बताइये।

(250 शब्द, 20 अंक)

Suppose you are an officer in-charge of implementing a social service scheme to provide support to old and destitute women. An old and illiterate woman comes to you to avail the benefits of the scheme. However, she has no documents to show that she fulfils the eligibility criteria. But after meeting her and listening to her you feel that she certainly needs support. Your enquiries also show that she is really destitute and living in a pitiable condition. You are in a dilemma as to what to do. Putting her under the scheme without necessary documents would clearly be violation of rules. But denying her the support would be cruel and inhuman.

(a) Can you think of a rational way to resolve this dilemma?

(b) Give your reasons for it.

उत्तर: यह आचारनीति एवं कानून के द्वंद्व को दर्शाता हुआ प्रसंग है। जहाँ नैतिकता (न्याय) का दर्शन यह कहता है कि एक निराश्रित व वंचित महिला की सभी प्रकार से मदद की जानी चाहिये, वहीं पात्रता सिद्ध न होने के कारण कानून मदद की इजाज़त नहीं देता। प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यदि महिला की मदद कर दी जाती है तो कानून का अतिक्रमण होगा और यदि ऐसा नहीं किया जाता है तो राज्य एक ज़रूरतमंद की मदद करने में असफल हो जाएगा। इस द्वंद्व का समाधान तभी हो सकता है, जब दोनों पक्षों में संतुलन साध लिया जाए।

उत्तर: (a) चूँकि मैं जिस योजना का प्रभारी हूँ, उसका मूल उद्देश्य बूढ़ी एवं निराश्रय महिलाओं की सहायता करना है, इसलिये मैं इस 'साध्य' को पूरा करने का हरसंभव प्रयास करूँगा। साथ ही मैं यह भी ध्यान रखूँगा कि 'साधन' की पवित्रता के साथ कोई समझौता न हो। यदि कानून के दायरे में रहते हुए मदद कर दी जाए तो दोनों उद्देश्य एक साथ पूरे हो जाएंगे। अब उपर्युक्त परिस्थिति पर गौर करें तो यहाँ मुख्य चुनौती महिला का अयोग्य होना नहीं, बल्कि अपनी पात्रता सिद्ध न कर पाना है अर्थात् महिला लाभ पाने के लिये उपयुक्त तो है, जैसा कि मेरी प्रारंभिक जाँच में स्पष्ट भी हुआ है, किंतु वह ज़रूरी कागज़ात प्रस्तुत नहीं कर पा रही है। इस समस्या के निदान के लिये मैं सक्षम पदाधिकारी से कहूँगा कि इस औपचारिकता को जल्द-से-जल्द पूर्ण करने में महिला की मदद करें। साथ ही तुरंत लाभ प्रदान करने के लिये मैं महिला को इस आशय का शपथपत्र (Affidavit) देने के लिये कहूँगा, जिसमें वह अपनी पात्रता का सत्यापन करती हो तथा निर्धारित समयावधि में कागज़ात जमा करने की हामी भरती हो। मैं संबंधित पंचायत प्रमुख से भी कहूँगा कि वह महिला की स्थिति के संबंध में लिखित राय दें। इस कानूनी औपचारिकता को पूर्ण करने के बाद मैं महिला को मदद प्रदान करने की अनुशंसा कर दूँगा।

उत्तर: (b) इस निर्णय को लेने के लिये निम्नांकित कारण ज़िम्मेदार थे-

- बिना कानूनी औपचारिकता पूरी किये मदद करने से एक गलत नज़ीर पेश होती तथा दुर्भावनावश लोग इसका गलत लाभ उठाते। संभव है इस संबंध में कोई आर.टी.आई. दाखिल कर दी जाती और मैं उसका संतोषप्रद जवाब न दे पाता।
- शपथपत्र लेने तथा पंचायत प्रमुख की लिखित राय के बाद मेरे पास स्पष्ट कानूनी आधार था कि मैं आवश्यक कार्रवाई कर सकूँ।
- एक भी लाभार्थी के छूट जाने से मेरा उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता था, इसलिये महिला की मदद करना अनिवार्य था। साथ ही यह प्राकृतिक न्याय के अनुरूप भी था।

- एक बूढ़ी व निराश्रय महिला के पास सभी ज़रूरी कागज़ात का न होना कोई अस्वाभाविक बात नहीं है। कानूनी प्रक्रियाओं को पूरा करना अक्सर जटिल होता है तथा एक बूढ़ी महिला के लिये तो यह और भी मुश्किल होगा। इसलिये उसकी मदद करना मेरा कर्त्तव्य भी था।

प्रश्न: आप एक सरकारी कार्यालय में अपने विभाग के निदेशक के सहायक के रूप में कार्यरत एक युवा, उच्चाकांक्षी एवं निष्कपट कर्मचारी हैं। जैसा कि आपने अभी पद ग्रहण किया है, आपको सीखने एवं प्रगति की आवश्यकता है। भाग्यवश आपका उच्चस्थ बहुत दयालु एवं आपको अपने कार्य के लिये प्रशिक्षित करने के लिये तैयार है। वह बहुत बुद्धिमान एवं पूर्ण जानकार व्यक्ति है, जिसे विभिन्न विभागों का ज्ञान है। संक्षेप में आप अपने बॉस का सम्मान करते हैं तथा उससे बहुत कुछ सीखने के उत्सुक हैं।

जैसा कि आपके साथ बॉस के संबंध अच्छे हैं, वह आप पर निर्भर करने लगा है। एक दिन खराब स्वास्थ्य के कारण उसने आपको कुछ आवश्यक कार्य पूरा करने के लिये घर पर बुलाया। आप उसके घर पहुँचे एवं घंटी बजाने से पूर्व आपने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने का शोर सुना। आपने कुछ समय प्रतीक्षा की। घर में प्रवेश करने पर बॉस ने आपका अभिनंदन किया तथा कार्य के बारे में बतलाया, परंतु आप एक औरत के रोने की आवाज़ से निरंतर व्याकुल रहे। अंत में आपने अपने बॉस से पूछा, परंतु उसने संतोषप्रद जवाब नहीं दिया।

अगले दिन आप कार्यालय में इसके बारे में आगे जानकारी करने को उद्वेलित हुए एवं मालूम हुआ कि उसका घर में अपनी पत्नी के साथ व्यवहार बहुत खराब है। वह अपनी पत्नी के साथ मारपीट भी करता है। उसकी पत्नी शिक्षित नहीं है तथा अपने पति की तुलना में एक सरल महिला है। आप देखते हैं कि आपका बॉस कार्यालय में अच्छा व्यक्ति है, परंतु घर पर वह घरेलू हिंसा में संलिप्त है।

इस स्थिति में आपके सामने निम्नलिखित विकल्प बचे हैं। प्रत्येक विकल्प का परिणामों के साथ विश्लेषण कीजिये।

(a) इसके बारे में सोचना छोड़ दीजिये, क्योंकि यह उनका व्यक्तिगत मामला है।

(b) उपयुक्त प्राधिकारी के मामले को प्रेषित कीजिये।

(c) स्थिति के बारे मे आपका स्वयं का नवप्रवर्तनकारी दृष्टिकोण। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a young, aspiring and sincere employee in a Government office working as an assistant to the director of your department. Since you have joined recently, you need to learn and progress. Luckily your superior is very kind and ready to train you for your job. He is very intelligent and well-informed person having knowledge of various departments. In short, you respect your boss and are looking forward to learn a lot from him.

Since you have a good tuning with the boss, he started depending on you. One day due to ill health he invited you at his place for finishing some urgent work.

You reached his house and before you could ring the bell you heard shouting noises. You waited for a while. After entering the house the boss greeted you and explained the work. But you were constantly disturbed by the crying of a woman. At last, you inquired with the boss but his answer did not satisfy you.

Next day, you were compelled to inquire further in the office and found out that his behaviour is very bad at home with his wife. He also beats up his wife.

His wife is not well educated and is a simple woman in comparison to her husband. You see that though your boss is a nice person in the office, he is engaged in domestic violence at home.

In such a situation, you are left with the following options. Analyse each option with its consequences.

(a) Just ignore thinking about it because it is their personal matter.

(b) Report the case to the appropriate authority.

(c) Your own innovative approach towards the situation.

उत्तर: उपर्युक्त विकल्पों का परिणाम सहित विश्लेषण इस प्रकार है-

उत्तर : (a) इस बारे में इसलिये सोचना छोड़ देना, क्योंकि यह उनका (बॉस का) व्यक्तिगत मसला है, समस्या के समाधान की बजाय यथास्थिति को बरकरार रखने का विकल्प है। इसका परिणाम यह होगा कि महिला पर हिंसा जारी रहेगी। हाँ, यह बात ठीक है कि यह उनका व्यक्तिगत मामला है, किंतु यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि व्यक्तिगत मामले का विस्तार महिला हिंसा तक नहीं होता। इस प्रकार अब यह एक कानूनी मामला हो जाता है। अत: यह विकल्प अपनाने योग्य नहीं है।

उत्तर : (b) दूसरा विकल्प यद्यपि समाधान की दिशा में प्रयास लगता है, किंतु इसमें समस्या है कि यह मध्यवर्ती उपायों की अवहेलना करते हुए सीधे अंतिम विकल्प तक पहुँच जाता है। बहुत संभव है कि इससे मामला सुलझने की बजाय और उलझ जाए। चूँकि उसकी पत्नी जागरूक नहीं है, इसलिये इस बात की भी प्रबल संभावना है कि वह कानूनी प्रक्रिया की जटिलता से स्वयं को बचाना चाहे तथा खुद की पीड़ा व्यक्त न करे। इसलिये यह विकल्प भी अपनाने योग्य नहीं है।

उत्तर : (c) इस चुनौती से निपटने के लिये मैं निम्नांकित वरीयता क्रम के अनुसार समाधान तलाशने की कोशिश करूँगा-

चूँकि बॉस के साथ मेरे संबंध अच्छे हैं, इसलिये मैं उनसे अनौपचारिक बातचीत करूँगा तथा मामले को अच्छी तरह से समझूँगा। यदि इस बात की पुष्टि हो जाती है कि वह अपनी पत्नी के साथ हिंसा करते हैं तो-

- उनसे ऐसा न करने का आग्रह करूँगा तथा उन्हें उनकी छवि का हवाला दूँगा। साथ ही उन्हें इसके (कानूनी) दुष्परिणाम के बारे में भी बताऊँगा। ऐसे कुछ पूर्व के उदाहरण बताऊँगा, जिसमें ऐसा हुआ हो।
- यदि उनके या उनकी पत्नी या दोनों के साथ कोई मनोवैज्ञानिक समस्या है तो किसी मनोचिकित्सक से मिलने की सलाह दूँगा तथा इसे पूरा करने में सक्रियता दिखाऊँगा।

- इसके बाद मैं अपने बॉस के किसी अच्छे दोस्त या समझदार रिश्तेदार से बात करूँगा तथा उन्हें मध्यस्थता करने के लिये कहूँगा। मैं कोशिश करूँगा कि एक बार उनकी पत्नी से भी मिलूँ, ताकि सही वस्तुस्थिति पता चले। साथ ही उन्हें कहूँगा कि प्रतीकात्मक रूप से ही सही, किंतु सर्वप्रथम वह हिंसा का प्रतिरोध करें तथा इस बात की जानकारी अपने दोस्त व परिवार वालों को दें।
- इसके बाद भी यदि समाधान नहीं निकलता है तो चूँकि यह घरेलू हिंसा का मामला है, इसलिये मैं उपयुक्त अधिकारी तक मामले को प्रेषित करूँगा तथा जाँच में सहयोग करूँगा।

प्रश्न: ए.बी.सी. लिमिटेड एक बड़ी पारराष्ट्रीय कंपनी है, जो विशाल शेयरधारक के आधार पर विविध व्यापारिक गतिविधियाँ संचालित करती है। कंपनी द्वारा निरंतर विस्तार एवं रोज़गार सृजन हो रहा है। कंपनी ने अपने विस्तार एवं विविधता कार्यक्रम के अंतर्गत विकासपुरी, जो एक अविकसित क्षेत्र है, में एक नया संयंत्र स्थापित करने का निर्णय किया है। नया संयंत्र ऊर्जा दक्ष प्रौद्योगिकी के प्रयोग के अनुरूप प्रारूपित किया गया है, जो कंपनी की उत्पादन लागत को 20 प्रतिशत बचाएगी। कंपनी के निर्णय सरकार की अविकसित क्षेत्रों के विकास के लिये निवेश को आकर्षित करने की नीति के अनुरूप हैं। सरकार ने उन कंपनियों को पाँच वर्ष के लिये करों में छूट (टैक्स होलीडे) की घोषणा की है, जो अविकसित क्षेत्र में निवेश करती हैं। फिर भी नया संयंत्र विकासपुरी क्षेत्र के शांतिप्रिय निवासियों के लिये अव्यवस्था पैदा कर देगी। नए संयंत्र के परिणामस्वरूप जीवनयापन की लागत बढ़ेगी, क्षेत्र में विदेशी प्रवसन से सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था प्रभावित होगी। कंपनी को संभावित विरोध का आभास होने पर उसने विकासपुरी क्षेत्र के लोगों एवं जनता को यह बताने की कोशिश की कि कंपनी की निगमीय सामाजिक उत्तरदायित्व की नीति विकासपुरी क्षेत्र के निवासियों की संभावित कठिनाइयों को रोकने में मददगार रहेगी। इसके बावजूद विरोध प्रारंभ होता है तथा कुछ निवासी न्यायपालिका जाने का इस आधार पर निर्णय करते हैं कि इससे पूर्व सरकार के सामने दिये गए तर्कों का कोई परिणाम नहीं निकला था।

(a) इस मामले में अंत:निहित समस्याओं की पहचान कीजिये।

(b) आप कंपनी के लक्ष्यों एवं प्रभावित निवासियों की संतुष्टि के लिये क्या सुझाव दे सकते हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

ABC Ltd. is large transnational company having diversified business activities with a huge shareholder base. The company is continuously expanding and generating employment. The company, in its expansion and diversification programme, decides to establish a new plant at Vikaspuri, an area which is underdeveloped. The new plant is designed to use energy efficient technology that will help the company to save production cost by 20%. The company's decision goes well with the Government policy of attraction investment to develop such underdeveloped regions. The Government has also announced tax holiday for five years for the companies that invest in underdeveloped areas. However, the new plant may bring chaos for the inhabitants of Vikaspuri region, which is otherwise tranquil. The new plant may result in increased cost of living, aliens migrating to the region, disturbing the social and economic order. The company sensing the possible protest tried to educate the people of Vikaspuri region and public in general that how its Corporate Social Responsibility (CSR) policy would help overcome the likely difficulties of the residents of Vikaspuri region. Inspite of this the protests begin and some of the residents decided to approach the judiciary as their plea before the Government did not yield any result.

(a) Identify the issues involved in the case.

(b) What can be suggested to satisfy the company's goal and to address the resident's concerns?

उत्तर: (a) इस मामले में निम्नांकित समस्याएँ शामिल हैं-

- कंपनी की उत्पादन लागत को बचाने वाली एक परियोजना संकट में है तथा इसमें कंपनी के प्रसार पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
- यद्यपि कंपनी सरकार की नीति के अनुरूप संयंत्र स्थपित कर रही है, किंतु यह जनता में पर्याप्त विश्वास उत्पन्न नहीं कर पा रही है।
- एक अविकसित क्षेत्र होने के नाते वहाँ की जीवन-यापन लागत अपेक्षाकृत कम है, जो संयंत्र स्थापना के बाद बढ़ जाएगी।
- अविकसित क्षेत्र होने के नाते वहाँ के लोगों को भय है कि एक विशाल पारराष्ट्रीय कंपनी 'बाहर' से अधिक दक्ष लोगों को लाएगी जिससे यहाँ के अपेक्षाकृत कम कौशलयुक्त लोगों को रोज़गार नहीं मिलेगा।
- स्थानीय लोगों को यह भी भय है कि बाहरी लोगों के आने से यहाँ की परंपरागत व्यवस्था भंग हो जाएगी।

उत्तर: (b) स्थानीय निवासियों की संतुष्टि तथा कंपनी के लक्ष्यों को पूरा करने के लिये मैं निम्नांकित सुझाव दूँगा-

- सबसे पहले स्थानीय लोगों को इस परियोजना निर्माण में शामिल करना चाहिये तथा उपयुक्त तर्कों व उदाहरणों के माध्यम से उनके मन में व्याप्त अविश्वास को दूर करना चाहिये।
- उन्हें परियोजना के लाभ के बारे में बताना तथा किसी एक ऐसे अविकसित क्षेत्र का उदाहरण देना, जहाँ ऐसे ही किसी संयंत्र की स्थापना से व्यापक खुशहाली आई हो।
- 'कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सबिलिटी' के तहत उस क्षेत्र में स्कूल, अस्पताल, स्टेडियम इत्यादि का निर्माण कराना, ताकि जनता का अविश्वास दूर हो सके।
- स्थानीय लोगों को यह भरोसा दिलाना कि उन्हें भी बड़े पैमाने पर रोज़गार मिलेगा तथा इससे संबंधित कार्यक्रम या संक्षिप्त ट्रेनिंग की व्यवस्था करना।

- जब स्थानीय लोगों को यह विश्वास हो जाएगा कि यह संयंत्र उनके हित में है तो स्थानीय जीवन-शैली में परिवर्तन जैसी समस्याएँ स्वयंमेव समाप्त हो जाएंगी।

मुझे पूरा विश्वास है कि उपर्युक्त सुझाव संबद्ध चुनौती से निपटने में कारगर होंगे।

प्रश्न: सरस्वती यू.एस.ए. में सूचना प्रौद्योगिकी की एक सफल पेशेवर थी। अपने देश के लिये कुछ करने की राष्ट्र-भावना से प्रेरित होकर वह वापस भारत आई। उसने गरीब ग्रामीण समुदाय के लिये एक पाठशाला निर्माण के लिये एक जैसे विचारों वाले कुछ मित्रों के साथ मिलकर एक गैर-सरकारी संगठन बनाया।

पाठशाला का लक्ष्य नाममात्र की लागत पर उच्च स्तरीय आधुनिक शिक्षा प्रदान करना था। उसने जल्दी ही पाया कि उसे कई सरकारी एजेंसियों से अनुमति लेनी होगी। नियम एवं प्रक्रियाएँ काफी अस्पष्ट एवं जटिल थीं। अनावश्यक देरियों, अधिकारियों की कठोर प्रवृत्ति एवं घूस की लगातार मांग से वह सबसे ज़्यादा हतोत्साहित हुई। उसके एवं उस जैसे दूसरों के अनुभव ने लोगों को सामाजिक सेवा परियोजनाओं को लेने से रोका हुआ है।

स्वैच्छिक सामाजिक कार्य पर सरकारी नियंत्रण के उपाय आवश्यक हैं। परंतु इन्हें बाध्यकारी या भ्रष्ट रूप में प्रयोग में नहीं लिया जाना चाहिये। आप क्या उपाय यह सुनिश्चित करने के लिये सुझाएंगे कि जिससे आवश्यक नियंत्रण के साथ नेक इरादों वाले ईमानदार गैर-सरकारी संगठन के प्रयासों में बाधा नहीं आए?

(250 शब्द, 20 अंक)

Saraswati was a successful IT professional in USA. Moved by the patriotic sense of doing something for the country she returned to India. Together with some other like-minded friends, she formed an NGO to build a school for a poor rural community.

The objective of the school was to provide the best quality modern education at a nominal cost. She soon discovered that she has to seek permission from a number of Government agencies. The rules and procedures were quite confusing and cumbersome. What frustrated her most was the delays, callous attitude of officials and constant demand for bribes. Her experience and the experience of many other like her has deterred people from taking up social service projects.

A measure of Government control over voluntary social work is necessary. But it should not be exercised in a coercive or corrupt manner. What measures can you suggest to ensure that due control is exercised but well meaning, honest NGO efforts are not thwarted?

उत्तर: अक्सर जटिल कानूनी प्रक्रियाओं के कारण भारत में कोई नया व्यवसाय आरंभ करना अत्यधिक कठिन हो जाता है। एक तो यह समय साध्य होता है तथा दूसरे इसे पूरा करने के लिये घूस भी देनी पड़ती है। यह दोहरी मार लोगों को हतोत्साहित करती है। इस प्रक्रिया को आसान बनाना होगा तथा कानूनी औपचारिकताओं को अनुचित लाभ लेने या गलत तरीके अपनाने से रोकने तक सीमित करना होगा। इस दृष्टिकोण को मूर्त रूप प्रदान करने के लिये मैं निम्नांकित सुझाव दूँगा-

- कोई गलत तरीके से व्यवसाय आरंभ न कर पाए, इसके लिये आवश्यक है कि वह अपना उद्देश्य राज्य की एजेंसी के समक्ष सत्यापित करे। किंतु यह प्रक्रिया आसान होनी चाहिये। उदाहरण के लिये 'एकल सत्यापन खिड़की' स्थापित हो तो औपचारिकताएँ पूरी करने के लिये अलग-अलग विभागों के चक्कर न लगाने पड़े।
- इसके लिये पुराने व अप्रासंगिक कानूनों को खत्म करना होगा। श्रम कानून को अधिक लचीला तथा आधुनिक संदर्भों के अनुरूप करना होगा।
- 'सुशासन' (Good Governance) के तहत पूरी व्यवस्था को पारदर्शी बनाया जाए तथा विवेकाधीन शक्तियों को सीमित किया जाए। इससे भ्रष्टाचार की समस्या पर रोक लगेगी।
- 'ई-गवर्नेंस' के तहत कानूनी प्रक्रिया को ऑनलाइन किया जाए, ताकि प्रक्रिया सर्वसुलभ व अधिक सहज हो।
- इस संबंध में सबसे बड़ी समस्या है- अत्यधिक समय लगना। उदाहरण के लिये भारत में 'निर्माण परमिट' (Construction Permit) प्राप्त करने के लिये उप-प्रक्रियाओं का पालन करना पड़ता है तथा इसमें 196 दिनों का समय लगता है और वह भी कई बार समय से नहीं हो पाता।
- प्रक्रिया को समयबद्ध करने के लिये ई-सिटिजन चार्टर' के तहत हर कार्य की समयावधि तय करनी होगी तथा यह समयावधि अधिकतम व अतार्किक न होकर सतुंलित हो।

इस प्रकार उपर्युक्त सुझावों के तहत यदि प्रशासन को सहयोगी बना दिया जाए तो ईमानदार प्रयासकर्त्ताओं को कोई दिक्कत भी नहीं आएगी तथा अनुचित साधनकर्त्ताओं पर पर्याप्त नियंत्रण भी स्थापित हो जाएगा।

2015

प्रश्न: एक निजी कंपनी अपनी दक्षता, पारदर्शिता और कर्मचारी कल्याण के लिये विख्यात है। यद्यपि कंपनी का मालिक एक निजी व्यक्ति है, तथापि उसका एक सहकारिता वाला आचरण है, जहाँ कर्मचारी स्वामित्व की भावना रखते हैं। कंपनी में लगभग 700 कार्मिक नियुक्त हैं और उन्होंने स्वेच्छापूर्वक संघ न बनाने का निर्णय लिया है।

अचानक एक दिन सुबह एक राजनीतिक पार्टी के 40 आदमी ज़बरदस्ती फैक्ट्री में घुस आए और फैक्ट्री में नौकरी मांगने लगे। उन्होंने प्रबंधन और कर्मचारियों को धमकियाँ और गालियाँ भी दीं। कर्मचारियों का मनोबल गिरा। यह स्पष्ट था कि जो लोग ज़बरदस्ती घुस आए थे, वे कंपनी के वेतन-पत्रक में होना चाहते थे और साथ-ही-साथ पार्टी के स्वयंसेवक/सदस्य बने रहना चाहते थे।

कंपनी ईमानदारी के उच्च मानकों को बनाए रखती है और सिविल प्रशासन, जिसमें कानून प्रवर्तन अभिकरण भी शामिल है, का कोई अनुग्रह नहीं करती। इस प्रकार के प्रसंग सार्वजनिक क्षेत्रक में भी घटते हैं।

(a) मान लीजिये कि आप कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी.ई.ओ.) हैं। आप उपद्रवी भीड़ के गेट के अंदर जबरन घुस आने और कंपनी परिसर के भीतर धरना देने की तारीख को प्रचंड स्थिति में निष्प्रभावन के लिये क्या करेंगे?

(b) इस मामले में चर्चित मुद्दे का दीर्घकालीन समाधान क्या हो सकता है?

(c) प्रत्येक समाधान/कार्रवाई का, जिसको आप सुझाएंगे, (सी.ई.ओ. के तौर पर), कर्मचारियों पर और कर्मचारियों के निष्पादन पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। अपने द्वारा सुझाई गई कार्रवाइयों में से प्रत्येक के परिणामों का विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

A private company is known for its efficiency, transparency and employee welfare. The company though owned by a private individual has a cooperative character where employees feel a sense of ownership. The company employs nearly 700 personnel and they have voluntarily decided not to form union.

One day suddenly in the morning, about 40 men belonging to political party gate crashed into the factory demanding jobs in the factory. They threatened the management and employees, and also used foul language. The employees feel demoralized. It was clear that those people who gate crashed wanted to be on the payroll of the company as well as continue as the volunteers/members of the party.

The company maintains high standards in integrity and does not extend favours to civil administration that also includes law enforcement agency. Such incidents occur in public sector also.

(a) Assume you are the CEO of the company. What would you do to diffuse the volatile situation on the date of gate crashing with the violent mob sitting inside the company premises?

(b) What can be the long term solution to the issue discussed in the case?

(c) Every solution/action that you suggest will have a negative and a positive impact on you (as CEO), the employees and the performance of the employees. Analyze the consequences of each of your suggested actions.

उत्तर: (a) कंपनी का मुख्य कार्यकारी अधिकारी होते हुए मैं निम्नलिखित कार्य करूँगा-

- मामले के तत्काल निस्तारण के लिये मैं उपद्रवियों से अपना नेता भेजने की गुज़ारिश करूँगा एवं उसके साथ बैठक करूँगा।
- बैठक में कंपनी में कार्य करने के लिये वांछित कुशलता को ज़ाहिर करूँगा। किसी भी स्थिति में मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि मामला आज के लिये टल जाए।
- संबंधित प्रदर्शन की सूचना पुलिस, सरकार एवं संबंधित पार्टी के उच्च अधिकारियों को दूँगा।
- भविष्य में इस प्रकार के प्रदर्शन/घेराव से बचने के लिये सरकार से सुरक्षा बल की मांग करूँगा।

उत्तर: (b) इस मुद्दे के दीर्घकालीन समाधान के लिये मैं नौकरी मांगने वाले व्यक्तियों को यह सलाह दूँगा कि जब कंपनी में कर्मचारियों की भर्ती प्रक्रिया प्रारंभ हो तो वे आवेदन कर सकते हैं। उन्हें बताऊँगा कि कंपनी में भर्ती प्रक्रिया पूर्णत: निष्पक्ष एवं वस्तुनिष्ठ मानकों पर आधारित है। अत: यदि वे अपेक्षित योग्यता रखते हैं तो उनका चयन अवश्य किया जाएगा।

उत्तर: (c) इस संदर्भ में एक कार्रवाई यह हो सकती है कि मैं इन 40 व्यक्तियों को कंपनी में नियुक्त कर लूँगा, ताकि फैक्ट्री में इनके द्वारा संभावित उपद्रव से बचा जा सके। किंतु इसका नकारात्मक प्रभाव यह होगा कि कंपनी के कर्मचारियों में एक गलत संदेश जाएगा कि कंपनी का प्रबंधन अवैध दबाव के समक्ष झुक गया है। इससे न केवल उनका मनोबल गिरेगा, बल्कि कंपनी प्रबंधन के सम्मान में भी कमी आएगी, जो कंपनी की दक्षता एवं कार्य निष्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा।

बिंदु (b) में वर्णित विकल्प चुनने का फायदा यह होगा कि कंपनी को ऐसे कर्मचारियों के अनावश्यक बोझ से बचाया जा सकेगा, जिनकी योग्यता प्रमाणित नहीं है। इसके अलावा इससे न केवल कंपनी में कार्यरत कर्मचारियों का मनोबल बढ़ेगा, बल्कि उन्हें यह भी विश्वास होगा कि कंपनी किसी अनैतिक दबाव में आकर ईमानदारी के उच्च मानकों से समझौता नहीं करेगी। दूसरा, यदि इन व्यक्तियों में से कोई भी कंपनी में नौकरी पाने की योग्यता रखता है तो उसे कंपनी में रोज़गार अवश्य प्रदान किया जाएगा। किसी विशिष्ट विचारधारा से संबंध रखने अथवा किसी राजनीतिक पार्टी के स्वयंसेवक होने के कारण किसी व्यक्ति को नौकरी न देना उचित नहीं है। हाँ, यह अवश्य उचित है कि किसी भी गैर-कानूनी दबाव के आधार पर रोज़गार प्रदान नहीं किया जाना चाहिये।

प्रश्न: आप एक पंचायत के सरपंच हैं। आपके क्षेत्र में सरकार द्वारा चलाया जा रहा एक प्राइमरी स्कूल है। स्कूल में उपस्थित होने वाले बच्चों को मध्याह्न भोजन (मिड-डे मील) दिया जाता है। हेडमास्टर ने अब भोजन तैयार करने के लिये एक नया रसोइया नियुक्त कर दिया है। परंतु जब यह पता चला कि रसोइया दलित समुदाय का है, उच्च जातियों के बच्चों में से लगभग आधों को उनके माँ-बाप भोजन करने की इजाज़त नहीं देते हैं। फलस्वरूप स्कूल के बच्चों की उपस्थिति तेज़ी से घट गई। इसके परिणामस्वरूप मध्याह्न भोजन की योजना को समाप्त करने और उसके बाद अध्यापन स्टाफ को हटाने और बाद में स्कूल को बंद कर देने की संभावना पैदा हो गई।

(a) इस संघर्ष पर काबू पाने और सही एवं सुखद वातावरण बनाने की कुछ साध्य रणनीतियों पर चर्चा कीजिये।

(b) ऐसे परिवर्तनों को स्वीकार करने के लिये सकारात्मक सामाजिक सुखद वातावरण बनाने हेतु विभिन्न सामाजिक खंडों और अभिकरणों के क्या कर्त्तव्य होने चाहिये?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the Sarpanch of a Panchayat. There is a primary school run by the government in your area. Midday meals are provided to children attending the school. The headmaster has now appointed a new cook in the school to prepare the meals. However, when it is found that cook is from Dalit community, almost half of the children belonging to higher castes are not allowed to take meals by their parents. Consequently the attendance in the schools falls sharply.

This could result in the possibility of discontinuation of midday meal scheme, thereafter of teaching staff and subsequent closing down the school.

(a) Discuss some feasible strategies to overcome the conflict and to create right ambience.

(b) What should be the responsibilities of different social segments and agencies to create positive social ambience for accepting such changes?

उत्तर : (a) इस समस्या को लघुकाल एवं दीर्घकाल के लिये हल करने संबंधी रणनीतियाँ अलग-अलग हैं।

लघुकाल के लिये हल करने संबंधी रणनीति

- दलित समुदाय के रसोइये को कुछ दिनों के लिये अवकाश पर जाने को कहूँगा तथा अस्थायी तौर पर किसी अन्य रसोइये को रखूँगा।
- अन्य बच्चे जो स्कूल नहीं आ रहे हैं, उन्हें संदेश भिजवाऊँगा कि उनके लिये दूसरे रसोइये की व्यवस्था कर दी गई है।
- संभ्रांत लोगों की सहायता से अध्यापन स्टाफ को समझा-बुझाकर अध्ययन कार्य जारी करने का अनुरोध करूँगा।

दीर्घकालिक रणनीति

- विभिन्न उदाहरणों द्वारा यह साबित करने का प्रयास करूँगा कि वर्तमान में जातिगत भेदभाव करना सही नहीं है।
- चूँकि दलित बहिष्कार से संबंधित पक्ष रूढ़िवादी किस्म का होगा, ऐसे में अनेक धार्मिक ग्रंथों, यथा- रामायण आदि से सबरी आदि के उदाहरण देते हुए उनकी मनोवृत्ति बदलने का प्रयास करूँगा।
- दलित समुदाय के कुछ महापुरुषों का उदाहरण देते हुए दलित रसोइये से सबके लिये खाना पकाने की अनुमति लूँगा।

उत्तर : (b) समाज के सभी वर्गों को अपनी ज़िम्मेदारी उठाते हुए धर्मग्रंथों का सही अर्थ समझना चाहिये क्योंकि छुआछूत सभी धर्मों में वर्जित है। ऐसे में लोगों की मनोवृत्ति के निर्धारण में ये कारक अति महत्त्वपूर्ण हैं-

- क्षेत्र के गैर-सरकारी संगठनों की मदद से यह प्रयास किया जाना चाहिये कि यह मामला सकारात्मक माहौल में सुलझ जाए।
- दलित कल्याण से संबंधित अधिकारी को हस्तक्षेप करते हुए मामले को निपटाने की उम्मीद की जा सकती है।
- क्षेत्र के प्रतिष्ठित एवं प्रभुत्व संपन्न व्यक्तियों को अपील करके इस मामले में दखल देना चाहिये। ऐसा करने से इसका सर्वकालिक हल जल्द निकल सकेगा।

प्रश्न: एक प्रमुख भेषजिक कंपनी की अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला में कार्यरत एक वैज्ञानिक ने खोजा कि कंपनी की सर्वाधिक बिक्री होने वाली पशुचिकित्सकीय दवाइयों में से एक दवाई B में वर्तमान में असाध्य लिवर रोग, जो जनजातीय क्षेत्रों में फैला हुआ है, का इलाज करने की संभाव्यता है, परंतु मानवों के लिये उपयुक्त रूपांतर का विकास करने के लिये अनुसंधान और विकास की ज़रूरत थी, जिसमें 50 करोड़ रुपये तक का खर्च आ सकता था। इसकी संभावना कम थी कि कंपनी अपनी लागत को वसूल कर पाएगी, क्योंकि रोग केवल निर्धनताग्रस्त क्षेत्र में फैला हुआ था, जिसका बाज़ार बहुत थोड़ा था। यदि आप सी.ई.ओ. होते तो-

(a) जिन विभिन्न कार्रवाइयों को आप कर सकते थे, उनकी पहचान कीजिये;

(b) अपनी प्रत्येक कार्रवाई के पक्ष-विपक्ष का मूल्यांकन कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

One of the scientists working in the R&D laboratory of a major pharmaceutical company discovers that one of the company's best selling veterinary drugs, B has the potential to cure a currently incurable liver disease which is prevalent in tribal areas. However, developing a variant of the drug suitable for human being entailed a lot of research and development having a huge expenditure to the extent of Rs. 50 crores. It was unlikely that company would recover the costs as the disease was rampant only in poverty stricken areas having very little market otherwise. If you were the CEO, then–

(a) Identify the various actions that you could take;

(b) Evaluate the pros and cons of each of your actions.

उत्तर : (a) यदि मैं सी.ई.ओ. होता तो मेरे सामने कार्रवाई के लिये निम्नलिखित विकल्प होते-

- मैं शोध एवं विकास के लिये कंपनी के फंड से पैसे देकर उस दवा के निर्माण को प्रोत्साहित करता।
- मैं सरकार से अनुदान की मांग करते हुए पेटेंट संबंधी अधिकार की मांग करता।
- मैं किसी NGO या अन्य संगठनों से मदद लेकर दवा के शोध एवं विकास का कार्य शुरू करवाता।

उत्तर : (b) विकल्प 1: इस विकल्प से निश्चित रूप से गरीबों को लाभ मिलेगा, परंतु कंपनी के ऊपर आर्थिक बोझ भी पड़ेगा। ऐसे में सारी ज़िम्मेदारी एक लाभकारी संगठन के ज़िम्मे लेना समझदारी भरा कदम नहीं हो सकता।

विकल्प 2: सरकार का कार्य जन कल्याणार्थ होता है। मैं सरकार के उच्च स्तरीय अधिकारियों को इस स्थिति से अवगत कराऊँगा। साथ ही इस दवा के बनने के बाद होने वाले संभावित फायदों को भी बताऊँगा। सरकार के लिये इस प्रकार के मामलों में निवेश को लेकर आर्थिक संसाधनों की कमी नहीं होनी चाहिये। साथ ही मैं उस वैज्ञानिक के लिये संबंधित अधिकार भी सरकार से सुनिश्चित करने का अनुरोध करूँगा। इससे सरकार को उस समुदाय विशेष के लिये अन्य जनकल्याण परियोजनाओं पर आर्थिक कटौती करनी पड़ सकती है।

विकल्प 3: देश में विभिन्न गैर-सरकारी संगठन एवं वैश्विक स्तर पर भी विभिन्न अलाभकारी संगठन स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी पैसे देते हैं। मैं कुछ ऐसे संगठनों से संपर्क करने की कोशिश करूँगा। वैज्ञानिक की खोज को स्पष्ट करते हुए उसके पेटेंट संबंधी अधिकारों की रक्षा करते हुए मैं इस प्रकार के अलाभकारी संगठनों से आर्थिक संसाधनों का इंतज़ाम करूँगा। इन सभी संगठनों में वित्त की व्यवस्था लंबे समय के लिये नहीं होती। संभव है कि यह परियोजना बीच में ही रोक देनी पड़े। ऐसे में यह विकल्प उतना अच्छा साबित नहीं होगा।

प्रश्न: आप एक विशेष विभाग में ज़िला प्रशासन के शीर्षाधिकारी हैं। आपका वरिष्ठ अधिकारी आपको राज्य मुख्यालय से फोन करता है और आपको कहता है कि रामपुर गाँव में एक भूखंड पर स्कूल के लिये एक भवन का निर्माण किया जाना है। दौरे की समयावली बना दी जाती है, जिसके दौरान वह मुख्य इंजीनियर और वरिष्ठ वास्तुकार के साथ स्थल का दौरा करेगा। वह चाहता है कि आप उससे संबंधित सभी कागज़ातों की जाँच कर लें और सुनिश्चित कर लें कि दौरे की व्यवस्था उचित रूप से की गई है। आप उस फाइल को जाँचते हैं, जो आपके विभाग में कार्यभार संभालने से पूर्व की है। भूखंड को स्थानीय पंचायत से नाममात्र की लागत पर उपार्जित किया गया था और कागज़ात दर्शाते हैं कि जिन तीन प्राधिकारियों को भूखंड की उपयुक्तता का प्रमाणपत्र देना होता है, उनमें से दो के दिये हुए अनुमति प्रमाणपत्र उपलब्ध हैं। वास्तुविद् का कोई प्रमाणपत्र फाइल में उपलब्ध नहीं है। आप जैसा कि फाइल पर कहा गया है कि सब कुछ ठीक हालत में है, यह सुनिश्चित करने के लिये रामपुर जाने का निर्णय ले लेते हैं। जब आप रामपुर जाते हैं तब आप देखते हैं कि उल्लेख के अधीन भूखंड ठाकुरगढ़ किले का एक भाग है और किले की दीवारें, परकोटे आदि उसके आर-पार बिछे हुए हैं। किला मुख्य गाँव से काफी दूर है, इसलिये वहाँ पर स्कूल, बच्चों के लिये गंभीर असुविधा होगी, परंतु गाँव के नज़दीक के क्षेत्र के विस्तार का एक बड़े आवासीय परिसर में परिवर्तित होने की संभावना है। किले में वर्तमान भूखंड पर विकास प्रभार अत्यधिक होंगे और विरासत स्थल के प्रश्न की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। परंतु भूखंड के अधिग्रहण के समय सरपंच आपके पूर्वाधिकारी का एक रिश्तेदार था। समस्त कार्य-संपादन कुछ निहित स्वार्थ के साथ किया गया प्रतीत होता है।

(क) सरोकार रखने वाले पक्षों के संभावित निहित स्वार्थों की सूची बनाइये।

(ख) आपको उपलब्ध कार्रवाई के कुछ विकल्प नीचे दिये गए हैं। प्रत्येक विकल्प के गुणों-अवगुणों पर चर्चा कीजिये-

(i) आप वरिष्ठ अधिकारी के दौरे की प्रतीक्षा कर सकते हैं और उसको निर्णय करने देते हैं।

(ii) आप लिखित रूप में या फोन पर उसकी सलाह ले सकते हैं।

(iii) आप अपने पूर्वाधिकारी/सहकर्मियों से परामर्श कर सकते हैं और उसके बाद क्या करना है, इस बात का फैसला कर सकते हैं।

(iv) आप मालूम कर सकते हैं कि क्या एवज़ में कोई दूसरा भूखंड प्राप्त किया जा सकता है और फिर एक सर्वसमावेशी लिखित रिपोर्ट भेज सकते हैं।

क्या आप कोई अन्य विकल्प उचित तर्कों के साथ सुझा सकते हैं (250 शब्द, 20 अंक)

You are heading a district administration in a particular department. Your senior officer calls you from the State Headquarters and tells you that a plot in Rampur village is to have a building constructed on it for a school. A visit is scheduled during which he will visit the site along with the chief engineer and the senior architect. He wants you to check out all the papers relating to it and ensure that the visit is properly arranged. You examine the file which relates to the period before you joined the department. The land was acquired from the local Panchayat at a nominal cost and the papers show that clearance certificates are available from the two of the three authorities who have to certify the site's suitability. There is no certification by the architect available on file. You decide to visit Rampur to ensure that all is in the order as stated on file. When you visit Rampur, you find that the plot under reference is a part of Thakurgarh fort and that the walls, ramparts, etc., are running across it. The fort is well away from the main village, therefore a school here will be a serious inconvenience for the children. However, the area near the village has potential to expand into a larger residential area. The development charges on the existing plot, at the fort, will be very high and question of heritage site has not been addressed. Moreover, the Sarpanch, at the time of acquisition of the land, was a relative of your predecessor. The whole transaction appears to have been done with some vested interest.

(a) List the likely vested interest of the concerned parties.

(b) Some of the options for action available to you are listed below. Discuss the merits and demerits of each of the options:

(i) You can await the visit of the superior officer and let him take a decision.

(ii) You can seek his advice in writing or on phone.

(iii) You can consult your predecessor/colleagues, etc., and then decide what to do.

(iv) You can find out if any alternate plot can be got in exchange and then send a comprehensive written report.

Can you suggest any other option with proper justification?

उत्तर : (a) स्कूल बनने की संभावना वाला क्षेत्र आवासीय परिसर के लिये उपयुक्त है। अत: संभव है कि सरपंच ने जान-बूझकर स्कूल परिसर के लिये रामगढ़ के किले का चयन किया हो।

- वास्तुविद् का अनापत्ति प्रमाणपत्र नहीं होने के बावजूद इसको स्कूल के लिये चिह्नित किया जाना इस बात की पुष्टि करता है कि संबंधित अधिकारी ने अपना दायित्व निष्पक्षतापूर्ण नहीं निभाया।
- स्कूल की चिह्नित जगह बच्चों की ज़रूरत के अनुरूप नहीं है। अत: इसे स्कूल के लिये न दिया जाना ही लोकहित में होगा।

उत्तर : (b)

(i) वरिष्ठ अधिकारी के दौरा करने की प्रतीक्षा करने और उन्हें स्वयं निर्णय करने से मैं अपनी ज़िम्मेदारी से तो बच जाऊँगा, परंतु ऐसा करना जनहित में नहीं होगा।

यदि मैं उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत करा दूँ तो संभव है कि वह दौरा न करें, ऐसे में हो सकता है उस क्षेत्र में एक स्कूल का निर्माण अनिश्चित काल के लिये टल जाए।

(ii) सलाह लेने से निर्णय त्वरित हो जाएगा, परंतु मैं सबूत के तौर पर कोई ठोस दस्तावेज़ प्रस्तुत नहीं कर पाऊँगा।

(iii) पूर्व सहकर्मियों से संपर्क करने से मामले को अच्छी तरह से समझने में मदद मिलेगी, परंतु इस प्रक्रिया में समय ज़्यादा लगेगा एवं मेरी निर्णय क्षमता पर भी प्रश्नचिह्न लगेगा।

(iv) दूसरा भूखंड प्राप्त होने संबंधी रिपोर्ट से संभव है यह समस्या सुलझ जाए क्योंकि वर्तमान स्थान पर विद्यालय का निर्माण नहीं किया जा सकता है। विस्तृत रिपोर्ट भेजने से इस मुद्दे के हर पहलू पर वरिष्ठ नागरिकों के मूल्यांकन में मदद मिलेगी। समस्या के समाधान में मानक संचालन प्रक्रिया का पालन होगा तथा स्कूल का प्लॉट गाँव के पास होने से बच्चों को फायदा होगा। मैं अपने कर्त्तव्य का कुशलतापूर्वक निर्वहन करूँगा। संभव है कि समस्या का समाधान कुछ देरी से हो।

उपरोक्त चारों विकल्पों में से मैं चौथे विकल्प को चुनूँगा क्योंकि यह इस मुद्दे को एक समग्र तरीके से हल करता है।

हाल में आपको एक ज़िले के ज़िला विकास अधिकारी के तौर पर नियुक्त किया गया है। उसके बाद जल्द ही आपने पाया कि आपके ज़िले के ग्रामीण इलाकों में लड़कियों को स्कूल भेजने के मुद्दे पर काफी तनाव है।

प्रश्न: गाँव के बड़े महसूस करते हैं कि अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं, क्योंकि लड़कियों को पढ़ाया जा रहा है और वे घर के सुरक्षित वातावरण के बाहर कदम रख रही हैं। उनका विचार यह है कि लड़कियों की न्यूनतम शिक्षा के साथ जल्दी से शादी कर दी जानी चाहिये। शिक्षा के बाद लड़कियाँ नौकरी के लिये भी स्पर्द्धा कर रही हैं, जो परंपरा से लड़कों का अनन्य क्षेत्र रहा है, और पुरुषों में बेरोज़गारी में वृद्धि कर रही हैं।

युवा पीढ़ी महसूस करती है कि वर्तमान युग में लड़कियों को शिक्षा और रोज़गार तथा जीवन-निर्वाह के अन्य साधनों के समान अवसर प्राप्त होने चाहिये। समस्त इलाका वयोवृद्धों और युवाओं के बीच तथा उससे आगे दोनों पीढ़ियों में स्त्री-पुरुषों के बीच विभाजित है। आपको पता चलता है कि पंचायत या अन्य निकायों में या व्यस्त चौराहों पर भी, इस मुद्दे पर गरमागरम वाद-विवाद हो रहा है।

एक दिन आपको सूचना मिलती है कि एक अप्रिय घटना हुई है। कुछ लड़कियों के साथ छेड़खानी की गई, जब वे स्कूल के रास्ते में थीं। इस घटना के फलस्वरूप कई सामाजिक समूहों के बीच झगड़े हुए और कानून तथा व्यवस्था की समस्या पैदा हो गई। गरमागरम वाद-विवाद के बाद बड़े-बूढ़ों ने लड़कियों को स्कूल जाने की अनुमति न देने और जो परिवार उनके हुक्म का पालन नहीं करते हैं, ऐसे सभी परिवारों का सामाजिक बहिष्कार करने का संयुक्त निर्णय ले लिया।

(a) लड़कियों की शिक्षा में व्यवधान डाले बिना उनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिये आप क्या कदम उठाएंगे?

(b) पीढ़ियों के बीच संबंधों में समरसता सुनिश्चित करने के लिये आप गाँव के वयोवृद्धों की पितृतंत्रात्मक अभिवृत्ति का किस प्रकार प्रबंधन का और ढालने का कार्य करेंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are recently posted as district development officer of a district. Shortly thereafter you found that there is considerable tension in the rural areas of your district on the issue of sending girls to schools.

The elders of the village feel that many problems have come up because girls are being educated and they are stepping out of the safe environment of the household. They are the view that the girls should be quickly married off with minimum education. The girls are also competing for jobs after education, which have traditionally remained in boys' exclusive domain, adding to unemployment amongs"k male population.

The younger generation feels that in the present era,

girls should have equal opportunities for education and employment, and other means of livelihood. The entire locality is divided between the elders and younger lot and further sub–divided between sexes in both generations. You come to know that in Panchayat or in other local bodies or even in busy crossroads, the issue is being acrimoniously debated.

One day you are informed that an unpleasant incident has taken place. Some girls were molested, when they were en route to schools. The incident led to clashes between several groups and a law and order problem has arisen. The elder after heated discussion have taken a joint decision not to allow girls to go to school and to socially boycott all such families, which do not follow their dictate.

(a) What steps would you take to ensure girls' safety without disrupting their education?

(b) How would you manage and mould patriarchic attitude of the village elders to ensure harmony in the inter- generational relations?

उत्तर: एक ज़िला विकास अधिकारी होने के नाते मेरा कर्त्तव्य है कि क्षेत्र में कानून व्यवस्था बहाल हो तथा किसी भी स्थिति में लड़कियों को अपनी सुरक्षा व पढ़ाई से समझौता न करना पड़े। वर्तमान प्रसंग में लड़कियों की पढ़ाई तभी अबाधित रह सकती है, जब सुरक्षा के पर्याप्त इंतज़ाम कर दिये जाएँ। यह व्यवस्था अधिक सफल तब हो सकती है जब स्थानीय निवासियों में इस बात को लेकर आम सहमति हो जाए कि लड़कियों का पढ़ना-लिखना और रोज़गार पाना एक 'सामान्य' बात है।

उत्तर : (a) लड़कियों की शिक्षा में व्यवधान डाले बिना उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये मैं निम्नलिखित कदम उठाऊँगा-

- सबसे पहले मैं स्थानीय थानाध्यक्ष से कहूँगा कि वह छेड़खानी की घटना की प्राथमिकी दर्ज करें तथा दोषियों पर त्वरित कार्रवाई करें।
- मैं गाँव वालों से बात करूँगा तथा उन्हें सहयोग करने का निवेदन करूँगा। साथ ही उन्हें यह चेतावनी भी दूँगा कि लड़कियों को पढ़ने से रोकने तथा छेड़खानी जैसी घटनाओं के विरुद्ध सख्ती से निपटा जाएगा।
- जब तक स्थिति सामान्य नहीं हो जाती तब तक स्कूल आने-जाने के रास्तों पर कुछ सिपाहियों की ड्यूटी लगा दूँगा। साथ ही लड़कियों से कहूँगा कि कुछ दिन वे समूह में स्कूल जाएँ तथा ज़रूरत पड़ने पर आवश्यक प्रतिरोध भी करें। थानाध्यक्ष से कहूँगा कि निरीक्षण करते रहें।
- उपर्युक्त उपायों से लड़कियों की सुरक्षा तो सुनिश्चित हो जाएगी, किंतु बहुत संभव है कि अभिभावक सामाजिक बहिष्कार तथा छेड़खानी जैसी घटनाओं के भय से लड़कियों को स्कूल ही न भेजें। इस चुनौती के समाधान के लिये मैं निम्नलिखित कदम उठाऊँगा-

मैं अभिभावकों को इस बात के लिये आश्वस्त करूँगा कि सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था कर दी गई है तथा ऐसी अप्रिय घटना की पुनरावृत्ति की संभावना नगण्य है।

जहाँ तक सामाजिक बहिष्कार की बात है तो इसके लिये मैं गाँव के कुछ समझदार तथा प्रभावशाली लोगों, जो लड़कियों की शिक्षा को ज़रूरी मानते हों, ग्राम पंचायत के अधिकारियों, स्कूल के शिक्षकों को इस बात के लिये राज़ी करने की कोशिश करूँगा कि वे गाँव वालों को समझाएँ कि इस मामले में सामाजिक बहिष्कार की बात गलत है। उनके समझाने का गाँव वालों पर निश्चित ही असर पड़ेगा।

इसके बाद भी यदि स्थिति नहीं सुधरती है तो बहिष्कार की बात करने वाले लोगों को चिह्नित करूँगा तथा उन पर आवश्यक कार्रवाई करूँगा।

उत्तर : (b) गाँव के वयोवृद्धों की पितृसत्तात्मक अभिवृत्ति प्रबंधित करने के लिये मैं निम्नांकित कदम उठाऊँगा-

- पीढ़ी अंतराल के कारण 'मूल्यों में अंतर' हो जाना स्वाभाविक ही है। इसलिये सबसे पहले मैं उन्हें बताऊँगा कि लड़कियों को शिक्षा से वंचित करना न केवल कानून विरुद्ध, बल्कि अनैतिक भी है।
- अभिवृत्ति बदलने के लिये सूचनाओं की पर्याप्त उपलब्धता आवश्यक होती है। विभिन्न कहानियों और चलचित्रों के माध्यम से बताऊँगा कि कैसे लड़कियाँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। कुछ सफल महिलाओं के उदाहरण भी दूँगा। उन्हें बताऊँगा कि ऐसा न करने से उनका क्षेत्र पिछड़ता चला जाएगा।
- अपने क्षेत्र की किसी सफल महिला से निवेदन करूँगा कि वह स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में गाँव वालों को जागरूक करें क्योंकि पर्सुएशन अभिवृत्ति बदलने में सहायक होता है।
- उन्हें समझाने का प्रयास करूँगा कि जो शिक्षा व रोज़गार लड़कों के लिये अच्छा है, वह भला लड़कियों के लिये बुरा कैसे हो सकता है! अगर इसका उल्टा हो जाए तो उन्हें कहूँगा कि समस्या दरअसल लड़कियों के पढ़ने व रोज़गार में नहीं, बल्कि हमारी सोच में है।

हालाँकि पितृसत्तावादी जैसी परंपरागत व मज़बूत अभिवृत्ति को अचानक से बदल पाना संभव नहीं है, किंतु मुझे विश्वास है कि उपर्युक्त उपाय समाधान की दिशा में एक मज़बूत प्रयास हो सकते हैं।

2014

प्रश्न: आजकल समस्त विश्व में आर्थिक विकास पर अधिक ज़ोर दिया जा रहा है। इसके साथ ही साथ विकास के कारण पैदा होने वाले पर्यावरणीय क्षरण के संबंध में चिंता भी बढ़ रही है। अनेकों बार हमारे सामने विकासिक कार्यकलापों और पर्यावरणीय गुणता के बीच सीधा विरोध दिखाई पड़ता है। विकासिक प्रक्रम को रोक देना या उसमें काट-छाँट कर देना भी साध्य नहीं है और ना ही पर्यावरण के क्षरण को बढ़ने देना उचित है, क्योंकि यह तो हमारे सबके जीवन के लिये ही खतरा है।

ऐसी कुछ साध्य रणनीतियों पर चर्चा कीजिये, जिनको इस द्वंद्व का शमन करने के लिये अपनाया जा सकता हो और जो हमें धारणीय (सस्टेनेबल) विकास की ओर ले जा सकती हों। (250 शब्द, 20 अंक)

Now-a-days, there is an increasing thrust on economic development all around the globe. At the same time, there is also an increasing concern about environmental degradation caused by development. Many a time, we face a direct conflict between developmental activity and environmental quality. It is neither feasible to stop or curtail the development process, nor it is advisable to keep degrading the environment, as it threatens our very survival.

Discuss some feasible strategies which could be adopted to eliminate this conflict and which could lead to sustainable development.

उत्तर: 'धारणीय विकास' आज की महती आवश्यकता है, जिसे टाला जाना घातक होगा। विकास बनाम पर्यावरण के द्वंद्व का समाधान इन रणनीतियों से किया जा सकता है-

- वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों तथा तत्संबंधी उपकरणों के विकास के लिये नवाचार को प्रोत्साहन दिया जाए। जैसे-अगर सौर-ऊर्जा से वाहन चल सके तो बेहतर होगा।
- इस मुद्दे को चुनावी राजनीति से बचाने के लिये सर्वदलीय बैठकों द्वारा इस पर सर्वसम्मति बनाई जाए।
- स्वैच्छिक संगठन न्यायालयों के हस्तक्षेप से कठोर कदम उठवा सके तो यह भी अच्छा होगा। हाल ही में दिल्ली में 10 वर्ष पुराने डीजल वाहनों पर लगाई गई रोक ऐसी ही पहल है।
- प्रतिष्ठित व्यक्तियों, जैसे- फिल्मी सितारों को पर्यावरण अभियान से जोड़ा जाए, ताकि लकड़ी के उत्पादों के बजाय पुनर्चक्रित उत्पादों का चलन बढ़े; निजी कारों की जगह सार्वजनिक परिवहन और साइकिल का प्रयोग बढ़े।
- पर्यावरण-मित्र उत्पादों पर भारी सब्सिडी दी जाए और उसकी भरपाई पर्यावरण-शत्रु उत्पादों पर भारी कर लगाकर की जाए। पर्यावरण प्रबंधन रिकॉर्ड के अनुसार कंपनियों को कर संरचना में फायदे या नुकसान दिये जाएँ।
- नियम बनाया जाए कि कोई भी कंपनी पर्यावरण को जितना नुकसान पहुँचाएगी, उसे वैकल्पिक तरीके से पर्यावरण की समृद्धि में उससे अधिक योगदान देना होगा।
- सार्वजनिक परिवहन, पेपरलेस ऑफिस तथा पर्यावरण शिक्षा को प्रोत्साहन दिया जाए।

प्रश्न: मान लीजिये कि आपके निकट मित्रों में से एक, जो स्वयं सिविल सेवा में जाने के लिये प्रयत्नशील है, वह लोक सेवा में नैतिक आचरण से संबंधित कुछ मुद्दों पर चर्चा करने के लिये आपके पास आता है। वह निम्नलिखित बिंदुओं को उठाता है:

(i) आज के समय में जब अनैतिक वातावरण काफी फैला हुआ है, नैतिक सिद्धांतों से चिपके रहने के व्यक्तिगत प्रयास, व्यक्ति के कॅरियर में अनेक समस्याएँ पैदा कर सकते हैं। ये परिवार के सदस्यों पर कष्ट पैदा करने और साथ ही साथ स्वयं के जीवन पर जोखिम का कारण भी बन सकते हैं। हम क्यों न व्यावहारिक बनें और न्यूनतम प्रतिरोध के रास्ते का अनुसरण करें और जितना अच्छा हम कर सकें, उसे ही करके प्रसन्न रहें?

(ii) जब इतने अधिक लोग गलत साधनों को अपना रहे हैं और तंत्र को भारी नुकसान पहुँचा रहे हैं, तब क्या फर्क पड़ेगा यदि केवल कुछ-एक लोग ही नैतिकता की चेष्टा करें? वे अप्रभावी ही रहेंगे और निश्चित रूप से अंततः निराश हो जाएंगे।

(iii) यदि हम नैतिक सोच-विचार के बारे में अधिक बतंगड़ बनाएंगे तो क्या इससे देश की आर्थिक उन्नति में रुकावट नहीं आएगी? असलियत में उच्च प्रतिस्पर्धा के वर्तमान युग में हम विकास की दौड़ में पीछे छूट जाने को सहन नहीं कर सकते।

(iv) यह तो समझ आता है कि भारी अनैतिक तौर-तरीकों में हमें फँसना नहीं चाहिये, लेकिन छोटे-मोटे उपहारों को स्वीकार करना और छोटी-मोटी तरफदारियाँ करना सभी के अभिप्रेरण में वृद्धि कर देता है। यह तंत्र को और भी अधिक सुचारु बना देता है। ऐसे तौर-तरीकों को अपना. ने में गलत क्या है?

उपर्युक्त दृष्टिकोणों का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिये। इस विश्लेषण के आधार पर अपने मित्र को आपकी क्या सलाह रहेगी (250 शब्द, 20 अंक)

Suppose one of your close friends, who is also aspiring for civil services, comes to you for discussing some of the issues related to ethical conduct in public service. He raises the following points:

(i) In the present times, when unethical environment is quite prevalent, individual attempts to stick to ethical principles may cause a lot of problems in one's career. It may also cause hardship to the family members as well as risk to one's life. Why should we not be pragmatic and follow the path of least resistance, and be happy with doing whatever good we can?

(ii) When so many people are adopting wrong means and are grossly harming the system, what difference would it make if only a small minority tries to be ethical? They are going to be rather ineffective and are bound to get frustrated.

(iii) If we become fussy about ethical considerations, will it not hamper the economic progress of our country? After all, in the present age of high competition, we cannot afford to be left behind in the race of development.

(iv) It is understandable that we should not get involved in grossly unethical practices, but giving and accepting small gratifications and doing small favours increases everybody's motivation. It also makes the system more efficient. What is wrong in adopting such practices?

Critically analyze the above viewpoints. On the basis of this analysis, what will be your advice to your friend?

उत्तर: उपर्युक्त दृष्टिकोणों का समालोचनात्मक विश्लेषण क्रमश: इस प्रकार है-

(i) यह धारणा गलत है कि नैतिक होने और व्यावहारिक होने में विरोधाभास है। वस्तुत: कुछ विशिष्ट परिस्थितियों के अलावा नैतिक होने में न तो जीवन का जोखिम है और न ही कॅरियर बाधित होने का। सच तो यह है कि आजकल भ्रष्टाचार के विरुद्ध जैसी जन-जागरूकता है, उसकी तथा मोबाइल कैमरों व सोशल मीडिया की उपस्थिति में भ्रष्ट होने में ही ज़्यादा खतरा है। लोक सेवक को व्यावहारिक होने के साथ साहसी भी होना चाहिये।

(ii) नि:संदेह आज के भौतिकवादी युग में नैतिकता की परवाह करने वालों की संख्या कम है, ऐसे में आमजन में निराशा होना स्वाभाविक है, पर अगर एक लोक सेवक भी ईमानदारी पर टिका रहता है तो कम-से-कम वह एक ज़िले या विभाग में तो न्याय सुनिश्चित कर ही सकता है। संभव है कि उससे प्रेरणा लेकर अन्य लोक सेवक भी सही रास्ता चुनें। नैतिकता और ईमानदारी के पथ पर चलने से समाज में जो प्रतिष्ठा हासिल होती है, वह अमूल्य होती है। भ्रष्ट और बेईमान अधिकारियों को वह प्रतिष्ठा कभी नहीं मिलती।

(iii) तीसरे तर्क की बुनियाद ही गलत है। सच यह है कि लोक सेवक की नैतिकता देश की आर्थिक उन्नति में सहायक होती है, बाधक नहीं। अगर वह ईमानदारी से कर संग्रहण करेगा तो खज़ाना बढ़ेगा। लोक परियोजनाओं में ईमानदारी से लोक-निधि खर्च करने पर देश का चहुमुखी विकास होगा।

(iv) वस्तुत: छोटी अनैतिकता भी आलोचना से परे नहीं होती। हाँ, अगर उपहार सिर्फ प्रतीकात्मक हो (जैसे- साधारण पेन, किताब आदि) और देने वाले की नीयत असंदिग्ध हो तो इसमें समस्या नहीं है। इसी तरह अगर तरफदारी कानूनी दायरे में और किसी वंचित वर्ग के सदस्य के पक्ष में हो तो स्वीकार्य है। लेकिन बेईमानी के उद्देश्य से किया गया छोटा कृत्य भी अस्वीकार्य है, क्योंकि वह लोक सेवक की छवि और नैतिक बल को कमज़ोर बनाता है।

मैं अपने मित्र को सलाह दूँगा कि लोक सेवक की असली उपलब्धि ईमानदारी और सक्रिय जनसेवा से मिलने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा है, न कि बेईमानी से अर्जित धन-संपदा। अत: वह उसी को लक्ष्य बनाए तो बेहतर होगा।

प्रश्न: आप अनाप-शनाप न सहने वाले, ईमानदार अधिकारी हैं। आपका तबादला एक सुदूर ज़िले में एक ऐसे विभाग के प्रमुख के रूप में कर दिया गया है, जो अपनी अदक्षता और संवेदनहीनता के लिये कुख्यात है। आप पाते हैं कि इस घटिया कार्य-स्थिति का मुख्य कारण कर्मचारियों के एक भाग में अनुशासनहीनता है। वे स्वयं तो कार्य करते नहीं हैं और दूसरों के कार्य में भी गड़बड़ी पैदा करते हैं। सबसे पहले आपने उत्पातियों को सुधर जाने की, अन्यथा अनुशासनिक कार्रवाई का सामना करने की चेतावनी दी। जब इस चेतावनी का ना के बराबर असर हुआ, तब आपने नेताओं को कारण बताओ नोटिस जारी कर दिया। इसके बदले के रूप में उन्होंने अपने बीच की एक महिला कर्मचारी को आपके विरुद्ध महिला आयोग में यौन-उत्पीड़न की एक शिकायत दायर करने के लिये भड़का दिया। आयोग ने तुरंत आपका स्पष्टीकरण मांगा। आपको इससे आगे भी लज्जित करने के लिये मामला मीडिया में भी प्रसारित किया गया। इस स्थिति से निपटने के विकल्पों में से कुछ निम्नलिखित हो सकते हैं:

(i) आयोग को अपना स्पष्टीकरण दे दीजिये और अनुशासनिक कार्रवाई पर नरमी बरतिये।

(ii) आयोग को नज़रअंदाज़ कर दीजिये और अनुशासनिक कार्रवाई को मज़बूती के साथ आगे बढ़ाइये।

(iii) अपने उच्च अधिकारियों को संक्षेप में अवगत करा दीजिये, उनसे निर्देश माँगिये और उनके अनुसार कार्य कीजिये।

कोई अन्य संभव विकल्प सुझाइये। सभी का मूल्यांकन कीजिये और अपने कारण बताते हुए सबसे अच्छा विकल्प स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a no-nonsense, honest officer. You have been transferred to a remote district to head a department that is notorious for its inefficiency and callousness. You find that the main cause of the poor state of affairs is the indiscipline of a section of employees. They do not work themselves and also disrupt the working of others. You first warned the troublemakers to mend their ways or else face disciplinary action. When the warning had little effect, you issued a show cause notice to the ringleaders. As a retaliatory measure, these troublemakers instigated a woman employee amongs"k them to file a complaint of sexual harassment against you with the Women's Commission. The Commission promptly seeks your explanation. The matter is also publicized in the media to embarrass you further. Some of the options to handle this situation could be as follows :

(i) Give your explanation to the Commission and go soft on the disciplinary action.

(ii) Ignore the Commission and proceed firmly with the disciplinary action.

(iii) Brief your higher-ups, seek directions from them and act accordingly.

Suggest any other possible option(s). Evaluate all of them and suggest the best course of action, giving your reasons for it.

उत्तर: इस स्थिति में दिये गए तीनों विकल्पों से संबद्ध मेरा मूल्यांकन निम्नलिखित है-

- पहले विकल्प में आयोग को स्पष्टीकरण देने की बात उचित है, क्योंकि वह मेरी वैधानिक जवाबदेही बनती है। किंतु इस विकल्प का दूसरा पक्ष उचित नहीं है, जो कहता है कि अनुशासनिक कार्रवाई पर नरमी बरतनी चाहिये। अगर मैं अनुशासनिक कार्रवाई में ढील दूँगा तो इससे असामाजिक तत्त्व भविष्य में ऐसी और हरकतें करने के लिये प्रेरित होंगे।

- दूसरे विकल्प का पहला पक्ष गलत है, क्योंकि वह कहता है कि मैं आयोग को नज़रअंदाज़ कर दूँ। लोक सेवक होने के नाते संवैधानिक व वैधानिक संस्थाओं के प्रति मेरी जवाबदेही बनती है, जिससे पीछे हटना अनुचित होगा। किंतु इस विकल्प का दूसरा हिस्सा उचित है, जो कहता है कि अनुशासनिक कार्रवाई को मज़बूती के साथ आगे बढ़ाना चाहिये।
- तीसरे विकल्प का पहला भाग उचित है अर्थात् मुझे अपने उच्चाधिकारियों को पूरे मामले से अवगत कराना चाहिये। यह इसलिये भी ज़रूरी है, ताकि उनका विश्वास मुझ पर बना रहे। किंतु इस विकल्प का दूसरा हिस्सा पूर्णत: ठीक नहीं है। मेरी राय में मुझे इस स्थिति में अपने विवेक से निर्णय करने की कोशिश करनी चाहिये। अगर मैं अधिकारियों से ही निर्देश लूँगा तो यह पलायन की मानसिकता का उदाहरण होगा।

मेरे दृष्टिकोण से इस स्थिति को सुलझाने के लिये निम्नलिखित विकल्प सर्वश्रेष्ठ होगा-

- सर्वप्रथम अपने परिवार तथा उच्चाधिकारियों को मामले से अवगत कराना तथा उन्हें विश्वास में लेना।
- मीडिया को गलत जानकारी दिखाने के संबंध में नोटिस भेजना और कोशिश करना कि मीडिया मेरा पक्ष भी दिखाए।
- आयोग को पूरी ईमानदारी से स्पष्टीकरण भेजना।
- सत्य पर आधारित ऐसे प्रमाण जुटाना जो साबित करे कि महिला का आरोप झूठा है।
- भविष्य में सावधानी बरतना कि ऐसे आरोप न लग सकें। ऑफिस के दरवाज़े में पारदर्शी शीशा लगवा देना या अपने केबिन के भीतर सीसीटीवी लगवाना इसके उपाय हो सकते हैं।

प्रश्न: मान लीजिये कि आप ऐसी कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सी.ई.ओ.) हैं, जो एक सरकारी विभाग के द्वारा प्रयुक्त विशेषीकृत इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनाती है। आपने विभाग को उपस्कर की पूर्ति के लिये अपनी बोली पेश कर दी है। आपके ऑफर की गुणता और लागत दोनों आपके प्रतिस्पर्धियों से बेहतर है। इस पर भी संबंधित अधिकारी टेंडर पास करने के लिये मोटी रिश्वत की मांग कर रहा है। ऑर्डर की प्राप्ति आपके और आपकी कंपनी, दोनों के लिये महत्त्वपूर्ण है। ऑर्डर न मिलने का अर्थ होगा उत्पादन रेखा का बंद कर देना। यह आपके स्वयं के कॅरियर को भी प्रभावित कर सकता है। फिर भी मूल्य-सचेत व्यक्ति के रूप में आप रिश्वत देना नहीं चाहते हैं।

रिश्वत देने और ऑर्डर प्राप्त कर लेने तथा रिश्वत देने से इनकार करने और ऑर्डर को हाथ से निकल जाने-दोनों के लिये वैध तर्क दिये जा सकते हैं। ये तर्क क्या हो सकते हैं? क्या इस धर्मसंकट से बाहर निकलने का कोई बेहतर रास्ता हो सकता है? यदि हाँ, तो इस तीसरे रास्ते की अच्छाइयों की ओर इंगित करते हुए उसकी रूपरेखा प्रस्तुत कीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

Suppose you are the CEO of a company that manufactures specialized electronic equipment used by a government department. You have submitted your bid for the supply of this equipment to the department. Both the quality and cost of your offer are better than those of the competitors. Yet the concerned officer is demanding a hefty bribe for approving the tender. Getting the order is important both for you and for your company. Not getting the order would mean closing a production line. It may also affect your own career. However, as a value-conscious person, you do not want to give bribe.

Valid arguments can be advanced both for giving the bribe and getting the order, and for refusing to pay the bribe and risking the loss of the order. What those arguments could be? Could there be any better way to get out of this dilemma? If so outline the main elements of this third way, pointing out its merits.

उत्तर: 1. रिश्वत देकर ऑर्डर प्राप्त कर लेने के पक्ष में निम्नलिखित तर्क संभव हैं-

- यदि मैं रिश्वत नहीं दूँगा तो कोई अन्य देगा। अत: जब रिश्वत दी ही जानी है तो मैं क्यों पीछे हटूँ!
- हो सकता है कि मेरे पीछे हटने पर जो कंपनी रिश्वत देकर काम हासिल करे, उसके कार्य की गुणवत्ता खराब हो और समाज को नुकसान हो जाए।
- कंपनी का प्रमुख होने के नाते मेरी ज़िम्मेदारी अपनी कंपनी और उसके कर्मचारियों के प्रति भी है। अगर काम मिलेगा ही नहीं तो उन सभी के अस्तित्व पर खतरा पैदा हो जाएगा जो कि रिश्वत देने से ज़्यादा अनैतिक होगा।

2. रिश्वत नहीं देने और ऑर्डर को हाथ से निकलने देने के पक्ष में तर्क-

- यदि मैं एक बार रिश्वत दूँगा तो हर बार सरकारी कर्मचारी रिश्वत मांगेंगे। अत: पहली बार मना करना ही उचित है।
- अगर रिश्वत देकर काम हासिल करूँगा तो कंपनी की समुचित आय के लिये गुणवत्ता से समझौता करना ज़रूरी होगा जो समाज के लिये नुकसानदायक व अनैतिक होगा।
- लाभ कमाने का महत्त्व वहीं तक है, जहाँ तक व्यक्ति अपने बुनियादी मूल्यों के साथ चल सके। अपने मूल्यों के खिलाफ जाकर धन कमाने से भी असंतोष व तनाव ही हासिल होगा।

3. तीसरे रास्ते की संभावना- इस स्थिति में एक तीसरा रास्ता भी संभव है, जो निम्नलिखित है-

- बोली लगाने वाली सभी कंपनियों से संपर्क करके पारदर्शी प्रक्रिया के लिये दबाव बनाऊँगा।
- ज़िम्मेदार अधिकारी को बताऊँगा कि अंतिम निर्णय के बाद मैं सूचना के अधिकार के तहत निर्णय के आधार पूछूँगा और आवश्यकता होने पर कोर्ट भी जाऊँगा।

- मीडिया तथा सोशल मीडिया के माध्यम से दबाव बनाऊँगा कि निर्णय की प्रक्रिया पूरी पारदर्शिता के साथ संपन्न हो। आवश्यकता हुई तो मीडिया को स्टिंग ऑपरेशन करने की सलाह भी दूँगा।

संभव है कि इसके बावजूद मुझे ऑर्डर न मिले, किंतु इससे भविष्य में प्रक्रिया के पारदर्शी होने की संभावना बढ़ेगी, जो सभी के लिये अच्छा होगा।

प्रश्न: रामेश्वर ने गौरवशाली सिविल सेवा परीक्षा को सफलतापूर्वक पास कर लिया और वह ऐसे सुअवसर से अभिभूत था, जो सिविल सेवा के माध्यम से देश की सेवा करने के लिये उसको मिलने वाला था। परंतु, सेवा का कार्यग्रहण करने के शीघ्र बाद उसने महसूस किया कि वस्तुस्थिति उतनी सुंदर नहीं है, जितनी उसने कल्पना की थी।

उसने अपने विभाग में व्याप्त अनेक अनाचार पाए। उदाहरण के रूप में विभिन्न योजनाओं और अनुदानों के अधीन निधियाँ दुर्विनियोजित की जा रही थीं। सरकारी सुविधाओं का अक्सर अधिकारियों और स्टाफ द्वारा व्यक्तिगत आवश्यकताओं के लिये इस्तेमाल किया जा रहा था। कुछ समय के बाद उसने यह भी देखा कि स्टाफ को भर्ती करने की प्रक्रिया भी दोषपूर्ण थी। भावी उम्मीदवारों को एक परीक्षा लिखनी होती थी, जिसमें काफ़ी नकलबाज़ी चलती थी। कुछ उम्मीदवारों को परीक्षा में बाह्य सहायता भी प्रदान की जाती थी। रामेश्वर ऐसी घटनाओं को अपने वरिष्ठों की नज़र में ले आए, परंतु इस पर उसको अपनी आँखें, कान और मुख बंद रखने और इन सभी चीज़ों को नज़रअंदाज़ करने की सलाह दी गई। यह बताया गया कि सब उच्चतर अधिकारियों की मिलीभगत से चल रहा था। इससे रामेश्वर का भ्रम टूटा और वह व्याकुल रहने लगा। वह सलाह के लिये आपके पास आता है।

ऐसे विभिन्न विकल्प सुझाइये, जो आपके विचार में, ऐसी परिस्थिति में रामेश्वर के लिये उपलब्ध हैं। इन विकल्पों का मूल्यांकन करने और सर्वाधिक उचित रास्ता अपनाने में आप उसकी किस प्रकार सहायता करेंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Rameshwar successfully cleared the prestigious civil services examination and was excited about the opportunity that he would get through the civil services to serve the country. However, soon after joining the services, he realized that things are not as rosy as he had imagined.

He found a number of malpractices prevailing in the department assigned to him. For example, funds under various schemes and grants were being misappropriated. The official facilities were frequently being used for personal needs by the officers and staff. After some time, he noticed that the process of recruiting the staff was also not up to the mark. Prospective candidates were required to write an examination in which a lot of cheating was going on. Some candidates were provided external help in the examination. Rameshwar brought these incidents to the notice of his seniors. However, he was advised to keep his eyes, ears and mouth shut and ignore all these things which were taking place with the connivance of the higher-ups. Rameshwar felt highly disillusioned and uncomfortable. He comes to you seeking your advice.

Indicate various options that you think are available in this situation. How would you help him to evaluate these options and choose the most appropriate path to be adopted?

उत्तर: मैं रामेश्वर को निम्नलिखित तीन विकल्प (मूल्यांकन सहित) सुझाऊँगा-

1. पहला विकल्प है कि रामेश्वर भ्रष्टाचार की कार्य-संस्कृति को चुपचाप स्वीकार कर ले और अवैध कमाई में हिस्सेदार हो जाए। इस विकल्प से उसे धन और सत्ता हासिल होगी, वह अपने उच्च अधिकारियों का प्रिय बना रहेगा तथा अपने परिवार की ऊँची अपेक्षाओं को भी संतुष्ट कर सकेगा।

   किंतु इस विकल्प में उसे अपने मूल्यों से समझौता करना पड़ेगा और भीतर-ही-भीतर वह टूट जाएगा। इस स्थिति में निरंतर रहने से वह आत्मनिर्वासन का शिकार भी हो सकता है। साथ ही यह समाज और देश के लिये भी अहितकर साबित होगा।

2. दूसरा विकल्प है कि रामेश्वर भ्रष्टाचार के विरुद्ध सक्रिय लड़ाई छेड़ दे और हरसंभव तरीके (जैसे- मीडिया की मदद) से भ्रष्ट लोगों के समूह से संघर्ष करे।

   इस विकल्प का लाभ यह होगा कि वह अपने मूल्यों के विरुद्ध न होने के कारण मानसिक बिखराव से बच जाएगा और समाज में उसे न्यायोचित सम्मान भी मिल सकेगा।

   किंतु इस रास्ते पर उसे अपने उच्च अधिकारियों का निरंतर विरोध झेलना होगा, जो बार-बार के स्थानांतरण और अन्य रूपों में हो सकता है। यह भी हो सकता है कि भ्रष्टाचारी समूह उसे या उसके परिवार को धमकियाँ दे और नुकसान पहुँचाए। निरंतर ऐसी स्थिति में रहने से वह अवसादग्रस्त भी हो सकता है।

3. तीसरा संभव रास्ता यह है कि वह खुद भ्रष्टाचार का हिस्सा न बने, किंतु अपनी सीमाओं से बाहर जाकर अपने अधिकारियों के विरुद्ध कदम उठाने से भी बचे। इस रास्ते पर निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं-
   (क) स्वयं भ्रष्ट न होना और अपने अधीनस्थों पर भी पारदर्शिता के लिये दबाव बनाना।
   (ख) जो अधीनस्थ संदिग्ध हों, उनका स्थान तथा कार्यभार बदलते रहना।
   (ग) यदि उच्च अधिकारी कोई गलत कार्य करने को कहें तो उनसे लिखित आदेश की मांग करना।
   (घ) अपने कार्यालय के लाभार्थी नागरिकों को पारदर्शिता की मुहिम का हिस्सा बनाना, ताकि किसी के लिये भी भ्रष्टाचार करना कठिन हो जाए।

(ङ) यदि कार्यालय में अनाचार चल रहा है तो उसके प्रमाण इकट्ठे करना और सतर्कता आयोग जैसी संस्था को मुहैया कराना।

मैं उसे तीसरा विकल्प सुझाऊँगा, क्योंकि इसमें नैतिक मूल्यों की रक्षा के साथ-साथ पद की शक्तियों और सीमाओं का ध्यान भी रखा गया है।

प्रश्न: हमारे देश में ग्रामीण लोगों का कस्बों और शहरों की ओर प्रवसन तेज़ी के साथ बढ़ रहा है। यह ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्रों में विकट समस्याएँ पैदा कर रहा है। वास्तव में स्थिति यथार्थ में अप्रबंधनीय होती जा रही है। क्या आप इस समस्या का विस्तार से विश्लेषण कर सकते हैं और समस्या के लिये ज़िम्मेदार न केवल सामाजिक-आर्थिक, वरन् भावनात्मक और अभिवृत्तिक कारकों को बता सकते हैं? साथ ही स्पष्ट रूप से उजागर कीजिये कि क्यों-

(a) शिक्षित ग्रामीण युवा शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित होने की कोशिश कर रहे हैं;

(b) भूमिहीन निर्धन लोग नगरीय मलिन बस्तियों में प्रवसन कर रहे हैं;

(c) यहाँ तक कि कुछ किसान अपनी ज़मीन बेच रहे हैं और शहरी क्षेत्रों में छोटी-मोटी नौकरियाँ लेकर बसने की कोशिश कर रहे हैं।

आप कौन-से साध्य कदम सुझा सकते हैं, जो हमारे देश की इस गंभीर समस्या का नियंत्रण करने में प्रभावी होंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

In our country, the migration of rural people to towns and cities is increasing drastically. This is causing serious problems both in the rural as well as in the urban areas. In fact, things are becoming really unmanageable. Can you analyse this problem in detail and indicate not only the socio-economic but also the emotional and attitudinal factors responsible for this problem? Also, distinctly bring out why–

(a) Educated rural youth are trying to shift to urban areas;

(b) Landless poor people are migrating to urban slums;

(c) Even some farmers are selling off their land and trying to settle in urban areas taking up petty jobs.

What feasible steps can you suggest which will be effective in controlling this serious problem of our country?

उत्तर: बड़ी संख्या में ग्रामीणों द्वारा शहरी प्रवसन के कारण स्थिति सचमुच अप्रबंधनीय होती जा रही है, क्योंकि शहरों पर जनसंख्या का असहनीय दबाव हो गया है जबकि गाँवों से कार्यशील जनसंख्या लगभग गायब हो गई है।

- इस समस्या के लिये ज़िम्मेदार कारक निम्नलिखित हैं-
  - आर्थिक कारक यह है कि शहरों में आसानी से रोज़गार मिल जाता है और नकद वेतन मिलता है। यही केंद्रीय कारक है।
  - सामाजिक कारक यह है कि बेहतर शिक्षा शहरों में मिल पाती है, गाँवों में नहीं। साथ ही वंचित वर्गों को शहरों में जातीय, धार्मिक या लिंगगत दमन प्रायः नहीं झेलना पड़ता।
  - भावनात्मक कारकों में बच्चों के भविष्य की चिंता तथा अपने समकक्षों से प्रतिस्पर्धा की भावना प्रमुख है।
  - अभिवृत्तिक कारक यह है कि समाज में शहरी होना सम्मान की बात मानी जाती है, जबकि ग्रामीणों को 'गँवार' कहकर उपहास का विषय बनाया जाता है। इसलिये लोग शहरी जीवन को प्राथमिकता देते हैं।
- पूछे गए विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं-
  - शिक्षित ग्रामीण युवा शहरों में अपने कॅरियर की श्रेष्ठ संभावनाओं, स्टेटस सिंबल, सामाजिक खुलेपन तथा बेहतर संरचनागत सुविधाओं के कारण जाना चाहते हैं।
  - भूमिहीन निर्धन लोग नगरीय मलिन बस्तियों में रहने के लिये भी तैयार हैं, क्योंकि वहाँ ज़्यादा आय तो अर्जित होती ही है, साथ ही जातीय शोषण व बेगारी से भी मुक्ति मिल जाती है। संकट के समय अच्छे अस्पताल भी शहरों में ही मिल पाते हैं।
  - किसान ज़मीन बेचकर शहरों में छोटी-मोटी नौकरी इसलिये कर रहे हैं, क्योंकि एक तो कृषि में निश्चित और अधिक आय नहीं है; साथ ही शिक्षा और स्वास्थ्य के मामले में गाँव आज भी शहरों से बहुत पीछे हैं। घर की महिलाओं और बच्चों का दबाव भी प्रायः शहर के पक्ष में रहता है।
- इस समस्या के समाधान के निम्नलिखित उपाय संभव हैं-
  - देशभर में विकास का विकेंद्रीकृत मॉडल अपनाया जाए, ताकि शहरों के साथ-साथ गाँवों को भी हर तरह की सुविधा प्राप्त हो सके।
  - गाँवों की आधारभूत संरचना पर विशेष बल दिया जाए। शिक्षा और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाए (विशेषतः टेलीएजुकेशन और टेलीमेडिसिन)।
  - कृषि को लाभकारी उद्यम बनाने के लिये चकबंदी, सहकारी कृषि, नवाचारों आदि को प्रोत्साहित किया जाए।

2013

प्रश्न: एक जन सूचना अधिकारी (PIO) को सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम के अंतर्गत एक आवेदन मिलता है। सूचना एकत्र करने के बाद उसे पता चलता है कि वह सूचना स्वयं उसी के द्वारा लिये गए कुछ निर्णयों से संबंधित है, जो पूर्णरूप से सही नहीं थे। इन निर्णयों में अन्य कर्मचारी भी सहभागी थे। सूचना प्रकट होने पर स्वयं उसके तथा उसके अन्य मित्रों के विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई हो सकती है, जिसमें दंड भी संभावित है। सूचना प्रकट न करने या आंशिक या छद्मावरित सूचना उपलब्ध कराने पर कम दंड या दंड-मुक्ति भी मिल सकती है।

PIO अन्यथा एक ईमानदार व कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति है पर यह विशिष्ट निर्णय, जिसके संबंध में RTI आवेदन दिया गया है, गलत निकला। वह अधिकारी आपके पास सलाह के लिये आया है।

नीचे सुझावों के कुछ विकल्प दिये गए हैं। प्रत्येक विकल्प का गुण-दोष के आधार पर मूल्यांकन कीजिये-

(i) PIO इस मामले को अपने ज्येष्ठ अधिकारी को उसकी सलाह के लिये संदर्भित करे और कड़ाई से उसी के अनुसार कार्रवाई करे चाहे वह स्वयं उस सलाह से पूर्णतया सहमत न हो।

(ii) PIO छुट्टी पर चला जाए और मामले को अपने उत्तराधिकारी (कार्यालय में) पर छोड़ दे या सूचना आवेदन को किसी अन्य PIO को स्थानांतरण का निवेदन करे।

(iii) PIO सच्चाई के साथ सूचना प्रकट करने व अपनी जीविका पर उसके प्रभाव पर मनन करके इस भाँति उत्तर दे, जिससे वह या उसकी जीविका पर जोखिम न आए पर साथ ही सूचना की अंतर्वस्तु पर कुछ समझौता किया जा सकता है।

(iv) PIO उन सहयोगियों, जो इस निर्णय को लेने में सहभागी थे, से परामर्श करे और उनकी सलाह के अनुरूप कार्रवाई करे।

अनिवार्य रूप से केवल उपर्युक्त विकल्पों तक सीमित न रखते हुए आप अपनी सलाह दीजिये और उसके उचित कारण भी बताइये। (250 शब्द, 20 अंक)

A Public Information Officer has received an application under RTI Act. Having gathered the information, the PIO discovers that the information pertains to some of the decisions taken by him, which were found to be not altogether right. There were other employees also who were party to these decisions. Disclosure of the information is likely to lead to disciplinary action with possibility of punishment against him as well as some of his colleagues. Non-disclosure or part disclosure or camouflaged disclosure of information will result into lesser punishment or no punishment.

The PIO is otherwise an honest and conscientious person but this particular decision, on which the RTI application has been filed, turned out to be wrong. He comes to you for advice.

The following are some suggested options. Please evaluate the merits and demerits of each of the options:

(i) The PIO could refer the matter to his superior officer and seek his advice and act strictly in accordance with the advice, even though he is not completely in agreement with the advice of the superior.

(ii) The PIO could proceed on leave and leave the matter to be dealt by his successor in office or request for transfer of the application to another PIO.

(iii) The PIO could weigh the consequences of disclosing the information truthfully, including the effect on his career, and reply in a manner that would not place him or his career in jeopardy, but at the same time a little compromise can be made on the contents of the information.

(iv) The PIO could consult his other colleagues who are party to the decision and take action as per their advice.

Also please indicate (without necessarily restricting to the above options) what you would like to advise, giving proper reasons.

उत्तर: दिये गए प्रश्न में व्यक्ति के स्वहित तथा प्रशासनिक दायित्वों के बीच टकराव है। जन सूचना अधिकारी (PIO) का व्यक्तिगत हित इस बात में है कि वह प्राप्त आवेदन के जवाबस्वरूप अल्प सूचना या छद्म सूचना प्रदान करके स्वयं को और अपने साथियों को बचा ले, परंतु उसका प्रशासनिक कर्त्तव्य है कि सूचना सही रूप में पहुँचाई जाए। प्रश्न में दिया हुआ है कि PIO अन्यथा एक ईमानदार अधिकारी है और उसके द्वारा सूचना प्रदान किये जाने पर अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए प्रश्न में दिये गए विकल्पों पर विचार किया जा सकता है।

(i) चूँकि PIO का स्वयं का हित इस मामले में सन्निहित है। अत: उसे स्वयं निर्णय नहीं लेना चाहिये। इस दृष्टि से इस मामले को ज्येष्ठ अधिकारी को संदर्भित करना सही माना जा सकता है। ज्येष्ठ अधिकारी की सलाह से असहमत होते हुए भी उसके अनुपालन को सही माना जा सकता है, क्योंकि आचरण-संहिता के अनुसार वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों का पालन करना कनिष्ठ अधिकारियों का कर्त्तव्य है।

परंतु इस विकल्प में आदेशों का अनुपालन अंतत: PIO को ही करना है और चूँकि इसमें उसका स्वहित सम्मिलित है, इसलिये संभव है कि वह सकारात्मक अथवा नकारात्मक ढंग से पक्षपात करे अर्थात् वह खुद को व अपने साथियों को बचाने के लिये रिपोर्ट को नरम भी कर सकता है या फिर अपनी ईमानदारी सिद्ध करने के लिये ज़रूरत से ज़्यादा कड़ी रिपोर्ट भी बना सकता है। अत: यह विकल्प आंशिक रूप से सही होते हुए भी समस्या को हल नहीं करता।

(ii) PIO का अवकाश पर चला जाना एक बेहतर विकल्प हो सकता है, क्योंकि एक तो ऐसा करने से वह एक ऐसे मामले में निर्णयकर्त्ता बनने से बच जाएगा, जिसमें उसके खुद के हित सम्मिलित हैं और साथ ही कार्यालय से दूर रहने के कारण वह दी जाने वाली सूचना को ऐच्छिक या अनैच्छिक रूप से प्रभावित करने से भी बच जाएगा, किंतु इस तरह अचानक छुट्टी पर जाने से कार्यालय का कार्य प्रभावित होगा व अन्य मामले भी विलंबित होंगे। इससे बचने के लिये वह सूचना आवेदन को किसी अन्य PIO को स्थानांतरण का निवेदन कर सकता है।

(iii) तीसरा विकल्प पूर्णत: अनैतिक है, इसे अल्प मात्रा में नैतिक केवल इस आधार पर माना जा सकता है कि ऐसा वह स्वयं को नहीं बल्कि उन कनिष्ठ अधिकारियों को बचाने के लिये कर रहा है,

जिनकी आजीविका पर सही सूचना दी जाने के पश्चात् संकट आ सकता है। परंतु यह छद्म नैतिकता है और ठोस नैतिक आधार से विहीन है क्योंकि अगर उसके कनिष्ठ भी दोषी हैं तो उन पर कार्रवाई तो होनी ही चाहिये।

(iv) यह विकल्प भी स्पष्ट रूप से गैर-कानूनी व अनैतिक है। RTI में मांगी गई जानकारी आवेदक को प्रदान करने से पहले इस बारे में किसी और से चर्चा करने को उचित नहीं ठहराया जा सकता। यद्यपि PIO एक ईमानदार व्यक्ति है, परंतु उसके सभी साथी भी ईमानदार हों, यह आवश्यक नहीं है। यह भी संभव है कि उसके निर्णय में सहभागी किसी व्यक्ति ने पूरी टीम को जानबूझकर गलत निर्णय की ओर अग्रसर किया हो। यदि निर्णय के सहभागियों से चर्चा की गई तो वह व्यक्ति सावधान हो सकता है और RTI आवेदनकर्त्ता के लिये संकट भी उत्पन्न कर सकता है। इसके अतिरिक्त PIO के पद से जुड़े कर्त्तव्यों की दृष्टि से भी ऐसा परामर्श अनावश्यक है।

सभी विकल्पों का परीक्षण करने पर किसी अन्य PIO को स्थानांतरित करने के आवेदन का विकल्प ही बेहतर है। PIO अन्यथा एक ईमानदार अधिकारी है और इस मामले में भी उसे ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का निर्वहन करना चाहिये। यदि इस निर्णय के कारण प्रशासन के द्वारा PIO पर कोई कार्रवाई की जाती है तो प्रशासन भी उसके अन्यथा बेदाग रिकॉर्ड पर ध्यान अवश्य देगा।

प्रश्न: आप नगरपालिका परिषद के निर्माण विभाग में अधिशासी अभियंता पद पर तैनात हैं और वर्तमान में एक ऊपरगामी पुल (Flyover) के निर्माण-कार्य के प्रभारी हैं। आपके अधीन दो कनिष्ठ अभियंता हैं, जो प्रतिदिन निर्माण-स्थल के निरीक्षण के उत्तरदायी हैं तथा आपको विवरण देते हैं और आप विभाग के अध्यक्ष, मुख्य अभियंता को रिपोर्ट देते हैं। निर्माण-कार्य पूर्ण होने को है और कनिष्ठ अभियंता नियमित रूप से यह सूचित करते रहे हैं कि निर्माण-कार्य परिकल्पना के विनिर्देशों के अनुरूप हो रहा है। लेकिन आपने अपने आकस्मिक निरीक्षण में कुछ गंभीर विसामान्यताएँ व कमियाँ पाईं, जो आपके विवेकानुसार पुल की सुरक्षा को प्रभावित कर सकती हैं। इस स्तर पर इन कमियों को दूर करने में काफी निर्माण-कार्य को गिराना और दोबारा बनाना होगा, जिससे ठेकेदार को निश्चित हानि होगी और कार्य-समाप्ति में विलंब भी होगा। क्षेत्र में भारी ट्रैफिक जैम के कारण परिषद पर निर्माण शीघ्र पूरा करने के लिये जनता का बड़ा दबाव है। जब आप स्थिति मुख्य अभियंता के संज्ञान में लाए तो उन्होंने अपने विवेकानुसार इसको बड़ा गंभीर दोष न मानकर इसे उपेक्षित करने की सलाह दी। उन्होंने परियोजना को समय से पूरा करने हेतु कार्य को आगे बढ़ाने के लिये कहा। परंतु आप आश्वस्त हैं कि यह गंभीर प्रकरण है, जिससे जनता की सुरक्षा प्रभावित हो सकती है और इसको बिना ठीक कराए नहीं छोड़ा जा सकता।

ऐसी स्थिति में आपके करने के लिये कुछ विकल्प निम्नलिखित हैं। इनमें से प्रत्येक विकल्प का गुण-दोष के आधार पर मूल्यांकन कर अंततः सुझाव दीजिये कि आप क्या कार्रवाई करना चाहेंगे और क्यों?

(i) मुख्य अभियंता की सलाह मानकर आगे बढ़ जाएँ।

(ii) सभी तथ्यों व विश्लेषण को दिखाते हुए स्थिति की विस्तृत रिपोर्ट बनाकर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए मुख्य अभियंता से लिखित आदेश का निवेदन करें।

(iii) कनिष्ठ अभियंताओं से स्पष्टीकरण मांगें और ठेकेदार को निश्चित अवधि में दोष-निवारण के लिये आदेश दें।

(iv) इस विषय को बलपूर्वक उठाएँ ताकि यह मुख्य अभियंता के वरिष्ठ जनों तक पहुँच सके।

(v) मुख्य अभियंता के अनम्य विचार को ध्यान में रखते हुए इस परियोजना से अपने स्थानांतरण के लिये आवेदन करें या बीमारी की छुट्टी पर चले जाएँ।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are working as an Executive Engineer in the construction cell of a Municipal Corporation and are presently in-charge of the construction of a flyover. There are two Junior Engineers under you who have the responsibility of day-to-day inspection of the site and are reporting to you, while you are finally reporting to the Chief Engineer who heads the cell. While the construction is heading towards completion, the Junior Engineers have been regularly reporting that all construction is taking place as per design specifications. However, in one of your surprise inspections, you have noticed some serious deviations and lacunae which, in your opinion, are likely to affect the safety of the flyover. Rectification of these lacunae at this stage would require a substantial amount of demolition and rework which will cause a tangible loss to the contractor and will also delay completion. There is a lot of public pressure on the Corporation to get this construction completed because of heavy traffic congestion in the area. When you brought this matter to the notice of the Chief Engineer, he advised you that in his opinion it is not a very serious lapse and may be ignored. He advised for further expediting the project for completion in time. However, you are convinced that this was a serious matter which might affect public safety and should not be left unaddressed.

What will you do in such a situation? Some of the options are given below. Evaluate the merits and demerits of each of these options and finally suggest what course of action you would like to take, giving reasons.

(i) Follow the advice of the Chief Engineer and go ahead.

(ii) Make an exhaustive report of the situation bringing out all facts and analysis along with your own viewpoints stated clearly and seek for written orders from the chief Engineer.

(iii) Call for explanation from the Junior Engineers and issue orders to the contractor for necessary correction within targeted time.

(iv) Highlight the issue so that it reaches superiors above the Chief Engineer.

(v) Considering the rigid attitude of the Chief Engineer, seek transfer from the project or report sick.

उत्तर: अगर मैं बिना कोई कदम उठाए निर्माण कार्य होने देता हूँ तो इससे निर्माण कार्य समय सीमा में पूरा हो जाएगा तथा साथ ही मुझे वरिष्ठ अधिकारी के विरुद्ध भी नहीं जाना पड़ेगा, जो आज्ञापालन तथा व्यक्तिगत हित की दृष्टि से बेहतर विकल्प हो सकता है। परंतु ऐसा करने पर गुणवत्ता खतरे में पड़ सकती है और दुर्घटना भी हो सकती है। ऐसे में व्यापक जनहित खतरे में पड़ सकता है। अत: दी गई केस स्टडी में संघर्ष समयबद्धता तथा आज्ञापालन और गुणवत्ता तथा व्यापक जनहित के बीच है। इस संघर्ष को ध्यान में रखते हुए प्रश्न में दिये गए विकल्पों पर विचार किया जा सकता है:

(i) प्रथम विकल्प को आज्ञापालन तथा परियोजना के समय पर पूरा होने की दृष्टि से सही ठहराया जा सकता है और व्यक्तिगत हित की दृष्टि से भी यह विकल्प उचित प्रतीत होता है, क्योंकि इससे वरिष्ठ अधिकारी प्रसन्न होगा। परंतु इस विकल्प को जनहित तथा गुणवत्ता के हित में नहीं कहा जा सकता। थोड़ी गहराई से देखें तो यह स्वहित में भी नहीं है, क्योंकि यदि वास्तव में जानबूझकर मानदंडों की अवहेलना की जा रही है तो यह ज़रूरी है कि मैं उसके प्रति अपनी लिखित असहमति दर्शाऊँ अन्यथा दुर्घटना की स्थिति में जाँच होने पर मुझे भी दोषी समझा जाएगा।

(ii) यह एक बेहतर विकल्प है, क्योंकि विस्तृत रिपोर्ट बनाने से वस्तुस्थिति ज्यादा साफ होगी और मुख्य अभियंता यदि केवल जल्दबाज़ी में पूरे तथ्यों की जानकारी के बिना सहमति दे रहा होगा तो उसका ध्यान स्पष्ट रूप से कमियों की ओर जाएगा और संभव है कि वह अपना आदेश बदलते हुए काम रोकने को कहे। यदि वह लिखित रूप से काम जारी रखने का आदेश भी देता है तो भी भविष्य में दुर्घटना होने पर आपके समक्ष यह दलील उपलब्ध रहेगी कि काम आपकी सलाह को दरकिनार करते हुए करवाया गया। अत: मेरे व्यक्तिगत हित भी संरक्षित हो जाएंगे।

यह विकल्प कानूनी व प्रशासनिक दृष्टि से तो पूरी तरह सही है, परंतु नैतिक दृष्टि से मात्र रिपोर्ट बना देने व उस पर लिखित आदेश ले लेने से ही मेरी ज़िम्मेदारी पूरी नहीं हो जाती। यदि निर्माण कार्य में भूलें बेहद गंभीर व स्पष्ट प्रकृति की हैं तो काम जारी रखने की अनुमति देने वाला मुख्य अभियंता भी भ्रष्टाचार में शामिल हो सकता है। इसलिये यह आवश्यक है कि अनियमितता की सूचना न केवल आपके वरिष्ठ तक बल्कि उसके वरिष्ठों तक भी पहुँचे।

(iii) यह विकल्प नैतिक रूप से पूरी तरह सही है, क्योंकि इसमें दोषी अभियंताओं के विरुद्ध कार्रवाई की बात भी है और ठेकेदार को दोष निवारण का आदेश भी। यदि ठेकेदार दोष निवारण करता है तो इससे जनहित की रक्षा हो जाएगी। नैतिकता व प्रशासनिक दृष्टि से यह आवश्यक है कि दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई हो। अत: कनिष्ठ अभियंताओं से स्पष्टीकरण मांगना भी उचित है।

परंतु इस विकल्प को प्रशासनिक दृष्टि से पूरी तरह सही नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आप वरिष्ठ अधिकारी को सूचित कर चुके हैं और वह आपको मौखिक आदेश भी दे चुका है। अत: प्रशासनिक दृष्टि से यह आवश्यक हो जाता है कि किसी भी कार्रवाई से पहले अपने वरिष्ठ अधिकारी को विश्वास में लिया जाए।

(iv) इस विकल्प को बेहद सीमित अर्थों में सही माना जा सकता है, क्योंकि प्रशासनिक प्रक्रिया का पालन किये बिना मामले को केवल बलपूर्वक उठाने (हाईलाइट करने) से कोई विशेष प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। विकल्प में यह नहीं दिया गया है कि मामले को किस तरह हाईलाइट करना है। अगर हाईलाइट करने का तात्पर्य समस्या को प्रशासनिक चैनल के बाहर जाकर प्रचारित करने से है तो इसे किसी भी दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता।

(v) इस विकल्प से मेरी समस्या तत्काल तो टल जाएगी क्योंकि स्थानांतरण अथवा अवकाश की स्थिति में मैं उस परियोजना से मुक्त हो जाऊँगा, मगर मेरी यह प्रवृत्ति पलायनवादी कही जाएगी क्योंकि इसमें समस्या का समाधान न कर उससे भागा जा रहा है। वहीं इस विकल्प से पुल का निर्माण कार्य चलता रहेगा और कमियाँ जस-की-तस रह जाएंगी, जो आगे चलकर लोकहित में भी नहीं होगा और भविष्य में पुल के क्षतिग्रस्त होने पर मेरे कार्यों का मूल्याकन भी तो किया जाएगा जिसमें मैं दोषी पाया जाऊँगा। अत: यह विकल्प सही नहीं होगा।

इन सभी विकल्पों में किसी भी विकल्प को पूरी तरह सही नहीं ठहराया जा सकता। दिये गए विकल्पों को मिला-जुलाकर एक बेहतर विकल्प तैयार किया जा सकता है। मैं इस परिस्थिति में सबसे पहले कनिष्ठ अधिकारियों से स्पष्टीकरण मांगूँगा। उनके स्पष्टीकरण तथा अपने निरीक्षण के आधार पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करूँगा। उस रिपोर्ट को मुख्य अभियंता के समक्ष प्रस्तुत करूँगा। साथ ही यह भी सुनिश्चित करूँगा कि मुख्य अभियंता के वरिष्ठों को इस पूरे मामले की जानकारी हो। यदि इन सब के बाद भी मुख्य अभियंता के विचार नहीं बदलते हैं और वह लिखित आदेश जारी करता है तो उसके आदेश का पालन करते हुए प्रयास करूँगा कि निर्माण कार्य अधिकतम गुणवत्ता के साथ संपन्न हो।

प्रश्न: तमिलनाडु में शिवकासी पटाखा और दियासलाई निर्माताओं के समूहों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ की स्थानीय अर्थव्यवस्था अधिकांशत: पटाखा उद्योग पर निर्भर है। इसी से इस क्षेत्र का आर्थिक विकास हुआ है और रहन-सहन का स्तर भी सुधरा है।

जहाँ तक पटाखा उद्योग जैसे खतरनाक उद्योगों के लिये बाल श्रमिक नियमों का प्रश्न है, अंतर्राष्ट्रीय श्रम-संगठन (ILO) ने श्रम हेतु न्यूनतम आयु-सीमा 18 वर्ष निर्धारित की है, जबकि भारत में यह आयु-सीमा 14 वर्ष है।

पटाखों के औद्योगिक क्षेत्र की इकाइयों को पंजीकृत तथा अपंजीकृत दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। घरों पर आधारित कार्यशालाएँ एक विशिष्ट इकाई हैं। यद्यपि पंजीकृत/अपंजीकृत इकाइयों में बाल श्रमिक रोज़गार के विषय में कानून स्पष्ट है, घरों पर आधारित कार्य उसके अंतर्गत नहीं आते। ऐसी इकाइयों में माना जाता है कि बालक अपने माता-पिता व संबंधियों की देख-रेख में कार्य कर रहे हैं। बाल श्रमिक मानकों से बचने के लिये अनेक इकाइयाँ अपने को घरों पर आधारित कार्य बताती हैं और बाहरी बालकों को रोज़गार देती हैं। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बालकों की भर्ती से इन इकाइयों की लागत बचती है, जिससे उनके मालिकों को अधिक लाभ मिलता है।

आपने शिवकासी में एक इकाई का दौरा किया, जिसमें 14 वर्ष से कम आयु के लगभग 10-15 बालक काम करते हैं। उसका मालिक आपको इकाई परिसर में घुमाता है। मालिक आपको बताता है कि घर-आधारित इकाई में वे बालक उसके संबंधी हैं। आप देखते हैं कि जब मालिक यह बता रहा है तो कई बालक खीस निपोरते हैं। गहन पूछताछ में आप जान जाते हैं कि मालिक और बालक परस्पर कोई संबंध संतोषजनक रूप से सिद्ध नहीं कर पाए।

(a) इस प्रकरण में अंतर्ग्रस्त नैतिक विषय स्पष्ट कीजिये और उनकी व्याख्या कीजिये।

(b) इस दौरे के बाद आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

(250 शब्द, 20 अंक)

Sivakasi in Tamil Nadu is known for its manufacturing clusters on firecrackers and matches. The local economy of the area is largely dependent on firecrackers industry. It has led to tangible economic development and improved standard of living in the area.

So far as child labour norms for hazardous industries like firecrackers industry are concerned, International Labour Organization (ILO) has set the minimum age as 18 years. In India, however, this age is 14 years.

The units in industrial clusters of firecrackers can be classified into registered and non-registered entities. One typical unit is household-based work. Though the law is clear on the use of child labour employment norms in registered/non-registered units, it does not include household-based works. Household-based work means children working under the supervision of their parents/relatives. To evade child labour norms, several units project themselves as household-based works but employ children from outside. Needless to say that employing children saves the costs for these units leading to higher profits to the owners.

On your visit to one of the units at Sivakasi, the owner takes you around the unit which has about 10-15 children below 14 years of age. The owner tells you that in his household-based unit, the children are all his relatives. You notice that several children smirk, when the owner tells you this. On deeper enquiry, you figure out that neither the owner nor the children are able to satisfactorily establish their relationship with each other.

(a) Bring out and discuss the ethical issues involved in the above case.

(b) What would be your reaction after your above visit?

उत्तर : (a) अंतर्ग्रस्त नैतिक विषय: इस केस स्टडी में आर्थिक विकास, उसे प्राप्त करने का तरीका, आर्थिक विकास का वितरण तथा बालश्रम से जुड़े अनेक नैतिक मुद्दे अंतर्ग्रस्त हैं। सबसे पहला मुद्दा आर्थिक विकास ही है, इससे जुड़ा नैतिक प्रश्न है कि आर्थिक विकास साध्य है या साधन? क्या आर्थिक विकास अपने आप में अंतिम परिणाम हो सकता है? इसी प्रश्न से आर्थिक विकास के वितरण का मुद्दा भी जुड़ा है। क्या आर्थिक विकास में भागीदार श्रमिकों तक उनका हिस्सा पहुँच रहा है।

इस केस स्टडी से जुड़ा एक अन्य नैतिक मुद्दा साधन-साध्य की पवित्रता का भी है कि क्या आर्थिक विकास हासिल करने के लिये बालश्रम जैसे साधन का उपयोग उचित माना जा सकता है? यदि गांधीजी की नज़रों से देखें तो साधन तथा साध्य दोनों की पवित्रता आवश्यक है और बालश्रम जैसे नाज़ुक मसलों पर तो परिणामनिरपेक्षवाद (डिऑन्टोलॉजी) की अधिक सही विचारधारा जान पड़ती है।

इन मुद्दों में सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा बालश्रम से जुड़ा है। भारतीय संविधान 14 वर्ष तक के बच्चों के लिये निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा की गारंटी देता है। ऐसे में इन निरीह बालकों का पटाखे बनाने जैसे खतरनाक काम में नियोजन किसी भी दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता। कानून भी ऐसे नियोजन पर स्पष्ट रूप से प्रतिबंध लगाता है। इसलिये इस तरह का बालश्रम अनैतिक, गैर-कानूनी व असंवैधानिक है।

इस संदर्भ में एक नैतिक प्रश्न यह भी उठता है कि ऐसे खतरनाक उद्योगों में क्या बच्चों को घरेलू इकाइयों में काम करने की भी अनुमति होनी चाहिये? बालश्रम से संबंधित कानून बनाते समय घरेलू इकाइयों को छूट देने का उद्देश्य निश्चित रूप से इन इकाइयों को पुलिस प्रताड़ना तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंधों से बचाना रहा होगा, क्योंकि बच्चे घर के कामों में स्वाभाविक रूप से कुछ-न-कुछ मदद कर रहे हैं तो उसे ठीक माना जा सकता है, लेकिन बच्चों से उनका बचपन छीनकर उन्हें श्रमिक बना देने का अधिकार उनके माता-पिता को भी नहीं है।

उत्तर : (b) प्रतिक्रिया: (यह मानते हुए कि दौरा प्रशासनिक अधिकारी के रूप में किया गया है।)

आर्थिक विकास समाज के लिये आवश्यक है, परंतु उसके लिये किसी के बचपन की बलि दी जाए यह कदापि उचित नहीं। सच तो यह है कि बालश्रम आर्थिक विकास को पैदा करने के लिये नहीं करवाया जा रहा, बल्कि इसलिये करवाया जा रहा है ताकि कुछ लोग बाल श्रमिकों को वयस्क श्रमिकों की अपेक्षा कम वेतन देकर अपना मुनाफा बढ़ा सकें। इस संदर्भ में मैं निम्नलिखित कदम उठाऊँगा:

- उस इकाई के मालिक से बच्चों के जन्म प्रमाणपत्र तथा अन्य दस्तावेज़ों की मांग करूँगा, ताकि कार्रवाई के लिये ठोस आधार प्राप्त हो सके, क्योंकि केवल अंदाज़ के आधार पर कार्रवाई नहीं की जा सकती।
- यदि इकाई का मालिक जन्म प्रमाणपत्र उपलब्ध कराने से मना करता है या आनाकानी करता है तो कार्रवाई का आधार बनता है। यदि जन्म प्रमाणपत्र नहीं है तो मैं चिकित्सकीय विधि (बोन डेन्सिटी टेस्ट आदि) से उम्र निर्धारित करवाने का प्रयास करूँगा, ताकि सशक्त मामला बने।
- उस इकाई के साथ-साथ अन्य इकाइयों का भी निरीक्षण करूँगा, ताकि उनकी भी जाँच हो सके। यह भी देखूँगा कि 14 वर्ष से नीचे के बच्चे स्कूल जा रहे हैं या नहीं। प्राथमिक शिक्षा अब बच्चों का संवैधानिक व विधिक अधिकार भी है।
- यदि जाँच के दौरान पाया जाता है कि कानून का व्यापक पैमाने पर दुरुपयोग हो रहा है तो कानून की कमियों को इंगित करते हुए उनके दुरुपयोग का उल्लेख करूँगा।

प्रश्न: आप देश के एक प्रमुख तकनीकी संस्थान के अध्यक्ष हैं। संस्थान, प्रोफेसरों के पद के चयन हेतु आपकी अध्यक्षता में साक्षात्कार पैनल का आयोजन शीघ्र ही करने वाला है। साक्षात्कार से कुछ दिन पहले आपके पास एक ज्येष्ठ शासकीय अधिकारी के निजी सचिव का फोन आता है, जिसमें आपसे उक्त पद के लिये उस अधिकारी के एक निकट संबंधी के पक्ष में चयन करने की अपेक्षा की जाती है। निजी सचिव यह भी बताते हैं कि आपके संस्थान के आधुनिकीकरण के लिये बहुत समय से लंबित महत्त्वपूर्ण वित्तीय अनुदान के प्रस्तावों का उन्हें ज्ञान है, जिनकी अधिकारी द्वारा स्वीकृति की जानी है। वे आपको उन प्रस्तावों का अनुमोदन कराने का आश्वासन देते हैं।

(a) आपके पास क्या-क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन कीजिये और बताइये कि आप कौन-सा विकल्प चुनेंगे और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are heading a leading technical institute of the country. The institute is planning to convene an interview panel shortly under your chairmanship for selection of the post of professors. A few days before the interview, you get a call from the Personal Secretary (PS) of a senior government functionary seeking your intervention in favour of the selection of a close relative of the functionary for this post. The PS also informs you that he is aware of the long pending and urgent proposals of your institute for grant of funds for modernization, which are awaiting the functionary's approval. He assures you that he would get these proposals cleared.

(a) What are the options available to you?

(b) Evaluate each of these options and choose the option which you would adopt, giving reasons.

उत्तर : (a) इस स्थिति में मेरे पास निम्नलिखित विकल्प उपलब्ध हैं:

- फोन को नज़रअंदाज़ करते हुए अपना कार्य करता रहूँ और साक्षात्कार के द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रत्याशी का ही चयन करूँ। वह सर्वश्रेष्ठ प्रत्याशी वह व्यक्ति भी हो सकता है, जिसकी सिफारिश की गई थी।
- निजी सचिव का प्रस्ताव मान लूँ और अधिकारी के निकट संबंधी का चयन कर लूँ। इससे यद्यपि एक कम योग्यता का व्यक्ति संस्थान में आ सकता है, परंतु इससे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण वित्तीय अनुदान भी प्राप्त हो जाएंगे, जो संस्था के विकास के लिये आवश्यक है।
- निजी सचिव ने जिस प्रत्याशी की सिफारिश की है, उसे चयन सूची से बाहर करवा दूँ या उसे साक्षात्कार में इतने कम अंक प्रदान करूँ कि उसका चयन किसी भी कीमत पर न हो पाए।
- पूरे घटनाक्रम की सूचना पुलिस को देकर उससे अधिकारी पर कार्रवाई के लिये अनुरोध करूँ।

उत्तर : (b) इन विकल्पों में से पुलिस के पास जाने का विकल्प उचित नहीं है, क्योंकि केवल एक फोन आया है। उसके अलावा कुछ भी नहीं। कुल मिलाकर अधिकारी के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है, इसलिये पुलिस को सूचना देने का कोई विशेष लाभ नहीं है। हाँ, पुलिस को सूचना देने पर व्यक्तिगत दुश्मनी के कारण मुझे और मेरे संस्थान को हानि अवश्य हो सकती है। यदि पुख्ता सबूत होते तो पुलिस के पास जाया जा सकता था। यहाँ तो फोन तक स्वयं उसने नहीं बल्कि उसके सचिव ने किया है।

प्रत्याशी का चयन कर लेना या उसे चयन सूची से बाहर कर देना भी अनुचित विकल्प है। उस प्रत्याशी का चयन कर लेने से भले ही संस्था को कुछ आर्थिक लाभ हो जाए पर इससे एक गलत परंपरा की नींव भी पड़ जाएगी। किसी शिक्षण संस्थान की गुणवत्ता उसके शिक्षकों से ही आँकी जाती है और इस मामले में समझौता नहीं किया जा सकता। आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिये अनैतिक तरीके अपनाना उचित नहीं, उसके लिये अन्य नैतिक तरीके तलाश किये जा सकते हैं।

जब तक यह स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि सिफारिश प्रत्याशी ने ही लगवाई है तब तक उसे चयन प्रक्रिया से बाहर करने का भी कोई औचित्य नहीं है। अगर वह वास्तव में योग्य है तो उसे चयन का अवसर मिलना चाहिये। अगर वह अयोग्य है तो योग्यता के अनुसार चयन किये जाने पर वह स्वयमेव चयनित नहीं हो पाएगा। अत: साक्षात्कार समिति के अध्यक्ष के रूप में मेरा सारा ज़ोर योग्यतानुसार निष्पक्ष चयन पर होना चाहिये।

प्रश्न: वित्त मंत्रालय में एक वरीय अधिकारी होने के नाते, सरकार द्वारा घोषित किये जाने वाले कुछ नीतिगत निर्णयों की गोपनीय एवं महत्त्वपूर्ण सूचना की आपको जानकारी मिलती है। इन निर्णयों के भवन एवं निर्माण उद्योग पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकते हैं। यदि भवन निर्माताओं को पहले ही यह जानकारी मिल जाती है तो वे उससे बड़े लाभ उठा सकते हैं। निर्माताओं में से एक ऐसा है, जिसने सरकार के लिये अच्छी गुणवत्ता का काफी काम किया है और वह आपके आसन्न वरिष्ठ

अधिकारी का घनिष्ठ है, जिन्होंने आपको उक्त सूचना का उस निर्माता को अनावृत्त करने के लिये संकेत भी दिया है।

(a) आपके पास क्या-क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन करके बताइये कि आप कौन-सा विकल्प चुनेंगे? उसके कारण भी बताइये।

(250 शब्द, 20 अंक)

As a senior officer in the Finance Ministry, you have access to some confidential and crucial information about policy decisions that the Government is about to announce. These decisions are likely to have far-reaching impact on the housing and construction industry. If the builders have access to this information beforehand, they can make huge profits. One of the builders has done a lot of quality work for the Government and is known to be close to your immediate superior, who asks you to disclose this information to the said builder.

(a) What are the options available to you?

(b) Evaluate each of these options and choose the option which you would adopt, giving reasons.

उत्तर : (a) एक वरीय अधिकारी होने के नाते जहाँ मेरे ऊपर गोपनीय सूचना को अनावृत्त न करने का दायित्व है, वहीं दूसरी तरफ सरकार के लिये अच्छा काम कर चुकी संस्था तथा वरिष्ठ अधिकारियों के संकेत के कारण सूचना दे देने का भी दबाव है। इस स्थिति में मोटे तौर पर मेरे पास दो ही विकल्प हैं, जिसके अंतर्निहित कई अन्य मुद्दे हैं-

(i) पहला विकल्प यह है कि मैं दबाव में आते हुए गोपनीय सूचनाओं को अनावृत्त कर दूँ।

(ii) दूसरा विकल्प यह है कि मैं तमाम दबावों को नज़रअंदाज़ करते हुए सूचनाओं की गोपनीयता बनाए रखूँ।

उत्तर : (b) अब अगर पहले विकल्प की बात करें तो यह ठीक है कि इससे एक ऐसी संस्था को मदद मिल जाएगी, जिसने पहले सरकार के लिये अच्छा काम किया था तथा साथ ही इससे मेरे वरिष्ठ अधिकारी भी प्रसन्न हो जाएंगे, किंतु कई कारणों से यह विकल्प अनुचित है-

- यह एक प्रकार का भ्रष्टाचार है तथा खुले तौर पर 'सर्विस रूल्स एंड कंडक्ट' का उल्लंघन है।
- बहुत संभव है कि यदि इसके विरुद्ध शिकायत होती है तो मैं पकड़ा जाऊँगा। इससे मेरी नौकरी भी खतरे में पड़ जाएगी।
- यह प्राकृतिक न्याय के भी विरुद्ध है, क्योंकि किसी एक संस्था को पूर्व सूचना दे देने से बाकी संस्थाएँ नुकसान में रहेंगी।
- साथ ही इससे एक गलत परंपरा शुरू हो जाएगी तथा मुझसे आगे भी यह उम्मीद की जाएगी कि मैं इस तरह का अवैध लाभ पहुँचाऊँ।

इसलिये पहला विकल्प अपनाने योग्य नहीं है।

दूसरे विकल्प में यद्यपि मेरे आसन्न बॉस के अप्रसन्न होने का खतरा है तथा इससे भविष्य में मुझे कुछ नुकसान भी उठाना पड़ सकता है, लेकिन इससे मेरी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों की रक्षा होती है। साथ ही इसमें यह भी डर नहीं है कि मैं किसी भ्रष्टाचार में फँस जाऊँ। छोटे-मोटे नुकसान की कीमत पर शासन की पारदर्शिता तथा सेवा क्षेत्र की नैतिकता को भंग नहीं किया जा सकता। इसलिये मैं दूसरे विकल्प का चुनाव करूँगा।

प्रश्न: आप उभरती हुई एक ऐसी सूचना तकनीकी कंपनी के कार्यकारी निदेशक हैं, जो बाज़ार में नाम कमा रही है।

कंपनी के नायक कर्ता, क्रय-विक्रय दल के प्रमुख श्री A हैं। एक वर्ष की अल्पावधि में उन्होंने कंपनी के राजस्व को दुगना करने में योगदान दिया है और कंपनी के शेयर को उच्च मूल्य वर्ग में स्थापित किया है, जिसके कारण आप उन्हें पदोन्नत करने पर विचार कर रहे हैं, परंतु आपको कई स्रोतों से महिला सहयोगियों के प्रति उनके रवैये की, विशेषकर महिलाओं पर असंयत टिप्पणियाँ करने की आदत की सूचना मिल रही है। इसके अतिरिक्त वह दल के अन्य सदस्यों, जिनमें महिलाएँ भी सम्मिलित हैं, को नियमित रूप से अभद्र SMS भी भेजते हैं।

एक दिन देर शाम श्री A के दल की एक सदस्या श्रीमती X आपके पास आती है, जो बहुत परेशान दिखती है और श्री A के सतत दुराचरण की शिकायत करती है, जो उनके प्रति अवांछनीय प्रस्ताव रखते रहते हैं और अपने कक्ष में उन्हें अनुपयुक्त रूप से स्पर्श करने की चेष्टा तक की है।

वह महिला अपना त्यागपत्र देकर कार्यालय से चली जाती है।

(a) आपके पास क्या-क्या विकल्प उपलब्ध हैं?

(b) इनमें से प्रत्येक विकल्प का मूल्यांकन कीजिये एवं जिस विकल्प को आप चुनते हैं, उसे चुनने के कारण दीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are the Executive Director of an upcoming InfoTech Company which is making a name for itself in the market.

Mr. A, who is a star performer, is heading the marketing team. In a short period of one year, he has helped in doubling the revenues as well as creating a high brand equity for the Company so much so that you are thinking of promoting him. However, you have been receiving information from many corners about his attitude towards the female colleagues; particularly his habit of making loose comments on women. In addition, he regularly sends indecent SMS's to all the team members including his female colleagues.

One day, late in the evening, Mrs. X, who is one of Mr. A's team members, comes to you visibly disturbed. She complains against the continued misconduct of Mr. A, who has been making undesirable advances towards her and has even tried to touch her inappropriately in his cabin. She tenders her resignation and leaves your office.

(a) What are the options available to you?

(b) Evaluate each of these options and choose the option you would adopt, giving reasons.

उत्तर : (a) उपर्युक्त मामले में एक तरफ कंपनी को लाभ दिलाने वाले कर्मचारी का सवाल है तो दूसरी तरफ महिला सुरक्षा तथा कार्यालय की कार्य-संस्कृति का प्रश्न है। चूँकि श्री 'A' के खिलाफ निरंतर शिकायतें आ रही हैं और एक महिलाकर्मी ने त्यागपत्र भी दे दिया है तो प्रथम दृष्टया आरोप सही लगता है। हालाँकि साथ ही एक राजस्व प्रदाता कर्मचारी पर कठोर कार्रवाई करना भी आसान नहीं होगा। इस संदर्भ में निम्नांकित विकल्प उपलब्ध हैं-

(क) मैं महिलाकर्मी का इस्तीफा स्वीकार कर लूँ तथा उनसे कहूँ कि यदि अधिक समस्या है तो कहीं और काम कर लें।

(ख) मैं इस्तीफा वापस कर दूँ तथा उनसे कहूँ कि मामले को आगे न बढ़ाएँ, इससे कंपनी की साख खराब होगी।

(ग) मैं इस्तीफा वापस कर दूँ तथा उन्हें उचित कार्रवाई का आश्वासन दूँ।

उत्तर : (b) अब उपर्युक्त विकल्पों के प्रति मेरी राय निम्नांकित है-

(i) विकल्प 'क' इस बात पर आधारित है कि किसी भी कीमत पर कंपनी को राजस्व दिलाने वाले कर्मचारी को बाहर नहीं किया जाएगा। यह न केवल अनैतिक विकल्प है, बल्कि श्री 'A' के अपराध को छिपाने वाला भी है। इससे अन्य महिलाकर्मियों में गलत संदेश जाएगा तथा कार्यालय की कार्य-संस्कृति विकृत हो जाएगी। अत: यह विकल्प अपनाने योग्य नहीं है।

(ii) दूसरा विकल्प यद्यपि महिलाकर्मी का त्यागपत्र वापस कर देता है, किंतु यह बात आगे न बढ़ाने की बात कहकर उचित समाधान की बजाय मामले को दबाना चाहता है। साथ ही यदि महिला पुलिस में शिकायत करती है तो कंपनी की साख और भी खराब होगी। फिर कोई कार्रवाई न करने में श्री 'A' तथा ऐसे अन्य कर्मियों का दुस्साहस बढ़ेगा तथा भविष्य में वे और अधिक अभद्रता कर सकते हैं। यह स्थिति और कठिन होगी। अत: दूसरा विकल्प भी अपनाने लायक नहीं है।

(iii) विकल्प 'ग' सबसे संतुलित है। इस विकल्प को अपनाते हुए मैं निम्नांकित रूप से उसे पूरा करूँगा-

सबसे पहले मैं महिलाकर्मी को विश्वास दिलाऊँगा कि उनके साथ कोई अन्याय नहीं होगा। मैं उनसे कहूँगा कि यदि वह चाहें तो लिखित शिकायत करें तथा इस संदर्भ में विशाखा निर्देशों के तहत जाँच समिति बैठा दी जाए अथवा अगर वह उस स्तर तक नहीं जाना चाहती हों तथा मुझसे यह उम्मीद करती हों कि मैं उचित कार्रवाई करूँ तो मैं ऐसा करूँगा। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कार्रवाई उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप हो।

यदि वह लिखित शिकायत करती हैं तो जाँच समिति बैठा दूँगा अन्यथा व्यक्तिगत स्तर से मामले को सुलझाने का प्रयास करूँगा।

सबसे पहले 'A' से बातचीत कर समस्या की वैधता का अनुमान करूँगा। यदि यह सच होता है तो 'A' को समझाऊँगा कि उसकी यह हरकत उसके पूरे भविष्य को समाप्त कर सकती है। उसके मन में यह भी डर पैदा करूँगा कि उसके खिलाफ लिखित शिकायत हुई है तथा जाँच समिति बैठ रही है।

साथ ही उसे मीडिया का भी भय दिखाऊँगा कि अगर बात वहाँ तक पहुँच गई तो वह गंभीर संकट में फँस सकता है।

पर्याप्त दबाव बनाने के बाद में उससे लिखित माफीनामा लूँगा, जिसमें वह अपनी गलती स्वीकार करे तथा भविष्य में ऐसा न करने का वादा करे। यह माफीनामा उस महिलाकर्मी के प्रति संबोधित होगा तथा मैं महिलाकर्मी से कहूँगा कि यदि वह संतुष्ट हैं तो लिखित रूप से इसे स्वीकार करें। मुझे उम्मीद है कि इस प्रकार समस्या का उचित समाधान किया जा सकेगा।

प्रश्न: आदिवासी, समाज की मुख्य धारा से अलग रहने वाले लोग हैं, जो अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं रहन-सहन के लिये जाने जाते हैं। ये हमेशा से आकर्षण के केंद्र रहे हैं। न केवल देशी बल्कि विदेशी पर्यटक भी इनकी संस्कृति को जानने के लिये उत्सुक रहते हैं। सरकार द्वारा कानून बनाकर इनकी स्वायत्तता को सुनिश्चित किया गया है। इस कानून के अनुसार, कोई भी व्यक्ति आदिवासियों के वासस्थल पर नहीं जा सकता है, किंतु स्थानीय मछुआरों द्वारा अवैध तरीके से विदेशियों से अधिक पैसा लेकर उन्हें आदिवासियों के क्षेत्रों में पहुँचाया जाता है। कुछ धर्म प्रचारक भी वहाँ अपने धर्म का प्रचार करने का प्रयास कर रहे हैं। यह मामला प्रकाश में तब आया, जब एक विदेशी व्यक्ति की आदिवासियों द्वारा हत्या कर दी गई, जिसने अवैध तरीके से आदिवासियों के इलाके में प्रवेश किया था।

इस संदर्भ में सरकार द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए एक टीम गठित की गई है। आदिवासी मामलों के जानकार होने के नाते आपको उस टीम का नेतृत्व दिया गया है, जिसे कानून के उल्लंघन की जाँच एवं इन अवैध गतिविधियों में संलिप्त लोगों के प्रति अनुशासनात्मक कार्रवाई करनी है। इस समस्या के संदर्भ में उठाए गए तात्कालिक और दीर्घकालिक कदमों की चर्चा कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Tribals are people living separately from mainstream society, who are known for their distinct culture and lifestyle. They are always the centre of attraction. Not only native but also foreign tourists are eager to know about their culture. Their autonomy has been ensured by the Government by enacting a law. According to this law, nobody can go to the homestead of the tribals. But foreign tourists are illegally charged exorbitantly and are taken to tribal areas by the local fishermen. Also, some religious preachers are trying to propagate their religion. The matter came to light when a foreigner, who had illegally entered the tribal area, was murdered by tribals.

A team has been formed through quick action of the government in this connection. As an expert in tribal affairs, you have been given the leadership of the team, which has to investigate violations of law and recommend disciplinary action against those indulging in these illegal activities. Suggest the immediate and long-term steps that can be taken with respect to this problem.

उत्तर: इस संबंध में कुछ तात्कालिक कदम उठाए जा सकते हैं, जो निम्नलिखित हैं:

- अवैध 'आदिवासी पर्यटन' को तत्काल प्रभाव से रोका जाना चाहिये। इस तरह के आंदोलन को बढ़ावा देने वाले किसी भी व्यक्ति या संस्था से पूरी विधिक शक्ति के साथ निपटा जाएगा।
- पर्यटन के मामलों में सभी खामियों (सुरक्षा खामियों, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, निरीक्षण का अभाव, आदि) को दूर किया जाना चाहिये।
- पर्यटन की आड़ में किसी भी 'इंजीलवाद' (Evangelism-अर्थात् ईसाई मत के प्रचार) पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिये। पर्यटन एवं वन विभाग को ज़रूरत पड़ने पर नियमों को अद्यतित (Update) करने एवं सभी पर्यटक एजेंसियों को इसकी सूचना देने के लिये कहा जाएगा।
- मारे गए विदेशी नागरिक के संदर्भ में विदेशी दूतावास/उच्चायोग सहित सभी हितधारकों को शामिल करते हुए इस मामले की पूरी जाँच होनी चाहिये। पैसे लेकर पर्यटकों को अवैध रूप से लाने और ले जाने वाले मछुआरों को गिरफ्तार किया जाना चाहिये तथा उचित जाँच के बाद मुकदमा चलाया जाना चाहिये।
- लीकेज जोन (वह क्षेत्र जो उल्लंघनकर्त्ताओं द्वारा उपयोग में लाया जाता है) को सुरक्षित और किसी भी बाहरी गतिविधि के लिये अवरुद्ध किया जाना चाहिये ताकि संवेदनशील जनजातियों को ऐसा अभयारण्य प्रदान दिया सके जिसके वे कानूनी तौर पर हकदार हैं।

दीर्घकालीन उपाय

- यह सुनिश्चित करने के लिये नीतिगत कदम उठाए जाने चाहिये कि आदिम आदिवासी समुदायों को देखने के आकर्षण में बाहरी लोग किसी प्रकार का कोई अतिक्रमण न करें।
- सभी हितधारकों [नृविज्ञानियों (Anthropologists) और व्याख्याकारों (Interpreters) सहित, जिन्होंने अतीत में इन आदिवासियों के साथ सफलतापूर्वक संवाद किया है] को नीति निर्माण में शामिल किया जाना चाहिये।
- गृह मंत्रालय द्वारा ऐसे आदिवासी क्षेत्रों में पर्यटकों के दौरे के लिये पुन: 'प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट' लागू किया जाना चाहिये।
- आदिवासी पर्यटन को बढ़ावा देने के उपायों को 'देखो, छुओ मत' (Hands off, Eyes on) नीति के साथ संतुलित किया जाना चाहिये।

प्रश्न: लोकसेवकों का यह कर्त्तव्य है कि लोगों की सेवा ईमानदारी, सत्यनिष्ठा एवं ज़िम्मेदारी के साथ करें। लोकसेवकों में इन्हीं मूल्यों को अंतर्निविष्ट करने के लिये सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम में भी नीतिशास्त्र विषय को शामिल किया गया है। इसके साथ ही प्रशिक्षण के दौरान अतिरिक्त गतिविधियों के माध्यम से सिविल सेवकों को इसके लिये तैयार किया जाता है। इसके बावजूद सेवा में शामिल होने के पश्चात् कई लोकसेवकों को नैतिक पथ से विचलित होकर अवैध एवं भ्रष्ट व्यवहार में संलिप्त होते हुए देखा गया है। लोकसेवकों में बढ़ती हुई इस प्रवृत्ति को रोकने के लिये कार्मिक मंत्रालय द्वारा एक बोर्ड का गठन किया गया है तथा एक वरिष्ठ लोकसेवक होने के नाते आपको उसका चेयरमैन बनाया गया है। इसी दौरान जाँच एजेंसियों द्वारा एक लोकसेवक के अवैध भू-आवंटन से संबंधित भ्रष्टाचार के मामले में संलिप्त होने की पुष्टि की गई। लोकसेवा की आड़ में करोड़ों की व्यक्तिगत संपत्ति का संग्रह करना लोकसेवकों के नैतिक पतन का परिचायक है। लोकसेवकों में उभरती हुई इस प्रवृत्ति को रोकने के लिये सरकार द्वारा क्या प्रयास किये गए हैं? इस समस्या के संदर्भ में आप क्या उपाय सुझाएंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

It is the duty of the public servants to serve the people with honesty, integrity and responsibility. Ethics has also been incorporated in the syllabus of civil services examination to inculcate these values in public servants. Also, civil servants are prepared for the same through additional activities during training. Despite this, many public servants after joining the service have been found deviating from the moral path and indulging in illicit and corrupt practices. A board has been constituted by the Ministry of personnel to check this growing trend in public servants. As a senior public servant, you have been made its Chairman. Meanwhile, a public servant was confirmed to be involved in the corruption related to illegal land allotment by the investigating agencies. The embezzlement of millions in personal property under the guise of public service is a reflection of the moral decay of public servants.

What efforts have been made by the Government to check this rising trend in public servants? What measures will you suggest in the context of this problem?

उत्तर: प्रशासनिक भ्रष्टाचार भारतीय नौकरशाही की एक प्रमुख समस्या और सुशासन के मार्ग में बड़ी बाधा है।

सरकार के प्रयास

- कानूनी उपाय जैसे- भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, आचार संहिता आदि और निगरानी संस्थाएँ जैसे- लोकपाल एवं लोकायुक्त, कैग, सी.बी.आई., सी.वी.सी. तथा राज्य सतर्कता निदेशालय पहले से मौजूद हैं।
- स्वतंत्रता के पश्चात् लोक सेवाओं में सुधार करने के उद्देश्य से कई समितियों एवं आयोगों का गठन किया गया है जिनमें- पी.सी. होना समिति, वाई.के. अलघ समिति, प्रथम प्रशासनिक सुधार आयोग, द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग आदि प्रमुख हैं। वर्ष 2013 में लोक सेवा की परीक्षा में नैतिकता पर एक प्रश्न-पत्र को भी शामिल किया गया था।
- कैडर आवंटन में फाउंडेशन कोर्स के दौरान प्रोबेशनरों के प्रदर्शन को महत्त्व देने का प्रस्ताव भी है।

सुझाए गए उपाय:

- परीक्षा में नीतिशास्त्र एवं अन्य प्रश्न-पत्रों की उपयोगिता और अकादमी के फाउंडेशन प्रशिक्षण का व्यापक अध्ययन किया जाना चाहिये ताकि यह पता लगाया जा सके कि परीक्षा प्रणाली वास्तव में सही उम्मीदवारों की भर्ती और चयन में मददगार है अथवा नहीं।

- किसी भ्रष्ट अधिकारी के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिये सरकार की मंज़ूरी की आवश्यकता अक्सर लोक सेवकों को दंडित करने के प्रयासों को विफल कर देती है। मंज़ूरी की इस आवश्यकता का सरकार द्वारा मूल्यांकन किया जाना चाहिये। जाँच एजेंसियों द्वारा दंडात्मक कार्रवाई करने और और मंज़ूरी देने की प्रक्रिया में तेज़ी लाने से इन समस्याओं का तेज़ी से निवारण हो सकेगा।
- लोक सेवाओं में भ्रष्टाचार की जड़ें काफी गहरी हैं। राजनेताओं और लोक सेवकों के बीच एक अस्वाभाविक सहानुभूति रही है। लोक सेवाओं की सबसे बड़ी समस्या स्थापित नियमों और प्रक्रियाओं का पालन करने में लोक सेवकों में साहस की कमी से उत्पन्न होती है। नौकरशाहों के मनोबल को प्रभावित करने वाले मूल कारणों जैसे- असामयिक और अन्यायपूर्ण स्थानांतरण को संबोधित किये जाने की आवश्यकता है। सरकार को नौकरशाहों को राजनीतिक मध्यस्थता से बचाने के लिये जवाबदेही को बढ़ावा देने हेतु सुरक्षा उपायों को अपनाना चाहिये।
- करियर के एक निश्चित समय में आगे की सेवा के लिये अयोग्य समझे जाने वाले अधिकारियों के लिये अनिवार्य सेवानिवृति के संदर्भ में एक समान नीति होनी चाहिये।

प्रश्न: आप एक ईमानदार एवं कर्त्तव्यनिष्ठ लोकसेवक हैं। ज़िलाधिकारी के तौर पर आपकी नियुक्ति एक ऐसे क्षेत्र में हुई है जो धार्मिक मामले में अत्यंत संवेदनशील है। उस ज़िले में एक अत्यंत प्राचीन धार्मिक स्थल अवस्थित है, जहाँ एक धार्मिक मान्यता के कारण कम आयु वर्ग की महिलाएँ आज तक प्रवेश नहीं पा सकी हैं। यह निःसंदेह एक नागरिक के तौर पर महिलाओं को संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। महिलाओं के हित में कार्य करने वाली एक संस्था ने देश के सर्वोच्च न्यायालय में उक्त भेदभाव को समाप्त करने से संबंधित याचिका दायर की, जिस पर सर्वोच्च न्यायालय ने महिलाओं के पक्ष में निर्णय देते हुए धर्मस्थल पर उनके प्रवेश निषेध को समाप्त करने हेतु सरकार को आदेश दिया है। ज़िला स्तर पर इसका अनुपालन कराने की ज़िम्मेदारी आपको दी गई है। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का कुछ धार्मिक समूहों– श्राइन बोर्ड (Shrine Board) के साथ-साथ आम लोगों द्वारा विरोध किया जा रहा है, जिन्हें कुछ राजनीतिक दलों का सहयोग भी प्राप्त है। उनका तर्क है कि संविधान द्वारा धार्मिक मामलों में उन्हें स्वतंत्रता प्रदान की गई है। ऐसे में कुछ महिलाएँ जो धर्मस्थल में प्रवेश का प्रयास कर रही थीं, उनको अन्य भक्तों द्वारा रोक दिया गया एवं उनके साथ बदसलूकी भी की गई और यह घोषित कर दिया गया कि जो भी महिला ऐसा करने का प्रयास करेगी, उसका खामियाज़ा उसे भुगतना होगा। ऐसे में उन महिलाओं की सुरक्षा का मुद्दा उठता है।

(a) इस प्रकरण में अंतर्निहित नैतिक मुद्दों को स्पष्ट कीजिये।

(b) इस स्थिति में आपके समक्ष उपस्थित विकल्पों को बताते हुए उनके गुण-दोषों की चर्चा कीजिये और बताइये कि आप किस विकल्प का चयन करेंगे और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are an honest and conscientious public servant. Your appointment as a district officer has been in a region that is highly sensitive to religious matters. A very ancient religious place is located in the district where women in the lower age group have not been able to enter till today due to religious beliefs. It is, of course, a violation of the fundamental rights provided by the Constitution to women as citizens. An institution working for women's welfare filed a petition in the Supreme Court of the country to end the discrimination on which the Court, by giving a judgment in favour of women, has ordered the government to end the prohibition of admission to the shrine. You have been given the responsibility of complying with the order at the district level. The Supreme Court judgement is being opposed by some religious groups, shrine board as well as by the common people who are also being encouraged by some political parties. Their argument is that they have got freedom by the Constitution in religious matters. Some women who were trying to enter the shrine were stopped and mistreated by other devotees and it was declared that women who tried to do so will have to suffer the consequences. In this situation, the issue of safety of such women has arisen.

(a) Explain the underlying ethical issues in this episode.

(b) In this case, discuss the options available to you mentioning the merits and demerits of each option. What option will you choose and why?

उत्तर: (a) इस घटनाक्रम में निम्नलिखित नैतिक मुद्दे शामिल हैं: इस मामले से जुड़े अन्य हितधारकों की भावनाओं को आहत किये बिना महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करना; नागरिकों के बीच विभिन्न आधारों पर होने वाले भेदभाव का अंत करना, चाहे वे मासिक धर्म की उम्र के आधार पर हों या लिंग के आधार पर; संविधान के अनुसार नागरिकों के साथ व्यवहार में समानता और जनमत एवं धार्मिक मान्यता से जुड़े मुद्दे।

इस मामले से संबंधित कुछ अन्य नैतिक मुद्दे हैं – कानून व्यवस्था बनाम वास्तविक जीवन की भयावह परिस्थितियों में उनका अनुप्रयोग; महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा बनाम उन पारंपरिक रीति-रिवाज़ों का अनुपालन जो महिलाओं और लड़कियों को कमज़ोर बनाते हैं; सामाजिक अन्याय से लड़ने की आवश्यकता बनाम सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पतनोन्मुख संस्कृति; मानवाधिकारों की स्वीकृति बनाम सामाजिक अन्याय की परवशता (पराधीनता); और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों की अवहेलना करने वाली भीड़ के समक्ष महिलाओं की सुरक्षा एवं सार्वजनिक पद की गरिमा को बनाए रखना।

उत्तर: (b) ज़िलाधिकारी के सामने उपलब्ध विकल्प हैं-

(1) सबसे आसान रास्ता कानून व्यवस्था को बनाए रखने के नाम पर जनता के दबाव के आगे झुक जाना है जिससे व्यक्ति राजनीतिक रूप से सही और राजनेताओं एवं जनता की नज़र में अच्छा बना रह सकता है। दूसरी युक्ति यह हो सकती है कि पुनर्विचार याचिका पर आने वाले निर्णय या मंदिर के बंद हो जाने के समय का इंतज़ार किया जाए और उसके बाद आदेशों का सख्ती से क्रियान्वयन किया जाए।

इस विकल्प की विशेषता यह है कि यह एक लोकलुभावन विकल्प है जो उस क्षेत्र के सामाजिक सद्भाव को बनाए रखता है। यह जनता के उस तबके को खुश रखेगा जो इस आदेश के विरुद्ध है। इस विकल्प में यह दोष है कि मासिक धर्म/रजोधर्म की आयु वाली महिलाएँ एवं लड़कियों को न्याय नहीं मिलेगा और विधि के शासन को सुनिश्चित करने वाले ज़िलाधिकारी का कार्य नैतिकता एवं विधि के खिलाफ होगा।

(2) दूसरा विकल्प विधि के शासन को कायम रखने का पूर्णत: सही तरीका है जिसमें न्यायालय के आदेश को शब्दश: एवं उसी भावना के साथ लागू किया जाए ताकि लड़कियों और महिलाओं को न्याय की प्राप्त हो सके।

- इस विकल्प की विशेषता यह है कि महिलाओं को सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार अपना अधिकार प्राप्त होगा और संविधान में संस्थापित समानता के सिद्धांत एवं कानून की पवित्रता के मामले में जनता को एक सीख मिलेगी। इस विकल्प की बुराई यह है कि इससे जनता नाराज़ हो सकती है और क्षेत्र में सामाजिक अशांति फैल सकती है।
- मैं विकल्प (2) का चयन करूँगा/करुँगी और कानून के शासन को कायम रखूँगा/रखूँगी क्योंकि:
- मैं एक लोक सेवक हूँ जिसे सत्यतापूर्वक विधि के अनुसार और नैतिकता के साथ कार्य करना चाहिये। किसी कर्तव्यनिष्ठ लोकसेवक के लिये विकल्प (1) कभी एक विकल्प नहीं हो सकता है।
- मुझसे अपेक्षित है कि मैं ज़िले में जन कल्याण के लिये कार्य करूँ जिसमें महिला सशक्तीकरण और सुरक्षा भी सम्मिलित है।
- यदि भविष्य में आदेश का पुनरीक्षण होता है तो मैं उसके अनुसार कार्य करूँगा/करुँगी। लेकिन इस समय न्यायालय का आदेश ही मेरी प्राथमिकता है और उसका अनुपालन करना कानूनी और नैतिक- दोनों प्रकार से सही है।

प्रश्न: खेल मानव जीवन में सिर्फ मनोरंजन के साधन न होकर आत्म-नियंत्रण, सद्गुण, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा तथा सामाजिक शिष्टता के प्रभावी स्रोत भी होते हैं, किंतु खेल 'निष्पक्ष व्यवहार' तथा 'समान अवसर' प्रदान करने वाली भावना को तभी आगे बढ़ा सकते हैं जब खेलों में खेल नैतिकता से जुड़े मूल्यों को संवर्द्धित किया जाए तथा खेल से जुड़े लोगों द्वारा इन मूल्यों को आत्मसात् किया जाए। हाल में मीडिया में कुछ ऐसे प्रकरण सामने आए हैं, जिनमें खेल से जुड़े कुछ प्रमुख व्यक्तित्वों द्वारा विवादित टिप्पणी करना न केवल खेल भावना एवं खेल नैतिकता का अपमान है बल्कि सामाजिक दायित्वों की भी उपेक्षा है।

आप एक खेल विनियामक संस्था के प्रमुख हैं तथा आपको उपर्युक्त प्रकरण को ध्यान में रखते हुए खेल नैतिकता में आई इस तरह की गिरावट को दूर करने के लिये आवश्यक सुझाव देने के लिये कहा गया है। इन परिस्थितियों में आप क्या सुझाव देंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Sports are also an effective source of self-control, virtue, tolerance, integrity and social decency and not just means of recreation in human life. But sports can promote the spirit of 'fair behaviour ' and 'equal opportunities' only if games incorporate the moral values and people associated with sports inculcate these values. Recently, there has been some mention in the media where certain prominent sports personalities are giving controversial comments. It is not only insulting to the sporting spirit and sports ethics but also disregards social obligations.

You are the head of a sports regulatory body and you have been asked to give necessary suggestions to rectify decline in sports ethics keeping in view the above mentioned case. What would you suggest in these circumstances?

उत्तर: मैं, खेल नियामक संस्था के प्रमुख के रूप में खेल नैतिकता में गिरावट को दूर करने के लिये निम्नलिखित सुझाव दूँगा:

- मैं देश में सभी खेलों के संदर्भ में एक व्यापक 'राष्ट्रीय खेल आचार संहिता' की सिफारिश करूँगा, खिलाड़ियों और सभी संबद्ध हितधारकों (व्यक्तिगत एवं संस्थागत) को इस आचार संहिता के अनुरूप व्यवहार करना होगा। यह आचार संहिता तैयार करते समय वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर की विभिन्न खेल संहिताओं पर ध्यान दिया जाएगा। यह सभी खेल हितधारकों द्वारा अनुसरण की जाने वाली प्रस्तावना के रूप में कार्य करेगी।
- खेल आचार संहिता को लागू करने के लिये एक राष्ट्रीय खेल आचार आयोग का गठन किया जाना चाहिये।
- खेल-संबंधी संगठनों (खेल संघों और शासकीय निकायों, खेल प्रायोजकों, शारीरिक शिक्षा संगठनों, प्रशिक्षण एजेंसियों एवं संस्थानों सहित) को खेल नैतिकता तथा मूल्यों पर दिशा-निर्देश जारी करने चाहिये ताकि खेल भावना, ज़िम्मेदारी, देखभाल, सम्मान और निष्पक्षता को बढ़ावा दिया जा सके।
- सरकार को शौकिया और आराम के खेलों (Amateur and Leisure Sports), जैसे- ट्रेकिंग, पर्वतारोहण, युवा छात्रावास आदि के वित्तपोषण में ईमानदारी एवं नैतिकता के दृष्टिकोण से सुधार करना चाहिये। उन संगठनों और व्यक्तियों को प्रोत्साहन एवं समर्थन देना चाहिये जिन्होंने अपनी खेल-संबंधी गतिविधियों में नैतिक सिद्धांतों का प्रदर्शन किया है तथा उन लोगों को हतोत्साहित करना चाहिये जो खेल नैतिकता का उल्लंघन करते हैं।
- स्कूल पाठ्यक्रम में खेल नैतिकता को बढ़ावा देने के लिये शारीरिक शिक्षा, खेल शिक्षकों और प्रशिक्षकों के प्रोत्साहन एवं सशक्तीकरण के उपाय किये जाने चाहिये।
- खेलों के व्यावसायीकरण पर अंकुश लगाने के लिये प्रयास किये जाने चाहिये, इसके कारण देश में खेलों का माहौल खराब हुआ है।

- खेल में नस्लवाद, ज़ेनोफोबिया (Xenophobia - विदेशियों के प्रति नापसंदगी या दुर्भावना), हिंसा, लैंगिक रूढ़िवादिता, यौन उत्पीड़न, भ्रष्टाचार, बदमाशी (Bullying), मैच फिक्सिंग, आयु और लिंग के संदर्भ में गलत सूचना देना, डोपिंग एवं होमोफोबिया की रोकथाम के लिये एक तंत्र विकसित किया जाना चाहिये।
- खेल में युवाओं की भागीदारी से संबंधित जटिल मुद्दों के बारे में हमारी समझ को बेहतर बनाने के लिये सरकार द्वारा शोध कार्यों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। खेल संहिता और नियमों को तैयार करने के दौरान, ऊपर दिये गए दुरुपयोग के विशेष मामले को एक केस अध्ययन के रूप में शामिल किया जाना चाहिये।

प्रश्न: भारत के पूर्वोत्तर के राज्यों में अवैध प्रवासन एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। इस मुद्दे के समाधान के लिये वर्तमान सरकार असम जैसे राज्य में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर को अद्यतन बनाने का प्रयास कर रही है। इस प्रयास से अवैध प्रवासियों की पहचान हो सकेगी तथा वैध नागरिकों के लिये संसाधनों को सुरक्षित किया जा सकेगा और आंतरिक सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं को भी कम किया जा सकेगा, किंतु राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर के क्रियान्वयन के साथ कई नैतिक एवं विधिक चिंताएँ भी उभरती हैं तथा यह रजिस्टर प्रवासन की समस्या के एक सीमित पक्ष को ही संबोधित करने में सक्षम हैं। आपको राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर से जुड़ी समस्याओं तथा अवैध प्रवासन की चुनौती से निपटने हेतु सलाह देने वाली समिति का अध्यक्ष बनाया गया है तथा आपसे यह अपेक्षा है कि आप अपने सुझावों में समस्या से जुड़े विषयों को समग्र रूप से संबोधित कीजिये।

उपर्युक्त परिस्थितियों में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर के क्रियान्वयन से जुड़ी नैतिक चिंताओं को बताते हुए अपने द्वारा समस्या के समाधान हेतु प्रस्तुत किये जाने वाले नवीन उपायों की चर्चा कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

Illegal migration has been a sensitive issue in the north-eastern states of India. To address this issue, the present Government is making efforts to update the National Register of Citizens (NRC) in a state like Assam. This effort will enable identification of illegal migrants and secure resources for legitimate citizens and also address concerns related to internal security. But with the implementation of the National Register of Citizens, many ethical and legal concerns are emerging and this register is able to address only a limited aspect of the migration problem. You have been appointed as the Chairman of the Committee for dealing with problems related to the NRC and the challenge of illegal migration, and it is expected that in your suggestions, you should address issues related to the problem in totality.

In the above circumstances, mention the ethical concerns associated with the implementation of the National Register of Citizens and discuss the new measures that are proposed to be put in place by you to address the problem.

उत्तर:

नैतिक चिंताएँ

एन.आर.सी. के कार्यान्वयन से संबंधित कुछ नैतिक चिंताएँ एवं दुविधाएँ निम्नलिखित हैं:

- समावेशिता (जैसा कि 'वसुधैव कुटुंबकम्' का तात्पर्य है) और सभी के लिये खुलापन बनाम अपवर्जन की नीति।
- मानवीय सहायता की भारतीय नीति बनाम संस्कृति का संरक्षण और मूल निवासियों के अधिकार।
- एक तरफ विद्यमान व्यवस्था को जारी रखने हेतु नैतिक और न्यायसंगत चिंताएँ व्याप्त हैं, ताकि दशकों से निवास कर रहे लोग विस्थापित न हों तो, वहीं दूसरी तरफ अवैध प्रवासियों द्वारा भूमि एवं संसाधनों पर अवैध दावों की जाँच करने की बाध्यता है।
- अपनी नागरिकता सिद्ध करने के लिये मूल निवासियों के पास दस्तावेज़ों की कमी की संभावना है। इस स्थिति में ऐसे दस्तावेज़ों की अनुपस्थिति में देश के वास्तविक नागरिकों के साथ अनुचित उत्पीड़न से संबंधित चिंताएँ भी हैं।

समस्या के समाधान हेतु प्रस्तावित उपाय निम्नलिखित हैं:

- एन.आर.सी. मसौदे पर दावे एवं आपत्तियों का स्वागत किया जाना चाहिये तथा उन पर उचित ज़ोर दिया जाना चाहिये। इस प्रक्रिया को बड़े पैमाने पर लागू किया जाना चाहिये।
- एक भी व्यक्ति के साथ बिना उचित सुनवाई के अन्यायपूर्ण बर्ताव नहीं किया जाना चाहिये।
- एक निश्चित समुदाय के विरुद्ध भेदभाव के आरोप सामने आए हैं, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इस स्थिति में सरकारी तंत्र में विश्वास सुनिश्चित करने के लिये एक पारदर्शी प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिये।
- राज्य में सीमा पुलिस (जिन्हें संदिग्ध नागरिकों व अवैध प्रवासियों की पहचान करने का कार्य सौंपा गया था) के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने संबंधित व्यक्तियों से मिले बगैर तथा उनकी राय लिये बिना विदेशी न्यायाधिकरण को जाँच रिपोर्ट सौंपी थी। इसकी जाँच की जानी चाहिये तथा निर्धारण के शेष चरण व आगे की कार्रवाई के लिये विधि की उचित प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिये।
- सुनवाई के लिये आने वाले लोगों को कोई रसीद या लिखित पत्र या रिकॉर्ड में कुछ भी नहीं दिया जाता है। इसमें परिवर्तन होना चाहिये, क्योंकि इससे लोगों के उत्पीड़न की संभावना रहती है।
- जो शिकायतकर्त्ता सुनवाई में विफल हो जाते हैं, उन्हें दंड देना चाहिये और काली सूची में शामिल किया जाना चाहिये।
- जनता द्वारा किये गए दावों की सुनवाई के कार्यक्रम को सख्त तरीके से लागू किया जाना चाहिये, न कि जल्दी बाज़ी में।
- दावों और आपत्तियों के परिणाम से खुश नहीं होने की स्थिति में लोगों को विदेशी न्यायाधिकरण के समक्ष अपील दायर करने के लिये एक सरल प्रक्रिया प्रदान की जानी चाहिये।
- घोषित अवैध प्रवासियों के मामले में मानवीय दृष्टिकोण का पालन किया जाना चाहिये और राज्य अधिकारियों को उनकी मूल आवश्यकता की आपूर्ति तथा सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिये, जब तक कि सरकार द्वारा आगे की कार्रवाई का निर्णय नहीं लिया जाता है।

एन.आर.सी. वास्तविक नागरिकों और अवैध प्रवासियों की पहचान करने के लिये एक न्यायसंगत प्रक्रिया है, परंतु इसके क्रियान्वयन में विभिन्न कमियाँ उभरकर आती हैं, इसलिये हमें इस बात का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है कि कोई भी नागरिक इस प्रक्रिया से न छूटने पाए। स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के रुख को ध्यान में रखते हुए इसमें एक मानवीय व्यवहार की आवश्यकता है।

प्रश्न: भारत में कभी 'रैट होल माइनिंग' तो कभी 'ओपन कास्ट माइनिंग' से जुड़ी बड़ी खनन आपदाएँ होती रही हैं। इन आपदाओं के पीछे भारत में होने वाला अवैज्ञानिक, अवैध तथा असुरक्षित खनन मुख्य कारण है। जब भी ऐसी आपदाएँ देश में चर्चा का केंद्र बनती हैं तो पदासीन सरकारें तथा प्रशासन तात्कालिक स्तर पर इसका समाधान भी कर देते हैं, किंतु इस तरह की आपदाओं को रोकने हेतु सतत् समाधान के प्रति उदासीनता दिखाई पड़ती है, जिससे बार-बार ये आपदाएँ घटित होती हैं। ऐसी आपदाओं के बाद एक प्रशासकीय प्रवृत्ति यह भी देखी जाती है कि इसके लिये मुख्यतः सामान्य मानवीय मूल्यों को ही दोषी ठहराया जाता है।

भारत में असुरक्षित खनन गतिविधियों को सरकार व प्रशासन की मौन सहमति तथा खनिकों (Miners) का इस ओर आकर्षण मुख्यतः राजस्व एवं रोजगार की प्राप्ति से जुड़ा हुआ है, किंतु इस प्रकार की गतिविधियाँ जनधन की व्यापक हानि तथा पर्यावरणीय अवनति को भी उत्पन्न करती हैं। अतः ऐसी आपदाओं को घटित होने से रोकने तथा घटित होने के पश्चात् इनका सामना करने की समग्र तैयारी होनी चाहिये।

(a) उपरोक्त प्रकरण में अंतर्निहित नैतिक मुद्दों को उद्घाटित कीजिये।

(b) एक सक्षम अधिकारी के रूप में आप कुछ ऐसी व्यावहारिक रणनीतियों की चर्चा कीजिये, जिससे ऐसी आपदाओं को रोका जा सके एवं इनका सामना किया जा सके। (250 शब्द, 20 अंक)

From 'rat hole mining' to 'open cast mining', India has witnessed major mining disasters. The main reason behind these calamities is the unscientific, illegal and unsafe mining in India. As and when such disasters are in the news, the incumbent governments and administration address it at the immediate level. But there is indifference to providing sustainable solutions which frequently causes such disasters. After such calamities, an administrative tendency has also been observed which puts the blame on victims.

The tacit consensus of the government and administration to unsafe mining activities in India and the attraction of miners are mainly linked to revenue and employment realization. But such activities also lead to widespread loss to public exchequer and environmental degradation. Therefore, there should be a holistic preparedness to prevent such calamities and to comprehensively cope if they occur.

(a) Identify the underlying ethical issues in the above case.

(b) As a competent authority, discuss some of the feasible strategies to prevent and combat such calamities.

उत्तर: हाल ही में पूर्वोत्तर राज्य मेघालय के जयंतिया हिल्स ज़िले में एक अवैध 'रैट-होल' कोयला खान में पंद्रह श्रमिकों ने प्रवेश किया। इसके बाद खान निकटवर्ती नदी के जल से भर गई, जिससे सारे श्रमिक खान के अंदर ही फँस गए। इस मानव निर्मित आपदा से एक भी श्रमिक सुरक्षित नहीं बच पाया।

उत्तर: (a) उपरोक्त मामले में कई नैतिक मुद्दे शामिल हैं:

- **पारिस्थितिक मुद्दे:** विभिन्न पर्यावरण संगठनों द्वारा पहाड़ी क्षेत्रों में असुरक्षित खनन के मुद्दों को उठाने के बावजूद इस मुद्दे को हल करने के लिये कोई वास्तविक प्रयास नहीं किये गए हैं।
- **मानव तस्करी:** रैट-होल खनन ने कई राज्यों के अप्रवासियों और यहाँ तक कि नेपाल और बांग्लादेश से भी बाल तस्करी को बढ़ावा दिया है।
- **बाल मज़दूरी:** रैट-होल खनन में शामिल अधिकांश श्रमिक बच्चे हैं। अपनी छोटी कद-काठी के कारण वे इस कार्य के लिये उपयुक्त हैं, क्योंकि ये लोग खान की छोटी सुरंगों में आसानी से प्रवेश करने में सक्षम होते हैं।
- **भ्रष्ट अधिकारी:** ऐसे राज्य जहाँ ओपन कास्ट खनन या रैट होल खनन होते हैं, वहाँ अक्सर पुलिस अधिकारी खदान मालिकों से समझौता कर लेते हैं। इस समझौते से सभी लोग लाभान्वित होते हैं समस्या तभी सामने आती है, जब मासूम श्रमिकों की मौत होती है।

उत्तर: (b) योग्य पदाधिकारी के रूप में ऐसी खनन आपदाओं को रोकने तथा उनसे निपटने के लिये निम्नलिखित रणनीतिक कदम उठाए जा सकते हैं:

- नई खनिज नीति द्वारा टिकाऊ खनन को व्यापक रूप से लागू किया जाना चाहिये, ताकि श्रमिकों के स्वास्थ्य को न्यूनतम क्षति पहुँचे, साथ ही खदानों के सुरक्षित संचालन को भी सुनिश्चित किया जा सके।
- खनन आपदा से संबंधित सभी मुद्दों, विशेषत: खनिकों-राजनेताओं-प्रशासकों के कुत्सित गठजोड़, जो अवैध खनन में मुख्य भूमिका निभाते हैं, की जाँच के लिये स्वतंत्र समिति की नियुक्ति की जानी चाहिये।
- सख्त निगरानी के माध्यम से खनन माफिया की गतिविधियों को नियंत्रित किया जाना चाहिये।
- रात के समय खदान निकास स्थल पर सुरक्षाकर्मियों एवं सशस्त्र गार्ड सहित सुरक्षा सैन्य-दल द्वारा नियमित छापे/निरीक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये।
- बेरोज़गार लोगों को खतरनाक खनन उद्योग की ओर जाने से रोकने के लिये वैकल्पिक रोज़गार के अवसर प्रदान किये जाने चाहिये।

- जहाँ भी संभव हो अवैध खनन द्वारा निर्मित रैट-होल को पत्थर व मलबे से भरा जाना चाहिये। इन क्षेत्रों तक पहुँच और अवैध गतिविधियों को रोकने के लिये खदान स्थल के द्वार पर कंक्रीट की दीवारें खड़ी की जानी चाहिये।
- खदानों में कार्यरत श्रमिकों को उचित उपकरण प्रदान किये जाने चाहिये और उनकी कार्यावधि एवं परिस्थितियों को विनियमित किया जाना चाहिये।
- ऐसे राज्य जहाँ खनन से संबंधित सर्वाधिक मौतें (राजस्थान, झारखंड) होती हैं, वहाँ प्राथमिक तौर पर सुरक्षा सुधारों पर ध्यान देना चाहिये।

प्रश्न: राजेश किसी ज़िले में एक प्रमुख तेल विपणन कंपनी के लिये ज़िला नोडल अधिकारी के रूप में नियुक्त है। उसे ज़िले में उज्जवला योजना को सफल बनाने के लिये अधिकृत किया गया है। हालाँकि उसे पता चलता है कि इस योजना के प्रति लोगों की व्यावहारिक समस्याएँ एक बड़ी बाधा है। अधिकांश निवासियों को यह आशंका है कि एल.पी.जी. पर पकाया गया भोजन अस्वास्थ्यकर और स्वादहीन होता है। वे एल.पी.जी. के सुरक्षित उपयोग को लेकर भी आशंकित हैं। एल.पी.जी. पंचायत तथा सुरक्षा जागरूकता शिविरों के आयोजन के बाद भी ये चुनौतियाँ बनी हुई हैं और निवासियों ने इन्हें भ्रामक बताते हुए पूर्णतः बहिष्कृत कर दिया है। इसके अतिरिक्त अन्य कारक जो इस योजना की सफलता को प्रभावित कर रहे हैं, उनमें बायोमास की सस्ती उपलब्धता एवं एल.पी.जी. सिलेंडर को फिर से भरने में लोगों की अवहनीय क्षमता भी शामिल है।

उपरोक्त स्थिति में राजेश के समक्ष उपस्थित विकल्पों को चिह्नित कर उनका मूल्यांकन कीजिये ताकि वह ज़िले में उज्जवला योजना को सफल बना सके।

(250 शब्द, 20 अंक)

Rajesh is posted as a District Nodal Officer for a leading oil marketing company in a certain district. He has been authorized to make the Ujjawala scheme a success in the district. However, he finds that behavioral issues on the part of residents is a big hurdle. Most of the residents have the apprehension that food cooked on LPG is not healthy and is tasteless. They are also apprehensive about the safety of LPG. These challenges persist even after the conduct of LPG Panchayat and safety awareness camps, and residents dismiss these as misleading. Apart from this, other factors that are checking the success of the scheme include cheap availability of biomass and unaffordability to refill LPG cylinder.

In view of the above situation, identify and evaluate the options before Rajesh so that he can make Ujjawala scheme successful in the district.

उत्तर:

मुद्दों का प्रतिचित्रण

प्रभावशीलता की पड़ताल	उज्ज्वला योजना का प्रभावी क्रियान्वयन
निरंतर प्रतिबद्धता	ग्रामीणों द्वारा विमुखता की स्थिति में भी निरंतर प्रतिबद्धता की आवश्यकता है ताकि ग्रामीणों के जीवन को बेहतर बनाया जा सके।
नेतृत्व	सभी वितरक व विशेष रूप से ग्रामीण वितरक अपने आवश्यकता अधिदेश (Mandate) की पूर्ति कर सकें इसलिये नेतृत्व की आवश्यकता है।
सेवा उत्कृष्टता	राष्ट्र और संगठन के प्रति कर्त्तव्य के रूप में किसी व्यक्ति को सेवा वितरण में हमेशा उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिये प्रयास करना चाहिये।
भावनात्मक बुद्धिमत्ता	ग्रामीणों के साथ समानुभूति स्थापित करना और उनके संदर्भ से उनकी समस्याओं को हल करना।

विकल्पों की पहचान और मूल्यांकन				
		चरण	लाभ	हानि
1.	मानसिकता में परिवर्तन लाना	• अन्य ग्रामों से समकक्ष समूह को संवाद में शामिल कर एल.पी.जी. के लाभों को समझाना • एल.पी.जी. पंचायत में स्थानीय स्तर पर प्रसिद्ध व्यक्तियों को शामिल करना।	• चूँकि एल.पी.जी. पंचायत अधिक सफल नहीं रहे हैं, निकट के ग्रामों के समकक्ष समूह एल.पी.जी. के लाभों के संबंध में जागरूकता निर्माण में अधिक प्रभावी होंगे। • इसका तात्कालिक प्रभाव पड़ेगा क्योंकि ऐसे प्रसिद्ध व्यक्तियों का ग्राम के युवाओं पर प्रभाव होता है जिससे आचरणगत परिवर्तन आ सकता है।	• यह एक दुरूह प्रक्रिया होगी क्योंकि अन्य ग्रामों के समूहों को आर्थिक लाभों जैसे प्रेरक कारकों की आवश्यकता होगी। • रसोई सामान्यतः महिलाओं का कार्यक्षेत्र माना जाता है। इन संदर्भ में मानसिकता में परिवर्तन लाने में युवाओं का प्रभाव सीमित ही होगा।

2.	संस्थागत उपाय	● आशा (ASHA), ANM जैसे संस्थागत तंत्र को संलग्न करना।	● पारंपरिक चूल्हों के कुप्रभावों के संबंध में जागरूकता के प्रसार के लिये ग्रामस्तरीय आशा कार्यकर्त्ताओं की सहायता ली जा सकती है। इनकी पहुँच के प्रभावस्वरूप एल.पी.जी. जैसे स्वच्छ ईंधन की मांग बढ़ेगी।	● ग्रामीण परिवारों में जहाँ पुरुष ही निर्णय निर्माता और धनोपार्जक होते हैं, वहीं महिलाओं की स्वच्छ रसोई गैस के प्रति सकारात्मक राय के बावजूद स्वच्छ ईंधन के विकल्प का चयन कठिन है।
3.	भोजन का गुणात्मक पहलू	● नागरिक समाज संगठन (जैसे– अक्षय पात्र) को संलग्न किया जा सकता है जहाँ निर्देश हो कि वे भोजन-मेला आयोजित करें जिसमें एल.पी.जी. स्टोव पर पका भोजन मामूली मूल्य पर ग्रामीणों के बीच वितरित किया जाए।	● गुणवत्ता संबंधी भ्रम को ऐसे सतत् प्रयासों से दूर किया जा सकता है। ग्रामीण को यह दिखाया जा सकता है कि एल.पी.जी. स्टोव न केवल जल्दी भोजन पकाने में उपयोगी हैं बल्कि उसके स्वाद में भी कोई परिवर्तन नहीं आता।	● शहरी क्षेत्रों के लोग भी यह सोच रखते हैं कि पारंपरिक चूल्हों पर पके भोजन में बेहतर स्वाद और पोषण होता है। इस स्थिति में ग्रामीणों को विश्वास में लेना इतना आसान नहीं है।
4.	वितरण का पहलू	● तेल वितरक कंपनियों और ग्रामीण वितरकों के बीच एक समन्वित तंत्र का निर्माण किया जा सकता है। ● 5 किलोग्राम का छोटा एल.पी.जी. सिलेंडर लाना। यह बिचौलियों को दूर करेगा, क्योंकि अधिकांश लोग काले बाज़ार से ही एल.पी.जी. सिलेंडर खरीदते हैं।	● यह वितरण तंत्र में व्याप्त बाधाओं को दूर करेगा। इसके अतिरिक्त, वितरण की आवृत्ति में भी वृद्धि आएगी।	● लगभग पूरे देश में एल.पी.जी. सिलेंडर की उच्च लागत और निम्न रीफिल अनुपात एक बड़ी चुनौती है।
5.	बायोमास की सस्ती उपलब्धता का समाधान करना	● इसका हल करने के लिये सभी हितधारकों, अर्थात् ग्राम पंचायतों, ज़िला प्रशासन, नागरिक समाज संगठन आदि के समन्वित प्रयास की आवश्यकता होगी। ● समुदाय-आधारित बायोगैस संयंत्र एवं स्वच्छ स्टोव जैसे प्रयास किये जा सकते हैं ताकि भोजन पकाने के पारंपरिक तरीकों में सुधार आए।	● यह बायोमास की सस्ती व आसान उपलब्धता को कम करेगा।	● जब तक आय क्षमता में वृद्धि नहीं होती, सस्ते बायोमास ग्रामीणों के प्राथमिक ईंधन विकल्प बने रहेंगे और इस प्रकार ये उज्ज्वला योजना के सफल कार्यान्वयन के लिये चुनौती बने रहेंगे।
6.	नीति परिवर्तनों के सुझाव	● उच्च अधिकारियों को सब्सिडी की एक उपयुक्त प्रणाली पर अमल की सलाह दी जा सकती है जिसके अंतर्गत प्रारंभिक 3-4 रीफिल की लागत को सब्सिडीयुक्त रखा जाए।		

आचरणगत परिवर्तन एक धीमी प्रक्रिया है। हालाँकि लोकसेवा सरकारी सेवकों की सतत् प्रतिबद्धता की मांग रखती है। मानवों की गरिमा और उनके चयन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं, तभी वे एक सार्थक जीवन जी सकते हैं। इस परिदृश्य में दबावपूर्ण और जल्दबाज़ी में लिये गए निर्णयों से बचना चाहिये और वृद्धिशील परिवर्तनों के लिये प्रयास करना चाहिये।

ऐसे परिदृश्य में 'सेवोत्तम' जैसे मॉडल सहायक हो सकते हैं जो नागरिकों के लिये सेवा आपूर्ति की गुणवत्ता के आकलन व सुधार के लिये संगठनों को एक ढाँचा प्रदान करते हैं।

सेवोत्तम मॉडल के घटक

- सेवाओं को परिभाषित करना और ग्राहकों की पहचान करना।
- प्रत्येक सेवा के लिये मानक और मानदंड निर्धारित करना।
- निर्धारित मानकों को पूरा करने की क्षमता विकसित करना।
- मानकों की प्राप्ति के लिये निष्पादन।
- निर्धारित मानकों पर प्रदर्शन की निगरानी।
- एक स्वतंत्र तंत्र के माध्यम से प्रभाव का मूल्यांकन।
- निगरानी और मूल्यांकन के आधार पर निरंतर सुधार।

प्रश्न: एक ज़िले में एक के बाद एक जाति आधारित अत्याचार की कुछ घटनाएँ घटित हुई हैं। इससे उत्पीड़ित जातियों के समूह ने विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया है। इस प्रकार के एक विरोध प्रदर्शन में व्यापक हिंसा हुई। कई लोग घायल हुए, जिनमें से कुछ गंभीर रूप से घायल हुए और स्थानीय अस्पताल में उनका उपचार किया जा रहा है। उस अस्पताल में कर्मचारियों

की संख्या आवश्यकता से कम है तथा बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव है। इस अव्यवस्थात्मक स्थिति में एक गर्भवती महिला जिसे विरोध प्रदर्शन के कारण अस्पताल पहुँचने में देरी हो जाती है, अस्पताल में भर्ती होती है।

उपरोक्त आपातकालीन स्थिति के मद्देनज़र डॉक्टरों ने अन्य मरीज़ों की अपेक्षा उसे अधिक महत्त्व देते हुए उसका ऑपरेशन किया। इसी बीच एक घायल दलित युवक ने दम तोड़ दिया। इसे जातिगत पूर्वाग्रह तथा डॉक्टरों की लापरवाही का मामला करार देते हुए अस्पताल प्रशासन के खिलाफ बड़े स्तर पर हिंसा हुई, जिसका स्थानीय राजनेताओं ने समर्थन किया। परिणामस्वरूप कुछ रेज़िडेंट डॉक्टरों को गंभीर चोटें आईं, जिसके बाद डॉक्टरों ने हड़ताल शुरू कर दी, जिससे कई लोगों की जान चली गई।

(a) मान लीजिये कि आप संबंधित ज़िले के ज़िलाधिकारी हैं और राज्य मानवाधिकार आयोग का अध्यक्ष आपसे विभिन्न पक्षों की विश्वसनीयता का निर्धारण करने के लिये कहता है, तो आपकी रिपोर्ट का विवरण क्या होगा?

(b) आप क्या सुझाव देंगे ताकि भविष्य में इस प्रकार की घटनाएँ घटित न हों?

(c) यह जानते हुए भी कि ऐसा करना समाज हित के विपरीत है क्या आप इस बात से सहमत हैं कि डॉक्टरों द्वारा किया जा रहा विरोध सही है? (250 शब्द, 20 अंक)

In a district few incidents of caste based atrocities have taken place in quick succession. This has led to protest movement by group belonging to the oppressed castes. In one such protest there was large scale violence. Many people got injured, some severely, and they are being treated in a local hospital. The hospital is understaffed and also lacks infrastructure. In such a chaotic situation, a heavily pregnant lady, who got delayed due to protest was admitted to the hospital. In view of the above emergency case, doctors attended to her and got her operated. Meanwhile a young dalit youth succumbed to his injuries. Terming this to be a case of caste bias and negligence on the part of doctors, large scale violence against the hospital administration started, which was supported by local politicians. This resulted in severe and critical injury to some resident doctors, after which doctors went on a flash strike which resulted in more loss of lives.

(a) Suppose you are District Magistrate of the area concerned, and chairman of the State Human Rights Commission asks you to determine the culpability of different parties, what will be the content of your report?

(b) What will be your suggestions so that such type of incidents are avoided in the future?

(c) Do you agree that doctright in their protest given that it is against the greater good.

उत्तर (a) :

नैतिक आधार	मूल्य
• दायित्व • मौलिक अधिकार ◆ समानता का अधिकार ◆ भ्रमण की स्वतंत्रता का अधिकार	• सामाजिक न्याय • सामाजिक सद्भाव • नेतृत्व • सामाजिक उत्तरदायित्व • समाधिकारी मूल्य
• निर्णय आधार ◆ चिकित्सा नैतिकता ◆ निष्पक्षता का मूल्य	

अभियोज्यता का निर्धारण

- **चिकित्सीय कर्मचारी:** चिकित्सा नैतिकता में ट्राइएज़ (आपदा के समय घायलों के उपचार में वरीयता का निर्धारण) का सिद्धांत है, जो उपचार के क्रम को निर्धारित करता है। इसके अनुसार, एक जीवन की तुलना में दो जीवन अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, चिकित्सकों का उपचार क्रम में सही था, क्योंकि गर्भवती महिला के मामले में दो जीवन शामिल थे।

चिकित्सीय ट्राइएज़: ट्राइएज़ मरीज़ों की स्थिति की गंभीरता के आधार पर उनके उपचार की प्राथमिकता निर्धारित करने की प्रक्रिया है। यह संसाधनों की कमी की स्थिति में रोगियों के तत्काल उचित उपचार का निर्धारण करती है। चिकित्सीय ट्राइएज़ के आधार पर एक गर्भवती मरीज़ को अन्य रोगियों पर प्राथमिकता मिलेगी।
- समान परिस्थितियों में एक बच्चे को अन्य रोगियों की तुलना में प्राथमिकता मिलेगी।

- **हड़ताल की स्थिति:** हालाँकि अचानक हड़ताल की परिस्थिति कर्त्तव्य की उपेक्षा और हिप्पोक्रेटिक शपथ के उल्लंघन जैसी स्थिति उत्पन्न होती है, विशेषत: जब रोगियों की संख्या अधिक हो, परंतु ऐसी स्थिति में काम करना जो उन्तरजीविता के लिये हानिकारक है, वह हड़ताल के लिये एक वैध आधार हो सकता है।
- **उत्पीड़ित जातियों से संबंधित समूह द्वारा विरोध आंदोलन पर**
  - हालाँकि विरोध आंदोलन के दौरान हिंसा की घटनाएँ पूर्णरूप से अनुचित हैं और किसी भी शिष्ट लोकतंत्र में हिंसा के लिये कोई स्थान नहीं है, परंतु इसे उत्पीड़ित वर्गों द्वारा अधिकारों के दावे के रूप में भी देखा जाना चाहिये।
  - परंतु, इस विरोध आंदोलन ने अन्य लोगों के अधिकारों का उल्लंघन किया, इस मामले में एक गर्भवती महिला का अधिकार, जैसा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 व 19 के अंतर्गत प्रदान किया गया, उसका सुस्पष्ट उल्लंघन है।
  - हालाँकि लोकतंत्र के लक्ष्यों की पूर्ति हेतु शांतिपूर्ण विरोध की अनुमति दी जा सकती है, क्योंकि यह लोगों के विचारों के लिये एक मंच प्रदान करता है और लोकतांत्रिक शासन प्रणाली में जन-विश्वास को सुदृढ़ करता है।
- **स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं के विरुद्ध हिंसा**
  - हिंसा के लिये उत्तरदायी व्यक्तियों को कानून के अनुसार चिह्नित और दंडित किया जाना चाहिये।

◆ ऐसे व्यक्तियों को दंडित नहीं करने की स्थिति में स्वास्थ्य कार्यकर्त्ताओं का मनोबल गिरेगा, साथ ही इससे स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा प्रदान स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

उत्तर: (b)

सुझाव	
अस्पताल में हिंसा	● मरीज़ों के अधिकारों एवं उत्तरदायित्वों की सूची होनी चाहिये जिसे अस्पताल परिसर में प्रदर्शित किया जाना चाहिये। इस सूची में सूचना का अधिकार, निजता का अधिकार/गोपनीयता का अधिकार, मानवीय गरिमा का अधिकार, समानता का अधिकार, सूचित सहमति का अधिकार तथा दुर्घटना पीड़ितों के लिये आपातकालीन प्राथमिक चिकित्सा का अधिकार श्रेणीबद्ध होना चाहिये। ● संबंधित प्राधिकारी द्वारा नैदानिक प्रतिष्ठान (पंजीकरण और विनियमन) अधिनियम, 2010 को प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिये। ● चिकित्सकों एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मियों की सुरक्षा में वृद्धि करना और उनके विरुद्ध हिंसा के मामले की स्थिति में तीव्रता से न्याय प्रदान करना।
विरोध आंदोलनों या इस प्रकार की अन्य घटनाओं के दौरान	● आपातकालीन वाहनों को अधिक गतिशीलता प्रदान करने हेतु 'ग्रीन कॉरिडोर' का प्रावधान। ● आपातकालीन कर्मचारियों, विशेषरूप से स्वास्थ्य और सुरक्षा से संबंधित, के स्थानांतरण हेतु समीप के ज़िला प्रशासन के साथ समन्वय।
विभिन्न जाति समूहों के मध्य विश्वास बहाली के उपाय	● **सामाजिक प्रभाव और धारणा:** समाज के सभी वर्गों के लोगों को शांति व सद्भाव के साथ रहने हेतु मनाने के लिये समाज के बुज़ुर्गों एवं प्रभावशाली लोगों को नेतृत्व प्रदान करना। ● **गाँव में नुक्कड़ नाटक का आयोजन:** दृश्य-श्रव्य प्रभाव लोगों के दिमाग पर बहुत अधिक प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार के माध्यम द्वारा जाति आधारित भेदभाव व अत्याचारों के दुष्प्रभावों को चित्रित किया जा सकता है। ● **कानूनी कार्रवाई:** जाति-आधारित अत्याचारों में लिप्त लोगों को चेतावनी देना, ताकि ऐसे लोगों को भविष्य में ऐसे कुकृत्य करने से रोका जा सके।

उत्तर: (c)

जनहित का सापेक्षवाद

लोकतंत्र में हड़ताल सामूहिक विरोध का एक वैध रूप है। इसके साथ-साथ चिकित्सा नैतिकता का मार्गदर्शक सिद्धांत रोगियों की पीड़ा का समाधान है। इस प्रकार चिकित्सकों के हड़ताल पर चले जाने का मुद्दा विवादास्पद है।

- **एक हड़ताल कब उचित नहीं होती है?**
  - ◆ जब यह कुछ संकीर्ण व आर्थिक लाभों के लिये की जाती है।

भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद (व्यावसायिक आचरण, शिष्टाचार और नैतिकता) विनियम, 2002

- एक चिकित्सक अपने पेशे की गरिमा एवं सम्मान को बनाए रखेगा। चिकित्सीय पेशे का मुख्य उद्देश्य मानवता को सेवा प्रदान करना है; इनाम या वित्तीय लाभ एक द्वितीयक उद्देश्य है।

- **एक हड़ताल कब उचित होती है?**

निम्नलिखित परिस्थितियों में स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा हड़ताल को उचित ठहराया जाता है-

- ◆ **सही कारण तथा उद्देश्य:** चिकित्सक किसी उचित कारण, जिसमें नैतिक उद्देश्य निहित हो, के लिये हड़ताल पर जा सकते हैं।
- ◆ **आनुपातिकता:** हड़ताल के एकमात्र उद्देश्य को प्राप्त करने की कोशिश में रोगियों को हानि नहीं पहुँचानी चाहिये। अन्य शब्दों में, हड़ताल से जनित अनपेक्षित 'संपार्श्विक' अथवा 'अतिरिक्त क्षति' को कम किया जाना चाहिये। यह सुझाव देता है कि हड़ताल पर जाने वाले चिकित्सकों को आपातकालीन चिकित्सा जैसी महत्त्वपूर्ण चिकित्सीय सेवाएँ प्रदान करते रहना चाहिये।
- ◆ **अंतिम उपाय:** हड़ताल को उचित ठहराने के लिये पहले इसके सभी कम बाधाकारी विकल्पों (यानी जिनका रोगियों पर कम नकारात्मक प्रभाव पड़ता हो) को चुनने की कोशिश की जानी चाहिये। इस तरह के वैकल्पिक तरीकों में पक्ष-समर्थन, असंतोष और अवज्ञा भी शामिल हैं।

प्रश्न: छात्रों का एक समूह नदी के किनारे स्थित एक गाँव में जाता है, जो बहुत ही खराब स्थिति (बुनियादी सुविधाओं की कमी) में है। वहाँ लोग बिजली, स्वच्छता, जल आपूर्ति जैसी बुनियादी सुविधाओं के बिना झोपड़ियों में निवास कर रहे हैं। उपरोक्त अभावों के परिणामस्वरूप समीप के अन्य गाँवों ने इस गाँव का बहिष्कार कर दिया है, यहाँ तक कि इस गाँव को 'कुँवारा गाँव' के रूप में जाना जाता है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपनी पुत्री का विवाह इस गाँव में नहीं करता है। उनकी अवस्था को देखनेके बाद छात्रों के इस समूह ने ज़िला प्रशासन से संपर्क करने का निर्णय लिया। इस अत्यंत विकृत स्थिति के बारे में पूछे जाने पर अधिकारियों ने बताया कि यह गाँव गंभीर रूप से संकटापन्न प्रजातियों की सुरक्षा हेतु सरकार द्वारा संरक्षित क्षेत्र की सूची में श्रेणीबद्ध है।

नियमों के अनुसार, नदी तट से 500 मीटर के भीतर कोई निर्माण गतिविधि नहीं हो सकती है क्योंकि किसी भी प्रकार की निर्माण गतिविधि संरक्षित क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगी।

एक ज़िलाधिकारी के रूप में कुछ संभावित रणनीतियों पर चर्चा कीजिये जिन्हें इस क्षेत्र के विकास हेतु अपनाया जा सकता है।

(250 शब्द, 20 अंक)

A group of students visit a village, situated on the bank of a river, which is in very poor condition. People are residing in shanties without basic infrastructure, like electricity, sanitation and water supply. Further, other villages in the close vicinity have boycotted this place, due to the above limitations, so much so that it is known as bachelor village as nobody marries their daughter in this village. After watching their condition, this group of students decided to approach the district administration. Questioned about the abysmal state of affairs, authorities pointed out that the village lies in the protected area especially earmarked by the government for protection of critically endangered species.

According to the rules there can be no construction activity within 500 meters of the river bank because any kind of construction activity would adversely affect the conservation zone.

As a District Collector, discuss some possible strategies which could be adopted to bring development to this area.

उत्तर:

विषय-वस्तु	तथ्य	मूल्य	हितधारक
निवासित लोगों का पुनर्वास	संरक्षित क्षेत्र में निवास स्वयं के साथ-साथ पशुओं के लिये भी खतरनाक है	• सामाजिक न्याय • नेतृत्व • सामाजिक दायित्व • समतावादी मूल्य	• वनवासी • ज़िलाधिकारी

नैतिक चिंताएँ

- गरिमापूर्ण मानव जीवन की महत्ता।
- एक स्थायी दृष्टिकोण, जिसमें पर्यावरण को अपरिवर्तनीय रूप से क्षति न पहुँचे।
- समावेशी और सहानुभूतिशील अभिवृत्ति।
- सबसे उचित प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया	कारण
संरक्षित क्षेत्र में निवासित लोगों पर एक कुशल समिति का गठन करना	• वन अधिकार अधिनियम (एफ.आर.ए.) की धारा 4 में उन परिस्थितियों एवं प्रक्रियाओं का विवरण दिया गया है, जिनके अंतर्गत वन क्षेत्रों से पुनर्वास हो सकता है। इसमें कहा गया है कि किसी भी वन अधिकार के धारक को किसी अन्य स्थान पर पुन:स्थापित नहीं किया जाएगा या किसी भी रीति में उनके अधिकारों को वन्यजीव संरक्षण हेतु अतिक्रांत क्षेत्रों के सृजन के प्रयोजनों के लिये प्रभावित किया जाएगा, केवल इसके कि वैज्ञानिक रूप से यह साबित किया जाए कि इनकी गतिविधि या उपस्थिति से अपरिवर्तनीय क्षति हो रही है और वन्यजीवों एवं उनके निवास स्थान के अस्तित्व को खतरा है। • यदि वैज्ञानिक परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि इसका संरक्षण क्षेत्र पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ेगा, इस स्थिति में संबंधित क्षेत्र में कुछ बुनियादी विकास कार्य शुरू किये जा सकते हैं।
पुनर्वास	• मैं ग्रामीणों को यह समझाने का प्रयास करूँगी/करूँगा कि एक गाँव उसके लोगों से बनता है, न कि स्थान से। यदि उनके मध्य एक सामंजस्यपूर्ण स्थिति बनती है तो मैं विधि के प्रावधानों के अनुसार उनका पुनर्वास करूँगी/करूँगा।
पुनर्वास/पुन:स्थापन करने हेतु असहमति की स्थिति में सामाजिक प्रभाव और प्रोत्साहन	• निवासित लोगों को आश्वस्त करना कि उन्हें आवासीय सुविधाओं तथा अन्य सुविधाओं की पहुँच का अधिकार प्राप्त है, जो उनके जीवन को बेहतर बनाएंगी। • सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा यह है कि अन्य गाँवों द्वारा उनका बहिष्कार कर दिया गया है। • इस संदर्भ में ऐसे ग्रामीणों से सहायता ली जा सकती है, जो इस क्षेत्र के समीप निवास करते हैं।
अन्य राज्यों की सर्वोत्तम प्रथाओं का पालन करना	• एफ.आर.ए. और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अनुसार, संरक्षित क्षेत्रों सहित सभी वन परिदृश्यों में मनुष्यों एवं वन्यजीव समुदायों के सह-अस्तित्व के निर्माण तथा सुदृढ़ीकरण की दिशा में तत्काल कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। • वन्यजीव संरक्षण अधिनियम की सफलता या इस संदर्भ में कोई भी कानून संबंधित हितधारकों की भागीदारी पर निर्भर करता है। ऐसी कई सफल कहानियाँ हैं, जिनमें स्थानीय समुदायों ने भाग लेते हुए वन्यजीवों के संरक्षण में सहायता प्रदान की। उदाहरण के तौर पर: ◆ **गुजरात:** मालधारी, एक यायावरी जनजाति, ने गिर के शेरों के संरक्षण में मदद की। ◆ **नगालैंड:** नगा जनजातियों के संरक्षण प्रयासों के परिणामस्वरूप नगालैंड को विश्व में अमूर बाज की राजधानी के रूप में जाना जाता है। ◆ **राजस्थान:** थार रेगिस्तान का चरागाह समुदाय गोडावण (पक्षी) का संरक्षण कर रहा है।

निष्कर्ष

"प्रेम और करुणा ज़रूरतें हैं, विलासिता नहीं। इनके बिना मानवता जीवित नहीं रह सकती।" –दलाई लामा

यह किसी राष्ट्र का अंतर्निहित कर्त्तव्य तथा दायित्व होता है कि वह इस बात का ध्यान रखे कि उसका कोई नागरिक विकास की राह में पीछे न छूट जाए। यह समाज के वंचित वर्गों के प्रति करुणा एवं सामाजिक न्याय के साथ-साथ विधि के शासन के प्रति एक दायित्व है, जिसे एक लोकसेवक द्वारा अपने कर्त्तव्यों के निर्वहन में शामिल किया जाना चाहिये।

प्रश्न: आप एक कानूनी फर्म में भागीदार हैं। आपकी फर्म के ग्राहकों में एक उच्च सामाजिक ख्याति का व्यक्ति है और उसका व्यवसाय समृद्धशाली है। यह ग्राहक आपकी फर्म से पिछले पाँच वर्षों से जुड़ा है। लेकिन अब यह ग्राहक भारत की सबसे बड़ी बैंक धोखाधड़ी का भागीदार घोषित किया गया है। ग्राहक फरार है और यह माना जा रहा है कि वह एक ऐसे देश में भाग गया है जो केवल पर्याप्त दस्तावेज़ों को प्रस्तुत करने पर ही उसे प्रत्यर्पित कर सकता है। इस मामले में जाँच एजेंसियों ने आपकी फर्म पर छापा मारा है और ऐसे दस्तावेज़ प्राप्त किये हैं जो ग्राहक के अपराधी होने का संकेत देते हैं। लेकिन आप जानते हैं कि अभी भी फर्म के पास बहुत सी ऐसी जानकारियाँ उपलब्ध हैं जो ग्राहक का अपराध सिद्ध करने के लिये अति महत्त्वपूर्ण हैं। आपको अहसास है कि उस ग्राहक को गिरफ्तार करना और उसे न्याय हेतु प्रस्तुत करना देश हित में होगा। ऐसी परिस्थितियाँ सामने आने पर आप क्या करेंगे? विभिन्न हितों के संघर्ष का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये और देश का एक ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते अपनी ज़िम्मेदारियों की व्याख्या कीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are a partner in a law firm. One of the clients of your firm is a man of high social repute and has a flourishing business. This client has empanelled the firm since last five years. However, this client has been involved in now what is being dubbed as India's biggest bank fraud. The client is on the run and it is believed that he has escaped to a country which can extradite him only if provided with substantial proof. In connection with this case, investigating agencies raid your firm and find incriminating evidence against the client. But you know that, there is still a lot of information available with the firm, which is vital for ascertaining guilt of the client. You realize that it is very important for the country to get hold of the client and bring him to justice.Faced with this situation, what will you do? Critically examine various conflicts of interest and explain what are your responsibilities as a responsible citizen of the country.

उत्तर:

हितों में टकराव (Conflict of Interest)	
पेशेवर बनाम सार्वजनिक	**पेशेवर** ● ग्राहक के हितों के प्रति वफादारी/सुरक्षा तथा स्वतंत्र निर्णय एक ग्राहक के साथ वकील के संबंधों के आवश्यक तत्त्व हैं। ● ग्राहक-अटॉर्नी विशेषाधिकार **राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य** ● देश के एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में जाँच एजेंसियों की सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है।
वकील बनाम नैतिक ग्राहक	● वकील एक तकनीशियन है, जो पूरी तरह एक ग्राहक के कानूनी हितों को आगे बढ़ाने के उद्देश्यों के लिये कानून का उपयोग करता है। ● नैतिक ग्राहक वकालत को सच्चाई एवं न्याय के प्रशासन के संदर्भ में देखता है। वकील, अंततः न्यायालय का एक अधिकारी भी है, न कि केवल ग्राहक का वकील।

एक वकील के रूप में तथा देश के एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में उत्तरदायित्व

- कानूनी प्रणाली एवं विधि के शासन के प्रति ज़िम्मेदारियाँ, जो हमारी राजनीतिक अर्थव्यवस्था एवं संवैधानिक लोकतंत्र की नींव हैं, जिसमें न्याय तक पहुँच सुनिश्चित करने में योगदान देने, विधि के शासन तथा विधिक संस्थानों को मज़बूत करने एवं अन्य वकीलों द्वारा अपने स्वयं की पेशेवर ज़िम्मेदारियों को बनाए रखने के प्रयासों का समर्थन करना शामिल हैं।
- उस संस्था के प्रति ज़िम्मेदारियाँ, जिसमें वकील कार्य करते हैं, जैसे- निगम, लॉ फर्म एवं लॉ स्कूल तथा ऐसे संस्थानों द्वारा नियोजित लोगों के लिये, जैसे कि निगम का वैश्विक कार्यबल अथवा लॉ फर्म या लॉ स्कूल के कर्मचारी।
- अन्य व्यापक सार्वजनिक हितों को सुरक्षित करने एवं स्वस्थ निजी आदेशों को बढ़ावा देने के लिये ज़िम्मेदारियाँ - विधि के शासन के पूरक के रूप में - एक सुरक्षित, निष्पक्ष तथा एक ऐसा समाज बनाने के लिये, जिसमें व्यक्ति और संस्थाएँ (प्रमुख निगमों, प्रमुख लॉ फर्मों एवं प्रमुख लॉ स्कूलों सहित) लंबी अवधि में कामयाब हो सकते हैं।

मेरे पास उपलब्ध विकल्प

- **मैं पूरी शक्ति के साथ अपने ग्राहक को बचाने की कोशिश करूँगा:** यह भारतीय साक्ष्य अधिनियम के अनुसार होगा। अटॉर्नी ग्राहक विशेषाधिकार एक ग्राहक तथा उसके वकील के बीच संबंध का आधार है। यह गोपनीयता सिद्धांत के तहत संरक्षण के सबसे पुराने स्वरूपों में से एक है तथा सभी लोकतंत्रों में एक मौलिक अधिकार है। यह एक स्थायी विशेषाधिकार है जो ग्राहक द्वारा सलाह लेने की प्रक्रिया शुरू करने पर आरंभ होता है। इसका इरादा ग्राहक

अपने वकील को पूर्ण एवं स्पष्ट प्रकटीकरण के लिये सक्षम बनाना है जो बदले में अपने ग्राहक के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन कर सकता है।

- ऐसा करने में, न केवल मैं अपनी पेशेवर नैतिकता का पालन करूँगा, बल्कि अपने ग्राहक के प्रति मेरा कर्त्तव्य भी पूरा होगा।
- हालाँकि यदि उपर्युक्त अपराध मेरे कार्य के दायरे में नहीं है, तो मैं सरकारी एजेंसियों के साथ डाटा साझा करने में संकोच नहीं करूँगा।

- **मैं न्यायालय के निर्णय की प्रतीक्षा करूँगा:** विधि के शासन के अनुसार, यदि न्यायिक प्रक्रिया डाटा जमा करने की मांग करती है, तो मैं अपने साझेदारों से इस संदर्भ में सलाह लूँगा। यदि वे सहमत हैं, तो जानकारी न्यायिक प्रक्रिया को जमा कर दी जाएगी, यदि वे सहमत नहीं हैं तो मैं मुद्दे पर आम सहमति बनाने की कोशिश करूँगा तथा उसी के अनुसार आगे बढ़ूंगा।
- **एक अनाम पत्र भेजना:** मैं एजेंसियों को उपलब्ध डाटा के साथ अनाम पत्र भेजूंगा। हालाँकि ऐसा करने से मैं अपनी पेशेवर नैतिक संहिता का उल्लंघन करूँगा। नीतिशास्त्र के अनुसार देखा जाए तो यह सही नहीं होगा, लेकिन एक उपयोगितावादी दृष्टिकोण से, यह मेरी फर्म की प्रतिष्ठा को बचाने के उद्देश्य के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति मेरे दायित्व को भी पूरा करेगा।
- **एक ह्विसलब्लोअर बनना:** संगठनात्मक एवं पेशेवर नैतिकता को नैतिक स्वायत्तता, व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी तथा समग्र रूप से समाज की भलाई के लिये संगठनात्मक समर्थन को प्रोत्साहित करने हेतु डिज़ाइन किया गया है। ऐसे मामले में, एजेंसियों के साथ डाटा साझा करना उचित होगा।

एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में, देश की भलाई के बारे में सोचना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। इस कल्याणकारी आधार में, आर्थिक प्रणाली बहुत महत्त्वपूर्ण है। ऐसी प्रकृति की घटनाएँ किसी देश की नींव को हिला सकती हैं। इसके अलावा, ऐसे व्यक्ति को दंडित न करने से अन्य व्यक्तियों को अपराध करने के लिये प्रोत्साहन मिलेगा। इन उद्देश्यों के अनुसरण की प्रक्रिया में अपराधी का डाटा जहाँ तक संभव हो साझा किया जाना चाहिये।

प्रश्न: आप एक आई.पी.एस. प्रोबेशनर हैं तथा प्रथम नियुक्ति का सेवाभार ग्रहण करने वाले हैं। जब आप सेवाभार ग्रहण करने बस में जा रहे हैं तो रास्ते में एक हंगामा देखते हैं जिसमें एक पुलिसकर्मी को किसी अल्पसंख्यक समुदाय के ऑटो चालकों द्वारा पीटा जा रहा है, जब आप बस से उतरकर घटना स्थल पर पहुँचते हैं तो पता चलता है कि स्थिति पहले से विपरीत हो गई है तथा अब ऑटो चालकों को पुलिसकर्मियों द्वारा कानून को ताक पर रखकर पीटा जा रहा है। आप हस्तक्षेप करने का असफल प्रयास करते हैं।

जैसे ही यह हंगामा समाप्त होता है, आप देखते हैं कि इसे एक राजनीतिक एवं धार्मिक रूप दिया जा रहा है और मीडिया के समक्ष सनसनीखेज घटना बनाने का प्रयास किया जा रहा है। तत्पश्चात् आपको यह भी ज्ञात होता है कि जिस पुलिसकर्मी की पिटाई की जा रही थी, वह विभाग के सबसे ईमानदार पुलिसकर्मियों में से एक था।

सेवाभार ग्रहण करने के बाद आपको यह मामला सौंपा जाता है और इसकी जाँच करने के लिये कहा जाता है। परंतु जनता के आक्रोश तथा राजनीतिक दखल के कारण आप पर पुलिसकर्मियों को कठोर सज़ा देने के लिये दबाव डाला जा रहा है।

हालाँकि आपके द्वारा कठोर सज़ा दिये जाने से पुलिसकर्मियों का मनोबल गिरेगा, वहीं प्रभावहीन सज़ा समाज में असंतोष उत्पन्न करेगी।

आपको इस परिस्थिति में कैसी प्रतिक्रिया देनी चाहिये? इस मामले में आपके समक्ष कौन-सी दुविधाएँ हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are an IPS probationer, about to join your first posting. While on your way to join , you saw a commotion in which a policeman was being beaten up by auto drivers of a minority community. However, when you reach the site you realize that the scenario has reversed and now the auto drivers are being beaten up by the policemen in vigilante fashion. You unsuccessfully try to intervene.

As soon as it ended, you find that it is being given a political and religious color, and media sensationalism. Later, you also come to know that the policeman who was being beaten up was one of the most honest policemen in the department.

After joining you have been assigned this case, and asked to conduct an inquiry. But due to the passion of the public and the politics involved, you are being pressurized to give exemplary punishment to policemen. However for you, exemplary punishment will result in demoralization of policemen, whereas lighter punishment will create uproar in society.

How should you respond to the situation? What are the dilemmas you face in this case?

उत्तर:

नैतिक प्रतिचित्रण/निर्णय आधार
● भावनात्मक बुद्धिमत्ता
● लोकसेवा के मूल्य
● राजनीति-लोकसेवक संबंध का सार
● पेशे-संबंधी संकट

- 'पुलिस' को 'लोक व्यवस्था के रखरखाव, जन सुरक्षा को बढ़ावा देने तथा अपराध का पता लगाने वाले सरकारी विभाग' और 'इस विभाग के अधिकारियों या सदस्यों' के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

- पुलिसकर्मियों द्वारा की जाने वाली बर्बरता नागरिक अधिकारों का एक उल्लंघन है। ऐसी घटना तब घटित होती है, जब एक पुलिस अधिकारी किसी नागरिक पर आवश्यकता से बहुत अधिक बल का उपयोग करता है। एक विधि प्रवर्तन अधिकारी द्वारा अत्यधिक बल का प्रयोग एक व्यक्ति के अधिकारों का उल्लंघन है।
- उपर्युक्त मामले में पुलिसकर्मी हिंसा में लिप्त थे, जबकि पुलिसकर्मियों का कार्य लोगों को हिंसा से बचाना है। स्पष्ट रूप से यह पुलिसकर्मियों द्वारा बर्बरता का मामला था।

इस मामले पर प्रतिक्रिया

- सबसे पहले हिंसा में लिप्त सभी पुलिसकर्मियों को अस्थायी रूप से निलंबित किया जाए, जिसमें जाँच की जाएगी।

कारण: उन्हें विधि के अनुसार ऑटो चालक को गिरफ्तार करना चाहिये था तथा उसे एक वकील उपलब्ध कराना चाहिये था।

संविधान द्वारा अनुच्छेद 22 के अंतर्गत गिरफ्तार व्यक्ति को वकील से परामर्श करने का अधिकार प्राप्त है।

सर्वोच्च न्यायालय ने डी.के. बसु के मामले में निर्देश जारी किया था कि गिरफ्तारी की स्थिति में, व्यक्ति पुलिसकर्मी को अपने वकील से परामर्श करने की अनुमति देने हेतु कह सकता है।

- एक संस्था के रूप में पुलिसकर्मी का प्रदर्शन तथा एक व्यक्ति के रूप में एक पुलिसकर्मी के व्यवहार, दोनों को ही निरंतर निगरानी की आवश्यकता है।

कानून की विचाराधीन भावना (ब्रुडिंग स्पिरिट ऑफ लॉ) के मामले में कार्रवाई हेतु एक मापदंड प्रणाली की आवश्यकता है, विशेष रूप से उन संस्थानों के लिये, जिन्हें इसे संरक्षण प्रदान के लिये एक अधिदेश प्राप्त है।

- पहले पीटे गए पुलिसकर्मी पर कोई कार्रवाई नहीं की जानी चाहिये। हालाँकि जो पुलिसकर्मी वहाँ मौजूद थे और हिंसा को रोकने की कोशिश नहीं कर रहे थे, उन्हें परिवीक्षा पर रखना चाहिये, क्योंकि यह कर्त्तव्य की उपेक्षा का मामला है।

किन दुविधाओं का सामना करना पड़ा?

- **बुरा उदाहरण स्थापित करना बनाम हतोत्साहित करना:** इस स्थिति में कोई भी दंड न दिया जाना व्यापक स्तर पर कनिष्ठ अधिकारियों और समाज के सामने बुरा उदाहरण पेश करता है। यह प्रशासनिक निरंतरता और स्थिरता के लिये हानिकारक है, परंतु कठोर एवं अनुकरणीय दंड देने से पुलिसकर्मियों के हतोत्साहित होने का खतरा रहेगा।
- **अनुकरणीय व्यवहार बनाम आगामी हित:** एक व्यक्ति को ऐसी स्थिति में अनुकरणीय व्यवहार का पालन करना चाहिये और उसमें दृढ़ विश्वास का साहस होना चाहिये। राजनीतिक आकाओं की बात नहीं मानने से करियर के विकास में बाधा आ सकती है।

राजनीति और प्रशासन के मध्य स्वस्थ संबंध बनाए रखना सबसे महत्त्वपूर्ण है, परंतु यह न्याय की कीमत पर नहीं होना चाहिये।

- हर कार्य के अपने पेशे-संबंधी संकट होते हैं। लोकसेवाओं के मामले में, निरंतर स्थानांतरणों के परिणामस्वरूप व्यक्तिगत एवं पेशेवर जीवन में असंतुलन हो सकता है। हालाँकि लोकसेवकों को सेवा में शामिल होने से पहले इन चुनौतियों के बारे में जानकारी होती है तथा उन्हें इनका सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये।

निष्कर्ष

आम नागरिकों को सुरक्षा की भावना प्रदान करना तथा उनकी शिकायतों को सुना जाना एक कुशल, ईमानदार एवं पेशेवर पुलिस बल की स्थापना पर निर्भर है। पुलिसकर्मियों द्वारा बर्बरता के मामले में एक उचित कार्यवाही का पालन किया जाना चाहिये, जहाँ न केवल न्याय होना चाहिये, बल्कि न्याय होता दिखना भी चाहिये।

प्रश्न: अमृता एक सरकारी विभाग में युवा आई.ए.एस. अधिकारी हैं। इस विभाग में कुछ समय कार्य करने के पश्चात् उसे ज्ञात होता है कि महिला कर्मचारियों का पद पुरुष कर्मचारियों की तुलना में गौण है। पुरुष कर्मचारी वरिष्ठ महिला अधिकारियों से आदेश नहीं लेना चाहते हैं; इसके अतिरिक्त महिलाओं को महत्त्वपूर्ण विभागीय परियोजनाओं में शामिल नहीं किया जाता है और उनका उपहास बनाया जाता है, और यहाँ तक कि इस प्रकार की परियोजनाओं में शामिल होने से भी हतोत्साहित किया जाता है।

अमृता को अनौपचारिक माध्यम से ज्ञात होता कि विभाग प्रमुख भी इसी मानसिकता एवं मान्यताओं का अनुगामी है और उसका मानना है कि महिलाओं को इस विभाग में नहीं भेजा जाना चाहिये।

अमृता द्वारा कौन-से कदम उठाए जाने चाहिये जिससे कार्य संस्कृति महिलाओं के अनुकूल हो। (250 शब्द, 20 अंक)

Amrita, a young IAS officer, has joined a government department. After working for a while in this department, she realizes that position of women staff is subservient to male staff. Male staff don't want to take orders from senior women officers. Moreover, women are not taken on serious departmental projects and are derided, and even discouraged even from attempting such a project.

Amrita through informal channels comes to know that even the Head of the Department is of the same mindset and believes that women should not be sent to this department.

Discuss the course of action Amrita should take so that the work culture becomes conducive for women.

उत्तर:

क्रियाविधि:

- **उदाहरणों को पेश करना:** कार्यस्थल पर अपने समूह और सहयोगियों में लैंगिक विविधता तथा लैंगिक संवेदनशीलता लाने की कोशिश करनी चाहिये (उदाहरण के लिये, सार्वजनिक रूप से महिला

सहयोगियों को उनकी उपलब्धियों पर बधाई देना, अन्य महिला कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना, आदि)। क्योंकि नेतृत्व एवं दायित्व के बिना किसी भी लक्ष्य को एक समयावधि के भीतर प्राप्त नहीं किया जा सकता है। यह अच्छी कार्य संस्कृति को बढ़ावा देगा तथा संपूर्ण विभाग के लिये व्यवहार मानक निर्धारित करेगा।

- **कार्यस्थल में अनुशासन बनाए रखना:** शीघ्र या बाद में अन्य अधिकारी इसकी सराहना करेंगे। यह अन्य महिला अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्यों को भी प्रभावित करेगा और उनमें एक नई भावना सृजित कर सकता है।
- **ग्रहणशील व उदार बनें:** कार्यस्थल पर पूर्वाग्रह हो सकता है, जो सामाजिक पूर्वाग्रहों का प्रतिबिंब है। इस प्रकार ग्रहणशील दृष्टिकोण कार्यस्थल पर परिवर्तन लाने में सहायता प्रदान करेगा।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता का होना:** यह स्वयं की भावनाओं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं को समझने तथा प्रबंधित करने में सहायता करेगा, जो कार्यस्थल पर बेहतर निर्णय लेने में सहायता कर सकता है। यह कार्य एवं जीवन के मध्य संतुलन स्थापित करने में भी सहायता प्रदान करेगा।
- **दृढ़ सेवाभाव:** संगठन की मूलभूत उपयोगिता कर्मचारियों के लिये एक प्रेरक कारक की होनी चाहिये। जब सभी स्थितियाँ व्यवस्थित हो जाती हैं, तो वे सूक्ष्म परिवर्तन ला सकती हैं।
- **कार्यालय में सफल व्यक्तियों को आमंत्रित करना:** स्वयं सहायता समूहों की सहायता से वास्तविक जीवन में सफल व्यक्तियों को कार्यालय में आमंत्रित किया जा सकता है जिससे महिला सदस्यों को प्रेरित किया जा सके।

चूँकि कार्य संस्कृति व्यक्तियों के दृष्टिकोण अथवा व्यवहार से संबंधित है, इसलिये इसे परिवर्तित करने में समय लगता है। यह पुरुष सदस्यों के अहंकार से भी संबंधित है, जिसे बदलने के लिये उन्हें बाधित नहीं किया जा सकता है, परंतु सामाजिक प्रभाव तथा अनुनय के माध्यम से इसे जीता अवश्य जा सकता है।

ग्रहणशील दृष्टिकोण के साथ पितृसत्तात्मक समाज में बेहतर परिवर्तन लाए जा सकते हैं क्योंकि जब हम पितृसत्तात्मक समाज का प्रत्यक्ष रूप से सामना करते हैं तो बहुत से ऐसे मुद्दे सामने आते हैं जो परिस्थिति को और अधिक जटिल बना देते हैं।

एक व्यक्ति को संगठन में क्रांति लाने के संबंध में नहीं सोचना चाहिये, अपितु उसे स्वयं परिवर्तन का वाहक (एजेंट) बनना चाहिये। दृढ़ विश्वास/अनुकरणीय व्यवहार के माध्यम से पितृसत्तात्मक कमियों के प्रति ग्रहणशील होने के कारण समयावधि में बदलाव किया जा सकता है, जैसा कि तिहाड़ जेल सुधार के मामले में किरण बेदी ने किया था।

प्रश्न: राज्य के एक पिछड़े जिले में विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति में अचानक आई गिरावट के पश्चात् यह पाया गया कि उच्च जाति के लोग अपने बच्चों को विद्यालय जाने की अनुमति नहीं दे रहे हैं क्योंकि विद्यालय में निम्न जाति के बच्चों को दाखिला दिया गया है। उच्च जाति के लोग दबाव बना रहे हैं कि उनके बच्चे न तो निम्न जाति के बच्चों के साथ बैठेंगे और न ही उनके साथ भोजन करेंगे। उच्च जाति के लोग अपने निर्णय पर अटल हैं और चाहते हैं कि विद्यालय प्रशासन निम्न जाति के बच्चों को पहले विद्यालय से निष्कासित करें और इसके पश्चात् ही उनके बच्चे विद्यालय जाएंगे।

(a) उपरोक्त मामले में निहित नैतिक मुद्दों की चर्चा कीजिये।

(b) ज़िलाधिकारी के रूप में आप उन्हें अपने बच्चों को विद्यालय भेजने हेतु तैयार करने के लिये कौन-से प्रभावी उपाय अपनाएंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

In a backward district of a state, after a sudden drop in school attendance, it was found that the upper caste people are not allowing their children to go to school because the school has admitted children from the lower caste.

Upper caste people are insisting that their children will not sit or have food with lower caste children. Upper caste people are adamant on their position and want school administration to first expel the lower-caste students from the school and then only their children will attend school.

(a) Discuss the ethical issues in the above case.

(b) As a District Magistrate, what effective measures will you undertake to convince them to send their children to school?

उत्तर: (a)

नैतिक मुद्दे:

- **पूर्वाग्रही मानक:** उच्च जाति के लोग केवल अपनी स्थिति के संरक्षण के संबंध में चिंतित रहते हैं और इसलिये ऐसे स्वार्थी रवैये का अनुसरण करते हैं।
- **जातिगत भेदभाव:** जाति के आधार पर भेदभाव समाज में व्यापक रूप से प्रचलित है। यह शिक्षण संस्थानों में भी प्रतिबिंबित होता है। उपरोक्त स्थिति में इस तरह के भेदभाव मानव गरिमा एवं सम्मान को प्रभावित करते हैं।
- **जातिगत पूर्वाग्रह:** उच्च जाति वर्ग में निम्न जाति वर्ग के लोगों के प्रति पूर्वाग्रह है। वे अपने बच्चों को विद्यालय जाने की अनुमति न देकर उन्हीं मूल्यों को अपनाने का प्रयास कर रहे हैं।
- **अशक्त समाजीकरण:** उच्च जाति वर्ग द्वारा अपनाए जाने वाले इस तरह के कृत्यों के परिणामस्वरूप बच्चों का समाजीकरण उचित तरीके से नहीं होता है।

उत्तर: (b) दृष्टिकोण परिवर्तन के उपाय:

- **सामाजिक प्रभाव एवं अनुनयन:** समाज के बुज़ुर्ग और शिक्षित लोगों की सहायता से उच्च जाति के लोगों को अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिये प्रेरित करना।

- **विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक की व्यवस्था:** अभिभावकों सहित विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक आयोजित की जा सकती है और इस मुद्दे पर चर्चा की जा सकती है। जिलाधिकारी उन लोगों को समझा सकते हैं कि बच्चों की शिक्षा महत्त्वपूर्ण है और शैक्षिक संस्थानों को ऐसी सामाजिक बुराइयों से मुक्त होना चाहिये।
- **गाँव में नुक्कड़ नाटक का आयोजन:** नुक्कड़ नाटक लोगों के मस्तिष्क पर अधिक प्रभाव डालते हैं। नाटक के माध्यम से युवाओं पर इस प्रकार के जातिगत भेदभाव के दुष्प्रभाव को दर्शाते हुए उन्हें समझाया जा सकता है।
- **कानूनी कार्रवाई:** अस्पृश्यता का अभ्यास कर रहे लोगों को कानूनी कार्रवाई की चेतावनी देकर भविष्य में उन्हें ऐसा करने से रोका जा सकता है।

बच्चों में सही मूल्यों को विकसित करने का दायित्व अभिभावक और शिक्षकों के कंधों पर है। अन्यायपूर्ण सामाजिक मानदंडों को शिक्षा पर हावी नहीं होने देना चाहिये। बच्चों को मानवीय मूल्यों जैसे प्रेम, मानवीय गरिमा, सम्मान एवं समानता का पाठ पढ़ाना चाहिये।

प्रश्न: झारखंड के कई गाँवों ने पत्थलगड़ी का सहारा लिया है- यह अपने गाँव के क्षेत्राधिकार के सीमांकन के लिये पत्थर के स्मारकों की स्थापना की एक आदिवासी परंपरा है। इसमें संविधान की पाँचवीं अनुसूची के तहत अपने क्षेत्रों में स्वायत्तता और स्व-शासन की घोषणा की जाती है।

इन इलाकों में सरकारी कर्मचारियों सहित किसी भी बाहरी व्यक्ति को प्रवेश करने की अनुमति नहीं है।

विभिन्न स्रोतों से यह पता चला है कि आदिवासी, राज्य और केंद्र सरकार से खुश नहीं हैं क्योंकि वे हाशिये पर हैं और उपेक्षित महसूस करते हैं और परंपरागत रूप से अपने नियंत्रण वाले संसाधनों की लूट का अनुभव कर रहे हैं। वे अपनी दुर्दशा के लिये नए कानून और विकासात्मक गतिविधियों को जिम्मेदार ठहराते हैं।

मान लीजिये कि आप एक ऐसे प्रभावित क्षेत्र के ज़िलाधिकारी हैं, जहाँ यह आंदोलन चल रहा है, तो आप लघुकालिक के साथ-साथ दीर्घकालिक आधार पर मुद्दों से निपटने के लिये क्या रणनीति अपनाएंगे? अपनी रणनीतियों के लिये तर्क दीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

Several villages in Jharkhand have resorted to Pathalgarhi – a tribal tradition of erecting stone slabs to demarcate the area of their villages' jurisdiction, declaring their autonomy and self-rule in the areas under the Fifth Schedule of the Constitution.

In these localities, no outsider including the government servants are allowed. From various sources, it has come to be known that tribals are not happy with the state and central government as they feel ignored, marginalized and have been experiencing the plunder of their resources on which traditionally they enjoyed control. They hold new laws and developmental activities responsible for their plight.

Suppose you are a DM in one such affected district where this movement is going on, what strategies will you adopt to tackle the issues on short term as well as long term basis. Give justification for your strategies.

उत्तर: इससे सरकार के साथ उनकी शिकायतों/मुद्दों/असंतोष को समझने में सहायता मिलेगी। यह संभव हो सकता है कि आदिवासियों के इस कदम के कारण उनके साथ हुए ऐतिहासिक अन्याय में निहित है, लेकिन इसे बिना सहानुभूति के नहीं समझा जा सकता है।

सहयोगी दृष्टिकोण

गैर-सरकारी संगठनों, आदिवासियों सहित सभी स्थानीय हितधारकों को शामिल करके उनकी दुर्दशा पर विचार-विमर्श करने और उचित हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है। इसके अलावा यदि कोई निहित स्वार्थ हों तो उसकी पहचान करने की भी आवश्यकता है।

व्यवहार परिवर्तन

स्थानीय प्रशासन के साथ विचार-मंथन सत्र आयोजित करना ताकि आदिवासियों/स्थानीय लोगों के प्रति उनका रवैया बदला जा सके और उन्हें आदिवासी समुदाय के साथ व्यवहार करते समय अधिक विनम्र और संवेदनशील बनने के लिये कहा जा सके।

समस्या को सुलझाने हेतु नरम दृष्टिकोण

- उन्हें विकास और शासन में उनके प्रतिनिधित्व का वादा करना ताकि उनके आत्म-सम्मान और गरिमा को सुनिश्चित किया जा सके।
- स्कूल, अस्पताल, भूमि, आजीविका आदि जैसे पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए तत्काल हस्तक्षेप किया जा सकता है।
- स्थानीय प्रशासन को सम्मान/संवेदनशीलता के साथ व्यवहार करना चाहिये और उन्हें अपने स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये कहा जाना चाहिये।

मजबूत दृष्टिकोण

यदि इस घटना में कोई निहित स्वार्थ है तो प्रशासन को नरम रुख की जगह इसके साथ दृढ़ता से निपटने की जरूरत है।

पुनर्गणना नीति/कानून

पेसा, वनाधिकार अधिनियम, आदि जैसे कानूनों के कार्यान्वयन के साथ दोषों की पहचान की जानी चाहिये और कार्यान्वयन को अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित बनाने के लिये आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिये।

राज्य सरकार को सुझाव

- नीति-निर्माण, नीति-कार्यान्वयन, नीति-निगरानी और मूल्यांकन में आदिवासी समुदाय को महत्त्वपूर्ण हितधारक के रूप में देखना चाहिये ताकि सरकार एवं आदिवासियों के बीच अलगाव/संचार अंतराल कम-से-कम हो सके। यह भागीदारी की भावना को भी बढ़ावा देगा।
- सरकार तब तक विकास और शासन नहीं कर सकती, जब तक कि वन और भूमि के प्रति सच्चा सम्मान न हो और इसलिये नीति/कानून/नियमों का पालन करते हुए विकास के ऐसे दृष्टिकोण को शामिल किया जाना चाहिये जो कि जल, वन और भूमि के लिये सच्चा सम्मान देता है।

- बल का प्रयोग अत्यधिक सावधानी के साथ होना चाहिये और अंतिम विकल्प के रूप में इसका सहारा लेना चाहिये।

तर्क-संगतता

किसी भी तरह से विकास को सही नहीं ठहराया जा सकता है अगर इसका परिणाम लोगों के आत्म-मूल्य, प्रतिष्ठा, स्वामित्व को ठेस पहुँचाता है। यह एक कारण है कि लोग भूमि के कानून की अवमानना करना शुरू कर देते हैं। इसलिये किसी भी विकास प्रक्रिया के लिये संसाधनों के संरक्षक के अधिकारों को ध्यान में रखना महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न: सिद्धांत और उसका परिवार उसके विवाह समारोह को लेकर बेहद उत्साहित थे, क्योंकि बहुत लंबे समय के बाद उनके परिवार में कोई विवाह हो रहा था। लेकिन जैसे ही सिद्धांत विवाह स्थल पर पहुँचा, उसने देखा कि वधु पक्ष द्वारा बुलाए गए बैंड में कई बाल मज़दूर शामिल थे। उत्साहित सिद्धांत अचानक एक अंतर्द्वंद्व झेलते सिद्धांत में बदल गया, क्योंकि एक श्रम आयुक्त होने के नाते यह उसका कर्तव्य था कि वह विधि के इस उल्लंघन को रोके। उसने इस पर मनन किया और एक नए बैंड की व्यवस्था करने, बैंड के मालिक को इस तरह के आचरण में संलग्न होने के लिये नोटिस देने और उसके विरुद्ध मामला दर्ज कराने, जैसे कई विकल्पों पर विचार किया। परंतु सिद्धांत यह सोचते हुए अंततः विवाह के लिये आगे बढ़ गया कि यह उसके जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण दिन को बर्बाद कर देगा।

(a) क्या सिद्धांत अपने आचरण में सही था?

(b) यदि आप सिद्धांत की जगह होते तो उसके द्वारा विचारित विकल्पों में से आपने किसका चयन किया होता?

(250 शब्द, 20 अंक)

Siddhant and his family were very excited about his marriage ceremony, as after a very long time a marriage was taking place in their family. But as soon as Siddhant reached marriage venue, he saw that the band arranged by the bride's side had many child laborers who were involved with the band. Excited Siddhant suddenly turned into a conflicted Siddhartha, as being a labor commissioner it was his duty to stop such violation of law. He pondered over it, and thought of many options like arranging a new band immediately, giving notice to the band owner for engaging in such conduct and filing a case against them. But, Siddhant ultimately proceeded with the wedding thinking that it will ruin the most important day in his life.

(a) Was Siddhant right in his conduct?

(b) If you would have been in place of Siddhant, amongs"k the options pondered by him what would have been your course of action?

उत्तर: निर्णय का आधार:

- पेशेवर नैतिकता बनाम व्यक्तिगत नैतिकता
- विधि का शासन
- नैतिक साहस
- बच्चों के अधिकार

उत्तर: (a) इस स्थिति को एक नैतिक दुविधा के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसमें व्यक्तिगत बनाम पेशेवर नैतिकता के बीच संघर्ष की स्थिति है। यहाँ नाबालिग बच्चों के हित भी सवालों के घेरे में हैं जिन्हें विद्यालय जाने के बजाय कार्य/मज़दूरी हेतु बाध्य किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, अपने कर्त्तव्य निर्वहन में चूक के साथ सिद्धांत सरकार द्वारा उसे सौंपी गई भूमिका के निर्वहन में भी असफल रहा।

किसी भी नैतिक दुविधा की स्थिति में कठोर निर्णय लेना नैतिक साहस का विषय है। अर्थात् कठिन परिस्थितियों में भी हम स्वयं की स्वार्थ सिद्धि के बजाय दूसरों के हितों को अधिक महत्त्व देते हैं। बाल मज़दूरी जैसे संवेदनशील मुद्दों पर मज़बूत निर्णय लेना हमारे अपने आनंद से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

इसके अतिरिक्त, सिद्धांत में दृढ़ विश्वास की कमी थी। वह अपने माता-पिता और वधू के परिवार से बात कर सकता था ताकि किसी और बैंड की व्यवस्था हो सके।

उत्तर: (b) यदि मैं उसकी जगह होता तो बैंड को नोटिस देने के विकल्प को अधिक उपयुक्त समझता; मैं अपनी परिणामनिरपेक्ष नैतिकता (Deontological Ethics) का पालन करता। इससे बाधारहित विवाह का उद्देश्य भी पूरा हो जाता और कानून के लक्ष्य की भी पूर्ति हो जाती।

प्रश्न: एक भारतीय शहर में अपशिष्ट निपटान और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के मामले में नगर निकाय के अधिकारियों के सुस्त रवैये को लेकर लोगों ने विरोध-प्रदर्शन किया। अधिकारियों के रवैये ने न केवल शहर की स्वच्छता को प्रभावित किया है, बल्कि यह कई प्रकार के रोगों, वायु प्रदूषण, प्रतिकूल व्यापार वातावरण आदि का कारण बन गया है। शहरों में साफ-सफाई और स्वच्छता पर कार्यरत एक गैर-सरकारी संगठन द्वारा एक जनहित याचिका दायर की गई। विषय की खेदजनक स्थिति को देखते हुए, न्यायालय ने नगर आयुक्त को शहर में अपशिष्ट प्रबंधन के लिये किये गए उपायों के संबंध में तीन माह के अंदर प्रगति रिपोर्ट देने का आदेश दिया है। मान लीजिये कि आप नगर आयुक्त हैं तो न्यायालय के आदेश पर अपनी प्रतिक्रिया की चर्चा कीजिये।

(250 शब्द, 20 अंक)

Lacklustre attitude of municipal authorities in garbage disposal and solid waste management in an Indian city has led to protest by people. This state of affair has not only affected the city's hygiene but has also become a cause of multiple types of diseases, air pollution, unfriendly business environment, etc. A PIL has been filed by an NGO working for cleanliness and hygiene

in cities. Seeing the sorry state of affairs, the court has ordered the City Commissioner to give a progress report within three months about the measures taken for proper disposal of garbage and solid waste management in the city. Suppose you are the City Commissioner then discuss your response to the court's order.

उत्तर:

न्यायालय के आदेश पर प्रतिक्रिया:

- **एक प्रारंभिक रिपोर्ट तैयार करना:** शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के उद्देश्य से नगर निगम द्वारा अब तक की जा रही कार्रवाई की प्रारंभिक रिपोर्ट और आने वाले समय में कार्यान्वित होने वाले योजनाबद्ध उपायों पर एक रिपोर्ट तैयार करना। इन्हें न्यायालय में प्रस्तुत किया जाएगा और साथ ही नगर निकाय की वेबसाइट पर अपलोड किया जा सकता है।
- **अगले तीन माह के लिये कार्ययोजना तैयार करना:** संबंधित विभाग प्रमुखों की एक बैठक बुलाई जाएगी और सभी संबंधित विभाग प्रमुखों से इनपुट लेकर कार्ययोजना तैयार की जाएगी।
- शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के उद्देश्य से राज्य सरकार से वित्तीय सहायता लेना और अपने संसाधन जुटाना।
- **जागरूकता निर्माण कार्यक्रम:** ठोस अपशिष्ट उत्पादन को कम करने के महत्त्व के बारे में लोगों को जागरूक किया जाएगा और उनके बीच स्वच्छता की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाएगा।
- **कार्य योजना के कार्यान्वयन की विस्तृत रिपोर्ट:** तीन माह के बाद शहर में उपयुक्त ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिये किये गए उपायों के विवरण के साथ एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार की जाएगी जिसे न्यायालय को सौंपा जाएगा।
- **सर्वोत्तम अभ्यासों का अनुकरण:** केरल के अलाप्पुझा शहर को वर्ष 2016 में यूनेप (UNEP) द्वारा विश्व के उन पाँच शहरों में चिह्नित किया गया जो अपने सतत्/संवहनीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन अभ्यासों के माध्यम से प्रदूषण पर नियंत्रण के लिये कार्यरत हैं। यह नगर नवंबर 2012 से 'निर्मल भवनम- निर्मल नगरम्' (Clean Homes, Clean City) नामक एक परियोजना को कार्यान्वित कर रहा है। नगर ने एक विकेंद्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली को अपनाया है और नगर के सभी 23 वार्डों में शत-प्रतिशत अपशिष्ट पृथक्करण (Segregation) पर बल दे रहा है। यहाँ के लगभग 80 प्रतिशत घरों में बायोगैस संयंत्र और विकेंद्रीकृत कंपोस्टिंग प्रणाली मौजूद हैं। न्यायालय के आदेश के पालन में इस मॉडल का अनुकरण किया जा सकता है।

चूँकि यह ऐसा विषय है जहाँ शहर निवासियों के व्यवहार परिवर्तन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, इसलिये नगर निकाय प्रशासन द्वारा की जा रही कार्रवाइयों से परिवर्तन आने में कुछ समय लगेगा। अनुकरणीय प्रेरणा/रोल मॉडलिंग (जैसे- प्रधानमंत्री स्वयं 'स्वच्छ भारत अभियान' को प्रोत्साहन दे रहे हैं), सिविल सोसायटी संगठन और एन.जी.ओ. लोगों के बीच व्यवहार परिवर्तन लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

प्रश्न: आप एक ज़िलाधिकारी के रूप में पदस्थ हैं। आपको अपने अधिकार क्षेत्र के एक गाँव की स्थिति के बारे में पता चलता है जहाँ की जनसंख्या रक्ताल्पता (एनीमिया) से पीड़ित है। एक परियोजना के तहत गाँव वालों को फोर्टिफाइड (पोषक तत्त्वों से युक्त) चावल उपलब्ध कराने की पहल की गई ताकि उन्हें पोषण प्रदान किया जा सके। किंतु गाँव वाले इस गलत धारणा के चलते कि ये चावल प्लास्टिक के हैं, इनका उपभोग करने से मना कर देते हैं। वहीं दूसरी तरफ ग्रामवासी वामपंथी विचारधारा से भी प्रभावित हैं और आपको यह भी पता चलता है कि नक्सलवादी ग्रामीणों की इस आम धारणा का प्रयोग अपने फायदे के लिये कर रहे हैं जिससे सरकार को जनता तक पहुँचना अधिक मुश्किल हो रहा है।

एक अन्य वैकल्पिक पहल के रूप में लोगों को आयरन की गोलियाँ उपलब्ध कराई गई लेकिन इसने भी ग्रामीणों के बीच एक अन्य गलतफहमी पैदा कर दी कि इन गोलियों के सेवन से गर्भस्थ शिशुओं के वजन में वृद्धि हो जाती है जो गर्भवती महिलाओं में प्रसव संबंधी जटिलताओं में वृद्धि का कारण बनती है। इस प्रकार यह पहल भी विफल साबित हुई।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are posted as a District Magistrate. You come to know about a situation in the village under your jurisdiction where the population is suffering from Anaemia. An initiative was taken to provide fortified rice to villagers in order to provide nutrition to them but villagers deny to eat them as they have the misconception of the rice being the plastic rice. On the other hand, the village is also influenced by Leftist movement and you get to know that naxalites are using this public perception for their own benefit, making it more difficult for the government to reach to the people. An alternate initiative was taken by providing iron tablets to people but it created another misconception among villagers that these tablets lead to more weight of babies in pregnant mothers leading to delivery complications. Thus, it also ended in failure.

(a) उपर्युक्त केस स्टडी में निहित विभिन्न मुद्दे कौन-से हैं?
What are the various issues involved in the above case study?

(b) नक्सलियों द्वारा प्रसारित गलत सूचनाओं के परिप्रेक्ष्य में आप आम लोगों की धारणाओं को कैसे बदलेंगे?
How will you change the perception of the people in the backdrop of spread of misinformation by the Naxalites?

उत्तर: (a) प्रस्तुत 'केस स्टडी' में विभिन्न हितधारक निम्नलिखित हैं-

- **गाँववाले:** रक्ताल्पता (एनीमिया) से पीड़ित व्यक्ति, गर्भवती महिलाएँ एवं नक्सलियों द्वारा गुमराह सामान्य ग्रामीण जनता।

- **नक्सली:** नक्सली अपने लाभ के लिये ग्रामीणों के बीच विद्यमान गलत धारणाओं का दुरुपयोग कर रहे हैं और सरकार के लिये जनता तक पहुँचना मुश्किल बना रहे हैं।
- **ज़िला प्रशासन:** ज़िला प्रशासन के पास हल करने के लिये विभिन्न समस्याएँ हैं, जिसके चलते वह ग्रामीण समुदाय में व्याप्त भ्रामक सूचनाओं को दूर करने के लिये पर्याप्त ध्यान नहीं दे पा रहा है।

भारत में विकास गतिविधियाँ कई कारकों से नकारात्मक रूप से प्रभावित हैं। इन कारकों में गरीबी, बेरोज़गारी, अशिक्षा व कुपोषण आदि प्रमुख हैं। नक्सलवाद इस तरह की समस्याओं के लिये ईंधन का काम करता है। उपरोक्त 'केस स्टडी' नक्सल प्रभावित क्षेत्र में व्याप्त विविध समस्याओं से संबंधित है। इस 'केस स्टडी में' 'फोर्टीफाइड चावल' व 'आयरन की गोलियों' के प्रयोग को लेकर स्थानीय जनता में फैली भ्रामक धारणाओं को दूर करना ज़िला प्रशासन के लिये चुनौतीपूर्ण कार्य बना हुआ है। नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्र होने के कारण ज़िला प्रशासन के लिये ग्रामीणों की सोच में बदलाव का कार्य और भी कठिन साबित हो रहा है। इस केस स्टडी में शामिल विविध मुद्दे निम्नलिखित हैं-

- **फोर्टीफाइड चावल के प्लास्टिक का चावल होने की भ्रामक धारणा:** गाँववासी एनीमिया से पीड़ित हैं जिसे दूर करने के लिये उन्हें फोर्टीफाइड चावल के रूप में पूरक पोषाहार उपलब्ध कराया जा रहा है, परंतु उन्होंने इसे प्लास्टिक से बना होने की बात कहकर लेने से इंकार कर दिया है।
- **आयरन की गोलियों के प्रयोग से गर्भवती महिलाओं में प्रसव संबंधी जटिलताएँ पैदा करने की भ्रामक धारणा:** ग्रामीण जनता में एनीमिया की समस्या को दूर करने के लिये आयरन की गोलियों के रूप में उपलब्ध कराए गए वैकल्पिक समाधान के संदर्भ में यह भ्रामक धारणा बैठ गई है कि ये गोलियाँ गर्भस्थ शिशुओं के वज़न में वृद्धि करती हैं, जिससे जन्म के समय स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएँ उत्पन्न हो सकती हैं, अत: ग्रामीणों ने इसे भी अपनाने से इनकार कर दिया है।
- **नक्सलियों द्वारा ग्रामीणों में फैली भ्रामक धारणाओं का अपने स्वार्थ के लिये दुरुपयोग करना:** वामपंथी विचारधारा और सामाजिक दबाव के माध्यम से नक्सली स्थानीय जनता को गुमराह कर रहे हैं।

उत्तर: (b) नक्सलियों द्वारा गलत सूचनाएँ फैलाने की पृष्ठभूमि में लोगों की धारणा बदलने का प्रयास-

ज़िला प्रशासन को ग्रामीण जनता तक सही सूचनाओं को पहुँचाने का हर संभव प्रयास करना चाहिये। फोर्टीफाइड चावल और आयरन की गोलियों के संदर्भ में ग्रामीणों को सही जानकारी देने के लिये निम्न कदम उठाए जा सकते हैं-

- **जनजागरूकता अभियान चलाना:** इसके लिये संबंधित क्षेत्र में फोर्टीफाइड चावल व आयरन की गोलियों से होने वाले लाभों को बताने के लिये जनजागरूकता कैंपों का आयोजन किया जा सकता है। इस संदर्भ में स्थानीय भाषा में सार्वजनिक रूप से वीडियो लेक्चर देकर अथवा सोशल मीडिया आदि के माध्यम से दिये जा सकते हैं। इस उद्देश्य के लिये नुक्कड़ नाटकों का भी सहारा लिया जा सकता है।
- **सामाजिक अनुनयन:** सामाजिक अनुनयन को लोगों के विश्वास एवं धारणाओं में बदलाव के एक उपकरण के रूप में प्रयोग करना।
- **पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप:** लक्षित समुदाय में सरकार की नीतियों का प्रचार-प्रसार करने के लिये गैर-सरकारी संगठनों और विशेषज्ञ निजी संस्थाओं का सहयोग लेना, जैसे-राष्ट्रीय पोषण मिशन के संदर्भ में देखा जा सकता है।
- **विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करना:** क्षेत्र-विशेष के विद्यालयों में विद्यार्थियों को फोर्टीफाइड चावल और आयरन की गोलियों से होने वाले लाभों के बारे में शिक्षा देना ताकि वे अपने स्वयं के परिवारों में फोर्टीफाइड चावल और आयरन की गोलियों के प्रयोग के संदर्भ में व्यवहारिक परिवर्तन ला सकें।
- **विश्वास बहाली तंत्र का निर्माण:** उपरोक्त संदर्भ में यह माना जा सकता है कि स्थानीय समुदाय और प्रशासन के मध्य विश्वास की कमी है। अत: निरंतर संवाद एवं संपर्क के माध्यम से प्रशासन को विश्वास बहाली के उपाय करने चाहिये।
- **प्रशासन को क्षेत्र में नक्सली समस्या के समाधान का प्रयास करना चाहिये:** इसके लिये पुलिस बल का आधुनिकीकरण, भूमि चकबंदी कानूनों का न्यायपूर्ण प्रवर्तन एवं नक्सल प्रभावित क्षेत्र में सरकार द्वारा प्रदान की गई धनराशि का अधिकतम लाभ के लिये प्रयोग आदि उपाय अपनाए जा सकते हैं।
- इसके अतिरिक्त स्थानीय समुदाय के उन लोगों को जो फोर्टीफाइड चावल और आयरन की गोलियों के उपभोग के लिये तैयार हो जाते हैं तो कुछ अतिरिक्त खाद्यान्न या मौद्रिक लाभ प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार समस्या का अल्पकालीन समाधान किया जा सकता है।

उपरोक्त उपायों के अलावा स्थानीय पंचायतों, आंगनवाड़ियों, स्वयं सहायता समूहों और आदिवासी नेताओं का सहयोग स्थानीय समुदाय के लोगों को सही दिशा में ले जाने के लिये लिया जा सकता है ताकि वे लंबे समय के लिये ऐसी गलत धारणाओं से मुक्त होकर व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से अपना विकास करने में स्वयं सक्षम हो सकें।

प्रश्न: एक महिला अपने पुरुष साथी के साथ लिव इन रिलेशनशिप में थी। उसने अपने साथी द्वारा शादी का झाँसा देकर पिछले पाँच सालों से लगातार यौन उत्पीड़न एवं बलात्कार किये जाने की शिकायत पुलिस के पास दर्ज कराई। पुलिस द्वारा की गई प्राथमिक जाँच में यह पाया गया कि ये आरोप झूठे हैं तथा ये दंपत्ति आपसी मतभेद होने से पूर्व खुशहाल जीवन जी रहे थे, जिससे पुलिस को ये आरोप निराधार लगे। ऐसे में उस महिला ने राज्य महिला आयोग में शिकायत दर्ज करवाते हुए यह आरोप लगाया कि पुलिस द्वारा उसे न्याय नहीं मिला तथा पितृसत्तात्मक मानसिकता के के चलते पुलिस ने उसके प्रति

भेदभाव किया है। उसने महिला आयोग से न्याय की अपील की है। आप राज्य महिला आयोग की चेयरपर्सन हैं।

(250 शब्द, 20 अंक)

A woman was in a live in relationship with her male partner. She complained to the police of sexual harassment and rape continously for last five years in (on) the pretext of marriage by her partner. The police on prima facie investigation found out that the allegation is false and the couple was living happily until some internal feud developed that led to these baseless allegations. The woman complained to the State Commission for Women and alleged that she did not get justice from the police and they were biased against her due to patriarchal mindset. She demands justice from the Women Commission. You are the chairperson of the State Commission for Women.

(a) ऐसी परिस्थिति में आप कौन से कदम उठाएंगे?
What steps will you take in such a situation?

(b) क्या आपको लगता है कि लिव इन रिलेशनशिप भारतीय संस्कृति एवं पारंपरिक मूल्यों के खिलाफ है?
Do you think that live in relationships are against Indian culture and traditional values?

उत्तर: यह केस स्टडी एक महिला द्वारा अपने लिव-इन पार्टनर पर बलात्कार और यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए जाने से संबंधित है जिसके साथ वह पिछले पाँच वर्षों से रह रही थी।

- प्रथमदृष्टया यह मामला रिश्तों में खटास का लग रहा है, हालाँकि यह मामला एक ऐसे रिश्ते में दोनों पक्षों की सुभेद्य स्थिति को भी प्रदर्शित करता है जिसके प्रति कानून और समाज बहुत ग्रहणशील नहीं हैं। ऐसे में दोनों पक्षों में से किसी एक के द्वारा न्याय की गुहार लगाने पर यह तय कर पाना कठिन है कि वास्तव में दोषी कौन है। फिर भी, राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष के रूप में मेरी महती ज़िम्मेदारी है कि पीड़ित पक्ष को न्याय मिले।
- केस स्टडी में संबंधित हितधारक:
  - पुरुष लिव-इन पार्टनर
  - महिला लिव-इन पार्टनर
  - पुलिस अधिकारी
  - राज्य महिला आयोग
  - व्यापक अर्थों में समाज

इस मामले में शिकायकर्त्ता द्वारा लिव-इन पार्टनर द्वारा यौन उत्पीड़न एवं पुलिस अधिकारियों द्वारा कर्त्तव्य की अवहेलना के संदर्भ में लगाए गए आरोपों की सत्यता की जाँच करना राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष के रूप में मेरा प्राथमिक कदम होगा।

उत्तर: (a) इस संबंध में उठाए जाने वाले कदम निम्नलिखित हैं-

- पहले मैं, महिला द्वारा लिव-इन पार्टनर और पुलिस अधिकारियों पर लगाए गए आरोपों की सत्यता की जाँच करूंगी।
- मैं पुरुष लिव-इन पार्टनर से बात कर उसका पक्ष सुनूंगी और इस प्रकार मिले तथ्यों के आधार पर यह तय करने का प्रयास करूंगी कि महिला द्वारा लगाए गए आरोपों में सत्यता कितनी है।
- मैं पुलिस अधिकारियों से अनुरोध करूंगी कि वे प्रारंभिक जाँच रिपोर्ट की प्रतिलिपि उपलब्ध कराएँ जिससे इसकी जाँच की जा सके कि पुलिस ने अपनी जाँच स्तवंत्र और निष्पक्ष तरीके से की है अथवा नहीं।
- मैं इस मुद्दे की संवेदनशीलता को देखते हुए संबंधित क्षेत्र के पुलिस अधिकारियों को नए सिरे से जाँच का निर्देश दूँगी और यह सुनिश्चित करूंगी कि इस जाँच दल में महिला पुलिसकर्मी भी सम्मिलित हों।
- इस बीच पीड़ित महिला को भावनात्मक समर्थन और कानूनी मार्गदर्शन प्रदान करने का प्रयास करूंगी।

उत्तर: (b) भारतीय संस्कृति में विवाह को एक धार्मिक संस्कार माना जाता है जिसमें पुरुष और महिला शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये स्थाई बंधन में बँधे होते हैं। आमतौर पर भारतीय समाज में लिव-इन रिलेशनशिप को स्वीकार्य नहीं किया जाता है। इसे अभी तक हमारी संस्कृति में पूरी तरह आत्मसात् नहीं किया गया है जिसकी वजह से ऐसे रिश्ते में रहने वाले पुरुष व महिला को सामाजिक अस्वीकृति झेलनी पड़ती है। यदि आगे चलकर लिव-इन में रहने वाले पुरुष व स्त्री के आपसी संबंध खराब हो जाएँ तो उनके लिये विवाह की स्थापित परंपरा के तहत अपना घर दुबारा बसाना कठिन हो जाता है।

लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर सामाजिक अस्वीकृति एवं कलंक के चलते अलगाव की स्थिति में यह महिला के लिये अधिक कष्टकारी होता है। हालाँकि, समय के साथ लिव-इन रिलेशनशिप को लेकर समाज के दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है और शनैः-शनैः ही सही, समाज ने इन रिश्तों को स्वीकार करना प्रारंभ कर दिया है। इस तरह के रिश्तों के संदर्भ में उच्चतम न्यायालय ने भी अपने निर्णय में कहा है कि जब तक अन्यथा साबित नहीं होता तब तक लंबे समय से लिव-इन रिलेशनशिप में रहने वाले दंपतियों को कानूनी रूप से विवाहित माना जाएगा। लिव-इन रिलेशनशिप के बारे में इतना ज़रूर कहा जा सकता है कि इन्हें लेकर धीरे-धीरे युवाओं के मध्य स्वीकार्यता बढ़ रही है। जहाँ तक कानून की बात है तो कानून के अनुसार बगैर विवाह किये साथ रहना अपराध नहीं है बल्कि यह जीवन के अधिकार का एक हिस्सा है।

आज, दुनिया के कई पारंपरिक समाज लिव-इन रिश्तों का विरोध कर रहे हैं। लेकिन हमें यह समझना होगा कि भावनात्मक लगाव को कभी भी बल प्रयोग से दबाया नहीं जा सकता है और ऐसे रिश्तों में व्यक्ति के पास निर्णय लेने एवं चुनाव करने की स्वतंत्रता होनी चाहिये। यदि युवा लिव-इन रिश्तों की ओर आकर्षित हो रहे हैं तो समाज के विभिन्न हितधारकों को बदलते परिवेश और परंपरा के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करना चाहिये। दूसरी ओर, ऐसे रिश्ते में प्रवेश करने वाले लोगों से भी अपेक्षा है कि वे एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदार रवैया प्रदर्शित करें।

सीधे तौर पर इन रिश्तों को अस्वीकार्य करने के बजाय हमें ऐसे दपंतियों के लिये एक 'सपोर्ट मेकैनिज़्म' विकसित करने पर ध्यान देना चाहिये जिससे आने वाले समय में ऐसे जोड़े सामाजिक रूप से धारणीय एवं स्थायी रिश्ता बनाने की दिशा में आगे बढ़ सकें।

प्रश्न: एक शहर के नगर निगम द्वारा सार्वजनिक परिवहन अवसंरचना के विकास हेतु पेड़ों की कटाई की अनुमति दी गई है। कंक्रीट के जंगल युक्त ज़िले में क्षेत्र एक्स (x) एक हरित पट्टी है। ऐसे में बढ़ती पर्यावरणीय जागरूकता के प्रभाव में लोग सड़कों पर उतर आए हैं ताकि पर्यावरण संरक्षण के संदेश को फैलाया जा सके तथा पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के खिलाफ लोग खड़े हो सकें। जबकि नगर निगम का मत है कि वहनीय सार्वजनिक परिवहन अवसंरचना के विकास से लोग निजी वाहनों के उपयोग में कटौती करेंगे जिससे अंततः कार्बन फुटप्रिंट कम हो जाएगा। इसी के साथ प्रदर्शनकर्त्ताओं का कहना है कि यह क्षेत्र प्राकृतिक रूप से बाढ़ क्षेत्र है, जिसमें पेड़ों के कटाव एवं निर्माण गतिविधियों के चलते मानसून के दौरान स्थिति और बदतर हो जाएगी। पेड़ों की कटाई के खिलाफ व्यापक जन विरोध को देखते हुए राज्य सरकार ने इस मामले पर गौर करने एवं परियोजना हेतु वैकल्पिक सुझाव देने के लिये एक समिति का गठन किया है। आपको इस समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया है। जनता की चिंताओं के समाधान एवं पर्यावरणीय प्रभाव को सीमित करने हेतु आप सरकार से किस प्रकार की कार्रवाई की सिफारिश करेंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

The municipal corporation of a city approved felling of trees to develop a public transport infrastructure. Amidst the concrete jungle of the district, an area X is a treasured green patch. With increasing environmental awareness, people have come on the streets to spread the message of conservation and stand against the indiscriminate felling of trees. The Municipal Corporation is of the view that building viable public transport infrastructure will dissuade people from using private vehicles and ultimately reducing the carbon footprint. Meanwhile activists say it is the sole surviving natural floodplain of the area, whose reclamation through construction and felling of trees would lead to greater inundation during the monsoon. The state government alarmed by widespread public protest against the felling of trees has constituted a committee to look into the matter and suggest alternatives for this project. You are appointed as the chairperson of this committee, What course of action you will recommend to the government for assuaging public concern and limiting environmental impact?

उत्तर:

हितधारक

- राज्य सरकार
- शहर का नगर निगम
- पर्यावरण कार्यकर्त्ता
- समिति के अध्यक्ष
- व्यापक अर्थों में सामान्य जनता

केंद्रीय मुद्दा

प्रस्तुत केस स्टडी में केंद्रीय मुद्दा यह है कि पर्यावरण से समझौता किये बिना सामाजिक-आर्थिक विकास कैसे सुनिश्चित किया जाए। इस तरह के संतुलन को कायम रखना किसी भी सरकार या दुनिया के किसी भी देश के लिये एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहा है। यहाँ शामिल समग्र चिंता यह है कि पेड़ों की कटाई से जैव विविधता की क्षति हो रही है और अन्य पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में लोगों की चिंताओं का निराकरण करते हुए, निजी वाहनों के उपयोग को कम करने वाले सार्वजनिक परिवहन के लिये बुनियादी ढाँचा निर्माण की विकासात्मक परियोजनाओं को कैसे आगे बढ़ाया जाए तो अतत: शहर में कार्बन फुटप्रिंट को कम करेगी।

समिति के अध्यक्ष के रूप में उचित कार्रवाई

- समिति के अध्यक्ष के रूप में मैं सबसे पहले इस मामले में शामिल सभी हितधारकों के साथ एक बैठक बुलाऊँगा और उनके दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करूँगा।
- बाढ़ संभावित क्षेत्र में सार्वजनिक परिवहन अवसंरचना के पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करने के लिये एक टास्क फोर्स का गठन करूँगा।
- यदि पर्यावरण प्रभाव आकलन टास्क फोर्स परियोजना का समर्थन करती है तो मैं परियोजना पर आगे बढ़ने के लिये सरकार से अनुरोध करूँगा और स्थानीय आबादी को यह विश्वास दिलाऊँगा कि परियोजना के कारण काटे गए पेड़ों के एवज में क्षेत्र में क्षतिपूरक वनीकरण वृहद् स्तर पर किया जाएगा।
- हालाँकि यदि टास्क फोर्स किसी भी तरह से परियोजना का विरोध करती है तो मैं सरकार को परियोजना का काम रोक देने की सलाह दूँगा और किसी अन्य क्षेत्र की पहचान का प्रयास करूँगा जहाँ परियोजना पुन: शुरू की जा सके। इस संदर्भ में वैकल्पिक स्थान का चयन करते समय पहले ही पर्यावरण प्रभाव आकलन कर संबंधित अध्ययन क्षेत्र के निवासियों के अवलोकनार्थ सार्वजनिक पोर्टल पर उपलब्ध कराना सुनिश्चित करूँगा।

इसके अलावा, उपरोक्त तात्कालिक उपायों की सिफारिश करने के साथ ही मैं आने वाले समय में इस तरह के मुद्दों से निपटने के लिये कुछ अन्य उपायों का सुझाव दूँगा, जिनका विवरण निम्नलिखित है-

- मैं राज्य सरकार को संवृद्धि और विकास को बढ़ावा देने के लिये 'हरित अर्थव्यवस्था' अपनाने का सुझाव दूँगा। इससे मानव कल्याण और सामाजिक समता से सुधार सुनिश्चित हो सकेगा, साथ ही पर्यावरणीय जोखिम और पारिस्थितिक संकट को कम किया जा सकेगा।

- इस संबंध में कुछ वैकल्पिक उपाय सौर ऊर्जा, जैव ईंधन, हाइड्रोजन फ्यूल सेल संचालित वाहनों व इलेक्ट्रिक वाहनों आदि को अपनाया जा सकता है जो कार्बन फुटप्रिंट कम करने में मदद कर सकते हैं।
- यदि राज्य सरकार धारणीय विकास मॉडल को अपनाने पर ध्यान देती है तो भविष्य में ऐसे विवादास्पद मुद्दों से बचा जा सकता है। इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास मॉडल को शहरी विकास योजनाओं में शामिल किया जा सकता है।
- हमारे संविधान में भी राज्य और नागरिक दोनों को पर्यावरण को संरक्षित रखने के लिये निर्देशित किया गया है। अनुच्छेद 48A राज्य को पर्यावरण की रक्षा और सुधार की ज़िम्मेदारी देता है और अनुच्छेद 51A (g) पर्यावरण की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य सुनिश्चित करता है।
- वर्तमान समय में धारणीय विकास हमारी आवश्यकता है, अत: हम सबकी सामूहिक व व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी है कि संपूर्ण मानवता के लिये प्रकृतिप्रदत्त संसाधनों का इस प्रकार प्रयोग करें कि वे भावी पीढ़ी के लिये भी उपलब्ध रहें और विकास के नाम पर एक ही पीढ़ी में समाप्त न हो जाएँ।

प्रश्न: केंद्रीय सिविल सेवा (आचरण) नियमावली 1964, जो देश के सभी लोक सेवकों पर लागू होता है, औपनिवेशिक मानसिकता को प्रतिबिंबित करते हैं। लोक सेवक अब अपनी भूमिकाओं और ज़िम्मेदारियों को लेकर लंबे समय तक अबोध बालकों जैसे अनभिज्ञ नहीं रहना चाहते। ये नियम तब बनाए गए थे जब सरकार निर्विवाद रूप से कमांड एंड कंट्रोल दृष्टिकोण को अपनाती थी जहाँ किसी आलोचना की कोई जगह नहीं थी एवं कर्मचारियों से सार्वभौमिक एवं निर्विवाद आज्ञाकारिता की अपेक्षा की जाती थी। यह कमांड एंड कंट्रोल तंत्र अब समाप्त हो चुका है किंतु अनुशासनात्मक एवं निगरानीयुक्त दृष्टिकोण अभी भी विद्यमान है। 50 वर्ष पूर्व निर्धारित इन नियमों को वर्तमान बदली परिस्थितियों में बेरहमी से लागू नहीं किया जा सकता। इन पूर्वदिनांकित नियमों को इतिहास के कूड़ेदानों में डाल देना चाहिये तथा इसकी जगह स्वविनियमन, जवाबदेही एवं पारदर्शिता के आधार पर नई नैतिक संहिता लाई जानी चाहिये। (250 शब्द, 20 अंक)

(a) क्या आप इस मत से सहमत हैं कि सिविल सेवकों की भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध देश की लोकतांत्रिक चरित्र के विरोधाभासी है?

(b) क्या आपको लगता है कि सिविल सेवाओं को नियंत्रित करने वाले नियमों में सुधार की आवश्यकता है?

The Central Civil Services (Conduct) Rules, 1964, which apply to all public servants in the country, are reflective of a colonial mindset. Civil servants no longer want to be treated as unruly kids ignorant of their roles and responsibilities. These rules were framed when the government's philosophy was dominated by an overwhelming command-and-control attitude that brooked no criticism and demanded uniform and unquestioning obedience from all its employees. This command and control structure has since been dismantled, but the surveillance and disciplining attitude still remains intact. A set of rules framed 50 years ago cannot be applied mindlessly to situations that are now vastly different. These dated rules must be consigned to the dustbin of history and replaced by a new code of ethics based on self-regulation, accountability, and transparency.

(a) Restrictions on freedom of speech and expression of civil servants is contradictory to democratic ethos of the country. Do you agree?

(b) Do you think there is a need for reforms in rules governing civil services?

उत्तर (a): भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संविधान द्वारा प्रदत्त प्रमुख मौलिक अधिकारों में से एक है। प्रजातंत्र में जहाँ जनता द्वारा शासन किया जाता है वहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अत्यधिक महत्त्वपूर्ण होती है। वस्तुत: इसे पूर्णत: लागू नहीं किया जा सकता। भारतीय समाज में विद्यमान विशाल विविधता को देखते हुए इस पर युक्तियुक्त निर्बंध आरोपित किये गए हैं।

इस प्रकार सिविल सेवकों की भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लगाए गए युक्तियुक्त निर्बंधों को निम्नलिखित आधारों पर अलोकतांत्रिक घोषित नहीं किया जा सकता-

- सिविल सेवकों पर लगाए गए युक्तियुक्त निर्बंध सेवा में अनुशासन को बनाए रखने, कर्मचारियों द्वारा अपनी क्षमताओं का अनुकूलतम प्रयोग करते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने तथा सरकारी हितों एवं प्रतिष्ठा की रक्षा करने हेतु लगाए जाते हैं।
- सिविल सेवक किसी भी सरकारी कदम की सकारात्मक आलोचना कर सकते हैं किंतु किसी नीति को पूर्णतया नकारने से सरकारी संस्थाओं पर से जनता का विश्वास समाप्त हो सकता है।
- सिविल सेवक अपने कार्यकाल की अवधि के दौरान नीति-निर्माण का हिस्सा होने के साथ इस नीति से संबंधित अत्यधिक महत्त्वपूर्ण जानकारी को सार्वजनिक नहीं कर सकते।
- कभी-कभी अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के कारण सिविल सेवक किसी नीति से असहमत हो सकते हैं। सिविल सेवक अपने कार्यकाल के दौरान विभिन्न विचारधाराओं के नेताओं के अधीन कार्यरत होते हैं किंतु उनका व्यक्तिगत राजनीतिक झुकाव राजनेताओं के साथ उनके संबंधों के मार्ग में बाधा नहीं बनना चाहिये।

वस्तुत: सरकारें अपने अधिकारियों को अच्छे आचरण में रखने हेतु नियम एवं कानून बनाती हैं, इन नियमों में से कुछ का विकास अनुशासन एवं आत्मसंयमित लोकतंत्र में लोगों का विश्वास बना रहे, इसलिये किया जाता है। समाज के व्यापक हित हेतु जनता एवं उसके सेवकों के मध्य एक महीन अंतर बना रहना चाहिये।

उत्तर: (b) **सिविल सेवाओं को प्रबंधित करने वाले विनियमों में सुधार की आवश्यकता:**

सिविल सेवाएँ सरकारी तंत्र को सुचारु बनाए रखने हेतु अत्यधिक आवश्यक हैं। औपनिवेशिक काल से ही भारत में सिविल सेवाएँ 'स्टील फ्रेम' की भाँति विद्यमान हैं। भारत में बड़े पैमाने पर नौकरशाही का संचालन करने वाले नियम यह सुनिश्चित करते हैं कि अधिकारी गोपनीय सूचना को सार्वजनिक न करें, न ही सरकारी नीतियों की आलोचना करें साथ ही राजनीतिक रूप से तटस्थ रहें हालाँकि वर्तमान समाज में उत्तरोतर बढ़ती प्रगतिशीलता समाज को खुला एवं पारदर्शी बना रही है। ऐसे में इन नियमों का महत्त्व धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। प्रगतिशील समाज इस ढाँचे को लोकतांत्रिक मूल्यों में उपस्थित जड़ता के प्रतीक की भाँति मानता है।

इस संदर्भ में सिविल सेवा आचरण संहिता में सुधार सुशासन हेतु आवश्यक है, सुधारों का उद्देश्य सिविल सेवाओं को एक गतिशील, कुशल एवं जवाबदेहीपूर्ण तंत्र के रूप में पुनर्स्थापित करना होना चाहिये। सिविल सेवाओं की सुपुर्दगी लोकाचार में पारदर्शिता के मूल्यों का विकास, तटस्थता तथा निष्पक्षता का विकास करती है।

इस प्रकार नौकरशाही में नवाचार, अधिक खुले विचारों एवं पारदर्शी कार्य-संस्कृति के विकास हेतु सुधार आवश्यक हैं।

प्रश्न: एक महानगर में प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है। नगर के चारों ओर अवस्थित गाँवों के कृषकों द्वारा धान की फसल कटाई के पश्चात् उसके अपशिष्टों को जलाना, इस पर्यावरणीय आपदा का एक महत्त्वपूर्ण कारण है। सरकार द्वारा इस पर लगाए गए प्रतिबंधों एवं पराली निपटान हेतु आवश्यक मशीनों पर सब्सिडी देने की शुरुआत करने के बावजूद फसल अपशिष्टों का दहन बिना किसी रोक-टोक के जारी है। मशीनों के प्रति किसानों की उदासीनता का प्रमुख कारण उनकी यह धारणा है कि इन हैप्पी सीडर जैसी मशीनों के प्रयोग से फसल उत्पादन में निरंतर गिरावट आती है। हाल ही में राज्य उच्च न्यायालय द्वारा राज्य की राजधानी के आसपास के ज़िलों में प्रतिबंध आदेशों के कड़े क्रियान्वयन के लिये कहा गया है।

आप इन ज़िलों में से एक ज़िले के ज़िलाधिकारी हैं और इस प्रदूषणकारी गतिविधि को समाप्त करने हेतु प्रतिबद्ध हैं। हालाँकि इस मुद्दे का राजनीतिकरण हो जाने की वजह से आपके द्वारा किये गए प्रयास को ज़मीनी स्तर पर वांछित सफलता नहीं मिल पा रही है। अब आप पर स्थानीय नेताओं द्वारा दवाब बनाया जा रहा है कि आप इस सीजन में प्रतिबंध आदेशों की अनदेखी कर कोर्ट को भ्रामक आँकड़े प्रस्तुत करें अन्यथा वे चुनाव में समर्थन खो देंगे।

यद्यपि आप पराली जलाए जाने के खिलाफ हैं लेकिन वास्तव में आप कृषकों की मनोदशा के प्रति भी सहानुभूति रखते हैं। इस ज़िले में हिंसक कृषक आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी रही है। आप इस घटना से परिचित हैं और इस राजनीतिक रूप से सक्रिय माहौल में हिंसा या आंदोलन की किसी भी अप्रिय घटना से बचना चाहते हैं। (250 शब्द, 20 अंक)

Pollution is severely affecting the health of people in a metropolitan city. One of the major causes for this environmental calamity is widespread stubble burning by farmers in the surrounding regions after harvesting paddy crop. Despite an outright ban imposed by the government and introduction of subsidy packages for buying advance machines to dispose stubble, stubble burning remains unabated. The cause for farmers' indifference towards machines is the belief that use of machines like happy seeder leads to fall in the output of successive crops. Recently, the state High Court has called for a stringent implementation of the ban order in the neighbouring district of state capital. You are the District magistrate of one of these districts and want to get rid of this polluting activity. However, your efforts are not yielding desirable results on the ground because of the politicization of this practice. Now, the local leaders are pressuring you to ignore the ban for this season and send deceptive data to the High Court otherwise they will lose support in the election.

Although, you are against stubble burning but you genuinely sympathize with the farmers for their predicaments. The district also has a history of farmers movements which were at times violent. You are well aware of this and want to avoid any untoward incident of violence or agitation in this politically charged atmosphere.

(a) इस केस स्टडी में निहित विभिन्न मुद्दों की पहचान कीजिये।
Identify the various issues involved in the case.

(b) संबंधित क्षेत्र के ज़िलाधिकारी के रूप में, इस मुद्दे को सुलझाने हेतु आप किस प्रकार की कार्रवाई करेंगे?
As a District Magistrate of the concerned area, what will be your course of action in resolving the issue?

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी प्रदूषण के विशेष पर्यावरणीय मुद्दे के विषय में है, जिसमें कई हितधारक एवं संबंधित मुद्दे शामिल हैं। संबंधित क्षेत्र के ज़िला मजिस्ट्रेट के रूप में मेरी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी यह है कि फसल अपशिष्ट जलाने से संबंधित सरकार के निर्देशों को अमल में लाया जाए ताकि इसके कारण बढ़ते प्रदूषण से तत्काल राहत सुनिश्चित की जाए।

शामिल हितधारक समूह

- जनता- जो प्रदूषण से पीड़ित है।
- किसान- जो फसल अपशिष्ट जला रहे हैं किंतु फसल अपशिष्ट जलाने के मामले में उन्हें वैकल्पिक विकल्प उपलब्ध नहीं होने के कारण पीड़ित भी हैं।
- उच्च न्यायालय - जिसने अधिकारों के संरक्षक के रूप में फसल अपशिष्ट के जलाने पर प्रतिबंध लगाने के निर्देश दिये हैं।
- सरकार - जो जनता तथा किसान दोनों को सीधे उपचारात्मक उपाय प्रदान करने में शामिल है।
- स्थानीय नेता- जो अपने व्यक्तिगत लाभ के लिये मुद्दे का राजनीतीकरण कर रहे हैं।
- ज़िला मजिस्ट्रेट- जो सरकार द्वारा दिये गए आदेशों को पूरा करने हेतु उत्तरदायी हैं।

उत्तर: (a) केस स्टडी में शामिल मुद्दे:

- फसल अपशिष्ट जलाने से शहर में बढ़ते प्रदूषण की जाँच।
- सरकार के फसल अपशिष्ट जलाने के संबंध में लगाए गए प्रतिबंध के आदेश का त्रुटिपूर्ण कार्यान्वयन।
- एक सार्वजनिक अधिकारी को सार्वजनिक आदेशों को सही तरीके से पूरा करने में आनेवाली बाधा।
- किसानों की शिकायतों का निवारण करना।
- किसानों को उपलब्ध विकल्प तथा फसल अपशिष्ट जलाने के परिणामों से अवगत कराना।
- सार्वजनिक कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखना।

उत्तर: (b) संबंधित क्षेत्र के ज़िलाधिकारी के रूप में मैं इस मुद्दे को हल करने के लिये अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक उपायों के रूप में कार्रवाई के निम्नलिखित तरीकों को अपनाऊँगी-

1. अल्पकालिक उपाय:

- मेरा तत्कालिक कदम एक टास्क फोर्स का गठन करना होगा, जो ज़िले में फसल अपशिष्ट जलाने की जाँच करेगी तथा सरकारी आदेश का उल्लंघन करने वाले को कानूनी रूप से दंडित किया जाएगा।
- एक दस्तावेज़ तैयार करके राज्य में पर्यावरण मंत्रालय से संबंधित सचिव के समक्ष फसल अपशिष्ट जलाने से उत्पन्न खतरनाक स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- क्षेत्र के स्थानीय राजनीतिक नेताओं को एक निर्देश जारी करना जो उन्हें उच्च न्यायालय की सलाह से अवगत कराएगा।
- कृषक समुदाय को आमंत्रित कर ग्राम पंचायतों के माध्यम से उन्हें सरकार के सब्सिडी कार्यक्रमों के विषय में अवगत करना। साथ ही उन्हें फसल अपशिष्ट जलाने से उत्पन्न दुष्प्रभावों के बारे में भी बताया जाएगा।
- चूँकि संबंधित क्षेत्र में कृषक आंदोलनों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि हिंसक रही है, अत: किसी भी संभावित दुर्घटना को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त सुरक्षा बलों को स्टैंडबाय हेतु बुलाना।

2. दीर्घकालिक उपाय:

- दीर्घावधिक उपाय हेतु मैं फसल अपशिष्ट को आय में परिवर्तित करने वाले उपायों को अपनाऊँगी।
- फसल अपशिष्ट का उपयोग पशु चारे के रूप में करने के लिये किसानों को जागरूक करूँगी। जो किसानों को फसल अपशिष्ट नहीं जलाने के लिये एक आर्थिक प्रोत्साहन देगा।
- मैं राइस बायोपार्क को स्थापित करने का प्रयास करूँगी, चूँकि राइस बायोपार्क फसल अपशिष्टों का उपयोग कर कागज़, कार्डबोर्ड तथा पशु आहार आदि का निर्माण किया जा सकता है। अत: किसान फसल अपशिष्टों को आय एवं रोज़गार में बदल सकेंगे।
- किसानों को फसल अपशिष्ट प्रबंधन मशीनों का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करूँगी।
- फसल अपशिष्ट को नियंत्रित करने के अलावा मैं सड़क व मिट्टी की धूल, निर्माण तथा विध्वंसक गतिविधियों, बायोमास जलाना, वाहनों से होने वाला उत्सर्जन, औद्योगिक गतिविधियाँ जैसे प्रमुख प्रदूषण स्रोतों को भी कम एवं नियंत्रित करने का प्रयास करूँगी।
- टेलीविज़न, मीडिया, विडियों रिकॉर्डिंग, रेडियो तथा ग्राम पंचायतों के माध्यम से निर्देश प्रसारित करवाऊँगी। ताकि प्रत्येक किसान तक संदेश पहुँच सके।

कुल मिलाकर, एक ज़िलाधिकारी के रूप में मेरा यह कर्तव्य एवं जिम्मेदारी है कि मैं इस मुद्दे को संवेदनशीलता और करुणा के साथ उठाऊँ क्योंकि इसमें न केवल पर्यावरण संबंधी चिंताएँ निहित हैं वरन् किसानों से संबंधित मुद्दे भी शामिल हैं।

प्रश्न: अमृत देश के एक वाणिज्यिक क्षेत्र में राजस्व अधिकारी के रूप में पदस्थ है। अपने पेशेवर जीवन में उसका रिकॉर्ड बेदाग रहा है। हालाँकि ईमानदारी के नकाब के पीछे वह एक बेईमान व्यक्ति है जो कि भ्रष्टाचार के कई मामलों में शामिल रहा है। वह व्यापारियों के कर अनुपालन संबंधी अनियमितताओं का पता लगाकर, उनके निपटान हेतु बाद में उन पर दबाव बनाता है। उसके संगठन में यह एक प्रचलित तकनीक है और इसमें संगठन के प्रमुख पदानुक्रमिक अधिकारी भी शामिल हैं। ऐसे ही एक केस जिसमें वह सम्मिलित था उसमें पीड़ित, जो कि एक बड़ी रेस्तरां श्रृंखला का मालिक था ने आत्महत्या कर ली। उसने सुसाइड नोट में अपने व्यक्तिगत कारणों के साथ-साथ कर अधिकारियों को भी अपनी आत्महत्या के लिये ज़िम्मेदार ठहराया है। उसके सुसाइड नोट को पढ़ने और उसके व्यक्तिगत जीवन का मीडिया में कवरेज होने से घटना का उक्त अधिकारी के ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा है। अब उसमें

स्वयं के प्रति घृणा भाव विकसित हो गया है और वह अपने पिछले कृत्यों के कारण अवसादग्रस्त है। आप भी उसी विभाग में कार्यरत हैं और उसके उच्चस्थ तथा घनिष्ठ मित्र भी हैं। एक दिन वह अपने पिछले कृत्यों को स्वीकार करते हुए इस स्थिति से निपटने हेतु आपसे सहायता के लिये अनुरोध करता है।

एक उच्चस्थ अधिकारी और घनिष्ठ मित्र होने के नाते इस मामले में आप अमृत को क्या सलाह देंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

Amrit is posted as a revenue officer in one of the commercial hubs of the country. In his professional career he has had an unblemished record. However, behind this veil of honesty, he is an unscrupulous man who has been involved in various cases of corruption. His modus operandi involves planting cases against business professionals by finding irregularities in their tax statements and later harassing them for settling the case. In his organisation it is a prevalent technique and officers irrespective of the organisational hierarchy are involved in this. In one of such case, where he was involved, the victim, who owned a big restaurant chain, committed suicide. In his suicide letter apart from the personal reasons, he has also blamed the tax officials for abetting him to do so. Reading his suicide letter and coverage in the media about his personal life has imapcted the revenue officer deeply. Now he has developed a kind of revulsion for himself and is depressed over his past acts. You are posted in the same department as his immediate senior and also happens to be his close friend. One day he approaches you confessing his past deeds and also requests you to help him in overcoming this situation.

What would you suggest Amrit in this case given that you happen to be his immediate senior as well as his close friend?

उत्तर: प्रमुख हितधारक:

- राजस्व अधिकारी अमृत।
- अमृत के वरिष्ठ अधिकारी के रूप में मैं स्वयं।
- राजस्व विभाग।
- वह व्यापारी जिसने आत्महत्या कर ली।
- सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण 'जनता'।

ट्रांसपैरेंसी इंटरनेशनल के अनुसार भ्रष्टाचार को 'निजी लाभ के लिये सत्ता के दुरुपयोग' के रूप में परिभाषित किया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार भ्रष्टाचार विभिन्न रूपों एवं डिक्रियो में होता है अर्थात् उपयोग के प्रभाव के अनुसार भ्रष्टाचार का संस्थागत स्वरूप न केवल वित्तीय बल्कि गैर-वित्तीय लाभ भी हो सकता है। भ्रष्टाचार तीन रूपों, यथा-राजनीतिक, प्रशासनिक व व्यावसायिक के रूप में हो सकता है।

उपर्युक्त केस स्टडी में भ्रष्टाचार का प्रशासनिक स्वरूप विद्यमान है जिसमें उच्च अधिकारी, राजस्व अधिकारी, पुलिस अधिकारी, क्लर्क एवं चपरासी आदि शामिल हैं। उपर्युक्त केस स्टडी में निम्नलिखित नैतिक मुद्दे निहित हैं-

- **कार्यस्थल पर नैतिक दुविधा की स्थिति**- इस केस में मेरे लिये नैतिक दुविधा की स्थिति उत्पन्न हो गई है, जहाँ एक तरफ मुझे अपने मित्र की सहायता करनी है जो कि भ्रष्टाचार में लिप्त है वहीं दूसरी तरफ एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में इस अनैतिक एवं गैर-कानूनी कृत्य के लिये कड़े कदम उठाने की आवश्यकता भी है।
- **व्यक्तिगत मूल्यों एवं पेशेवर व्यवहारों में विरोधाभास**- सामान्यत: हमारे व्यक्तिगत एवं पेशेवर व्यवहारों में व्यापक अंतराल विद्यमान होता है जो कि हमारी प्रवृत्ति की द्वैधता को प्रतिबिंबित करता है।
- **कर्त्तव्यविमुखता:** अधिकारियों की भ्रष्टाचार में निरंतर संलिप्तता उनकी कर्त्तव्यविमुखता की स्थिति का द्योतक है।
- **प्रशासनिक भ्रष्टाचार:** यह सरकारी तंत्र की विफलता का संकेत है तथा साथ ही यह कानून व्यवस्था की विफलता को भी इंगित करता है।
- **मानवाधिकारों का उल्लंघन:** सार्वजनिक अधिकारियों द्वारा अपने कार्य की नैतिकता का उल्लंघन कर भारतीय संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत उल्लिखित गरिमापूर्ण जीवन जीने एवं शोषण से मुक्ति के अधिकार का उल्लंघन किया जाता है।
- **मीडिया की भूमिका:** इस केस का मीडिया कवरेज इसमें शामिल अधिकारियों की नकारात्मक छवि दिखाकर जनता में मीडिया ट्रायल को बढ़ावा दे सकता है जिससे प्रतिष्ठित सरकारी संस्थाओं की छवि धूमिल हो सकती है।

मैं अपने मित्र व अधीनस्थ अधिकारी को निम्नलिखित सुझाव दूंगा/दूंगी-

- सबसे पहले एक मित्र के रूप में अपने मित्र से बात करूंगा और उसकी बात को सुनकर उसे शांत करूँगा ताकि वह जल्दबाज़ी में ऐसा कोई कदम न उठाए जिससे उसका परिवार प्रभावित हो। तत्पश्चात् उसे इस स्थिति से निकलने हेतु सुझाव दूंगा।
- उसे प्रारंभिक विभागीय जाँच के लिये तैयार रहने के लिये कहूंगा तथा उसके परिणामानुसार होने वाली कार्रवाई का सामना करने का सुझाव दूंगा।
- यदि प्रारंभिक जाँच में वह व्यवसायी की आत्महत्या में गहनता से जुड़ा हुआ पाया जाता है तो उसे कानूनसंगत आपराधिक कार्रवाई का सामना करने हेतु तैयार रहने का सुझाव दूंगा।
- उसे यह सलाह दूंगा कि वह संगठन में लंबे समय से व्याप्त भ्रष्टाचारों को उजागर कर अपनी भागीदारी स्वीकार कर ले जिससे उसे कम कठोर सज़ा हो सकती है।

यद्यपि अपनी गलती की स्वीकारोक्ति एवं उसके परिणामों को भुगतने हेतु तैयार रहना अत्यधिक साहस का कार्य है फिर भी मैं अपने

मित्र अमृत को सलाह दूंगा कि वह विभागीय जाँच प्रक्रिया से गुज़रे और उसके परिणामों के लिये तैयार रहे, यही नैतिक और कानूनी रूप से उचित है। वस्तुत: अपने करीबी मित्र को ऐसी सलाह देना पहली बार में कठोर लग सकता है। उसका परिवार भी इस घटना से प्रभावित हो सकता है किंतु दीर्घकाल में यह कदम उसके परिवार, संगठन एवं समाज में एक सकारात्मक संदेश देगा। अन्य भ्रष्ट अधिकारी भी इस मार्ग का चयन कर सकते हैं और अपना जीवन गरिमा के साथ जी सकते हैं।

प्रश्न: बिहार के एक ज़िले में निर्धन परिवारों के बच्चों में अचानक एक्यूट इंसेफलाइटिस का प्रकोप हुआ है। इस ज़िले के सरकारी अस्पताल में दर्जनों बच्चों को भर्ती कराया गया है किंतु इसमें संसाधनों की अत्यधिक कमी है। आप इस ज़िला अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी हैं, संकट की इस विकट परिस्थिति को देखते हुए आपने सभी उपलब्ध संसाधनों को जुटाया तथा सभी कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपनी छुट्टियाँ रद्द कर दें तथा अपने सामान्य कार्य के घंटों से अधिक कार्य करें ताकि लोगों को सर्वोत्तम सेवाएँ दी जा सकें। इस बीमारी के प्रकोप ने राष्ट्रीय मीडिया का ध्यान आकर्षित किया है जो इस मुद्दे को कवर करने के लिये पहुँच गया है। हालाँकि उनका कवरेज पक्षपाती प्रतीत हो रहा है, वे केवल अस्पताल की कमियों को ही दर्शा रहे हैं। यहाँ तक कि उन्होंने चिकित्सा स्टाफ के समर्पण की भावना पर भी प्रश्नचिह्न लगाए हैं। वे अपने अनंत सवाल के साथ बढ़ती हुई मौतों के मामलों की जवाबदेही की मांग करते हुए डॉक्टरों के कार्यों में भी हस्तक्षेप कर रहे हैं।

जन सेवा के प्रति अपने पूर्ण समर्पण के बावजूद आपके चिकित्सा स्टाफ की एक नकारात्मक छवि को राष्ट्रीय स्तर पर पेश किया जा रहा है। नतीजतन इससे उनके मनोबल में कमी आई है तथा उनमें से कई लोगों ने आपको इस संदर्भ में कुछ कदम उठाने हेतु संपर्क किया है।

(250 शब्द, 20 अंक)

(a) मीडिया द्वारा गलत सूचनाओं के प्रसार को रोकने तथा अपनी टीम के मनोबल को ऊँचा बनाए रखने के लिये आप क्या करेंगे?

(b) इस संदर्भ में लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया की सामाजिक ज़िम्मेदारी क्या है?

In one of the districts of Bihar, there has been a sudden outburst of Acute Encephalitis among children of poor families. The government hospital in the district is admitting dozens of children but is resource-constrained. You are the chief medical officer of this district hospital. Considering the unprecedented nature of the crisis, you have mobilized all the available resources. You have requested all the staff members to cancel their leaves and work beyond their normal working hours so that people can be served in the best possible way. This outbreak of the disease has garnered the attention of national media who reached to cover this issue. However, they seem to be extremely biased in their coverage, portraying only the deficiencies of the hospital. They have even questioned the dedication of the medical staff. With their unending questions and demand for accountability for rising death cases, they are interfering in the work of doctors.

Despite their utmost dedication towards public service, a negative image of your medical staff is being projected at the national level. Consequently, this is hurting their morale and some of them have approached you to do something in this regard.

(a) What will you do to prevent misreporting by the media and for keeping the morale of your team high?

(b) What social responsibility does media have in this context as the fourth pillar of democracy?

उत्तर:

- **हितधारक:**
  - **एक्यूट इन्सेफेलाइटिस सिंड्रोम से पीड़ित बच्चे:** इस रोग से पीड़ित अधिकांश बच्चे निर्धन परिवारों से हैं।
  - **मुख्य चिकित्सा अधिकारी**
  - **सरकारी ज़िला अस्पताल:** अस्पताल संसाधनविहीनता की स्थिति में है तथा संकट की इस विषम घड़ी में कर्मचारियों पर अत्यधिक दबाव है।
  - **राष्ट्रीय मीडिया:** इस केस में यह लोगों के हित में अपनी भूमिका नहीं निभा रहा है।
  - **आम जनता**

एक्यूट इन्सेफेलाइटिस सिंड्रोम (ए.ई.एस.) एक विषाणुजनित संक्रमण है जिसे स्थानीय स्तर पर चमकी बुखार के रूप में जाना जाता है। ए.ई.एस. का प्रकोप उत्तरी एवं पूर्वी भारत के बच्चों द्वारा खाली पेट कच्ची लीची खाने से हुआ। इस बीमारी का प्रकोप पहले से ही चिकित्सा संसाधनों की कमी से जूझ रहे ज़िलों में कई सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जटिलताओं का कारण बनता है।

उत्तर: (a) इस परिदृश्य में स्थिति पर नियंत्रण पाने के लिये अस्पताल के सी.एम.ओ. के रूप में मैं निम्नलिखित कदम उठाऊँगा-

- टीम के नेतृत्वकर्ता के रूप में मैं ऐसी कठिन परिस्थिति में अपने कर्मचारियों की लोक सेवा के प्रति समर्पण एवं उनके द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करूँगा तथा उनसे मीडिया द्वारा किये जा रहे दुष्प्रचार से हतोत्साहित न होने की अपील करुँगा।

- इसके अतिरिक्त मैं अपने कर्मचारियों को उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रयोग करने को कहूँगा तथा मीडियाकर्मियों के साथ बातचीत करने में उन्हें बुद्धि के साथ-साथ विनम्र व्यवहार करने के लिये कहूँगा।
- मैं मीडियाकर्मियों के साथ एक बैठक का आयोजन करूँगा तथा उन्हें अस्पताल द्वारा ज़मीनी स्तर पर किये गए कार्यों से अवगत करवाऊँगा जिससे उनके व्यवहार में परिवर्तन आ सकता है।
- यदि मीडियाकर्मी अस्पताल द्वारा दिये जा रहे उपचार का निरीक्षण करना चाहते हैं तो मैं इन्हें ऐसा करने के लिये कहूँगा। ताकि वे चिकित्सा कर्मचारियों द्वारा किये गए प्रयासों को जान सकें।
- यदि मीडिया को इस मामले का सही प्रसारण करने हेतु मनाने के सभी उपकरण असफल हो जाते हैं तो मेरे द्वारा मीडियाकर्मियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई भी की जा सकती है।
- अंत में किसी तीसरे पक्ष, जैसे- एन.जी.ओ. अथवा सामाजिक संगठन को भी अस्पताल द्वारा उठाए जा रहे कदमों के निरीक्षण की अनुमति दी जा सकती है ताकि जनता का अस्पताल पर विश्वास बना रह सके।

यदि उपरोक्त कदम उठाए जाते हैं, तो दुष्प्रचार की इस स्थिति पर काफी हद तक नियंत्रण लगाया जा सकता है तथा चिकित्सा स्टॉफ के मनोबल को कम किये बिना ही ए.ई.एस. की समस्या से निजात पाया जा सकता है।

उत्तर: (b) उपर्युक्त केस में 'चिकित्सा आपात' की अत्यधिक संवेदनशील स्थिति विद्यमान है जहाँ सभी हितधारकों को करुणा व समानुभूति का अनुभव करना चाहिये वहाँ मीडिया की भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगे हैं। हमारे संविधान का अनुच्छेद 19(1)(a) सभी को भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी देता है। मीडिया अपने इस अधिकार का प्रयोग कर किसी भी घटना का कवरेज कर जनता की राय को अपने हिसाब से बना सकता है।

मीडिया लोकतांत्रिक प्रणाली की कमियों को उजागर करके सरकार की सहायता कर सकता है। सही मायने में एक स्वतंत्र मीडिया तंत्र के बिना लोकतांत्रिक प्रणाली बिना पहियों की गाड़ी के समान है इसीलिये मीडिया को लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का दर्जा दिया गया है।

मीडिया का काम रिपोर्टिंग की नैतिकता का पालन करते हुए निष्पक्ष समाचारों का प्रसारण करना है। जबकि उपर्युक्त केस में इसके द्वारा गलत तथ्यों का प्रयोग कर नकारात्मक भूमिका निभाई गई है। एक जवाबदेह मीडिया समाज के विकास में सहयोग कर सकता है जबकि एक पक्षपाती मीडिया समाज में अव्यवस्था उत्पन्न कर सकता है।

इसलिये मीडिया को टी.आर.पी. के लिये सनसनीखेज खबरों के प्रसारण से बचना चाहिये तथा बीमारी पर अंकुश लगाने के लिये ज़िम्मेदारीपूर्वक सरकार का समर्थन करना चाहिये। इसे सरकार एवं जनता के बीच प्रभावी संचार तंत्र के रूप में कार्य करना चाहिये। अत: एक सक्रिय एवं तटस्थ मीडिया का होना आवश्यक है जो कि नैतिक सिद्धांतों का पालन करते हुए अपने सामाजिक दायित्वों को भी पूरा करता है।

प्रश्न: कानपुर ज़िले के एक गाँव में उच्च जाति के लोग निम्न जाति के दूल्हों को घोड़े पर बैठकर गाँव में बरात लाने की अनुमति नहीं देते हैं। इसके प्रतिक्रियास्वरूप एक दूल्हे ने अपने मूल अधिकारों के उल्लंघन के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। सर्वोच्च न्यायालय ने ज़िला प्रशासन को निर्देश दिया है कि वह दूल्हे की सुरक्षा सुनिश्चित करे और इस समारोह में विघ्न डालने वालों के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करे। गरिमा कानपुर के ज़िलाधिकारी के रूप में तैनात हैं तथा वह व्यक्तिगत रूप से जातिव्यवस्था के विरुद्ध कठोर विचार रखती हैं। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश को पूरी तरह लागू करने के लिये शादी वाले दिन वह पुलिस फोर्स के साथ गाँव पहुँचती है। गाँव में उच्च जाति के लोगों ने भी विवाह समारोह मे विघ्न डालने हेतु आपस में लामबंदी कर ली है। इस तनावपूर्ण स्थिति को देखते हुए ग्रामप्रधान, जो कि स्वयं उच्च जाति से संबंधित है, ने बरात को किसी अन्य मार्ग से ले जाने का सुझाव दिया है। उसने आश्वासन दिया है कि ऐसा करने से अनावश्यक हिंसा से बचा जा सकता है तथा एक शांतिपूर्ण विवाह समारोह का आयोजन किया जा सकता है।

दोनों ही परिदृश्यों में संभावित परिणाम क्या हो सकते हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

(a) यदि वह ग्राम प्रधान के प्रस्ताव से सहमत हो जाती है।

(b) यदि वह सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का निष्ठापूर्वक क्रियान्वयन करती है।

In a village of Kanpur district, upper caste people do not allow lower caste bridegrooms to take their marriage procession through the village seated on a horse. In response to this one bridegroom approached the Supreme Court for violation of his fundamental rights. The Supreme Court directed the district administration should ensure the security of the bridegroom and take needful action against those who try to obstruct the procession. Garima is posted as the District Magistrate of Kanpur and she personally harbours strong views against the caste system. In order to fully implement the SC's order, she arrives at the village with the police force on the day of the marriage. Upper caste people in the village have also mobilized themselves and are adamant about disrupting the marriage procession. In such a tense situation, village pradhan, who belongs to the upper caste, has suggested rerouting of the procession. He assures that doing this will avoid unnecessary violence and would lead to a peaceful marriage ceremony.

What are the possible consequences in both the scenarios?

(a) If she agrees to the Village Pradhan's proposal.

(b) If she conscientiously implements the Supreme Court Order.

उत्तर : (a)

केस स्टडी में शामिल हितधारक

- निम्न एवं उच्च जाति से संबंधित दो समूह
- ज़िला अधिकारी
- विस्तृत परिदृश्य में सामान्य जनता

भारत में जाति व्यवस्था ने हमारी संपूर्ण सामाजिक संरचना को जकड़ रखा है। दशकों से विभिन्न कानूनी और संवैधानिक उपायों द्वारा इसके उन्मूलन के प्रयास किये जा रहे हैं। जाति व्यवस्था के नाम पर होने वाला भेदभाव भारतीय समाज को बुरी तरह से प्रभावित करता है।

उपर्युक्त केस स्टडी एक ही क्षेत्र में निवास करने वाले दो समूहों के मध्य जातिगत उत्पीड़न और भेदभाव से संबंधित है। यह मामला भारत में जातिप्रथा के नकारात्मक सामाजिक परिणामों की ओर भी संकेत कर रहा है। इस समस्या के समाधान के लिये नैतिक मार्गदर्शन हेतु ज़िलाधिकारी को अपने अंत:करण की आवाज़ सुननी चाहिये।

संभावित परिणाम

- यदि वह ग्राम प्रधान के प्रस्ताव से सहमत होती है-
  - इस समझौते से निम्न जाति के लोगों में सामाजिक आक्रोश उत्पन्न हो सकता है, क्योंकि वे अपने को अलग-थलग महसूस करेंगे। यह निर्णय एक विशेष समुदाय के प्रति पूर्वाग्रही एजेंडे को भी प्रचारित करेगा।
  - यह निर्णय कानूनी दृष्टिकोण से भी सही नहीं है, क्योंकि इससे सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों का उल्लंघन होता है।
  - यह संविधान में उल्लिखित समानता और समान व्यवहार के मौलिक अधिकार के भी विरुद्ध है।
  - ज़िलाधिकारी स्वयं भेदभावपूर्ण जातिव्यवस्था के विरुद्ध हैं, अत: यह निर्णय उनके स्वयं के उच्च नैतिक मूल्यों के विपरीत होगा। इसके साथ ही यदि यह निर्णय लिया जाता है तो यह उच्च जाति के लोगों को भविष्य में भी इस प्रथा को जारी रखने के लिये प्रोत्साहित करेगा और अपनी जीत का एहसास दिलाएगा।
- यदि वह सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को ईमानदारी से क्रियान्वित करने का निर्णय लेती है-
  - उच्च जाति के लोगों द्वारा हिंसा होने पर क्षेत्र में कानून-व्यवस्था की स्थिति खराब हो सकती है।
  - इस निर्णय से उत्पन्न होने वाली सामाजिक असहमति से दोनों समुदायों में तनाव बढ़ सकता है।
  - हिंसा के कारण सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुँच सकता है।
  - इस निर्णय से ज़िलाधिकारी को व्यक्तिगत रूप से संतुष्टि मिल सकती है, क्योंकि वे स्वयं जातिप्रथा की विरोधी हैं।

उत्तर : (b) उपर्युक्त मामले में ज़िलाधिकारी को समस्या की गंभीरता और संवेदनशीलता को देखते हुए एक मध्यम मार्ग चुनना होगा।

उपर्युक्त समस्या के समाधान हेतु निम्नलिखित कार्रवाई की जानी चाहिये-

- कानून के रक्षक के रूप में और समाज के कमज़ोर वर्गों के अधिकारों की रक्षा के संदर्भ में ज़िलाधिकारी को सभी वर्गों की दीर्घकालिक भलाई हेतु कानून का पालन करना चाहिये।
- उन्हें सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन करना चाहिये। इस संदर्भ में रॉल्स के सिद्धांत का हवाला दिया जा सकता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, न्याय की हमेशा जीत होनी चाहिये।
- सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन करने के लिये ज़िलाधिकारी को भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग करके उच्च जाति के प्रतिनिधियों से बातचीत कर सामाजिक अनुनय द्वारा उनकी भेदभावपूर्ण सोच में परिवर्तन लाने का प्रयास करना चाहिये।
- उन्हें किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति को रोकने के लिये वास्तविक स्थिति के बारे में अपने उच्चाधिकारियों को सूचित करना चाहिये और उनसे सलाह लेनी चाहिये। साथ ही, क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिये पुलिस बल को सतर्क रहने का आदेश देना चाहिये।

हमारा संविधान देश के प्रत्येक नागरिक को मौलिक अधिकारों द्वारा जाति, पंथ, लिंग या सामाजिक आधार पर होने वाले भेदभाव के विरुद्ध सुरक्षा की गारंटी देता है। आधुनिक भारत के निर्माताओं ने उत्पीड़न और शोषण से मुक्त समाज की कल्पना की थी, जहाँ सभी के लिये सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता सुनिश्चित की जाएगी। यदि हमारा समाज इसी प्रकार भेदभाव और पदसोपानिक विभाजन से जूझता रहेगा तो हम न अपने संवैधानिक मूल्यों और उद्देश्यों को पूरा कर पाएंगे और न ही प्रगतिशील भारत के निर्माण के अपने पूर्वजों के सपने को पूरा कर पाएंगे।

प्रश्न: आप एक सिविल सेवा प्रतियोगी हैं और आपने इस परीक्षा के प्रथम दो चरण उत्तीर्ण कर लिये हैं और हाल ही में आपको साक्षात्कार हेतु कॉल लेटर मिला है। आपने इस अवसर पर परमात्मा के प्रति अपना आभार जताने हेतु अपने निवास के पास के पवित्र तीर्थस्थल पर जाने का फैसला किया। तीर्थस्थल में प्रवेश करते ही आप एक भूत भगाने की क्रिया को देखते हैं। जहाँ एक दबंग धार्मिक व्यक्ति दो महिलाओं पर चिल्लाते हुए लगातार थप्पड़ मार रहा है तथा उसके पास ही उनका परिवार मूक-दर्शक बनकर खड़ा है। आप इस बात से आश्वस्त हैं कि महिलाएँ मनोवैज्ञानिक रूप से पीड़ित हैं किंतु इनके परिवार के सदस्यों द्वारा उनकी इस स्थिति को उनके शरीर में बुरी आत्मा की उपस्थिति के लक्षण के रूप में पेश किया जा रहा है। आप इन महिलाओं की दुर्दशा से गहराई से प्रभावित हैं तथा उनके प्रति समानुभूति रखते हैं। आपके पास इस स्थिति में कौन-कौन से विकल्प उपलब्ध हैं तथा आप इस स्थिति में कैसे प्रतिक्रिया देंगे?

भूत भगाने की प्रथा में कौन-कौन से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are a Civil Services aspirant who has cleared the first two stages of the exam and has recently received the interview call letter. On this momentous occasion, you decided to visit a holy shrine near your residence, in order to offer your gratitude to the divine. At the entrance of the shrine, you encounter a disturbing spectacle of exorcism. Two women are being continuously slapped, cursed and shouted upon by a domineering religious man, and their families are standing nearby as silent spectators. You are convinced that these women are suffering from psychological issues but its symptoms are being construed as the presence of evil spirit by the family members. You are deeply moved by the women's plight and you empathize with them. What choices do you have and how will you respond in this situation? What are the ethical issues involved in the practice of exorcism?

उत्तर: सामान्यतया भारतीय समाज में मानसिक स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक मुद्दे रूढ़िजन्य हैं। यहाँ ऐसी समस्याओं से पीड़ित व्यक्तियों के साथ सामाजिक भेदभाव किया जाता है। यह न सिर्फ एक सिविल सेवा प्रतियोगी के रूप में बल्कि एक शिक्षित नागरिक के रूप में ऐसी भेदभावपूर्ण एवं अमानवीय प्रथा को रोकना तथा इसके खिलाफ आवाज़ उठाना मेरा कर्त्तव्य है।

जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था, "जब तक लाखों लोग भूख और अज्ञान में रहेंगे तब तक मैं हर उस आदमी को गद्दार मानूँगा, जिसने गरीबों की कीमत पर शिक्षा तो हासिल की लेकिन उनकी चिंता बिल्कुल नहीं की।"

उपर्युक्त केस स्टडी में महिलाएँ स्पष्ट रूप से अपने परिवार के गलत विश्वासों की बलि चढ़ रही हैं। इस मामले में मेरे पास उपलब्ध विकल्प निम्नवत् हैं-

- मैं महिलाओं की इस दुर्दशा को नज़रअंदाज़ कर तीर्थस्थल पर माथा टेककर आगे बढ़ सकता हूँ। आगामी दिनों मेरे पास एक बड़ा अवसर है और मुझे अपने देश में व्यापक रूप से प्रचलित इन अंधविश्वासों पर अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहिये।
- बुरी आत्मा को शरीर से बाहर करने के नाम पर महिलाओं से मारपीट करने वाले व्यक्ति का सामना कर इस मामले की रिपोर्ट तीर्थस्थल प्राधिकरण को देनी चाहिये।
- परिवार के सदस्यों को समझाने की कोशिश कर उन्हें चिकित्सा विशेषज्ञ की सहायता लेने का सुझाव देना चाहिये। यदि उनके पास वित्तीय संसाधनों की कमी है तो किसी सरकारी या निजी निकाय से मानसिक समस्या के निवारण के लिये सहायता लेने का सुझाव देना चाहिये।
- मेरे पास उपलब्ध उपर्युक्त तीन विकल्पों में से तीसरा विकल्प एक शिक्षित व्यक्ति एवं सिविल सेवा प्रतियोगी के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है, जिसका कर्त्तव्य ऐसे लोगों की सहायता करना है जो कि इन तर्कविहीन विश्वासों का शिकार बनते हैं।
- दूसरा विकल्प भी बेहतर प्रतीत हो रहा है, किंतु इस विकल्प में यह संभावना बनी रहेगी कि तीर्थस्थल के पदाधिकारियों से शिकायत करने के बावजूद महिलाओं की समस्या अनसुलझी ही रह जाएगी।
- पहले विकल्प की अपनी नैतिक सीमाएँ हैं, इसका चयन करना एक नागरिक के रूप में मेरा अपने सार्वजनिक कर्त्तव्य का त्याग करना होगा।

हमारा समाज कई प्रकार की अप्रचलित एवं शोषणकारी प्रथाओं से पीड़ित है क्योंकि यहाँ अधिकांश शिक्षित और ज़िम्मेदार नागरिक बस मूकदर्शक बनकर रह जाते हैं। महाभारत में एक नागरिक के कर्त्तव्यों को बताते हुए तर्क दिया गया है कि जब कोई अपराध होता है तो उसका सिर्फ आधा दोष अपराधी का होता है जबकि एक-चौथाई सह-साजिशकर्त्ता का तथा बचा हुआ एक-चौथाई दोष उन लोगों का होता है जो चुपचाप खड़े होकर इसे देखते हैं। इसलिये मुझे अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को सुनकर सकारात्मक रूप से इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिये। मैं परिवार के सदस्यों को यह समझाने की कोशिश करूँगा कि इस प्रकार के अत्याचार से महिलाओं की स्थिति और बदतर हो जाएगी तथा उन्हें यह भी समझाऊँगा कि मानसिक समस्याएँ काउंसलिंग के द्वारा ठीक हो जाती हैं। उन्हें भूत भगाने हेतु टोटके करने की बजाय एक अच्छे मनोचिकित्सक से संपर्क करना चाहिये। यदि उन्हें वित्त संबंधी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है तो मैं सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों की सहायता से उनकी मदद करूँगा। साथ ही, मैं ऐसे गैर-सरकारी संगठनों से संपर्क करूँगा जो कि तीर्थस्थलों पर होने वाली ऐसी प्रथाओं को रोकने हेतु कार्य करते हैं।

भूत भगाने की प्रथा में शामिल नैतिक मुद्दे:

- **व्यक्ति की गरिमा व मानवाधिकारों का उल्लंघन:** इन महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार किया जा रहा है जो कि इनकी गरिमा व स्वाभिमान को ठेस पहुँचाना है।
- **धार्मिक विश्वासों का दुरुपयोग:** परिवार के सदस्यों को मंदिर के देवत्व पर विश्वास है किंतु इसका दुरुपयोग मानसिक समस्याओं के इलाज हेतु किया जा रहा है।
- **जन उदासनीता की स्थिति:** श्रद्धालु ऐसे मामलों के प्रति उदासीन रवैया अपनाते हैं।
- **राज्य की भूमिका:** इस प्रकार की प्रथाओं की निरंतरता जन-जागरूकता फैलाने तथा मानसिक स्वास्थ्य को सर्वसुलभ बनाने के मुद्दे पर राज्य की विफलता को दर्शाती है।
- **संवैधानिक नैतिकता:** हमारे संविधान के मौलिक कर्त्तव्यों में से एक के अनुसार, "व्यक्ति को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद तथा जाँच व सुधार की भावना विकसित करनी चाहिये" का उल्लंघन है। जो कि संवैधानिक नैतिकता पर अंधविश्वासों को वरीयता देने की स्थिति को दर्शाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत की लगभग 7.5 प्रतिशत जनसंख्या किसी-न-किसी रूप में मानसिक विकारों का सामना कर रही है। किंतु जागरूकता की कमी, स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और मनोचिकित्सकों की कम उपलब्धता के कारण लोग ऐसे अंधविश्वासों का सहारा लेते हैं। वर्तमान में ऐसी सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने की दिशा में कार्य करना समय की एक महत्त्वपूर्ण मांग है।

प्रश्न: आपको एक महानगर के पुलिस कमिश्नर के रूप में नियुक्त किया गया है। यह शहर एक अंतर्राष्ट्रीय खेल समारोह की मेज़बानी कर रहा है। ऐसे में आने वाले दिनों में हज़ारों लोगों के शहर में आने का अनुमान है। इन परिस्थितियों में आपकी प्राथमिकता इस महत्त्वपूर्ण आयोजन की शांतिपूर्ण समाप्ति तक कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखना है। दुर्भाग्यवश शहर की पुलिस एवं वकीलों के बीच हिंसक झड़पें हो जाती हैं जो पुलिस के द्वारा एक विवाद के दौरान वकील को पीटने के बाद और भड़क गई। प्रतिक्रियास्वरूप वकीलों ने विरोध-प्रदर्शन का आह्वान किया है तथा वे अदालत की सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों को निशाना बना रहे हैं। शुरुआत में आपके अधीन कार्यरत पुलिस विभाग विरोध की तीव्रता को देखकर वकीलों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई से बचता रहा किंतु अब पुलिसकर्मी विश्वासघात की अनुभूति कर रहे हैं तथा अब वे स्वयं भी प्रतिहड़ताल कर हठी वकीलों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। पुलिस द्वारा किये जा रहे विरोध-प्रदर्शन से कानून एवं व्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हो रही है तथा इससे जनता की परेशानियाँ बढ़ रही हैं। आपको डर है कि निम्न मनोबल के चलते खेलों के आयोजन के दौरान पुलिसकर्मी पूरे उत्साह से सुरक्षा नहीं कर पाएंगे।

इस परिदृश्य में आपकी कार्रवाई की प्रक्रिया क्या होगी?

(250 शब्द, 20 अंक)

You have been appointed as the police commissioner of a metropolitan city which is hosting an international sports event. It is estimated that thousands of people will be visiting the city in the coming days. In such circumstances, maintaining law and order is your priority for the smooth commencement of this important event. Unfortunately, violent clashes have erupted between the city's Police and Lawyers, which was fuelled by the police beating a lawyer after an altercation.

In response to this, lawyers called for a protest and violently targeted police personnel deployed in court security. Initially, the police department under your charge avoided quick action against lawyers in order to control the intensity of the protest but now police personnel feels betrayed and they themselves have staged a counter-protest demanding strict action against recalcitrant lawyers. The protest by police is severely affecting the law and order situation and public concern is rising. You have apprehensions that with low morale, police personnel will not be able to provide security with full enthusiasm during the sports event.

What would be your course of action in such a scenario?

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी में कई मुद्दे शामिल हैं जिनके समाधान के लिये बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है ताकि पुलिस व वकीलों को हड़ताल समाप्त करने के लिये मनाया जा सके तथा खेलों का सफल आयोजन किया जा सके।

केस स्टडी में सम्मिलित प्रमुख मुद्दे

- वकीलों द्वारा किया जा रहा विरोध प्रदर्शन न्यायालय के कामकाजों को बाधित कर सकता है।
- वकीलों द्वारा पुलिसबलों को लक्षित किया जा रहा है जो कि पुलिसकर्मियों को उनके कर्त्तव्यों के निर्वहन से रोक रहा है।
- पुलिसकर्मियों का अपने विभाग तथा वरिष्ठ अधिकारियों से मोहभंग होना।
- दोनों पक्षों के बीच संघर्ष सार्वजनिक चिंता का विषय है।
- इन झड़पों के ऊपर व्यक्तिगत चिंता खेलों के आयोजन को प्रभावित कर सकती है।

पुलिस व वकील हमारी कानून व्यवस्था तथा आपराधिक न्याय प्रणाली का अभिन्न अंग हैं। इनके बीच आपसी टकराव एवं प्रतिद्वंद्विता, सामाजिक शांति एवं सुरक्षा हेतु सबसे बड़ा खतरा बन सकती है। पुलिस विभाग के कमिश्नर के रूप में इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में विधि का शासन बनाए रखना व अपने अधीनस्थों के मनोबल को बनाए रखना मेरा व्यावसायिक कर्त्तव्य है जिसे उपर्युक्त परिदृश्य में निम्नलिखित रूप से बनाए रखा जा सकता है-

- सबसे पहले मैं विरोध प्रदर्शन करने वाले पुलिसकर्मियों को विश्वास में लूँगा तथा उन्हें यह आश्वासन दूँगा कि इस मामले में विधिसम्मत प्रक्रिया का पालन किया जाएगा तथा वकीलों द्वारा उनके गौरव और गरिमा पर हमला करने की स्थिति में कोई ढील नहीं दी जाएगी। इस मुद्दे संबंधी वास्तविक तथ्यों का पता लगाने हेतु एक जाँच दल का गठन किया जाएगा ताकि दोषियों पर कानूनी कार्रवाई की जा सके।
- इसके अलावा पुलिसकर्मियों के साथ समानुभूति रखते हुए मैं उन्हें विरोध प्रदर्शन समाप्त करने के लिये मनाने की कोशिश करूँगा, यदि वे ऐसा करने से मना करते हैं तो 'स्वयं से पहले कर्त्तव्य' के आदर्श के साथ उन्हें जन सेवा हेतु प्रेरित करूँगा।
- उन्हें यह भी स्मरण करवाऊँगा कि आगामी खेल का आयोजन हमारे देश के लिये एक सुनहरा अवसर है तो हमें बदले में समर्पण, सेवा भावना तथा जवाबदेही का प्रदर्शन करना चाहिये, जिससे हमें न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त हो सकती है।

- एक बार जब विभाग में आंतरिक रूप से विश्वास की बहाली हो जाती है तब मैं इस मुद्दे पर बार काउंसिल के अध्यक्ष तथा सदस्यों से चर्चा करूँगा जहाँ हम मिलकर एक समझौता कर सकते हैं कि दोनों पक्षों के आरोपियों को कानूनी रूप से दंडित किया जाएगा जिस पर पुलिस निष्पक्ष रूप से कार्य करेगी। इसके साथ ही वे वकीलों की हिंसा से दूर रहने के लिये मानने की कोशिश भी कर सकते हैं।

अंत में जब विवाद सुलझ जाएगा तो बार काउंसिल एवं पुलिस विभाग दोनों मिलकर, एक बेहतर समझ बनाने का प्रयास कर सकते हैं। इसके लिये कुछ सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन, मैत्री खेलों का आयोजन आदि किया जा सकता है। इस तरह इन दोनों के बीच विद्यमान राग-द्वेषों को दूर किया जा सकता है तथा इनमें आपसी सहयोग की भावना बहाल की जा सकती है।

इस प्रकार उपर्युक्त कार्रवाइयों के माध्यम से इस मुद्दे को सुलझाया जा सकता है तथा खेलों के आयोजन को योजनाबद्ध तरीके से संपन्न किया जा सकता है।

एक मामूली घटना को लेकर पेशेवर रूप में सहजीवी पुलिस व वकीलों के बीच हिंसक झड़पों का होना दोनों के मध्य छिपे हुए अविश्वास एवं शत्रुता को प्रतिबिंबित करता है। आदर्श रूप में देखा जाए तो पुलिसकर्मियों के एक समूह द्वारा कानून का उल्लंघन एक 'अहंकारी टर्फवॉर' नहीं बनना चाहिये। दोनों ही पक्षों को भारतीय लोकतंत्र में अपने महत्त्व को समझना चाहिये। हमारे कई स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व आधुनिक भारत के निर्माता वकील थे तथा हमारे पुलिस बलों ने हमारे समाज को सुरक्षित रखने व सद्भाव बनाए रखने के लिये कई बलिदान दिये हैं।

प्रश्न: आप एक ईमानदार पुलिस अधिकारी हैं, जिसकी साइबर इंटेलिजेंस में विशेषज्ञता है। अपने उत्कृष्ट कार्यकाल (कैरियर) के दौरान आपने कई आपराधिक नेटवर्कों का पर्दाफाश किया, ऑनलाइन आंतकी गतिविधियों को ट्रैक किया तथा अवैध वित्तीय नेटवर्क का पर्दाफाश किया है। आपकी नियुक्ति स्नूपिंग, जासूसी, हैकिंग एवं लक्षित सिस्टम पर मालवेयर के हमले पर विशेषज्ञता के साथ साइबर विशेषज्ञ के रूप में हुई है। अपने क्षेत्र में सफलताओं की एक शृंखला के साथ आप अपने सरकारी समूह में प्रसिद्ध हो गए हैं। आपके विभाग प्रमुख की रिटायरमेंट पार्टी पर एक मंत्री के निजी सहायक आपके पास आते हैं तथा आपको मंत्री के साथ एक व्यक्तिगत मीटिंग हेतु आमंत्रित करते हैं। मंत्री के साथ हुई मीटिंग में मंत्री आपको हाल में हुई एडवांस एयरक्राफ्ट खरीद के संबंधों में जानकारी देते हैं जिसमें पारदर्शिता की कमी होने के कारण विपक्ष द्वारा इसे चुनौती दी जा रही है। मंत्री आपसे कुछ प्रमुख विपक्षी नेताओं के व्यक्तिगत चैट और ईमेल प्राप्त करने के लिये कहता है जिससे उनके पूर्व भ्रष्टाचारों का पता लगाया जा सके और उन पर उनके खुद के बचाव का दबाव बनाया जा सके जिससे रक्षा सौदे पर कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगी। आप व्यक्तिगत रूप से महसूस करते हैं कि यह सौदा भारत के हवाई क्षेत्र की सुरक्षा हेतु अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

(a) इस परिस्थिति में क्या आप मंत्री के प्रस्ताव से सहमत होंगे?

(b) क्या आपको लगता है कि राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर नागरिकों की जासूसी करना एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में न्यायोचित है? (250 शब्द, 20 अंक)

You are a sincere police officer who has expertise in cyber intelligence. In your outstanding career, you have busted many criminal networks, tracked online activities of terrorists and exposed illegal financial networks. You employed snooping, espionage, hacking and attacking targeted person's systems with malware, as a cyber expert. With a series of successes in this field, you have become famous within the government circles. On the retirement party of the head of your department, a minister's personal assistant approaches and invites you for a private meeting with the minister. In the meeting with the minister, he informs you about the recent defence deal for buying advanced aircraft which is being challenged by the opposition because of a lack of transparency. The minister asks you to access the personal chats and emails of a few leading opposition leaders to unravel their past corrupt acts. This will push them in defensive mode and the aircraft deal will not be hindered.

You personally feel that this deal is very important for securing India's airspace.

(a) In such circumstances, will you agree to the minister's proposal?

(b) Do you think that spying on citizens in the name of national security is justified in a democratic system?

उत्तर:

प्रमुख हितधारक:

(i) पुलिस अधिकारी: जो कि साइबर इंटेलिजेंस में विशेषज्ञता प्राप्त है।

(ii) मंत्री: जो कि विपक्ष के नेता की जानकारी निकालना चाहता है।

(iii) विपक्ष के नेता

(iv) आम जनता: सरकार के द्वारा उठाया गया कोई भी कदम जनता की चिंता का सबब बन सकता है।

इस केस स्टडी में लोक सेवा नैतिकता तथा प्राधिकरण द्वारा दिये गए आदेश का पालन करने व दोनों में से एक विकल्प चुनने में नैतिक दुविधा की स्थिति विद्यमान है। मंत्री द्वारा विपक्षी नेताओं की चैट तथा ईमेल में सेंध लगाने का अनुरोध मेरे लिये एक नैतिक दुविधा की स्थिति उत्पन्न कर रहा है। मैं इस दुविधा की स्थिति में हूँ कि मैं मंत्री के अनुरोध का पालन करूँ या नहीं।

उपरोक्त स्थिति में मैं निम्नलिखित कार्रवाई कर सकता हूँ-

- मैं इस मुद्दे को वरिष्ठ अधिकारी को बता दूँ तथा उनसे इस स्थिति से निकलने का रास्ता सुझाने का अनुरोध करूँ।
- मैं सम्मानपूर्वक मंत्री के अवैध रूप से स्नूपिंग करने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दूँगा, ताकि वह विपक्षी नेताओं पर अनुचित राजनीतिक लाभ प्राप्त न कर पाएँ। एक पुलिस अधिकारी होने के नाते मुझे कानून के खिलाफ नहीं जाना चाहिये, क्योंकि कानून व्यवस्था को बनाए रखना मेरा प्राथमिक कर्त्तव्य है।

एक साइबर विशेषज्ञ और ज़िम्मेदार अधिकारी के रूप में यह आवश्यक है कि मैं सच्चाई का पता लगाऊँ तथा मंत्री के आदेश का आँख मूँदकर अनुसरण करने का अर्थ है कि मैं अपनी सत्यनिष्ठा, वस्तुनिष्ठता तथा सरकारी सेवक की निष्पक्षता से विचलित हो जाऊँ जिसे समर्पण के साथ जनता की सेवा देने के लिये नियुक्त किया गया है।

उपर्युक्त चरणों का पालन करने से इस मुद्दे को कुछ हद तक नैतिक व न्यायसंगत तरीके से सँभाला जा सकता है।

एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों की सुरक्षा के नाम पर जासूसी करने पर प्रश्नचिह्न लगाया जा सकता है। वर्ष 2017 के के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ वाद में सर्वोच्च न्यायालय ने निजता को एक मौलिक अधिकार घोषित किया है तथा उसे संवैधानिक गारंटी प्रदान की है। इस फैसले को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर नागरिकों की जासूसी करवाना अनैतिक एवं अन्यायपूर्ण लगता है। हालाँकि, राष्ट्रीय सुरक्षा व पूर्व-आतंकवादी खतरों को देखते हुए निगरानी रखना आवश्यक महसूस हो रहा है। हालाँकि, निगरानी की प्रकृति को ऐसा होना चाहिये कि जो सार्वजनिक जनता की पहुँच से बाहर हो। चूँकि यह स्पष्ट है कि निजता का अधिकार एक संप्रभु अधिकार नहीं है, इसलिये सरकार द्वारा इसका उल्लंघन न्यायसंगत है, किंतु इसके लिये निजता व सुरक्षा के प्रतिस्पर्द्धी मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है।

सरकारी संस्थाओं द्वारा अनियंत्रित एवं अनगिनत डेटा संग्रहण एवं परीक्षण एक पुलिस व निगरानी राज्य की नींव रखते हैं। इसलिये भारतीय निगरानी व्यवस्था में नैतिक मुद्दों को शामिल किया जाना चाहिये जो कि निगरानी व्यवस्था में नैतिक पहलुओं पर विचार करने हेतु आवश्यक है।

तकनीक का प्रयोग राष्ट्रीय एवं व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा के एक उपकरण के रूप में किया जाना चाहिये तथा तकनीक के उपयोग में जवाबदेही को भी सुनिश्चित किया जाना चाहिये, ताकि ऐसी विशेषज्ञता प्राप्त लोक सेवक आवश्यक रूप से न्यायसंगत व ईमानदार रह सके।

प्रश्न: संविधान एक ऐसे मानक के रूप में कार्य करता है जिससे नौकरशाही की शांति, सौहार्द्रता तथा न्याय के प्रति प्रतिबद्धता मापी जा सकती है। नौकरशाही तीसरे एवं तटस्थ स्तंभ के रूप में कार्य करता है जो बिना किसी राजनीतिक अथवा वैचारिक सहयोग के सामाजिक रूप से प्रभावी हो सकता है। वहीं दूसरी तरफ लोक सेवा का दर्शन लोक सेवकों को अपने निर्धारित कर्त्तव्य के अतिरिक्त संवैधानिक आदर्शों को लक्षित करने हेतु अन्य कार्य करने के लिये प्रेरित करता है। निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा लोक सेवा के प्रति समर्पण प्रभावी लोकप्रशासन की कसौटियाँ हैं अन्यथा अधिकारी अपनी धारणाओं एवं मतों से प्रभावित हो सकते हैं। हालाँकि इस संदर्भ में संविधान स्वयं में एक स्थायी पथ-प्रदर्शक है।

चर्चा कीजिये कि किस प्रकार भारतीय संविधान लोक सेवकों में निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा लोक सेवा के प्रति समर्पण भाव को बनाए रखने में सहायता करता है?

(250 शब्द, 20 अंक)

The constitution serves as the standard by which one can measure the capacity of bureaucracy to remain committed to peace, harmony and justice. Bureaucracy serves as the third and neutral term that can be socially effective without the aid of politics or ideology. The philosophy of public service, on the other hand, nudges public officials to act beyond their prescribed duty in order to realize constitutional ideals. Impartiality, objectivity and dedication to public service are the hallmarks of effective public administration, otherwise, officials may get swayed away by their biases and opinions. However, the constitution offers itself as the permanent lodestar in this regard.

Discuss how the Indian constitution helps civil servants in maintaining impartiality, objectivity and dedication to public service?

उत्तर: भारतीय संविधान अपने पवित्र सिद्धांतों के साथ उन सार्वजनिक अधिकारियों और नेताओं की सहायता करता है जिनसे वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता तथा लोक सेवा के प्रति सेवाभाव को बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है। संविधान निम्नलिखित रूप से इनकी सहायता करता है-

- **प्रेरणा के चिरकालिक स्रोत के रूप में:** लोकतांत्रिक व्यवस्था में सरकार की प्राथमिकता है जनता का कल्याण करना। हमारा संविधान भी अपनी प्रस्तावना में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक न्याय, प्रतिष्ठा एवं अवसर की समता तथा लोगों के बीच भ्रातृत्व को बढ़ावा देने का उल्लेख करता है। ये सभी लक्ष्य एक सिविल सेवक अथवा नेता को अपने पूर्वाग्रहों एवं वरीयताओं से ऊपर उठकर कार्य करने हेतु प्रेरित करते हैं।
- **संवैधानिक नैतिकता को उत्पन्न करने में:** भारतीय संविधान संवैधानिक नैतिकता का मूलस्रोत तथा विवेकाधीन निर्णयन के लिये एक दिक्सूचक की भाँति कार्य कर सकता है जो कि लोक सेवा में निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा समर्पण के लिये आवश्यक है।
- **सिविल सेवकों के संरक्षण में:** एक सिविल सेवक को कई बार राजनीतिक कार्यकारिणी के हितों के विरुद्ध कार्य करने पर इनके रोष का सामना करना पड़ता है। ऐसे मामलों में संविधान लोक अधिकारियों को उनके अधिकारों के संभावित उल्लंघन से बचाता है। संविधान के अनुच्छेद 323(A) के तहत भारत में केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण का प्रावधान किया गया है जो सिविल सेवकों के अधिकारों की रक्षा करता है।

- **निर्णयन प्रक्रिया में आधारभूत दस्तावेज़ के रूप में:** हमारा संविधान उन विचारों और लक्ष्यों का एक योग है जो कि भारत को एक देश बनाता है। दुविधाओं और संघर्षों की स्थिति में संविधान इनसे निपटने में अंतिम स्रोत के रूप में कार्य करता है।
- **विवेकाधीन शक्तियों के प्रयोग में सहायक के रूप में:** सिविल सेवा में समाज और प्रशासन की जटिलताओं से उत्पन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिये अत्यधिक विवेक की आवश्यकता होती है। विवेकाधीन निर्णयन में अपने पूर्वाग्रहों और अनुरागों को अलग रखना सबसे कठिन व्यावसायिक चुनौती है जिस पर एक सिविल सेवक को नियंत्रण पाना आवश्यक है। भारतीय संविधान सार्वजनिक अधिकारियों की स्वार्थ एवं पूर्वाग्रह पर नियंत्रण पाने में सहायता करता है।

नौकरशाही एक स्थायी शासी इकाई है जो कि उन राजनीतिक पदाधिकारियों के विपरीत है जो अस्थायी रूप से विभिन्न संभागों/विभागों पर काबिज़ होते हैं इसलिये लोक सेवा के प्रति समर्पण व निष्पक्षता बनाए रखना सिविल सेवकों के लिये आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारतीय संविधान के मार्गदर्शन में भारत में नौकरशाही सच्चे लोकतांत्रिक आदर्श के रूप में कायम है।

प्रश्न: आप एक गैर-सरकारी संगठन के प्रमुख हैं जो कि समाज के कमज़ोर वर्गों के कैंसर रोगियों की उपशामक देखभाल (पैलियेटिव केयर) करता है। पिछले कुछ महीनों से आपके इस नेक कार्य के लिये धन कम पड़ रहा है, जिसके कारण आप आश्रितों की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। एक दिन एक बड़ी तंबाकू कंपनी के मालिक ने आपसे संपर्क किया जो कि आपके एन.जी.ओ. को फंड देने का इच्छुक है, क्योंकि उसे कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सी. एस.आर.) के लक्ष्य को पूरा करना है। जबकि वर्षों से कैंसर रोगियों के साथ कार्य करने के क्रम में तंबाकू कंपनियों के प्रति आपके मन में हिकारत का भाव उत्पन्न हुआ है। अब मालिक की पेशकश ने आपको नैतिक दुविधा में डाल दिया है। एक तरफ आप किसी ऐसी कंपनी से समर्थन प्राप्त करने के विचार से घृणा करते हैं जो कि अपने उत्पादों के माध्यम से कैंसर फैला रही है, वहीं दूसरी तरफ, आपको लगता है कि कंपनी की सहायता आपके एन.जी.ओ. के लिये अच्छा अवसर है जो कि मरीज़ों को एक बेहतर देखभाल प्रदान कर सकता है।

(a) यहाँ शामिल विभिन्न नैतिक मुद्दे क्या हैं?

(b) क्या तंबाकू कंपनी से पैसे स्वीकार करना आपके लिये नैतिक रूप से ठीक होगा? (250 शब्द, 20 अंक)

You are the head of a Non-Governmental Organization (NGO) that offers palliative care to cancer patients from the poor sections of the society. Since the last few months funding for your noble cause is dwindling due to which you are not able to fulfill the needs of the dependent people. One day, you are contacted by the owner of a big tobacco company who is willing to fund your NGO because he has to meet Corporate Social Responsibility (CSR) targets. However, over the years working with cancer patients you have developed a deep hatred for tobacco companies. Now, the owner's offer has put you in a moral dilemma. On the one side, you detest the thought of accepting support from a company that is doling out cancer through its products, and on the other hand, you feel that the company's aid is a godsend opportunity for your NGO to provide better care to patients.

(a) What are the various ethical issues involved here?

(b) Will it be morally right for you to accept money from the tobacco company?

उत्तर: (a) उपर्युक्त केस स्टडी में तंबाकू कंपनी के मालिक द्वारा एन.जी.ओ को वित्तीय सहायता की पेशकश ने एन.जी.ओ प्रमुख को दुविधा में डाल दिया है। इस केस स्टडी में शामिल प्रमुख नैतिक मुद्दों को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है-

- **व्यक्तिगत विश्वास बनाम वित्तीय आवश्यकता**- जहाँ एक तरफ एन.जी.ओ धन की कमी से जूझ रहा है, वहीं दूसरी तरफ एन.जी. ओ प्रमुख का व्यक्तिगत विश्वास है कि तंबाकू कंपनी कैंसर हेतु उत्तरदायी है।
- **तंबाकू कंपनी का रोग फैलाने में उत्तरदायित्व बनाम एन.जी.ओ की सहायता कर परोपकार करने की भावना**- जहाँ एक तरफ तंबाकू उत्पादों का निर्माण कर कैंसर जैसी असाध्य बीमारी को फैलाने हेतु उत्तरदायी है, वहीं दूसरी तरफ कैंसर रोगियों के उपचार हेतु धन देने का इच्छुक भी है।
- **एन.जी.ओ की संगठनात्मक सत्यनिष्ठा बनाम धन की कमी**- जहाँ एक तरफ तंबाकू कंपनी से धन लेने से एन.जी.ओ की सत्यनिष्ठा पर सवाल उठ सकते हैं तो वहीं दूसरी तरफ धन की कमी उसके नेक कार्य में बाधा उत्पन्न कर रही है।
- **तंबाकू उत्पादों की वैधता बनाए रखना बनाम नैतिकता:** तंबाकू उत्पाद सरकारी राजस्व का एक प्रमुख स्रोत है किंतु वे कैंसरकारक भी हैं, इन उत्पादों की वैधता नैतिक रूप से संदेहास्पद है।

उत्तर: (b) एन.जी.ओ प्रमुख के रूप में फंड को स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने के संबंध में मेरे समक्ष कुछ नैतिक प्रश्न विद्यमान हैं-

- **फंड अस्वीकार करने के संभावित परिणाम**-
  - **(i)** कैंसर हेतु उत्तरदायी संस्था से फंड न लेकर मैं व्यक्तिगत व सांगठनिक सत्यनिष्ठा को बनाए रख पाऊंगा।
  - **(ii)** फंड अस्वीकार करने पर मैं व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा तो बना पाऊंगा किंतु कैंसर पीड़ितों का उपचार न कर पाने की कुंठा बनी रह सकती है।
  - **(iii)** फंड अस्वीकार करने की स्थिति में रोगियों की पर्याप्त देखभाल नहीं कर पाऊंगा जिससे एन.जी.ओ. की छवि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

- **फंड स्वीकार करने के संभावित परिणाम-**
  - **(i)** यदि मैं फंड स्वीकार कर लेता हूँ तो एन.जी.ओ. रोगियों का उचित उपचार कर पाऊंगा जिससे मैं व्यक्तिगत कुंठा से बच जाऊंगा।
  - **(ii)** एन.जी.ओ की छवि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।
  - **(iii)** फंड स्वीकारने से मेरी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा व सांगठनिक सत्यनिष्ठा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

वस्तुत: मेरे फैसले का प्रभाव सिर्फ मुझ पर ही नहीं बल्कि संगठन एवं कैंसर रोगियों पर भी पड़ेगा, तो ऐसे में कोई भी फैसला लेने से पूर्व मैं अपने सहकर्मियों व कैंसर पीड़ितों से मशविरा करूंगा। उसके पश्चात् सर्वसम्मति से निर्णय लेने का प्रयास करूंगा।

प्रश्न: आप एक शहर में पुलिस अधीक्षक (एस.पी.) के रूप में पदस्थ हैं जहाँ एक आई.टी. पेशेवर के साथ सामूहिक बलात्कार एवं हत्या की भयावह घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया है। इसके बाद से अपराधियों के प्रति बड़े स्तर पर जन-आक्रोश बढ़ा हुआ है तथा स्थानीय पुलिस पर भरोसा नहीं होने की वज़ह से पीड़ित परिवार जाँच में सहयोग करने से मना कर रहा है। इससे पहले, जब उन्होंने नज़दीक के पुलिस स्टेशन में पीड़ित की गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराने की कोशिश की तो पुलिस ने यह कहकर उन्हें लौटा दिया कि वह क्षेत्र उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर है। ऐसी परिस्थिति में जहाँ पुलिस बल मीडिया जाँच के दायरे में है-

(a) जनता एवं पुलिस के मध्य बढ़ते अविश्वास को रोकने के लिये आप क्या करेंगे?

(b) इसके साथ ही महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा की प्रवृत्तियों से निपटने के लिये दीर्घकालिक उपायों को सुझाइये।

(250 शब्द, 20 अंक)

You are posted as Superintendent of Police (SP) in a city where a horrific incident of gang rape and murder of an IT professional has shaken the conscience of the entire nation. Since the culprits are still at large, the public anger is mounting and the aggrieved family is refusing to cooperate in investigations because they have no faith in the local police. Earlier, when they tried to lodge a missing complaint of the victim in a nearby police station, they were turned away as the police said that the area falls outside their jurisdiction. In such circumstances when the police force is under heavy media scrutiny.

(a) What will you do to dissuade the rising mistrust between the public and the police?

(b) Also, bring out the long term measures to check this ever growing menace of violence against women.

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी में बलात्कार एवं हत्या की भयावह घटना ने जहाँ पूरे शहर को झकझोर दिया है वहाँ एक पुलिस अधीक्षक के रूप में मेरी प्राथमिक जिम्मेदारी अपराधियों पर नकेल कसने की है तो साथ में अपने अधिकार क्षेत्र की महिलाओं की दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित करना भी मेरा कर्त्तव्य है। इस केस स्टडी में शामिल प्रमुख हितधारक-

- **पीड़ित के माता-पिता:** जिन्होंने अपनी बेटी को खो दिया है।
- **पुलिस अधिकारी:** जिन्होंने समय पर कार्रवाई नहीं की।
- **पुलिस अधीक्षक:** जो कि शहर में कानून व्यवस्था बनाए रखने हेतु ज़िम्मेदार है।
- **बड़े पैमाने पर शहर की जनता:** जिनमें अपराधियों के विरुद्ध आक्रोश है।

उत्तर: (a) सार्वजनिक सुरक्षा एवं प्रभावी पुलिसिंग को बनाए रखने में पुलिस व स्थानीय जनता के बीच विश्वास का होना अति आवश्यक है। पुलिस पर से जनता का विश्वास उठ जाना बेहद निराशाजनक स्थिति है। एक पुलिस अधीक्षक के रूप में विश्वास की बहाली के लिये मैं निम्नलिखित उपाय करूंगा-

- पुलिस व स्थानीय समुदाय के बीच सकारात्मक संबंध बनाए रखने के लिये कानूनी प्रक्रिया पारदर्शी व जवाबदेह होनी चाहिये जिसके लिये मैं प्रयास करूंगा कि पुलिस द्वारा की जा रही कार्रवाई का वास्तविक प्रसारण जनता तक हो।
- पुलिस विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों में सभी व्यक्तियों व समुदायों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करने हेतु सांस्कृतिक जुड़ाव के कार्यक्रमों का आयोजन करवाऊंगा।
- पुलिस अधिकारियों एवं समुदाय के बीच विश्वासोत्पादन के लिये स्थानीय समुदायों के साथ मासिक बैठक बुलाना, सामुदायिक स्थलों व सड़क इत्यादि पर पैदल गश्तें बढ़ाना, स्कूल कॉलेजों आदि में पुलिस की भागीदारी पर सेमिनारों का आयोजन आदि कार्य करूंगा।

उत्तर: (b) महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा की प्रवृत्ति को कम करने के लिये दीर्घकालिक उपाय:

- सोशल मीडिया के माध्यम से जनजागरूकता बढ़ाने का प्रयास तथा युवाओं में लिंग संवेदनशीलता के सद्गुण का विकास करके।
- यौन हिंसा से प्रभावित महिलाओं के लिये उचित स्वास्थ्य देखभाल, कौशल विकास कार्यक्रम तथा सरकारी नीतियों व योजनाओं में उनके लिये विशेष प्रावधान करके।
- स्कूलों, कॉलेजों एवं सामुदायिक बैठकों में यौन हिंसा के मुद्दे पर चर्चा करना व हिंसा को कम करने के उपायों को तलाशना।
- संस्थानों, सार्वजनिक स्थानों तथा सार्वजनिक परिवहन के साधनों में सी.सी.टी.वी लगवाकर तथा पेनिक बटन की व्यवस्था करवाकर।
- शहरों, कस्बों एवं गाँवों आदि में पुलिस तैनाती बढ़ाकर तथा स्वयंसेवकों को प्रेरित करके।
- अपने बच्चों में विपरीत लिंग के प्रति संवेदनशीलता का भाव उत्पन्न करके तथा पूर्वाग्रहों की समाप्ति करके।
- प्रशासन, पुलिस व न्यायपालिका आदि सभी स्तरों पर कानून का बेहतर प्रवर्तन व कानूनी मशीनरी को दुरुस्त बनाकर।
- महिलाओं को आत्मरक्षा की तकनीकों को सिखाकर।

वस्तुतः यदि देखा जाए तो पुलिस अधिकारी भी समुदाय का ही भाग होते हैं जिन पर न सिर्फ कानून व्यवस्था बनाये रखने का दायित्व होता है बल्कि समाज के साथ पारस्परिक सामंजस्य स्थापित करने का भी दायित्व होता है। ऐसे में उन्हें उनके कर्तव्यों के प्रति समर्पित बनाकर प्रभावी पुलिसिंग को बढ़ावा दिया जा सकता है।

प्रश्नः श्री सिद्धांत केंद्र सरकार के अधीन एक सांस्कृतिक संगठन के अध्यक्ष हैं। संगठन की एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत है। हाल ही में उन्हें विभिन्न देशों के कलाकारों को सम्मिलित करके एक अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के आयोजन की ज़िम्मेदारी दी गई है। इस आयोजन के लिये उन्होंने एक प्रसिद्ध बॉलीवुड शख्सियत को ब्रांड एंबेसडर तथा आयोजन के चेहरे के रूप में शामिल किया है। इससे कार्यक्रम को वृहद् स्तर पर प्रसिद्धि मिलेगी, साथ ही राजस्व का सृजन भी होगा। हालाँकि तैयारी के बीच में ही एक गायिका मीडिया के समक्ष आकर उक्त बॉलीवुड शख्सियत पर यौन शोषण का आरोप लगाती है। यह घटना 10 वर्ष पूर्व की है जब गायिका काम की तलाश में थी। इस आरोप ने सार्वजनिक रूप से विवाद एवं विरोध को जन्म दिया है। लोग आयोजन में बॉलीवुड शख्सियत की भागीदारी के खिलाफ आवाज़ उठा रहे हैं। इसी बीच राष्ट्रीय महिला आयोग ने श्री सिद्धांत से संपर्क किया व ब्रांड एंबेसडर को हटाने की मांग की है। श्री सिद्धांत इस आयोजन को अंतिम रूप देने के करीब हैं तथा विश्व के विभिन्न हिस्सों से लोगों को आमंत्रित करने तथा उनके ठहरने आदि की तैयारी पहले ही की जा चुकी है। प्रारंभ में उनकी अंतरात्मा ने उन्हें इस संबंध में कुछ करने के लिये प्रेरित किया किंतु बाहरी दबावों के चलते, वह किसी भी कार्रवाई के संदर्भ में निश्चित नहीं हैं। उपर्युक्त केस स्टडी के संदर्भ में-

(a) आप उन्हें यह दिखाने के लिये क्या तर्क दे सकते हैं कि चुप रहना नैतिक रूप से सही नहीं है?

(b) आप उन्हें क्या कार्रवाई करने की सलाह देंगे और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

Mr. Siddhant is the chairman of a cultural organization under the central government. The organization has a historical and cultural legacy. Recently he has been charged with the responsibility of organizing an international event by involving artists from different countries. For this event, he has roped in a famous personality from Bollywood as the brand ambassador and face of the event. This has helped in popularising the program at a wide scale and also in the generation of revenue. However, in the mid of the preparation, a female singer artist came in front of the media and accused the Bollywood personality of sexual harassment 10 years ago when she was a minor and searching for work. This accusation has sparked controversy and protest by the public. People are raising their voices against his involvement in the event. Meanwhile, the National Commission of Women has also approached Mr. Siddhant and demands the removal of the Brand Ambassador. Mr. Siddhant is in mid of the finalization of the event and all the preparations regarding inviting people from different parts of the world, their accommodation, etc have already been done. Initially, his consciousness pushed him to do something in this regard but because of external pressure, he is not sure about the right course of action. With reference to the above case study–

(a) What arguments can you give him to show that keeping quiet is not morally right?

(b) What course of action would you advise him to adopt and why?

उत्तर: (a) उपर्युक्त केस स्टडी में बॉलीवुड शख्सियत पर यौन उत्पीड़न का आरोप श्री सिद्धांत द्वारा आयोजित किये जा रहे कार्यक्रम को प्रभावित कर रहा है। चूँकि कार्यक्रम के आयोजन की तैयारी लगभग पूरी की जा चुकी है, ऐसे में कोई भी परिवर्तन आयोजन को प्रभावित कर सकती है। संगठन के अध्यक्ष के रूप में श्री सिंद्धांत की नैतिक ज़िम्मेदारी है कि वह इस मामले में कोई स्टैंड लें तथा यौन उत्पीड़न जैसे गंभीर आरोप पर अपनी आँखें बंद न करें।

यह बताने के लिये कि चुप रहना नैतिक रूप से ठीक नहीं है, मैं निम्नलिखित तर्क दूंगा–

- संगठन के साथ बॉलीवुड शख्सियत का जुड़ाव उसकी प्रतिष्ठा को प्रभावित कर सकता है जिसका पोषण उसने दशकों से किया है।
- यदि वह चुप रहता है तो लोग यह कहकर कि आप बॉलीवुड शख्सियत को बचाना चाहते हो; आपकी व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा पर सवाल उठा सकते हैं।
- चूँकि, आरोप सार्वजनिक रूप से लगाया गया है, ऐसे में संभव है कि देश-विदेश के बड़े कलाकार आयोजन का बहिष्कार करें।
- एक प्रतिष्ठित संगठन के प्रमुख को किसी भी परिस्थिति में नैतिक निर्णय लेना चाहिये।
- अतीत में कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों की प्रतिबद्धता एवं समर्पण ने इस संगठन की प्रतिष्ठा को बनाया होगा। आपका एक निर्णय इसी छवि को धूमिल कर सकता है।

उत्तर (b): इस परिस्थिति में श्री सिद्धांत को निम्नलिखित सलाह दूंगा-

- भले ही भविष्य में उस शख्सियत पर लगे आरोप झूठे क्यों न साबित हों, किंतु संगठन को आयोजन के मुख्य चेहरे के रूप में उसे नहीं रहने देना चाहिये।
- आयेजक को इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से प्रभावित नहीं होना चाहिये, बल्कि संगठन के नेतृत्वकर्त्ता के रूप में आयोजन को पूर्ण करने हेतु वैकल्पिक समाधान खोजना चाहिये।
- उसे उस बॉलीवुड शख्सियत से स्वयं पूछना चाहिये कि सच्चाई क्या है? यदि वह कोई बहाना बनाता है तो उसे नैतिक आधार पर इस आयोजन में भाग न लेने के लिये कहना चाहिये।

- सिद्धांत को विकल्प के रूप में किसी अन्य प्रसिद्ध शख्सियत की तलाश करनी चाहिये ताकि आयोजन पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

वस्तुत: किसी भी संगठन की साख एक लंबे समय में स्थापित होती है, उस साख को बनाए रखना उसके शीर्ष नेतृत्व का प्राथमिक दायित्व होता है जिसे व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता एवं समर्पण भाव से इसे बनाए रखना चाहिये तथा संगठन के प्रमुख के रूप में श्री सिद्धांत को भी बेहतर नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन कर संगठन की छवि को धूमिल होने से बचाना चाहिये।

प्रश्न: भारत की धार्मिक भूमि में, आनुष्ठानिक लैंगिक दासता की शोषणकारी प्रथा, कन्याओं का देवता से विवाह करने की जोगिनी प्रथा (देवदासी प्रथा का एक स्थानीय रूप) मौजूद है। देवदासी (समर्पण का निषेध) अधिनियम के तहत प्रतिबंधित होने के बावजूद आज तक यह सामाजिक बुराई निरंतर चली आ रही है। आप एक ज़िले में ज़िलाधिकारी के रूप में पदस्थ हैं तथा आपको अपने अधिकार क्षेत्र में हो रही ऐसी प्रथा के बारे में पता चलता है। दो दलित कन्याओं को देवदासियों के रूप में ईश्वर के प्रति समर्पित होने के लिये तैयार किया जा रहा है। बच्चों को उनके अपने माता-पिता द्वारा देवदासी बनने के लिये मजबूर किया जाता है क्योंकि अधिकतर मामलों में कन्याएँ उनकी आय का एकमात्र स्रोत होती हैं। एक समाज में जहाँ अक्सर एक बच्ची को दायित्व माना जाता है, उन्हें देवदासी बनाना पितृसत्ता का उन्हें संपत्ति में बदलने जैसा है। साथ ही देवदासी के नाम पर प्रचलित बाल वेश्यावृत्ति के बारे में भी आपको पता चलता है।

(a) ऐसे परिदृश्य में आप क्या कार्रवाई करेंगे?

(b) देवदासी प्रथा के विरुद्ध कानूनों की मौजूदगी के बावजूद इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाने में कौन-कौन से मुद्दे शामिल हैं? (250 शब्द, 20 अंक)

In the religious land of India, there exists the exploitative custom of sexual slavery known as the Jogini system (a local variation of the Devadasi system) which involves marrying young girls to a deity. This social evil has resisted the legal measures aimed at curbing it till date, despite having been prohibited as per the Devadasi (Prohibition of Dedication) Act. You are posted as a District Magistrate and you get to know about such practice taking place in the area of your jurisdiction. Two Dalit girls have been confined and being prepared for dedication to God as devadasis. The children are forced into becoming Devadasis by their own parents because girls are their only source of income in most cases. In a society where a girl child is often considered a liability, turning them into Devadasis is how patriarchy works to transform them into assets. You also get to know of child prostitution being practiced in the name of Devadasi.

(a) What course of action will you take in such a scenario?

(b) What are the issues involved in banning the practice of Devadasi system, in spite of the laws already present against it?

उत्तर:

प्रमुख हितधारक

- **कन्याएँ:** जिनके माता-पिता उन्हें देवदासी बनाने के लिये तैयार कर रहे हैं।
- **गरीब परिवार:** जो कि अधिकतर समाज के निम्न वर्गों से हैं।
- **मंदिर प्रणाली/पुरोहित वर्ग:** जोकि गरीब परिवारों की निर्धनता का लाभ उठाकर देवदासी प्रथा के पोषक हैं।
- **ज़िला प्रशासन:** जो कि इस प्रकार की प्रथाओं पर रोक लगाने हेतु उत्तरदायी है।
- **बड़े पैमाने पर आम जनता:** जो कि इस प्रकार की प्रथाओं से प्रभावित होती है।

देवदासी प्रथा भारतीय समाज में अत्यधिक प्राचीन व शोषणकारी प्रथा है। देवदासी का शाब्दिक अर्थ 'देवता के लिये समर्पित महिला दास' है। इस प्रथा की शुरुआत भारत में लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व हुई थी। उस समय देवदासी बनना अत्यधिक सम्मान की बात थी, किंतु समय बीतने के साथ ही इस प्रथा में विकृति आ गई जो कि वर्तमान में वेश्यावृत्ति का पर्याय बन गई है।

उत्तर: (a) इस क्षेत्र के ज़िलाधिकारी के रूप में इस सामाजिक बुराई से निपटने के लिये में निम्नलिखित कदम उठा सकता हूँ-

- मैं सबसे पहले उन कन्याओं को मुक्त कर उनके पुनर्वास का कार्य करूंगा।
- तत्पश्चात् मैं उनके माता-पिता एवं इस कृत्य में शामिल अन्य व्यक्तियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करूंगा, ताकि वे इस प्रकार के कृत्य को दोहरा न सकें।
- इसके बाद मैं वेश्यावृत्ति की समस्या से निपटने के लिये विश्वसनीय जानकारी जुटाऊंगा, जिसके बाद इसमें शामिल सभी पक्षों पर कार्रवाई करूंगा।
- तत्पश्चात् लोगों को इस कुप्रथा को रोकने के लिये रिपोर्टिंग करने के लिये प्रेरित करूंगा, जिसके लिये एक हेल्पलाइन नंबर बनाने का प्रयत्न करूंगा।
- इस प्रथा का मूल कारण गरीबी है, जिसके लिये मैं गरीबी निवारण हेतु मनरेगा जैसी योजनाओं का ग्राउंड लेवल क्रियान्वयन सुनिश्चित करवाऊंगा तथा वैकल्पिक रोज़गार के अन्य साधनों को उपलब्ध कराने का प्रयास करूंगा।
- कन्याओं का सरकारी सकूलों में नामांकन सुनिश्चित करवाऊंगा तथा व्यापक स्तर पर जनता में जागरूकता फैलाने का कार्य करूंगा।
- चूँकि, इस मामले में धार्मिक पक्ष शामिल है तो मैं इस बात का ध्यान रखूंगा कि हर कदम सावधानीपूर्वक उठाऊँ, ताकि जनभावनाएँ आहत न हों।

उत्तर: **(b)** देवदासी प्रथा के विरुद्ध कानून होने के बावजूद इस प्रथा पर प्रतिबंध नहीं लगाया जा सका, जिसके लिये कई कारण ज़िम्मेदार हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- **सामाजिक स्वीकृति:** इस प्रथा को समाज में स्वीकृति मिली हुई है। लोगों ने इस प्रथा को सामाजिक-धार्मिक दबावों के चलते स्वीकृति प्रदान की है।
- **जागरूकता कार्यक्रमों का अप्रभावी होना:** इस प्रथा के विरुद्ध सरकारी एवं गैर-सरकारी जनजागरूकता कार्यक्रम धार्मिक अनुष्ठान के आगे अधूरे महसूस होते हैं।
- **पुलिस कार्रवाई का प्रभावी न होना:** पुलिस धार्मिक मामलों में कार्रवाई करने से बचती है।
- **कानूनों का क्रियान्वयन अत्यधिक कमज़ोर होना:** देवदासी (समर्पण का निषेध) अधिनियम, पोक्सो एक्ट तथा वेश्यावृत्ति निषेध अधिनियम इत्यादि कानूनों का क्रियान्वयन बेहतर ढंग से न हो पाना।

प्रश्न: भारत हर साल कई प्रवासी पक्षी प्रजातियों की मेज़बानी करता है, जो कि या तो भोजन की तलाश में या अपने प्राकृतिक निवासों में पड़ने वाली ठंड से बचने के लिये यहाँ आते हैं। भारत की एक प्रमुख नेस्टिंग झील में हज़ारों पक्षियों की रहस्यमयी तरीके से मौत हो गई है। यह झील खनन क्षेत्रों से घिरी हुई है तथा संभव है कि खनन प्रक्रिया के दौरान अपशिष्टों के निर्वहन के कारण झील प्रदूषित हो गई हो। इसी खनन क्षेत्र में कार्य करने वाला कनिष्ठ प्रबंधक (जूनियर मैनेजर) पक्षियों की मौत के कारण की खोज करता है। इस घटना से क्षुब्ध होकर वह इसकी चर्चा अपने सहकर्मियों से करता है। सहकर्मी उसे चुप रहने के लिये कहते हैं नहीं तो उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है। वह अपनी नौकरी खोने का जोखिम नहीं उठा सकता क्योंकि वह अपने परिवार का एकमात्र कमानेवाला है तथा उस पर अपने बीमार माता-पिता व भाई-बहनों की देखभाल का दायित्व है। पहली बार में वह सोचता है कि यदि उसके सहकर्मी शांत हैं तो उसे भी क्यों आफत बुलानी चाहिये। किंतु उसकी अंतरात्मा उसे झील तथा उस पर निर्भर पक्षियों को बचाने के लिये कुछ करने हेतु प्रेरित करती है। वह इस मामले को अपने वरिष्ठ अधिकारी के पास ले जाने का फैसला करता है।

(a) वह यह बताने के लिये क्या तर्क दे सकता है कि खनन उद्योग द्वारा जो कुछ भी किया जा रहा है वह नैतिक रूप से सही नहीं है?

(b) यदि वरिष्ठ अधिकारी उसकी शिकायत सुनने से इनकार कर दे तो उसे क्या कार्रवाई करनी चाहिये और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

India hosts a number of migratory bird species every year who fly here either in search of feeding ground or to escape freezing winters of their natural habitat. At a major bird nesting lake in India, thousands of birds have died in a mysterious way. The deadly lake is surrounded by mining areas and possibly due to the discharge of effluents from the mining process, the lake got polluted. The junior manager working in the same mining area happens to discover the cause of the death of the birds. He is perturbed and discusses this with his colleagues who ask him to keep silent as this may cost him his job. He cannot risk losing his job as he is the sole breadwinner of his family and has to take care of his ailing parents and siblings. At first, he thinks that if his colleagues are quiet, why should he stick out his neck. But his conscience pricks him to do something to save the lake and the birds who depend upon it. He decides to take the matter to his senior.

(a) What arguments can he advance to show that whatever is being done by the mining industry is not morally right?

(b) What course of action should he adopt in case his senior refuses to entertain his complaint and why?

उत्तर: उपर्युक्त केस स्टडी में नेस्टिंग झील में बड़े पैमाने पर प्रवासी पक्षियों की मौत हो गई है। प्रथम दृष्टया यह प्रतीत होता है कि इन पक्षियों की मौत का कारण खनन क्षेत्रों से खतरनाक रसायनों का झील में निस्यंदन होना है। इस केस स्टडी में कई हितधारक शामिल हैं-

- जूनियर मैनेजर
- खनन कंपनियाँ
- जूनियर मैनेजर का वरिष्ठ अधिकारी
- राज्य सरकार
- राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
- बड़े पैमाने पर आम जनता

उत्तर: **(a)** यदि रसायनों का निस्यंदन इसी प्रकार जारी रहा तो दीर्घकाल में इससे स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र एवं स्थानीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इससे न केवल पक्षी प्रजातियाँ, बल्कि अन्य जंतु प्रजातियाँ व पशुधन भी प्रभावित होंगे, जिससे कि स्थानीय आबादी पर भी असर पड़ेगा। मैं यह बताने के लिये कि यह नैतिक रूप से ठीक नहीं है, निम्नलिखित तर्क दूंगा-

- झील में रसायनों का निस्यंदन पक्षियों के साथ-साथ स्थानीय कृषकों के पशुधन को भी प्रभावित कर सकता है।
- यदि झील में रसायनों की मात्रा बढ़ेगी तो उसका निस्यंदन भूमिगत जल में भी होगा, जो पेयजल को अस्वच्छ बना सकता है एवं स्थानीय आबादी में कैंसर सहित कई रोगों को जन्म दे सकता है।

- स्थानीय जनता द्वारा शिकायत किये जाने पर सरकार उद्योगों को बंद करने के आदेश दे सकती है, जो कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को नकारात्मक रूप से प्रभावित करेगा।
- रसायनों का प्राकृतिक जल स्रोतों में प्रवाह पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 व जल (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1974 का उल्लंघन है।

उत्तर: (b) इस स्थिति में जूनियर मैनेजर के पास निम्नलिखित विकल्प मौजूद हैं-

- अपने सहकर्मियों की चुप रहने की सलाह को मान ले।
- अपनी नौकरी छोड़कर इस अनैतिक व्यवस्था का हिस्सा न बने।
- वह अपनी चिंता को वरिष्ठ अधिकारियों को बता सकता है, यदि वे उसे न मानें तो एक व्हिसलब्लोअर बनकर सार्वजनिक प्राधिकरण को सूचित कर सकता है।
  - पहले विकल्प में वह अपनी नौकरी तो बचा लेगा, किंतु उसे अपने नैतिक मूल्यों से समझौता करना पड़ेगा। इस विकल्प को चुनने में संभावना है कि वह सदैव एक मानसिक बोझ लेकर जिएगा।
  - इसके विकल्प में वह अनैतिक गतिविधि का हिस्सा न बनकर मानसिक रूप से संतुष्ट तो रहेगा, किंतु उसके परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यधिक अनिश्चित हो जाएगी तथा झील में रसायनों का निस्यंदन जारी रहेगा।
  - तीसरे विकल्प में यदि वरिष्ठ उसकी चिंता सुन लेते हैं तो इस बात की संभावना है कि वे इस मुद्दे को सुलझा लें, किंतु इस बात की भी पर्याप्त संभावना है कि वे इस मुद्दे पर कोई कार्रवाई न करें तो ऐसे में इसे व्हिसलब्लोअर बनकर राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को इस घटना की जानकारी दे देनी चाहिये। ऐसे में उसे अपनी नौकरी से हाथ भी नहीं धोना पड़ेगा और उसकी मानसिक चिंता का भी समाधान हो जाएगा।

उपर्युक्त तीनों विकल्पों में से तीसरा विकल्प सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है, क्योंकि मूकदर्शक बनने से बेहतर है कि ऐसा कोई कदम उठाया जाए, जिससे उसकी नौकरी भी बची रहेगी और पर्यावरणीय समस्या का भी समाधान हो जाएगा।

प्रश्न: संस्कृति वह वातावरण है जो हमें हर समय घेरे रहती है। कार्यस्थल की संस्कृति उन साझा मूल्यों, विश्वासों, दृष्टिकोणों तथा मान्यताओं का समूह है जिसे एक कार्यस्थल के लोग साझा करते हैं। यह व्यक्तिगत परवरिश तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों से निर्मित होती है। हालाँकि, एक कार्यस्थल में नेतृत्व और रणनीतिक संगठनात्मक निर्देश एवं प्रबंधन एक कार्यस्थल की संस्कृति को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। एक सकारात्मक कार्य-संस्कृति टीम वर्क में सुधार करती है, मनोबल बढ़ाती है, उत्पादकता एवं दक्षता बढ़ाती है तथा कार्यबल की अवधारणा को बल प्रदान करती है। जॉब सैटिस्फैक्शन, सहयोग तथा कार्य प्रदर्शन को भी बढ़ावा देती है तथा सबसे महत्त्वपूर्ण, एक सकारात्मक कार्य का वातावरण कर्मचारियों के तनाव को कम करता है।

मान लीजिये आप एक सार्वजनिक क्षेत्रक उद्यम में प्रबंधक हैं, आप अपने कार्यस्थल में कर्मचारियों की खुशहाली कैसे सुनिश्चित करेंगे? (250 शब्द, 20 अंक)

Culture is the environment that surrounds us all the time. Workplace culture is the shared values, belief systems, attitudes and the set of assumptions that people in a workplace share. This is shaped by individual upbringing, social and cultural context. In a workplace, however the leadership and the strategic organizational directions and management influence the workplace culture to a large extent. A positive workplace culture improves teamwork, raises morale, increases productivity and efficiency, and enhances retention of the workforce. Job satisfaction, collaboration, and work performance are all enhanced. And, most importantly, a positive work environment reduces stress in employees.

Suppose you are a manager in a Public Sector Undertaking (PSU), how will you ensure that workers in your workplace are happy.

उत्तर: खुशहाली एक मन:स्थिति है, जहाँ व्यक्ति संतोष एवं आनंद की अनुभूति करता है। किसी भी कार्यस्थल पर कर्मचारियों में संतोष एवं आनंद का माहौल होना अत्यधिक आवश्यक है, जिससे कार्य की उत्पादकता बढ़ जाती है तथा कर्मचारियों में तनाव कम हो जाता है। कार्यस्थल पर विभिन्न विचारधाराओं, मूल्यों, विश्वासों एवं विभिन्न संस्कृतियों के कर्मचारियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में एक शांतिपूर्ण व खुशहाल वातावरण होना अत्यधिक आवश्यक है।

वस्तुत: किसी कार्यस्थल की संस्कृति को सामंजस्यपूर्ण एवं सौहार्द्रपूर्ण बनाए रखने में उस कार्यस्थल के शीर्ष नेतृत्व की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। एक ज़िलाधिकारी के रूप में मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं अपने ज़िला मुख्यालय एवं ज़िले में पदस्थ अन्य अधिकारियों के बीच सौहार्द्र, सामंजस्य एवं परस्पर सहयोगिता का वातावरण सुनिश्चित करूँ तथा कर्मचारियों को तनाव मुक्त रखूँ, ताकि उनमें जॉब सेटिस्फेक्शन आए, जिससे उनके प्रदर्शन में भी सुधार होगा। इसके लिये मैं निम्नलिखित कदम उठाऊंगा-

- शीर्ष अधिकारियों तथा अन्य कर्मचारियों के मध्य सहयोग एवं परस्पर मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने का प्रयास करूंगा, जिसके लिये मासिक, त्रैमासिक, छमाही तथा वार्षिक बैठकों का आयोजन कराऊंगा तथा कभी-कभी कुछ ऐसे सेमिनारों का आयोजन करवाऊंगा, जिनसे उनके बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों का विकास हो।

- ज़िले के प्रमुख के रूप में मेरा प्राथमिक कर्त्तव्य है कि मैं अपने ज़िले में पदस्थ सभी कर्मचारियों की समस्याओं का हरसंभव समाधान खोजूँ तथा उनका मनोबल बढ़ाए रखूँ, अच्छा कार्य करने पर उन्हें पुरस्कार दूँ तथा कामचोरी एवं अन्य भ्रष्ट आचरणों से उन्हें दूर रखने का प्रयास करूँ।
- अपने कार्यालय में मानव संसाधन का अनुकूलतम उपयोग सुनिश्चित करने का प्रयास करूंगा, कर्मचारी की अभिवृत्ति के अनुरूप उससे कार्य करवाऊंगा तथा जहाँ पर आवश्यक हो उनकी हरसंभव सहायता करूंगा।
- सभी कर्मचारियों के बीच आपसी संचार हेतु एक पूल का निर्माण करूंगा तथा जहाँ तक संभव हो उनके बीच आपसी पारस्परिक सहयोग की भावना का विकास करवाऊंगा।
- कर्मचारियों में उच्च मनोबल बनाए रखने के लिये वित्तीय एवं गैर-वित्तीय प्रोत्साहन देकर उन्हें प्रेरित करने का कार्य करूंगा तथा उनमें लैंगिक समानता एवं समाज के कमज़ोर वर्गों के प्रति संवेदनशीलता की भावना को भी बढ़ावा दूंगा।
- उनमें टीम भावना का विकास करने के लिये प्रत्येक कर्मचारी को टीम के उसके महत्त्व से अवगत कराऊंगा तथा कार्यालय के प्रमुख के रूप में समय-समय पर उनका मार्गदर्शन करूंगा।
- कर्मचारियों के प्रति करुणा एवं दया के भाव से संगठन में संवेदनशीलता का भाव उत्पन्न होगा जिससे उनमें भी लोक सेवा के प्रति समर्पण का भाव उत्पन्न होगा।
- मैं प्रशासनिक मुद्दों पर कर्मचारियों के विचारों को यथासंभव महत्त्व देने का प्रयास करूंगा तथा कोशिश करूंगा कि अधिकतर निर्णय लोकतांत्रिक रूप से लिये जाएँ।

वस्तुत: किसी भी संगठन में अलग-अलग अभिवृत्तियों एवं अभिरुचियों के व्यक्ति कार्य करते हैं, ऐसे में उनके बीच सामंजस्य बनाए रखने तथा संगठन की एकता बनाए रखने के लिये कर्मचारियों के बीच आपसी विश्वास एवं पारस्परिकता की भावना का होना आवश्यक है। इस पारस्परिकता को बनाए रखना संगठन के शीर्ष नेतृत्व का प्राथमिक उत्तरदायित्व है, ताकि संगठन की उत्पादकता एवं दक्षता में वृद्धि सुनिश्चित की जा सके।

प्रश्न: एक सरकारी आयुर्विज्ञान महाविद्यालय में एक रोगी व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् एक चिकित्सक पर निर्दयता से हमला किया गया और अब वह जीवन के लिये संघर्ष कर रहा है। इस घटना के परिणामस्वरूप पूरे शहर में चिकित्सकों द्वारा बड़े पैमाने पर हड़ताल शुरू कर दिया गया। आंदोलन के बाद, विभिन्न चिकित्सीय निकाय भी चिकित्सकों के समर्थन में सामने आ गए और विभिन्न स्थानों पर चिकित्सा समुदाय के विरुद्ध बढ़ती हिंसा के विरोध में चिकित्सकों की संगठित राष्ट्रव्यापी हड़ताल की चेतावनी दी। परिणामस्वरूप संपूर्ण भारत में आवश्यक व गैर-आवश्यक दोनों ही चिकित्सीय सेवाओं में बाधाएँ उत्पन्न होने की संभावना है, जिससे रोगी प्रतिकुलत: प्रभावित होंगे।

(a) क्या चिकित्सकों का हड़ताल पर जाना नैतिक रूप से उचित है? इस मामले में कौन से विभिन्न नैतिक आयाम शामिल हैं?

(b) भारतीय चिकित्सा संघ (आई.एम.ए.) के अध्यक्ष के रूप में आप इस प्रकार के विपत्ति को हल करने के लिये क्या दिशा-निर्देश और अनुदेश जारी करेंगे?

(250 शब्द, 20 अंक)

In a government medical college, a doctor was brutally attacked and is now fighting for life, following the death of one of the patients. This incident triggered the massive strike by the doctors in the city. Following the agitation, various medical bodies also came in support of the doctors and threatened to organize nationwide doctors' strike to protest over rising violence against the medical fraternity at many places. As a result, medical services, both essential as well as non-essential is likely to suffer across the country, adversely affecting the patients.

(a) Is it ethical for the doctors to go for a strike? What are the various ethical dimensions involved in this case?

(b) As a President of Indian Medical Association, what guidelines and instructions will you issue to resolve such crises?

उत्तर: चिकित्सकों के समक्ष सामान्यत: हिप्पोक्रेटिक शपथ के पालन तथा रोगियों के लिये प्रत्ययी दायित्व के निर्वाह के बीच एक नैतिक दुविधा होती है। ऐसी परिस्थितियों में स्वायत्तता के लिये सम्मान के नैतिक सिद्धांत, न्याय एवं उपकार सभी संघर्ष का हिस्सा बन जाते हैं, जिसके कारण चिकित्सकों को सामान्य कर्मचारियों के रूप में अपनी भूमिका के निर्वहन में संघर्ष करना पड़ता है, जो रोगियों और समाज के बनाम उनके अपने नैतिक दायित्वों के लिये सुरक्षित कार्यस्थल के हकदार होते हैं।

उत्तर : (a)

नैतिक आयाम:

- हड़ताल का अधिकार बनाम कल्याण एवं स्वास्थ्य का अधिकार
- कार्यस्थल पर सुरक्षा बनाम हिप्पोक्रेटिक शपथ
- कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से न्याय बनाम हिंसा के माध्यम से न्याय

चिकित्सकों द्वारा की गई हड़ताल का प्रभाव विशेष रूप से नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने वाले गरीब रोगी व्यक्तियों पर पड़ता है। इस प्रकार की हड़तालों के फलस्वरूप रोगी व्यक्तियों के सबसे अधिक प्रभावित होने की संभावना होती है। रोग के प्रति उनकी भेद्यता उन्हें

स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के संबंध में अपेक्षाकृत दुर्बल बनाती है तथा चिकित्सकों के प्रति रोगियों के दृष्टिकोण एवं विश्वास को प्रभावित करती है। अत: ऐसी हड़तालें पेशेवर सदाचार अथवा नैतिक प्रश्नों के केंद्र होती हैं।

कांट की स्पष्ट अनिवार्यता के अनुसार, किसी व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों के साथ वैयक्तिक नैतिक मूल्यों एवं प्रतिष्ठा को ध्यान में रखकर व्यवहार करना चाहिये और इन मूल्यों को केवल अपने लाभ के साधन के रूप में नहीं देखना चाहिये। एक चिकित्सक का पेशा अन्य कर्मियों से भिन्न होता है, उसका प्राथमिक लक्ष्य धन अर्जित करना नहीं है बल्कि रोगियों के जीवन की रक्षा करना है, जिनके प्रति वह नैतिक रूप से प्रतिबद्ध होता है। अत: चिकित्सकों को अपने स्वयं के व्यक्तिगत एवं तात्कालिक हितों से ऊपर उठकर अपनी व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं के अनुसार अपने रोगियों के हितों की सेवा करनी चाहिये।

इस प्रकार नैतिक आधार पर चिकित्सकों की हड़ताल को केवल एक सीमित सीमा तक ही उचित ठहराया जा सकता है बशर्ते इसके कि आवश्यक चिकित्सा सेवा में बाधा उत्पन्न न हो, क्योंकि एक मनुष्य के रूप में चिकित्सक को भी गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार है।

उत्तर : (b) यह भारतीय चिकित्सा संघ (आई.एम.ए.) का कर्त्तव्य है कि वह चिकित्सा समुदाय की एक-जुटता को सुनिश्चित करें और साथ ही यह सुनिश्चित करे कि चिकित्सा सेवाएँ पूर्णत: बाधित न हों। अत: इस दिशा में आई.एम.ए. के अध्यक्ष के रूप में हमें निम्नलिखित अनुदेशों और दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिये:

- शांतिपूर्ण प्रदर्शन का आयोजन करना और हड़ताल के दौरान किसी भी प्रकार की हिंसा से दूर रहना।
- चिकित्सकों को नए तरीकों से विरोध करना चाहिये जैसे- प्रतीकात्मक विरोध के रूप में काले रंग के चिन्ह धारण करना, सिर पर पट्टी बांधना इत्यादि।
- बिना अवरोध उत्पन्न किये आवश्यक चिकित्सा सेवाओं को उपलब्ध कराने की अनुमति दी जानी चाहिये।

इन दिशा-निर्देशों के साथ-साथ आई.एम.ए. द्वारा संबंधित चिंताओं को संबोधित करने वाले ज्ञापन को प्रधानमंत्री कार्यालय को सौंपा जाना चाहिये। चिकित्सा समुदाय की रक्षा हेतु सक्रीय रूप से कार्यरत इस संघ को विधायी ढाँचे को लागू करके चिकित्सकों की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिये।

प्रश्न: एक राज्य है, जहाँ बड़ी संख्याओं में जंगली वनस्पतियों एवं जंगली जीवों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। प्रत्येक वर्ष यह राज्य वनाग्नि (जंगल की आग) का गवाह बनता है। पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र होने के नाते, यह आग राज्य के एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र को क्षति पहुँचाती हैं। राज्य के राष्ट्रीय उद्यानों में से एक यह उद्यान प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। एक विशिष्ट मौसम में वन के हिस्से में आग फैल गई, जो पूरे उद्यान तथा आसपास के बस्ती क्षेत्र में फैली गई। इसके कारण हजारों पर्यटक एवं स्थानीय लोग विभिन्न मार्गों तथा स्थानों पर फँस गए। आप उस क्षेत्र के वनों के उप-संरक्षक हैं और आपके क्षेत्र में फँसे लोगों में वरिष्ठ नागरिक, महिलाएँ व बच्चे, यात्री, पर्यटक, अपने परिवार के सदस्य सहित राजनीतिक दल के नेता और निकट राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन के साथ-साथ वन के पशु शामिल हैं।

एक वन अधिकारी के रूप में आप इन लोगों को किस क्रमानुसार बचाएंगे और क्यों? अपने उत्तर के संदर्भ में उचित तर्क दीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

There is a state which holds a large number of species of wild flora and fauna. Every year this state witnesses a large number of wild forest fires. Being an ecologically sensitive zone, these wild fires damage a large geographical area of state. One of the National Parks of the state attracts the large number of tourists every year. During one particular season, fire sparked in part of the forest and savagely spread out to the whole Park and the adjoining settlement region. This caused the thousands tourists and locals trapped across different routes and locations. You are the Deputy Conservator of forests of that region and the people trapped in your area of responsibility includes senior citizens, women and children, hiker, tourist, political parties' leaders with their family members and Chief Wildlife Warden of the nearby state as well as animals of the forest.

As a forest officer, what would be the order in which you would rescue these people and why? Give justifications.

उत्तर: यह एक उत्कृष्ट केस स्टडी है जिसमें किसी व्यक्ति को संसाधनों की कमी और लोगों की भेद्यता के कारण प्राथमिकताएँ निर्धारित करने के लिये मज़बूर किया जाता है। यह निर्णय निम्नलिखित पैरामीटर पर आधारित होना चाहिये:

- सुभेद्यता
- स्थिति को संभालने की व्यक्तिगत क्षमता
- अनंतरता (Proximity)

मैं जाति, धर्म, वर्ग या पद के आधार पर किसी को तरजीह प्रदान किये बिना अधिकतम जीवन बचाने तथा बचाव कार्यों में समानता सुनिश्चित करने की कोशिश करूँगा। बचाव कार्य में आसानी और लोगों की अनंतरता के आधार पर उनका जीवन बचाने में प्राथमिकता दी जाएगी।

सामान्य तौर पर लगभग सभी स्वीकृत नैतिक एवं धार्मिक परंपराओं में मानव जीवन को मूल रूप से पशु जीवन से अधिक मूल्यवान माना जाता है। अत: पशुओं को मानव जीवन के बाद बचाया जाना चाहिये। परंतु यदि मुझे कोई विकल्प चुनना हो तो मैं निम्नलिखित क्रम में लोगों को बचाऊँगा:

- **महिलाएँ व बच्चे (नेताओं के पारिवारिक सदस्यों सहित):** महिलाएँ और बच्चे भविष्य के लिये एक सुभेद्य समूह तथा परिसंपत्ति हैं, इसलिये बचाव कार्य में उन्हें प्राथमिकता देने की आवश्यकता है। बच्चों की शुरुआती निकासी बचाव कर्मचारियों पर दबाव को कम करने में सहायता करती है।
- **वरिष्ठ नागरिक:** वृद्धावस्था में कम गतिशीलता के कारण बचाव कार्य में वरिष्ठ नागरिकों को विशेष प्राथमिकता एवं देखरेख की आवश्यकता होती है।
- **पर्यटक:** पर्यटक सामान्यत: क्षेत्र की स्थलाकृति से अनजान होते हैं, इसलिये उनकी सुरक्षा एवं बचाव करना महत्त्वपूर्ण है और चूँकि वे ज़्यादातर उद्यानों तक ही सीमित रहेंगे, अत: उनका बचाव कार्य आसान होगा।
- **यात्री (हाईकर):** यात्रियों को शारीरिक रूप से स्वस्थ माना जाता है, इसलिये उन्हें बचाव हेतु बचाव दल की सहायता की कम आवश्यकता पड़ती है, इस प्रकार उन्हें इस क्रम में बाद में बचाया जा सकता है।
- **राजनीतिक दल के नेता:** नेता प्रशासन का एक महत्त्वपूर्ण अंग होते हैं, इसलिये उन्हें भी प्राथमिकता में बचाया जाना चाहिये और इसके अतिरिक्त वे बचाव कार्यों के लिये स्वयंसेवकों को जुटाने में भी सहायता कर सकते हैं।
- **मुख्य वन्यजीव वार्डन:** चूँकि यह एक वन्यजीव अधिकारी होता है, इसलिये क्षेत्र में फँसे लोगों के सुरक्षित बचाव कार्य में सहायता कर सकता है। इस प्रकार उसे पशुओं से पहले बचाया जा सकता है।
- **पशु:** चूँकि राष्ट्रीय उद्यान में आग लग गई है, इसलिये सर्वाधिक क्षति सबसे पहले पशुओं की होगी, अत: उन्हें भी अतिशीघ्र सुरक्षा मुहैया करानी चाहिये। हालाँकि पशुओं में भी विलुप्तप्राय: पशुओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

मानव तथा पशु जीवन के साथ-साथ पर्यावरण को कम-से-कम क्षति हो इसके लिये प्रभावी वन अग्निशमन प्रणाली लागू की जानी चाहिये। वन क्षेत्र में मानवीय गतिविधियों को प्रतिबंधित किया जाना चाहिये ताकि भविष्य में इस प्रकार की अनियंत्रित आग की घटना न हो।

प्रश्न: आप एक अनुमंडलाधिकारी (Sub-District Magistrate) हैं। आप अपने मित्र के विवाह में शामिल होने के लिये किसी विवाह भवन (बैंक्वेट हॉल) गए हैं। वहाँ आप देखते हैं कि कुछ बच्चे मेज़ और बर्तन की सफाई कर रहे हैं। चूँकि यह बाल श्रम और शोषण का एक स्पष्ट मामला है, एक प्रशासनिक अधिकारी होने के नाते इस संदर्भ में आपका नैतिक और उत्तरदायी/प्रत्ययी कर्तव्य क्या होगा? क्या आप आयोजक/विवाह भवन के मालिक और क्षेत्र के संबद्ध अधिकारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई करेंगे, क्योंकि इससे आपके मित्र के विवाह में अवरोध आ सकता है?

(250 शब्द, 20 अंक)

You are a Sub-District Magistrate. You went to some banquet hall for attending your friend's marriage. There you see some small children are cleaning tables and washing dishes.

Being an administrative officer what is your moral and fiduciary duty? As this is a clear case of child labour and exploitation. Would you take disciplinary action against the organizer/owner of the banquet hall and the concerned officer of the area, as it might cause a problem to your friend's marriage?

उत्तर:

विषय वस्तु	तथ्य	मूल्य	हितधारक
❑ बाल श्रम और बाल शोषण	❑ बाल श्रम संबंधी कानूनों के प्रवर्तन में चूक ❑ मित्र का विवाह समारोह	❑ बाल अधिकार ❑ मानवीय मूल्य ❑ सामाजिक न्याय ❑ नेतृत्व ❑ करुणा	❑ बाल श्रमिक ❑ आयोजक/विवाह भवन का मालिक ❑ अनुमंडलाधिकारी ❑ अनुमंडलाधिकारी का मित्र जिसका विवाह समारोह है ❑ समग्र समाज

ज़िले के अनुमंडलाधिकारी (एस.डी.एम.) के रूप में यह मेरा नैतिक के साथ-साथ उत्तरदायी/प्रत्ययी कर्त्तव्य है कि मैं बाल श्रम पर अंकुश लगाऊँ और इससे संबद्ध कानूनों का प्रवर्तन सुनिश्चित करूँ। इसलिये मुझे बाल श्रम पीड़ितों के लिये आवश्यक कदम उठाने होंगे और साथ ही यह सुनिश्चित करना होगा कि इस संबंध में मेरी किसी भी कार्रवाई से मेरे मित्र के विवाह में न्यूनतम हस्तक्षेप हो। मेरी तत्काल कार्रवाई निम्नलिखित होगी:

- **बाल श्रम पीड़ितों के लिये:**
  - बाल श्रम पीड़ितों को मुक्त कराना और यह सुनिश्चित करना कि वे अपने माता-पिता के पास सुरक्षित वापस लौटें, अथवा यदि वे अनाथ हैं तो उन्हें आश्रय घरों (Shelter Homes) में भेजना।

- पता लगाना कि क्या यह बलात् श्रम का मामला है या कोई बच्चा मानव तस्करी का शिकार है और तदनुसार पुलिस की सहायता से उचित दंडात्मक कार्रवाई करना।
- यदि बच्चे अपनी इच्छा से या माता-पिता के दबाव में कार्य कर रहे हैं तो मैं यह सुनिश्चित करूँगा/करूँगी कि बच्चों और उनके माता-पिता को 'शिक्षा के महत्त्व' के बारे में उचित परामर्श मिले तथा उन्हें सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्रदत्त नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा एवं मध्याह्न भोजन के विषय में न केवल जागरूक किया जाए बल्कि उन्हें यह सुविधा भी प्राप्त हो।
- यदि आवश्यकता हो तो मैं स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों और बाल अधिकार आयोग की सहायता भी लूँगा/लूँगी।

- **नियोक्ता के विरुद्ध:**
  - बाल श्रमिकों को नियोजित करने की गैर-कानूनी गतिविधि के लिये नियोक्ता के विरुद्ध उपयुक्त कार्रवाई करना।
  - इस उल्लंघन/चूक के लिये उत्तरदायी क्षेत्र के प्रभारी अधिकारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई करना।
- **मित्र के प्रति:**
  - यह सुनिश्चित करना कि मित्र का परिवार किसी पुलिस कार्रवाई के लिये शर्मिंदगी का सामना नहीं करे।
  - इसके अतिरिक्त मैं अपने मित्र और उसके रिश्तेदारों को उन बच्चों के अधिकारों के लिये आवश्यक कार्रवाई के संबंध में परामर्श दूँगा/दूँगी और उनसे यह वचन लूँगा/लूँगी कि वे भविष्य में इस प्रकार के मामलों की सूचना पुलिस को देंगे।

अल्पकालिक और तात्कालिक उपाय के साथ-साथ ज़िले में बाल श्रम पर अंकुश लगाने के लिये मध्यकालिक एवं दीर्घकालिक उपाय भी करने होंगे। इन उपायों में शामिल हैं-

- ज़िलाधिकारी की अनुमति के साथ पूरे ज़िले में बच्चों के ऐसे अवैध रोज़गार की कुल संख्या के बारे में एक जाँच शुरू की जाएगी। इस प्रकार राज्य मशीनरी और स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों की सहायता से ऐसे मामले प्रकाश में आएँगे।
- तदनुसार, कानून के अनुरूप आवश्यक निवारक और दंडात्मक कदम उठाए जा सकते हैं।
- मल्टी-मीडिया के साथ-साथ प्रिंट चैनल के माध्यम से बाल श्रम कानून की रोकथाम और बच्चों के लिये शिक्षा के महत्त्व के बारे में जागरूकता अभियान शुरू करना।

इस प्रकार इस तरह के अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपायों के साथ बाल श्रम के खतरे को न केवल अनुमंडलाधिकारी के अधिकार क्षेत्र में, बल्कि पूरे ज़िले में नियंत्रित किया जा सकता है। यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि बच्चे हमारे देश के भविष्य और कल के नागरिक हैं। इसलिये हमें उनकी शिक्षा और कल्याण के लिये निवेश करना चाहिये।

प्रश्न: आप किसी संगठन में महाप्रबंधक हैं। श्री एक्स आपके कनिष्ठ हैं जो सहायक प्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं। वे संगठन के एक बहुत ही कुशल और समर्पित कर्मचारी हैं। उनकी ईमानदारी से प्रभावित होकर आपने उसे अतिरिक्त दायित्व दिया और आप निकट भविष्य में उन्हें पदोन्नति देने के विषय में सोच रहे हैं। एक दिन कार्यालय अवधि के समाप्ति के बाद आप उसे एक कर्मचारी के साथ आपत्तिजनक स्थिति में पाते हैं। आपने कभी भी इस तरह के समर्पित कर्मचारी से अनैतिक रूप से व्यवहार करने की अपेक्षा नहीं की थी। आपको लगता है कि वे अपनी पत्नी को धोखा दे रहे हैं; यह आचरण उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के बीच विरोधाभास की स्थिति को दर्शाता है। हालांकि, अपनी पेशेवर क्षमता में श्री एक्स ने संगठन को कभी धोखा नहीं दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने उन्हें सौंपे गए सभी कार्यों को समय पर एवं अत्यंत ईमानदारी के साथ पूरा किया है।

ऐसी स्थिति में आपके पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं? विकल्पों का परीक्षण कीजिये और सबसे उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिये। (250 शब्द, 20 अंक)

You are a General Manager in an organization. Mr. X is your junior who is working as an Assistant manager. He is a very efficient and a devoted employee of the organization. Impressed with his sincerity you gave him additional responsibility and might give him a promotion in the near future. One day while leaving office after the working hours, you find him in a compromising position with one of the staff members. You never expected such a devoted employee to behave in an unethical manner in the office. You also feel that he is cheating his wife. However, in his professional capacity Mr. X has never cheated the organization. Also he had accomplished all the tasks assigned to him in time and with utmost sincerity. Therefore it is a situation of contradiction in his personal and professional life.

In such a situation what are the options available to you? Evaluate the options and choose the most appropriate option giving reasons.

उत्तर: उपरोक्त मामले में मुद्दा कार्यस्थल पर अनैतिक व्यवहार और व्यक्तिगत सत्यनिष्ठा की कमी का है तथा इस संबंध में महाप्रबंधक के पास उपलब्ध विभिन्न विकल्प निम्नलिखित हैं:

विकल्प	गुण	दोष
• जब तक यह मामला कार्य संस्कृति को प्रभावित नहीं करता है तब तक कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी।	• चूँकि श्री एक्स एक कुशल कर्मचारी हैं, इसलिये उनके व्यक्तिगत आचरण पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिये।	• इससे उसे कार्यालय में अनैतिक गतिविधियों में शामिल होने के लिये प्रोत्साहन मिल सकता है। • यह संदेह बना रहेगा कि क्या दोनों व्यक्तियों के बीच सहमति थी या यह मामला यौन उत्पीड़न का है इस पर किसी का ध्यान नहीं जाएगा।
• इसमें शामिल महिला कर्मचारी को स्पष्टीकरण हेतु बुलाया जा सकता है।	• यह यौन उत्पीड़न का मामला था या आपसी सहमति का, इसे निर्धारित किया जा सकता है।	• यह महिला कर्मचारी को अनावश्यक मानसिक यातना दे सकता है तथा उसकी नौकरी जाने की शंका में वृद्धि कर सकता है।
• श्री एक्स को उनके आचरण के संबंध में स्पष्टीकरण के लिये बुलाया जा सकता है साथ ही उन्हें चेतावनी दी जा सकती है।	• निहित कारणों को स्पष्ट किया जा सकता है तथा यदि यह सहमति के आधार पर था, तो भविष्य में ऐसी गलती नहीं दोहराने के लिये कहा जा सकता है। • यदि यह मामला कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का हो तो सख्त कार्रवाई की जा सकती है।	• सहमति के स्थिति में भी उसके विरुद्ध कोई सख्त कार्रवाई न होना उसे कंपनी द्वारा छूट देने का आभास दे सकता है।
• वरिष्ठ अधिकारियों को मामले की सूचना दी जाए और उनके सलाह के अनुसार कार्रवाई की जाए।	• वरिष्ठ अधिकारी किसी भी प्रकार की कार्रवाई करने के लिये बेहतर स्थिति में होंगे।	• वरिष्ठ अधिकरी श्री एक्स को अनुचित कठोर दंड दे सकते हैं।
• श्री एक्स से जानकारी मांगने हेतु कारण बताओ नोटिस जारी किया जाएगा, उसकी सेवा समाप्त करना	• यह अन्य कर्मचारियों को किसी भी अनैतिक व्यवहार में शामिल होने के लिये हतोत्साहित करेगा।	• यह एक सक्षम और कुशल कर्मचारी के लिये बहुत कठोर दंड होगा।

कार्रवाई का सबसे उपयुक्त कदम महिला कर्मचारी से पूछताछ करना होगा जिससे यह पता लग पाएगा कि यह मामला यौन उत्पीड़न या आपसी सहमति का। यौन उत्पीड़न के मामले में उसके खिलाफ कंपनी द्वारा सख्त कदम उठाए जा सकते हैं। वहीं, आपसी सहमति की स्थिति में तथा पेशेवर एवं व्यक्तिगत जीवन की शुचिता को बनाए रखने के लिये एक सख्त चेतावनी जारी की जा सकती है। चूँकि श्री एक्स एक कुशल और समर्पित कर्मचारी के रूप में कंपनी की संपत्ति हैं, अत: उन्हें दोबारा कार्य स्थल पर इस तरह के अनैतिक व्यवहार में लिप्त न होने की हिदायत दी जानी चाहिये।

वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते महाप्रबंधक श्री एक्स को विश्वसनीय बने रहने और पत्नी को धोखा न देने की सलाह दी जानी चाहिये तथा यदि इस चेतावनी के बाद भी भविष्य में अपराध में लिप्त पाया जाता है, तो इस मामले को अपने वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष लाना चाहिये ताकि उन्हें सेवा से निकाला जा सके।

आगे की राह

व्यक्तिगत एवं पेशेवर जीवन के बीच अंतर बनाए रखना हमेशा उचित होता है। प्रत्येक कर्मचारी/कार्यकर्त्ता का कर्त्तव्य है कि वह संगठन में अनुशासन एवं शिष्टता को बनाए रखे। साथ ही एक संगठन को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि यौन उत्पीड़न के मामलों से निपटने के लिये प्रभावी कार्रवाई की जाए।

प्रश्न: देश के दो अलग-अलग भागों में दो युवा लड़कियों के बलात्कार तथा हत्या ने राष्ट्र को झकझोर दिया है। पहले मामले में, पीड़िता के समुदाय के बीच भय पैदा करने के लिये एक पुलिस अधिकारी द्वारा लड़की का कथित रूप से बलात्कार और हत्या किया गया। जब अभियुक्त पुलिस अधिकारी को गिरफ्तार किया गया, तो एक दक्षिणपंथी संगठन खुलेआम अभियुक्त के समर्थन में आया और इसने इस गिरफ्तारी के विरोध में मार्च निकाला तथा साथ ही अभियुक्त की रिहाई की मांग भी की।

जबकि दूसरे मामले में, एक आदिवासी प्रवासी कामगर के द्वारा एक लड़की का कथित तौर पर अपहरण, बलात्कार और हत्या की गई है। पुलिसकर्मियों ने अभियुक्त को गिरफ्तार किया, परंतु जब यह समाचार विस्तारित हुआ, तो रोषित भीड़ पुलिस थाने में घुस आई, अभियुक्त को चौराहे तक घसीट कर ले गई और उसकी हत्या कर दी। इसके बाद, भीड़ गायब हो गई।

चर्चा कीजिये कि किस प्रकार दो जनसमूह समान अपराध पर दो भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं? एक मामले में प्रदर्शनकारी अभियुक्त को रिहा कराना क्यों चाहते हैं, वहीं

दूसरे मामले में अभियुक्त की भीड़ द्वारा हत्या क्यों कर दी जाती है? (250 शब्द, 20 अंक)

The rape and murder of two young girls in two distinct parts of the country have shocked the nation. In the first case, girl was allegedly raped and murdered by a police officer to inflict fear among the victim's community. When the accused police officer was arrested, a right wing organization openly came in support of the accused and carried a protest march as well as demanded the release of the accused.

Whereas in the second case, a girl was allegedly abducted, raped and murdered by an Adivasi migrant worker. The police arrested the accused, but when this news spread, an irate mob barged into the police station, dragged him to the main road and lynched the accused. Thereafter, the mob disappeared.

Discuss how the two groups of people hold two different perspectives on similar crimes? Why did the protestors in the first place want the accused to be released while the mob in other place want the accused to be lynched?

उत्तर: यद्यपि दोनों मामलों में बलात्कार और हत्या के अपराध बर्बर एवं अमानवीय है, तथापि लोगों को आपराधिक न्याय प्रणाली की सामान्य प्रक्रिया को नकारने और अभियुक्तों को दंडित करने या उनका समर्थन करने का कोई अधिकार नहीं है।

नैतिक दृष्टिकोण:

- अराजकता
- जीवन के अधिकार का उल्लंघन
- सुरक्षा प्रदान करने के लिये राज्य दायित्व की व्युत्पत्ति
- समाज के विभिन्न वर्गों में व्याप्त असहिष्णुता

मामला–1

संगठन विशेश ने संभवत: अभियुक्त पुलिस अधिकारी का समर्थन इसलिये किया क्योंकि वह एक उच्च वर्ग एवं समुदाय से है और यह निम्न जातियों पर उच्च जातियों के हावी होने और अपने वर्चस्व को बनाए रखने का एक उपाय था। संगठन को अभियुक्त का समर्थन करने का पूरा अधिकार है, परंतु उसे पुलिस पर दबाव बनाने एवं कानून-व्यवस्था को अपने हाथ में लेने के बजाय कानूनी कार्रवाई का सहारा लेना चाहिये।

मामला–2

यहाँ आदिवासी प्रवासी एक 'सामान्य' व्यक्ति (वह पहले मामले के समान कोई पुलिस अधिकारी नहीं था) था। भीड़ में उसके विरुद्ध रोष था क्योंकि वह एक अलग जाति या निम्न जाति का प्रवासी कार्यकर्त्ता था। इसके अतिरिक्त बलात्कार और हत्या जैसे जघन्य अपराधों के आरोपों ने भीड़ को हत्या अथवा हिंसा के विकल्प का चयन करने के लिये सहज बना दिया। दोषी भीड़ पीड़ित को एक साथी के रूप में पहचानना बंद कर देती है, जो उसके विरुद्ध उनकी क्रूरता को वैधता प्रमाणित करता है।

आगे की राह

भीड़ द्वारा की जाने वाली हत्या तथा हिंसा अब मात्र कानून एवं व्यवस्था की समस्या नहीं रही, बल्कि यह समाज में बढ़ती असहिष्णुता की अभिव्यक्ति है। जनता को राष्ट्र की न्यायिक प्रणाली पर विश्वास होना चाहिये और न्यायालयों द्वारा अपराधियों को रिहा या दंडित करने देना चाहिये; अन्यथा, पूर्वाग्रहों अथवा रूढ़िवादियों से प्रेरित भीड़ समाज में असामंजस्य का कारण बन सकती है।

प्रश्न: देश में केंद्र सरकार द्वारा सक्रिय रूप से नदी-जोड़ो परियोजना पर ज़ोर दिया जा रहा है। आपको नदी-जोड़ो परियोजना की व्यवहारिकता का पता लगाने के लिये विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति (ई.ए.सी.) में एक सदस्य के रूप में नियुक्त किया गया है। संभावनाओं के सर्वेक्षण के दौरान पता चलता है कि परियोजना से न केवल एक मुख्यधारा से दूर विशाल जनजातीय समूह प्रभावित होगा, बल्कि यह राष्ट्रीय उद्यान के रूप में घोषित क्षेत्र के बड़े भाग को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेगा। जाँच समिति को आप अपने विचारों से अवगत कराते हैं किंतु आपके विचारों को महत्त्व न देते हुए समिति के अन्य सदस्य आप पर उनके विचारों का समर्थन करने का दबाव डालते हैं। इसके अलावा वे आपको आर्थिक लाभ पहुँचाने की बात भी कहते हैं। जब आप जाँच की वास्तविकता का पता संबंधित मंत्री को बताने का फैसला करते हैं तो आपको पता चलता है कि यह मंत्री के इशारे पर ही हो रहा है क्योंकि इससे उन्हें अनुचित लाभ प्राप्त होने की संभावना है।

(a) इसमें कौन-कौन से नैतिक मुद्दे शामिल हैं?

(b) आपकी कार्यवाही क्या होगी और क्यों?

(250 शब्द, 20 अंक)

The central government is actively pushing the Interlinking of Rivers (ILR) programme in the country. You have been appointed as a member of the Expert Appraisal Committee (EAC) for ascertaining the feasibility of river linking project.

In the feasibility survey, it has been found that this project will not only affect the large tribal groups which are away from mainstream but also adversely affect a large part of the area that has been declared a national park. You make the Committee aware of your opinion but without giving importance to your opinion, other members of the Committee pressurize you to support their views. Apart from this, they also offer you financial benefits. When you decide to tell the reality of the investigation to the concerned minister then you came to know that it is happening with the support of that minister.

(a) What are the ethical issues involved in this case?

(b) What will be your course of action and why?

उत्तर (a) : दी गई केस स्टडी में निम्नलिखित नैतिक मुद्दे शामिल हैं:

- **विकास बनाम पर्यावरणीय नैतिकता:** नदी जोड़ो परियोजना का उद्देश्य कल्याण को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत सरप्लस जल वाली नदियों के पानी को कम या न्यून जल वाली नदियों में स्थानांतरित किया जाएगा। किंतु यह पर्यावरणीय नैतिकता के विरुद्ध है। इससे जैव विविधता के संरक्षण को हानि पहुँच रही है। जो न केवल वहाँ के जीवित वन्य जीवों के लिये अपितु पर्यावरणीय अवकर्षण को बढ़ावा देगा।
- **विकास बनाम जनजातीय समूहों के अधिकार:** यद्यपि नदियों को जोड़ने से विकास को बढ़ावा मिलेगा किंतु किसी एक वर्ग के अधिकारों की कीमत पर दूसरे लोगों को लाभ पहुँचना नैतिक नहीं कहा जा सकता है। विविधता का सम्मान करना नैतिक दृष्टि से उत्कृष्ट है। चूँकि जनजातीय समूह अभी भी समाज की मुख्यधारा से अलग हैं उनकी अपनी संस्कृति और मूल्य हैं। वे इस विकास की प्रक्रिया से प्रभावित होंगे। अत: इसे नैतिक नहीं कहा जा सकता।
- **भ्रष्टाचार का मुद्दा:** वर्तमान में भ्रष्टाचार की समस्या नैतिकता में गिरावट के मुख्य कारकों में से एक है। यहाँ आर्थिक लाभ की संभावना ईमानदारी, सत्यनिष्ठा के विरुद्ध तथा पक्षपात की संभावनाओं को उत्पन्न करती है।
- **अनुपालन और गवर्नेंस का मुद्दा:** विकास के साथ पर्यावरणीय कानून, कल्याणवाद, सहकारिता, नागरिक अधिकार आदि मुद्दे जुड़े हैं। इनके बिना गुड गवर्नेंस और एथिकल गवर्नेंस की प्राप्ति संभव नहीं है।

उत्तर (b) : आपकी कार्यवाही क्या होगी और क्यों?

चूँकि यह एक अत्यंत संवेदनशील मुद्दा है, जिसमें अनेक वर्गों के हित जुड़े हैं। अत: मेरी कार्रवाई निम्न प्रकार होगी:

- मैं सर्वप्रथम किसी भी आर्थिक लाभ की संभावना को समाप्त करते हुए अपने मत पर डटा रहूंगा।
- इसके बाद मैं अनुनय (Persuasion) का प्रयोग करते हुए उनके मत को परिवर्तित करने की कोशिश करूंगा। फिर भी यदि वह परियोजना के संबंध में अनुमति देते हैं तो मैं अन्य विकल्पों पर कार्यवाही करूंगा।
- मैं संबंधित सर्वेक्षणों के वास्तविक डाटाओं को राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण और अनुसूचित जनजातीय कमीशन को अप्रत्यक्ष रूप से प्रेषित करने का प्रयास करूंगा ताकि वास्तविक तथ्यों पर कार्रवाई हो सके।